

# शुद्धिपत्र ।

३८६ पृष्ठा ६ पक्तिमें “तत्तदश” स्थानमें अष्टा-  
दश” होगा ।

४४२ पृष्ठा ५ पक्तिमें “अष्टादश” स्थानमें  
“उत्तमिश” होगा ।



# भूमिका ।

गृहचिकित्सा पुस्तक में प्रकाशित हमारा दूसरा ग्रन्थ "चिकित्सा तत्त्व" भाग प्रकाशित हुआ। इस व क्षापने व आरम्भ करने के हमारे भारत लोग जल्दा उन्नतान के लिये अत्यन्त आग्रह करने परन्तु अनेक तरह के विघ्न और विपत्तियों से समयक विलम्ब हुआ। माता है कि हमारा इस पुस्तिका कि जिसे हमने अपनी इच्छा से नहीं की, माहक लोग समा करेंगे।

गृहचिकित्सा पुस्तक विद्यार्थी और गृहस्थों लोगों के लिये लिखा गया है इस से उसमें सब रोगों की विस्तृत चिकित्सा लिखना असम्भव था परन्तु इस पुस्तक की सहायता से होमियोपैथिक चिकित्सा में कुछ स्पष्ट पति होसकता है उस समय सब रोगों की चिकित्सा करने के किसी बड़ ग्रन्थ की अपेक्षा अनुभव होती है उसी अनुभव के पूर करने के लिये यह 'चिकित्सा तत्त्व' छापा और प्रकाशित किया गया। चिकित्सा विद्या केवल घन कमाने की ही विद्या नहीं है परन्तु हरव गृहस्थ का यादा बहुत इस विद्या का जानना और उस के अनुसार कुछ चिकित्सा अंगन कुटुम्ब की करना आवश्यक है। हामियोपैथिक चिकित्सा की रीति जैसी सहज है तेसा उपकारा है। क्या नुरत के अन्न बालक ? क्या गमवता स्त्री ? यह सभी हामियोपैथिक औषध निभय सज्ज करसके है। इस पुस्तक के पढ़ने से अंग्रेजी न जानन वाले चिकित्सक और गृहस्थ सभी हामियोपैथिक चिकित्सा में रुचकाय हा

सते है। इस विषय में ग्रन्थकारने कुछ कसर नहीं रली। यह पाठक लोगों से यह प्रार्थना है कि हमारी गृहबिक्रसा और विस्तृचिषाचिकित्सा इत्यादि पुस्तकों के समान यह पुस्तक भी उनका अमाय पूण करसके तो हम लोग अपना अम और धान्यय को सबल समझेंगे और आगे होमियोपैथिक की अध्यान्य पुस्तकों क प्रकाश करने में यत्न करेंग।

दिनात

श्रीउपेन्द्र नाथ मल्लिक

कार्याध्यक्ष लाहिडी एण्ड कम्पनी

मधुरा ता०२०सितम्बर सन् १९०८। मधुरा शाला औषधालय।



# सूचीपत्र ।

## प्रथम अध्याय ।

होमियोपैथि १ ।

## द्वितीय दूसरा अध्याय

आर्य्य सम्बन्धि नियमावलि

आहार १२, जल १७, वायु १८, व्यायाम २०, परिश्रम २२, स्नान २३।

## तीसरा अध्याय

रोगी परीक्षा

रोगीकी पुष्टि २५

## चौथा अध्याय

शरीर की उष्णता और तापमानयंत्र २६, नाडी २७, श्वास  
प्रश्वास ३४, जिह्वा ३६, वेदना ( दर्द ) ३७, घम ३८, पेशाब ३९,  
साधारण परीक्षा ४१

## पंचम अध्याय

होमियोपैथिक औषधि सम्बन्धी नियमावली ४३, प्रधान प्रधान  
औषधियों की तालिका ४८ आवश्यकताय २४ औषधियों के नाम  
५०, खगाने का औषधि ५०

## ६ अध्याय.

### साधारण रोग

#### ( क ) रक्त विकार के रोग

चेस्तक ५१, चिकि-पोकस ६१ टाकाद ५, मीनिलस ६८, भुग ७६  
विसप ८७, सान्निपातिक विकार ज्वर ८६ आतिसारिक विकार  
ज्वर १०४, सरिराम ज्वर १२६, म्बलविराम ज्वर १४५, सामान्य  
ज्वर १५२, हैजा ( कालेरा १५४, डिपथारिया १३८

### सप्तम अध्याय

साधारण रोग समूह [ छ ] धातुगत रोग समूह ।

तटण घात १७२, पुरातन घात रोग १७७ कमर में घात १८०  
सापेदिका १८१, गदन कडी पट्टजाना १८३ गडमाला १८४, क्षय  
अथवा यक्ष्मा १८८ बहुमूत्र १९४ शोथ १९७, रक्तव्यता २०३

### अष्टम अध्याय

#### मानसिक रोग समूह

भय २०५ शोकदुःख २०७, क्रोध २०८, उन्मत्तता २१०

### नवम अध्याय

#### वायु विधान के रोग

मलिनक प्रदाह २१४, स-यास २१७, तापाघात २२१, पक्षाघात  
२२३, मूर्च्छा २२६ जगनदू २२८, धनुषकार २३१, मगाराग २३४  
मूलागतवायु २३७ शिर पीडा २३६, सिरधूमना २४०, अनिद्रा २४३,  
व र उडजाना २४४

## दशम अध्याय

चतु राग समूह ( साधों की बीमारियाँ )

चतुर्नाद २३, मङ्गल [गुहेरी] २६१, दृष्टिहीनता २६२

## एकादश अध्याय

कर्त रोग समूह

कान में रुई २६, कान से मवाद गिरना २६७ बहुरागन २६८  
कज्जनाद २७२ कलमूलनाद २७४

## द्वादश अध्याय

कामा रोग समूह

कण्ठ बहना ३१ दुग्गता तुल्य २६९ कामादन २७२ कण्ठ से  
गूल निगना २७५ कामा रोग २७८

## त्रयोदश अध्याय

हृत् रोग समूह

हृत्पत्र ३२ हृत्पिंडको दान २८६

## चतुर्दश अध्याय

काम रोग समूह

हृत्पत्र ३३ हृत्पत्र ३३१ हृत्पत्र ३३२ हृत्पत्र  
३३३ हृत्पत्र ३३४ हृत्पत्र ३३५ हृत्पत्र ३३६ हृत्पत्र ३३७  
हृत्पत्र ३३८ हृत्पत्र ३३९ हृत्पत्र ३४०

## पद्महवा अध्याय

मुख के भीतर के रोग

मुह का बुरा स्वाद ३५२, मुह में दुग्ध ३ ३, मुख सूत ३५४  
मुखौप ३५७, मसूढ़ों से खून गिरना ३५८ मसूढ़ में फोड़ा ३५९  
६ तण्डुल ३६१ गले का दद ३६६ गले में घाव ३६८

## सोलहवा अध्याय

पाकाशय क रोग

अभुधा ३७० अस्वाभाविक क्षुधा ३७२, अनाया ३७४ छाती पर  
जलन होना ३८१, घमन ३८३, रज घमन ३८६, दिक्की ३८८

## सप्तदश अध्याय

पेट के रोग

रक्त वेदना ३८९ यकृत प्रदाह ३९३ पुराना यकृत प्रदाह ३९५  
पालिया ३९९ उदरामय ४०२ रक्तमाशय ४० काष्ठों का उपद्रव  
४१३, काष्ठवद ४१७, अश[यवान्तर] ४१९ काच बाहर निकलना ४२७

## अठारहवा अध्याय

जनन यत्र सम्बन्धीय पाडा ।

उपद्रव ४ ६ वद ४३३ प्रमेह ४३४, म्वप्रदोष ४३६

## उन्नीस अध्याय

मूत्र यत्र सम्बन्धीय रोग

वृक्क प्रदाह ४४४ पेशी ४४८, मूत्राशय प्रदाह ४५१ रक्त  
५ मशरित मूत्र धाव ४ ६

## विंश अध्याय

संम राग मधुद

संस्कृत-२, सुकला व्यास १९६० एडिशन, छात्र-५२३ विरही  
उप. ४६४ विरहि ४६७ हन वा यय ४७० हुनय ४७३ निपात  
४७३, नान्न ४७४, उह ४७६ सुगदी ४७७, शिरोद्व ४७८

एरुविंश अध्याय

श्री राग समुद्र

अनु ४८० प्रथम राजा दर्शन में दिखन्य ४८१, मृगच्छु ४८२,  
रत्नराज ४८३, राज कुल ४८४ अथुर रत्नराज ४८५ रत्नाधार ४८६,  
द्वैतप्रद ४८७, रत्नधारा ४८८ रत्नधारा के समय का निम्न  
४८९ गमायला का पीठा ४९०, मुघ में पाना भर माना और  
छाता में चलन ४९१, कोटपद्ध ४९२, उद्गरामय ४९३, सिर बंद और  
सिर घूमना ४९४ गमायला में दन्त दुर्लभ ४९५, पशाव का दानन  
न रोह सकला ४९६, पैर फूलना ४९७, रत्नधारा ४९८ प्रसव ४९९,  
स्त्रि का वृद्ध ५००, प्रसव बदना ५०१, प्रसूतकाभय ५०२ प्रसव  
क शून्य में। चार्डिसा ५०३ प्रसव क शून्य में रत्न धारा ५०४  
प्रसवांतक बदना ५०५ पूजा न गिरना ५०६, प्रसव क शून्य में  
मुक्त धारा ५०७, प्रसव क पहल कारवद्ध ५०८ उद्गरामय ५०९,  
सनधर ५१० स्त्री में दूध कमजोर ५११, स्तन प्रदाइ ५१२, हृद  
धातु ५१३ स्त्रिका ज्वर ५१४

## हविर्गन्धः

॥३॥





होमियोपैथिक ।

## चिकित्सातत्त्व ।

—००३०००—

प्रथम अध्याय ।

होमियोपैथी ।

ईश्वर का लक्ष्मि ज्ञान ही प्रधान है और स्वास्थ्य ही जीवन का परम सुख है । स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर मनुष्य उसको फिर हिम तराई प्राप्त करना है और आजीवन आरोग्य रहकर किस प्रकार सुख पृथक् समय बितासका है यही इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है । घरों में कई रोग उपस्थित होने पर जिनकी जन्म और आसानी से होमियोपैथिक द्वारा आराम होता है दूसरी किमी बिगड़ना प्रयत्नों से नहीं होता । होमियोपैथिक चिकित्साने प्रकृत होने से पहिले पाठकों को यह ज्ञान चाहिये कि होमियोपैथी क्या है ? इसलिये होमियोपैथी सम्बन्धी कुछ मोटी मोटी बातें नीचे लिखने हैं ।

होमियोपैथी औषध से अधिक हुए होंगे सन् १७२०

तब ईसवी में महामा हैजा फैलने पहिले पहिले इस चिकित्सा प्रणाली को चलाया । हैजा फैलने के अनेक वर्षों से पहिले ही यूरोप तथा भारतवर्ष के चिकित्सा शास्त्र मातुर्-दादि में इसकी सत्यता की कुछ खोज की गई थी किन्तु इसका विज्ञान सम्मत उद्योग ही पर पहुँचाकर व्यवस्था



अभिज्ञानेकी प्रत्यक्ष  
प्रमाणों के बिना

क ऊपर प्रतिष्ठित है अर्थात् अथ इसका  
प्रत्यक्ष प्रमाण दागना है तो इसका वाक्य  
निक्रमण परती केन कहसने है । यान

पूवक परासा द्वारा इससे जो प्रत्यक्ष प्रमाण दाग पड है उनका  
अहन बिना प्रकार नहीं दासना और यह वाक्यिपत  
( अभिज्ञानपर ) निभर है । हेतुमिन्न इस विधिवाक्यता प्रमाणों  
का जिस समय निवाला या उर्मी समय उसका प्रकाशित  
नहीं करदिया या करन कह करन भ उगका गुन रकता या ।  
अतएव में परीक्षा प्रमाण और पूर्ण अभिज्ञान ( वाक्यिपत ) से  
निग्रय दागया वि इस इलाज न भाराम दागा है तब उसन  
इम मतका प्रकाशित किया । इस मत की सुमियाइ इतनी  
मजबूत है कि जब तक इस का प्रमाण दकर इस छापून  
सावित न करद तब तक यह विविधता प्रमाणों मकर और  
भरल रहनी ।

अभिज्ञानेकी प्रमाणों  
बिना

हामियापेयिक विविधता प्रमाणों के  
प्रमाण ही है । अतएव वाक्यिपत से  
रागका प्रकाश इसका मवाप दाग और

काइ नुहा खाज नहीं है । हामियापेयिक दयाहयो के जो ५ लक्षण  
जिसउनक साधनी रागा की वस्तुमान दशाक लक्षणों का मिलान  
करना चाहिए और फिर जिस दया के लक्षण रागी के  
लक्षणों से बिनाप मिश्र उसी दया का देना चाहिए । जिस  
म बांध के लक्षण रागा के लक्षणों से बिनाप मिलत हों वही  
दया बिनाप फायदा करता है । रागक चितन लक्षण है यदि  
यह सब दूर हागये तो समझला कि भाराम दागया ।

हामियापेयिक मत निमप्रकार प्रत्यक्ष प्रमाणों के ऊपर  
प्रतिष्ठित है उसी प्रकार इसकी विविधता प्रमाणों मा जल न





का गुण विमलवार समझें मने है ।

हामियायेयी भाभाव नहीं है ।  
हामियायेयी तनुतेने  
विचार नहीं है  
मनुष्यके विचार भी नहीं है । को  
का नक नहीं हुए गी और आज दु

दिय यह कुछ है यह नहीं हामना । मनुष्यका तनुरया भी  
रायन वचना बनना जाना है । हामियायेयी भीषि से  
हाना है मना विमान न हान का कारण यह है कि  
ना वना हाना नहीं ।

किना किमी वन में पाइए दिनोंमें गानी जमजात  
इयाम वन क रात्रान जय यह वान मुना मो हंसक  
ही और कउन मग नि वना कमी जारी नहीं मना ।  
वैद्य भादि विविधमक मवहटी में इयाम वन क रा  
मरुद पण्डित कहुन म है ।

हामियायेयी वनाभा की इनका  
विमान वनका ही नहीं है ।

विमान मवना बनना क ऊपर  
नहीं है । मानाही पाहीका अज्ञान मया मनुष्य पावय [ मि  
मुक्त आनाइना न निवृत्ती है । ] बावक वचनाइया  
हामियायेयी गानी आना मममवादन वनाइया हा वान  
बने मग वैद्य आना आनामें उदभवक नहीं । मग भी  
मवन कउनम वनम मुक्त न नामक है । तिनको हामियायेयी  
मना विवृत्त विमान म नहीं है । इनकाही इभने आनाम  
देना इनके मना हामियायेयी मविमान म हाना है विमान  
मनक आनाम नहीं वना आना मविमान मविमान वन हान  
विमान हामियायेयी नहीं है । मवनी हामियायेयी नहीं  
का कमी कवक है मनुष्यका म है मना मविमान मविमान

रागोका आराम होता है । यह बात समझें  
कि होमियोपैथी वर्य नानाधर्मों कुछ  
मिथ्या चालन करनेवा उपर्य अपर्य मनी है  
स्वल्पा का स्थितिभय ही रोग है, स्वल्पा ही व्यापारक  
भवता । राग अनियम और अनाचार का विषय कह है ।  
इसलिए रोग का समय जितन व्यापारिक भाव पर चलनक  
उत्तरी ही आराम होने में शायता होता है । इससे रागा  
को भरी आहार, अतर, गुलाब आदि सुगंधि द्रव्य खाईनी  
रान में जड़ल फिरना, बदमन, व्याज इत्यादी बचूर आदि  
गरम मसालों में घबना आदिय । वर्य नापारण तरह पर  
अव्यय का नाचने में ही दिया जाता है । किसी विभिन्नता  
शाय की व्यवस्था अथवा उपर्य नहीं है ।

होमियोपैथी के विषय बात हमारा यों कहा करते हैं  
कि जानौ तुमारी शीर्षाकी सब वषा राय हासन है, हेने  
कया होता है इसका चलनमें हम इतना ता खावार करते हैं  
कि तीभरा लटा अथवा २०० दालि की

चोना ।

एक शीशी वषा माने स तत्काल बोह  
तीम खराणन भी दीप सना है किन्तु उस  
में कुछ न कुछ मिया होगी । यह बात विज्ञान सम्मन है और इस  
विषय सीकार करने लायक है, किन्तु यदि यह भी सीकार किया  
जावे कि उससे कुछ भी फल न हुआ तो यह बात भी  
होमियोपैथी के विषय साराफ़ काहे कि निन्दा की । होमिया  
पैथी का उद्देश्यही यह है कि वषा का असर रागी का  
परिपरही हो । इससे कुछ उचभाह होने की संभावना  
नहीं रहती । रोगमें बढ़का भार देहके सब यन्त्रों की उत्तजन  
शान्तिता बढ़जाती है, इसीविषये यह घोड़ीसी मायाकी आपाध



मार आराम हानके थाइ रागका भोगना कटुजाता है।  
मोयसि का भोग पीछे भी भागना पड़ता है। होमिय  
त्रिचिन्मा में हमप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़त  
ये प्रज्ञा भी नहीं होनी ।

मय और पुराने सब तरहके रागमें हामियोपैथिक त्रि

हानकोपयी

को देता ।

और त्रिचिन्मामें से अच्छी है । हैजे

होमियोपैथिक इलाज जो चमत्कार

बाना है मय समार में उसकी कार

ती है । हैजे की तरह तबख और साधारण राग  
हमरा कार नहीं है । हम भीख हैजे की यदि कोई बि  
दे तो हामियोपैथी ही है ।

हामियोपैथिक दवाइयों में प्रतिरोधक आर आरोग

प्रतिरोधक ।

हामाही प्रकारकी शक्ति है । बहुत

यथा मर्ती, नामाप्रकारके उपर, हैजे ।

क मृचवान हानहा दवा दहीजाये ता अतुरित होता  
विनकुल जाता रहता है । अथवा इसका बहजाता है । जग  
तरह लच्छ लच्छ हमरा इत्यादि संशयक राग पैदा रह  
दिनोंमें एक एक मास हामियोपैथिक आरपि सेवन करन  
अब गती अ बचा रहमना है ।

हामियोपैथिक

मोयसि

त्रिचिन्मा मुनिवाइ मय पर कायम है ।

मर्तीका जीत हाना है । मेकडो विनलि

और त्रिचिन्मा का बानकी बानमें दवा कर बानि

प्रज्ञा की प्रज्ञा इसमेंमें पुनीम केन्द्रा है । बहाममें म  
एक कदम है २ मासमें भी एक हामियोपैथिक त्रिचि

अपर्य मिलता। पहिले जो धाग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरबेतेथे अब वही धाग होमियोपैथिक सिधाय दूसरा काह रखाज नहीं करते। होमियोपैथी मत सच्चा और विज्ञान की पक्षी पुनिवाद पर कायम है। इसके विशयमें ऐसी भाशा की जातीहै कि पादेही दिनोंमें देशमग्नमें सबसे अच्छी चिकित्सा प्रयाची यही समझी जायेंगी।

॥ दूसरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यासम्वन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औपधि द्वारा उसको निवारण करनेकी अपेक्षा रोग न होनेदेना हा अच्छाहै। रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पालनकी भूल तथा अनाकता का विपरय फलहै। सर्व भाधारणको स्वास्थ्य रक्षाके नियम जानना और उनका अनुसार करना उचित है। स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः ग्रीष्म रोगोंके हाथसे रक्षा मिलतीहै। शराह भयल और तज युक्त होताहै तथा अकाह मृत्यु बहुत ही होमकी। अतएव स्वास्थ्य रक्षाकी जो मोटा मोटी बातेंहैं इस अध्यायमें उहा सबको लिखतेहैं। पाश्चात्य

सम्यताके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्याभा बहुत बढ़गइहै। मनुष्योंकी आशिम और

प्राकृतिक अवस्थामें इतने सब रोग नहीं थे।

हम मनुष्यताका अग्रिमानसे नितने दूरे जाते

हैं उनमें ही तरह तरहके कठिन रोग हम

योगोंमें प्रवेशकर हमारे सुख सम्पद को हनकर रहक

भार मागम हानने बाद मोगका भोगना क्यजाता है परंतु मोनचि का भोग पीछ भी मागना पडता है। होमियोपैथिक चिकित्सा में इस प्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पडता और येजगा भी नहीं होती।

नद और पुरान सभ तरहके रागमें हामिथापैयिक शिक्षितमा

और जिसमाया में बन्धी है। हैजे राग में

**इलाहाबाद**

### होमिपापैथिक इलाज जी समग्र दिवस

योग देखा ।

जानाह मय मधार में उसकी कीर्ति जै

नहीं है। हेतु की तरह तबल और व्यापारिक राग शायद दूसरा कार नहीं है। इस भीषण हेतु की यदि कोई चिकित्सा है तो हावियायेगी ही है।

हामिवापैतिह इवाहयो मे प्रतिपन्न आर अन्तरायकारी

सामाही प्रकाशकी चारिने है । बहुलता ०॥

सुनिश्चितपदम् ०

यथा मदीं, मामात्रकारक उपर हेता हत्यादि

क. मृत्युशयन हासहा रक्षा वृद्धिजाये ता मनुगति होतही रोग निजमुक्त ज्ञाना रहना है । अथवा हलका रहना है । जब आगे तत्त्व अथवा अथवा इत्यादि मन्त्रात्मक ज्ञान कैव रहुवाँ हम दिव्योमे एक एक साक्षा हासहागीवक आनन्द भेदन करन अहम अथवा आगे क रक्षा रहना है ।

शिवरात्री कृमिनाशक मन्त्र एवं आचमनदे उपायः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

जानेदा श्रीम ज्ञानिदे । मेकदा विदुलि अन्नाद

[illegible][illegible]

प्रहारी वन्य वन्यमे कुर्वन्ने केज्जर्दे । वन्यमे वा वा  
 वन्य वन्य वन्य वन्यमे वा वन्य वन्यमे वन्य वन्यमे

अथैव मित्रेण । यदिह ओं शोण होमिषैषिके नाममे मुह  
 पेरहेतेये अथ धही खाग होमिषोपैषिक मिषाय दूमरा  
 काइ इच्छाज नहीं करते । होमिषोपैषी मन सखा और विज्ञान  
 की पक्षी सुनिषाद पर बाधम है । इसके विषयमें एनी धाना  
 की जातीहै बि पाहेही दिनोंमें देशान्तमें सबसे अच्छे  
 चिकित्सा प्रदायी वही समझी जावगी ।

॥ दूमरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यामम्वन्धीनियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उमका निवारण करनेकी  
 अपेक्षा रोग न होनेवेना हा अच्छाहै । रोग हमलोगोंके पाप  
 और अत्याचार तथा दारारिक नियम पालनकी भूल तथा  
 अनाकृता का विषमय फलहै । सब आचार्यकी स्वास्वय रक्षाके  
 नियम जानना और उनके अनुसार चलना उचित है । स्वास्वय  
 रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः मीषण रोगोंके हाथसे  
 रक्षा मिलतीहै । दारार समस्त और तज युक्त होताहै तथा  
 अनाह स्यादु बहुत नहीं हासकी । अतएव स्वस्वय रक्षाकी ओ  
 मोटा मोटी धतेहै इस अध्यायमें उहा सबको लिखतेहै । पाश्चात्य

सम्प्रदायके साथसाथ हमारे देशमें रोगोंकी  
 रचना की  
 सधयामों बहुत बढगइहै । मनुष्योंकी आरिभ और  
 ईश्वर हाथ  
 प्राकृतिक व्यवस्थामें इतने सब रोग नहीं थे ।  
 सारथ्य सम्प्रदाय  
 हम सम्प्रदायक अभिमानसे नितने फूले जाते  
 इतएव वर्य ।  
 हैं उनसे ही तरह तरहके कटिन रोग हम

छोगोंमें प्रवेशकर हमारे सुख सम्पद को ही नष्टर करुह

और भाराम हानके बाद रोगका भोगनो कटुमाना है परंतु औषधि का भाग पीछे भी भागना पड़ता है । होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़ता और ये शर्तों भी नहीं होती ।

नये और पुराने सब तरहके रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा

आविष्कारणी

को देखो ।

और चिकित्सकों ने अच्छी है । हैजे रोगमें

होमियोपैथिक इलाज का अमरकार दिख

जाता है सब मरमार में इसकी कीर्ति फल

गयी है । हैजे की तरह नरक और सायातिक रोग शायद हमरा बाद नहीं ह । इस भावना हैजे की यदि कोई चिकित्सा देता होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में प्रतिनयक भार अरामकारी

होमियोपैथिक ।

हानाही प्रकारकी शक्ति है । बहुतसे रोग

जो नहीं, सामान्यकारक उपर हैजा इत्यादि

के लक्षणान् हानका दवा दहीजाये तो अदुर्लभ हानही रोग दितुल्य माना रहता है । अथवा हानका पड़ना है । जब चारों तरफ़ सबके सबका इत्यादि अकामक रोग के लक्षण रहें तो इस दिनोंमें सब एक साथ होमियोपैथिक आशुति अथवा काम से इन सब रोगों का हाना रहता है ।

होमियोपैथिक

अनुभव

अथवा कुनवान सब रोग के लक्षणों की

सर्वदा प्रति हाना है । मेकली विरल कथान

में चिकित्सा का लक्षण रोगमें दूरा का सब चिकित्सा

अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

अदरक मिश्रण। पहिले ओ भोग होमिपैपिके नामसे मुह  
फेरबेतये अब बही खाग होमियोपैपिक सिवाय दूसरा  
कार इजाज नहों करने। होमियोपैपी मन सदा और विज्ञान  
की पक्षी दुनियाद पर आपन है। इसके विषयमें ऐसी भासा  
की आतीहै कि पादेही दिनोंमें देशभरमें सबसे अच्छी  
चिकित्सा ब्याडा यही समझी आवेगी।

॥ दूसरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यासम्बन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उनको निवारण करनेकी  
अवेदा राग न होनेदेना ही अच्छाहै। रोग हमलोगोंके पाप  
और अशुभचार तथा शारीरिक नियम पालनकी भूल तथा  
अच्छना का विफल्य कहै। अब आध्यात्मिक स्वास्थ्य रखाके  
नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है। आध्यात्मिक  
रखाके नियम पालन करनेमें श्रम, भीषण रोगोंके हाथस  
रक्षा मिलतीहै। शरीर सब और तब सुख दानाहै तथा  
अच्छा सुख बहुत नहीं होसकता। अतएव स्वास्थ्य रक्षाही आ  
मोटा मोटी कहेंहैं इस अन्त्यामें उहा सबको लिखतहैं। आध्यात्मिक

स्वास्थ्यके साथसाथ हमारे देशमें रोगोंकी  
रक्षा की

सबधायी बहुत बढ़गइहै। अनुष्णोष्ण आदिम और  
रिद्धि का

आहुति का अन्त्यामें इतने सब रोग नहीं प ।  
स्वास्थ्य का अन्त्यामें

इस स्वास्थ्यके अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें  
इतने सब ।

हैं उनमें ही तब तबके अन्त्यामें रोग हम

अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें अन्त्यामें



अथर्व मित्रेणा । पहिले ओ खोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरकेतये अब वही खोग होमियोपैथिक सिषाय दूसरा कार इच्छाज नहीं करते । होमियोपैथी मत सच्चा और विज्ञान की वही पुनियाद पर कायम है । इससे विषयमें एमो आशा की जाती है कि घाटेही दिनोंमें देशागमें सबसे अच्छी चिकित्सा प्रदायी वही समझी जावेगी ।

॥ दूसरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यासम्बन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उसको निवारण करनेकी अपेक्षा रोग न होनेसेना ही अच्छा है । रोग हमलोगोंके पाप और अन्याचार तथा दार्शनिक नियम पालनकी भूल तथा अशक्तता का विषमय फल है । सर्व मायारमको स्वास्थ्य रक्षाके नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः भीषण रोगोंके हाथसे रक्षा मिलती है । शरीर सबल और तज युक्त होता है तथा अच्छाई शत्रु बहूधा नहीं हासली । अतएव स्वास्थ्य रक्षाही आ मोटा मोटी बातें हैं इस अध्यायमें उहा सबको लिखत हैं । पाश्चात्य

सम्पत्ताके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्याभी बहुत बढ़गई है । अनुष्योकी आदिम और

प्राकृतिक अवस्थामें इतने सब रोग नहीं थे ।

हम सभ्यताक अभिमानसे जितने पूछे जाते

हैं उनसे ही तरह तरहके कठिन रोग हम

छोगोंमें प्रवेशकर हमारे सुख सम्पद को हँकर उरुक





अथर्व मित्रगा । पहिले ओ खोग होमिपैयिके नामसे मुह  
 फेरबेनेये अथ वही खोग होमिपैयिक सिधाय दूमरा  
 पाद इच्छाज नहीं करने । होमिपैयिक मत सधा और विज्ञान  
 की पद्धि सुनिवाह पर थायम है । इनके विषयमें ऐसा आशा  
 की जाती है कि पाठही दिनोंमें देशभर्म्म सधसे अच्छी  
 चिकित्सा प्रकाशा वही समझी जायगी ।

## ॥ दूमरा अध्याय ॥

### स्वस्थ्यासम्बन्धी नियमावली ।

राम होनेपर आयुषि द्वारा उनको नियारण करनेकी  
 प्रवेष्टा रोग न होनेना ही अच्छा है । रोग हमलोगोंके पास  
 और अन्धाकार तथा शारीरिक नियम पावनकी भूख तथा  
 अनाहारी का विषय है । सर्व साधारणकी स्वास्थ्य रक्षाके  
 नियम जानना और उनके अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य  
 रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः भीषण रोगोंके हाथसे  
 रक्षा मिलती है । अतः सबल और तज्ज युक्त होता है तथा  
 अनाहारी भूख बहुत नहीं हासकी । अतएव स्वास्थ्य रक्षाकी ओ  
 मोटी मोटी बातें हम अध्यायमें उगहा सधको लिखते हैं । पाठ्याथ

सम्बन्धके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्यामें बहुत बढ़ता है । मनुष्योंकी आरिध और

आरुति के कारणोंसे इनके सब रोग नहीं थे ।

हम मनुष्यों के अविमानसे अतिम दृष्टि जन

है इनके ही । ताह मरनेके अतिम रोग हम

पोगोंसे अवेच्छक हमारे सुख समूह का है अथ २५५

और आराम होनेसे धातु रोगका भोगना कट जाता है परंतु होमियोपैथिक का भोग पीछे भी भागना पड़ता है । होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़ता और यत्रणा भी नहीं होती ।

नये और पुराने सब तरहके रोगों में होमियोपैथिक चिकित्सा और चिकित्साओं से अच्छी है । हैने रोगों में होमियोपैथिक इलाज जा समझकार दिखाना है सब समझ में उसकी कार्रवाई फैल रही है । हैजे की तरह तबल और साधारण रोग शायद हमरा कार नहीं है । इस भीषण हैजे की यदि कोई चिकित्सा है तो होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में प्रतिरोधक और अरोग्यकारी दानोही प्रकारकी दानि हैं । बहुतस रोग यथा मर्दी, नासाप्रकारक उपर हैजा इत्यादि

ए मूत्रवात हाजहा दवा दहीजाये ता मरुग्ति होतही रोग बिलकुल जाता रहता है । भयंकर दवाका पड़जाता है । जय चारों तरफ बचक बसरा इत्यादि संक्रामक रोग फैल रहेहों उन दिनोंमें एक एक मास होमियोपैथिक आशुधि सेवन करन से इन सब रोगों से बचा रहसका है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा कुनियाह मनुष्य पर काममें है इसकी सर्वदा जीत होती है । मेकहों बिगल बचाव और विपरीतों मानकी दानमें दाना कर बह चिकित्सा

प्रचाली हमरा दशममें कुर्बान फैलजा है । बहाबमें ता मास एक छहम छान मासमें भी एक होमियोपैथिक चिकित्सक

अथय मिलेगा । पहिले जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरबेतेथे अब वही खोग होमियोपैथिक सिषाय दूसरा कार इजाज नहीं करने । होमियोपैथी मत सच्चा और विज्ञान की पक्षी दुनियाद पर कायम है । इसके विषयमें ऐसी भाशा की जातीहै कि छोटेही दिनोंमें देशम्में सबसे अच्छी चिकित्सा प्रयाची वही समझी जायगी ।

॥ दूसरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यामम्बन्धी नियमावली ।

रोग होमेपर औषधि द्वारा उसकी निवारण करनेकी अपेक्षा रोग न होनेदेना ही अच्छाहै । रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पालनकी भूल तथा अशक्तता का विषय है । सब माध्यामिको स्वास्थ्य रक्षाके नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः ग्रीष्म रोगोंके हाथसे रक्षा मिलतीहै । शरीर स्वच्छ और तज युक्त होताहै तथा अवाह भृशु बहुधा नहीं हासकी । अतएव स्वस्थ रक्षाकी जो मोटीमोटी बातेंहैं इस अध्यायमें उन्हा सबको लिखतेहैं । पाश्चात्य

सम्बन्धोंके साथसाथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्यामें बहुत बढगइहै । मनुष्योंकी आशिम और

प्राकृतिक अवस्थामें इतने सब रोग नहीं थे ।

हम सङ्घर्षक अभिमानसे जितने पूछे जाते

हैं उनमें ही तज तरहके कठिन रोग हम

खोगोंमें अवेनाकर हमारे सुख सम्बन्ध हो हैं नहर २५५

भार भाराम होनेके बाद रोगका भोगनो कष्टभाता है परंतु औषधि का भोग पीछे भी भागना पड़ता है । होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़ता और यशसा भी नहीं होती ।

नय और पुरान सब तरहके रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा और चिकित्सामों से अच्छी है । हेज रोगमें होमियोपैथिक इलाज जो चमत्कार दिख जाता है नय सप्ताह में उसकी कार्रति फैल रहा है । हेज की तरह नदय और सायानिक रोग शायद हमरा कार नहीं है । हम भीषय हेज की यदि कोई चिकित्सा है ना होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में अनिवेद्य भार भारामकारी दानाही प्रकारकी कामि है । बहुतम रोग यथा मरी, नासाग्रकारक उपर हेजा इत्यादि क मूषवान दानदा दवा दरीआवे ना मरुति होनही रोग विरुद्ध जाना रहना है । यथा दवा पड़ता है । जब थारो तरह बचक हमरा इत्यादि मजामक रोग पैदा रहरो उन दिनोंमें एक एक माथा होमियोपैथिक आयुर्वेद मेहन करन मरुन सब रोगों से बचा रहमना है ।

चिकित्सी बुनियाद नय पर कायम है उर्ध्वकी दवाइयोंका  
मरीदा जीन दाना है । मैकरो विरल कथाय  
और विज्ञेका जानकी बागमें हुना कर बह चिकित्सा  
प्रदारी मजाम दशकमें दुर्बल केकरह है । बहुतसे से माथ  
रह कथय ह ह न रहे बी एक होमियोपैथिक चिकित्सक

अथर्व मिसेगा । यदिहो जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह  
फेरबेनेधे मय यही खोग होमियोपैथिक सिखाय दूमरा  
कोर इबाज नही करने । होमियोपैथी मत सच्चा और विज्ञान  
की पद्धी मुनियाद पर थायन है । इसके विषयमें ऐसी भाशा  
की जातीहै कि पादेही दिनोंमें देशमेंसे सबसे अच्छी  
चिकित्सा पद्धती यही समझी जावेगी ।

## ॥ दूसरा अध्याय ॥

### स्वस्थ्यामस्वन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उसको निवारण करनेकी  
अवस्था रोग न होनेदेना ही अच्छाहै । रोग हमलोगोंके पाप  
और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पाठनकी भूल तथा  
अशक्तता का प्रियमय फलहै । सर्व आचारणकी आशय रक्षाने  
नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है । आशय  
रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः मीथ्य रोगोंके हाथसे  
रक्षा मिलतीहै । शरीर स्वस्थ और तब युक्त होताहै तथा  
अच्छा मृत्यु बहुधा नहीं आसकी । अतएव स्वस्थ रक्षाही जो  
मोटीमोटी बानेहै इस अध्यायमें उहा सबको लिखतेहै । पाश्चात्य

सम्प्रदायके साथसाथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्यामें बहुत बढ़गारहै । मनुष्योंकी आरिज और

प्राकृतिक अशक्तताके इतने सब रोग नहीं थे ।

हम सम्प्रदायके अभिमानसे अतिन दृष्टे जाने

हैं उनमें ही तरह तरहके कठिन रोग हम

खोगोंमें अवेजकर हमारे सुख सम्पद को ही नष्ट कर रहे हैं ।

और माराष्ट्र होनेके बाद भोगना भोगना चलाता है परंतु भोगधि वा भोग पीछे भी भोगना पड़ना है । होमियोपैथिक चिकित्सा में हमप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़ता और देखना भी नहीं होती ।

अब और पुराने सब तरहके रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा

और चिकित्सामों में अच्छी है । ऐसे रोगमें  
होमियोपैथिक इलाज जा अमरकार दिख  
जाता है सब अमर में उसकी कीर्ति फैल  
गई है । इस की तरह तबले और साधारण रोग साधार  
हमरा काइ नहीं है । हम भीषण हैत की यदि कोई चिकित्सा  
है ना होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में अनियोजक और अरोग्यकारी

बानाही प्रकारकी दानि हैं । बहुतसे रोग  
यथा मरी, मासाप्रकारके उपर हैता इत्यादि

क मृगशाल जानवा देता दहीजाये ना अष्टुगित होनही रोग  
दिग्गदम जाना रहता है । अथवा हडका रहताना है । जब थारों  
तबले कचक अमर इत्यादि अजामक रोग फैल रहें तब  
दिनोंमें एक एक साथ होमियोपैथिक आचार्य अथवा जान स हन  
अथ रोगों में बचा रहता है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में सब रोग काइसदे उमीदी

मरीदा जान दानि है । मेकहों विरल कचार

और विरल वा जानकी जानमें रोग काइसदि चिकित्सा

अथवा अमर इत्यादि उमीदी फैलाई है । अथवा में ना जान

अथवा अमर जानमें ही एक है होमियोपैथिक चिकित्सा

रधन ( पकाना ) दूसरा चयन ( चयाना )  
 भोजन करनेका उद्देश है कि खाइयुक्त चीज पचकर रक्त  
 का साथ मिलनावै और शरीरके दैनिक भक्षण (दिन में  
 जो कुछ शरीर चटे भयात जितनी शक्ति कम है) को पूरा  
 करे। जो भोजन नहीं पचता उसमें शरीरका अपचय पूर्ण  
 जाना तो दूर रहे और तरह तरह की रोगधिया उपस्थित हो  
 जाती हैं। इसलिये हमपर पूरी दृष्टि रखनी चाहिये कि भोजन  
 बनाने समय कोई सामग्री कच्ची न रहनाये। बहुत परिमाण में  
 धी गरम मसाला, व्याज इत्यादि प्रतिदिन भोजन करनेसे परि-  
 पाकशक्ति कम होजाती है और कभी कभी उदरामय भी  
 होजाता है। भोजन करने समय प्राण को धीरे धीरे अच्छी तरह  
 चपाकर खाना चाहिये। खान का पदार्थ यदि अच्छी तरह  
 चबाया न जायेगा तो वह मुहकी गरम माथ अच्छी तरह  
 न मिलसकेगा और ठीक तरह से हضم भी न होगा।

हम लोगों का प्रधान भोजन पदार्थ दाढ़ राटी और  
 चावल इत्यादि है। सुबह को दाढ़ राटी  
 प्रधान पदार्थ।

चावल इत्यादि भोजन करना और रात  
 का पूरा पराठे खाना ठीक है। बच्चों की रात है कि जिन  
 उमरोंमें मेहरिबा का अधिक जोर होता है वही रातको  
 चावल खाना अनुचित है। चावल व अपेक्षा राटी अधिक  
 पुष्टिकर होती है। मयदाकी रोगी की अपेक्षा भाटे की  
 रोगी अच्छी होती है क्योंकि उसमें किंचित परिमाण में  
 भुमी मिश्रित होने के कारण हल मांस होती है। रोगी इस  
 प्रकार की देखने पचने वाली रोटी नहीं खानी चाहिये।

३२ ।

दाढ़ दाढ़ भाजी तरकारा आदि हमारे  
 भोजनके प्रधान उपकरण (प्रधान माध्य)



कर जान की चीजें) हैं। रागीको उरदकी दाल नहीं चाहिए। मूग मसूर बना और मटर की दाउ अच्छी रहे। दाउ हम लोगों के तिये पुष्टिकर साथ पदाय है क्यों कि हममें मोन आनीय सबभारज पदार्थ और और चीजों का अभाव अधिक है। उरद रागीकी हालत में दाल बना ठीक है।

दाउम मोन उरदम जाना है। मसूरह हमक मच्छी अच्छा नाई का जाना है। मच्छी का भागवा [रमा] मूग को बनाता मूग रागी क तिये छाट छाट [काह] और [मसूर] मच्छी भागवा दमा चाहिए बहुत बड़ा टिलकादार भगवा आदीदार बड़ी झींगा मछली रागीक भागम नहीं बना चाहिए क्योंकि बहुत दूर में दामम वाली है। \*

हम लोगों क दाममें आज कल मोन जाना दिन प्रति दिन ना गरी है। हममें आज नहीं कि मोन एक उरदा चीज है क्यों कि उरद पचकर नाह। मूगक में भागवा नाकमवेदा करना है। उरदना उरदा जान की चीज हममें भी दमा कारणों से हम हमका कल वेदा नाह। गहन जमानेमा मोन का जानना। सब जमान द हि बाज दते आ मोन बजारों में विक्रम कर पना जाना हुआ है कि मोन कादिज नहीं जाता। उरद में हम दमा का मोन जान क सबब से आ कतिन मोन दाम में जाना है किमूमों क पनी मोन जान क

\* सब कारणों से जाना है कि जो काम हमका मछली और मोन का है उनका सब है वह उरदका है हमका सब है जो मोन नहीं मोन दाम में जाना कति से है किमूमों क पनी मोन जान क है हमका सब है जो हम चीजों का उरदका सब है ।

यह बर्तन नरह के कापड़ आती रहने के सबब से यह सब बुराईया  
देवन में नहीं आती। दूसरा ना पचने वाला मांस तैयार करना  
है। हम लोगों का कैसा पचन है पचन काहेको भूल बड़ना  
चाहिये मांस तैयार कराने के साथ धी, मसाला, प्याज पौन  
पीज मा बसवान मिला दते हैं। क्याल करना चाहिये कि ऐसी  
ऐसी चीजें ऊपर बुराई पैदा करेंगी ?

महारी एव  
हीन बह ।

तरकारियों में बहुतों पुष्टि कर और  
उत्तम हैं। हमें यह आह देना है जहाँ भविष्य  
मांस का नका दिवा है वहाँ भी केवल मांस  
मांस बहल उससे मांस तरकारी का अधिक

मांस बना चाहिये। हम विषय पर ध्यान आदोलन चल रहा है।

तरकारियों में आज बरबस क्या केला, करपी कटहल  
के पीज तोरों को भी इत्यादि उत्तम तरकारियाँ हैं। कभी  
कभी कटपी तरकारी भी बनाई जाय। जैसे कटहल परपल  
ह पलों का इत्यादि बहुत कापड़ें मर है। पनी दाक अती के  
पराई बहुत मांस उचित नहीं है। बिना उनमें भार अतीव  
पराय रहनक कारण हमी कभी पनी दाकहि का भी हमार  
दरीर का अवरुद्धता पड़ती है। तात्पर्य कि यह दाक दुपय्य  
है। जहाँसे बहुतों का बहल सुखाई और कापड़ें मर हैं।

दूसरा मांस क्या पचना, जामुन, अमूर केव अमर, गर  
मा, कटहल कटहल बहल इत्यादि। नरियल मूय आमेर  
राम हड्डि दाक है। कटहल अधिक मांस लेना राम दाक  
दाक है दूध का दुग्ध दाक है। समस्त के दुग्ध सिवाय अर  
अर लेना पराद करे है जिसकी दाक मनुष्य बहुत दिन  
नक उचित रहसके। दूध का अमर हमार दाक है मर

गव उपकरण थड़ा अच्छी तरहसे मिछेहुए हैं । गायका  
 प्राय हमार देशमें प्रचलित है । परन्तु भेसका दूधभी  
 नहीं होता । दुध इतना उपकारा और भावदयकीय पदार्थ  
 है इसीलिये हमार देशमें गौका पूजनाय जाना है । ब्रामा  
 और चासी रागमें बपरका दूध अच्छा होता है । यहाँ  
 बिये माता के स्तन का दुग्ध नितना उपकारा होता है  
 सहज में पचजाता है उतना दूसरा नहीं होता । यदि माता  
 दुध न मित्र सके तो गधेया का अथवा गायका दूध  
 नी मिलाकर दना चाहिये । कभी कभी ऐसा दया जाना है  
 दूध के द्वारा बटन से सकामक राग जगह जगह फैल  
 ते हैं दूधन और भी उत्तम उत्तम पदार्थ तयार होते हैं  
 या मकनन थी, सामा अच्छा है ।

दो समय प्रधान आहार और दो समय कुछ जलपान  
 करना ठीक है । जलपान के समय अधिक मिष्टान्न भाजन  
 करना दूषमाय है । कुछ घाड़ मफल भूत, और भजस्था  
 नुमार पूरी बचोड़ी लुका दुई दाख  
 जलपान  
 मुरमुरा इत्यादि बटन ठीक है । भोजन  
 के समय निदिष्ट रहना उचित है । प्रतिदिन नियमित समय  
 पर यथाचित आहार करने से मनुष्य प्राय बहुत सा  
 पीडाओं के दाय से बचा रहसक्ता है ।

भाजन के उपरान्त दान और मुह अच्छातरह साफ  
 करने चाहिये । दातों में खाद दुई यदि काद चाप गया  
 रहजाये ता यह मुह में दुर्गंध पैदा करता है और दातों  
 का कमचोर करता है । दातों का समुचित से चालन नह

जाने हैं। दानुन करना सबको कायदा करता है विश्वकर दानुन  
जिनके मनुष्य निर्मित पदगपदे और महजहा उनसे र  
गिरने लगता है उनको कायदक है।

## [२] जन—

बहुनमे सार उल्लेख बिना औपन रगा नहीं ह। सखी ।

सख उल्लेख मभायसे हा भावचाल हैजा

मादि बहुनमे सकामक रागोंका इनन

मादुनाय दासपडनाई कहना हागा कि

धगा रग में काह मज्जा गालाय ता दे हा नहीं

और पुगन समक जिनन नागापदे सय मूगपदे । और डा

है वहमी इनन मैल हागनेई कि उनन जल पनवागोछा

अवदा सो उपपन्न करता है । यदि नदाक पन मि

सक ना वह सचम मज्जा है । यद्यपि धरा अनुमं नदीसा ज

मैला होजाता है किन्तु साफ करनस यह ममानोस साफ

होजाता है । पश्चिम प्रदेशका तरफ कूर का पानी उपहार

हिपाजाता है । जिस तातापने बोग छान करनहीं और

कपट धानेहो उसका उल्लेख कनी न पाना जाहये । जिस

तातापका उल्लेख पानक काममें मनाहा उममें छान करना

कर काहपोता धर्जित है । जिस ताह तागापका मज्जा

पाना न मिलसके वहा कूर का पन उपहार करना ब दिना ।

पाना पाना को मूत्र मीगकर मय धानू मेर जैर कोप

रा सार करनना बहिष । इस निषमपर धनका और

यवन करनेम नेतापनाई वि सर नेन दन्विता और

क मज्जा है इन दुर्गम रागम नई तन ।

शूलित और मैला पानी हा हमारे दशमें रोग  
उत्पन्न करने का प्रधान कारण है। बंगाल के छोटे

रोगों का नाम है

रोग के लिये भी

रोगों का नाम है

छोट गाँवों में नलक बुरे के लिये

है और उनका उक्त मानो साक्ष्य रोग

का है। जल्द दावसहा प्राय हैजा आदि

सब मजामक रोग एकस्थान से दूसरे

स्थान में फैलता है । सिर्फ पीन ही के लिये नहीं

मात्रान् वनात भाग मान करने के लिये भाग एकत्र जल्दी

भावश्यकता है ।

रोगों का किमा प्रकारकी उत्पत्ति का भी पीनी चाहिए ।

राज्य का शासनमें साथ साथ शराब आदि विकृत

वस्तुओं । भविष्य नरकात् पानाभी अनुत्पन्न है ।

### ३ । वायु—

वायु का तत्त्व वायु का नाम है वायु के लिये गरम

म कल्पित है । वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

का नाम है वायु का नाम है वायु का नाम है वायु

निश्वास प्रश्वास द्वारा प्रायः १४ घनफुट वायु प्रतिघट्टामें ग्रहण करना है । इसीसे एक कमरे या काठरीमें बहुतस आदमियोंका

साना नहीं चाहिये । आटेके दिनोंमें मर्दोंके  
 (१२) साना

कारण बहुतस मनुष्य सिडकी दरवान  
 मय बेइकर क सोने हैं यहा तक कि छोड़ छोटा  
 छेद हात-है उसेमों बड़ करखेने हैं और फिर जाऊँछों  
 महित उमीमें शयन करनेहैं । ऐस कमरेकी वायु थोड़ी  
 देरमेंहा निश्वास प्रश्वास द्वारा जहरक समान होजातीह ।  
 चाहिये कि ऐस मौकेपर कोठकी द्वा आमने माननेकी मिड  
 दिया भवद्वार खोलें ।

रहनका घर सुखा और साफ रहना चाहिये सानका  
 मकान नीला रहनेम और उममें साछ  
 (१३) मकान  
 रहनेमे सान नामा इत्यादि नाना प्रकार  
 की कड़िन पीछाये उपस्थित हानी

है । प्रातः काछ उठते ही मकान क सब दरवाज  
 निडाँटपा खोल देना उचित है और फिर मकान  
 साफ किया जवे । यदि क समय मकान की  
 वायु श्वास द्वारा शरीर म निबले हुए दूषित  
 माप से तथा उन्नत और दुग्ध मय हो जाती है  
 त्रिममे स्वास्थ्यको अत्यन्त हानि पहुचनेहै । इसकारणपर ध्यान  
 रखनाचाहिये कि प्रतिदिन सच्छ द्वा घरके भीतर आनी  
 जानीरहे ।

सच्छ अन्न और वायुकी तरह स्वास्थ्य रक्षा लिये मूय  
 का प्रयोग और उष्ण परमावस्थाहै । त्रिम प्रकारमुपरे

रना भार खलना यहा एक मात्रह । हमार पूज्य आग  
 रिधमा हानेय इसासे उनकी आयुमी दीय होनीथी ।  
 आज कावक युवक कम उमरमें ही जिलामी होजातेरैं ।  
 और परिधममे डरने लगतहैं वम यहीं कारणाहै कि उनको  
 गोंमे कष्ट पाना पडताहै ।

## ५। परिधेय ( कपडे पहिनना )

सभ्यताक अनुसार तरहतरह क कपडे पहन जातहैं  
 कपडा  
 सही नमी से शरीरकी रक्षा करमाही  
 अन्याय  
 कपडपहननका प्रधान उद्देशहै । श्रुतु यदबने  
 साथ ही कपडमी बदलन चाहय । हम आगोंका देश प्रीधम  
 धानहै अनपय सयदा गरम कपड पहननकी हमारे दासमें  
 आयश्यकता नहीं है । सयदा गरम कपडसे शरीरका ढक  
 बन न (यथा कलाजन माजे इत्यादि ) शरीरकी सहन शक्तिता  
 प्रहाजनाहै भार जगमी सही लगतही हुकाम आसी  
 तमें दूद इत्यादि तरह तरहक राग उपालिन होने लग  
 हैं ।

बहिष्ठ और परिधमा मनुष्योंकी अयक्षा रोगी और बुद्ध  
 मनुष्योंका तथा युवा पुढनोंकी अयक्षा दूद और पाल  
 रोगी गरम कपडकी अधिक आवश्यकता पडताहै किन्तु सही  
 द मयम सयदा कलाजनम शरीरका दूके रक्तना और मका  
 के निष्का प्रदूष मय दूद रक्तना अनुचितहै गरमाक दिनोंमें  
 दूना कपडा और सरदाक दिनोंमें अयजानुसार गरम कपडा  
 पहिनना चाहिये ।

पहिने के कपड़े

कपड़े लगे आदम

हमारे देशमें एक ऐसीबुरी रिवाजहै कि

उमका जिकर किये बिना हमसे कहा

रहा नहीं जाता । यहजर्म मनुष्य जिस

समय कहीं जातहै मनुष्यताके बारे शरीरके ऊपर अनापशनाप

कपड़े खादलनेहैं । गरमोंके दिनमें गर्मानमें तरहाकर शरीर और

कपड़ों में कैसी दुगंध आन लगनोहै और कैसे मैले हं जाते हैं

यह कुछ कहन की बात नहीं है । इतनी हैसियत तो होती

नहीं कि उनको ठीक समय पर धोयास धुखाते

रहें फिर इही दुर्गन्धमय कपड़ोंको पहिनन पहिनते

शरीरमें पीडापे उपलितहो तो इसमें यह बात कयाहै ' २ कपड़ा

बाह जैसा पहिना जाय उमका स्वच्छ रहना परम आवश्यक

है । पहिनके कपड़ोंका स्वच्छ जखसे धाकर और धूपमें

सुखाकर फिर पहनना चाहिये । मैलापन और अनाचार

हमारे देशमें प्रतिदिन बढ़नाही जाताहै ।

पहिनेके कपड़ोंकी तरह आदम विज्ञानके कपड़ोंकाभी साफ

रहना निमान आवश्यक है । हा तीन दिनपाद विज्ञानकी

आबर इत्यादि भय पानीसे धोकर धूप

में सुखाटना चाहिये । धाखकोई पहिनने

तथा ओढ़ने विज्ञानके कपड़ोंकी भार भी

अधिक सफाई दरकारहै । यदि कपड़ोंमें मल मूत्रादि की

किसी प्रकार भा दुगंध आनी रहगी तो कपड़ेका योग्य

पहनना समर्थहै ।

## ६ । स्नान

स्नान करना चाहिये हमारे देशमें यह किसीका सिखा





हमारे देशमें एक पत्नीपुत्री रिनाउड़े कि

उमहा जिकर किये बिना हमसे बहा

रहा नहीं जाना । बहुतभ मनुष्य जिस

समय नहीं आतेहैं मज्जनाके मारे शरीरके ऊपर अनापशनाप

करडे बाइनेनेहैं । गरमोंक दिनोंमें पम्पोंनेमे तरहाकर शरीर और

कपड़ों में कैसी दुगध आने लगनेहै और कैने मैले हे जात हैं

यह कुछ कहन की बात नहा है । इतनी हैसियत तो हाती

नहीं कि उनको ठीक समय पर धावाम पुछघाते

रहें फिर इही दुर्गवमय कपड़ोंको पहिनन पहिनते

शरीरमें पीडाऐ उपस्थितहो तो इसमें नह घात कबाहै । ७ कपडा

बाह जैसा पहिना जाय उमका मज्ज रहना परम भाव

हकह । पहिनके कपड़ोंका खच्छ जडसे धाकर और धूपमें

सुखाकर फिर पहनना चाहये । मैसापन और अनाचार

हमारे देशमें प्रनिदिन बढ़नाही जाताहै ।

पहिननेके कपड़ोंकी तरह भाहन बिहानके कपड़ोंकामी साफ

रहना निमान आवस्यकीह है । द्वा तीन दिनबाद पहिनेकी

खाबर इत्यादि सब पानीसे धोकर धूप

में सुखावनी चाहिये । धावकोंक पाहनन

तथा ओढने जिहानेके कपड़ोंका भार भी

अधिक मफाह दरकारहै । यदि कपड़ोंमें मल मूत्रादि की

किसी प्रकार की दुगध आनी रहगी तो बचका बीमार

पडजाना समयहै ।

## ६ । स्नान

स्नान करना चाहिये हमारे देशमें यह किसीका निमा



नियमावली व नोच चकनेध किन्तु यदे जोयका अवसर है  
 वि माइकल शिखाके दोपसे धनका व धन ड का हाता जाताह  
 और इसी कारण शारीरक नियमावलीकी भावदयवता  
 और भलाइकी मोरखे लागोंको विमुख देखतहै । ऐसा हाने  
 से हो अपंग् खाने मादर यत्न पहिनेने मादिष प्यति  
 कमल यदुनका कृपण दाताहै ।

## तीतरा अध्याय ।

एगो पों सुलगा ।

“ ११ ” दिह दिह प्रवार ओरधि उन्नीही उसी  
 प्रवार उन्नी । सदा सुधुना उन्नीही मन्दर रागीका  
 भदा सुधुना व तिय दरवार दयातु दृश्य और परि  
 धना दृष्ट मः । गिनुक बरनायदिय । सोता नित मदान  
 में हा बह मदान, नडा । विद्याम जार पहिनेके करद  
 मादि तार जार दृष्ट राग दाहिय ।

सोता “ दाना जलदा दाना धीरा दाना दाना दाना  
 दाना दाना । दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 ने दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना

न दाना । दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना

दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना

जोयका दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना  
 दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना दाना

महो। रोगीकी याम किसी तरहकी गड़बड़ और बेफायदा बकबाद नहीं होनेदेना चाहिये ।

शय्या

रोगीकी शय्या कोमलहो । साफ सुपटा रहना सबक लिये ही अच्छा है बिना

का रोगीको लिये ता आवश्यकहो ही । यदि रोगी बहुत दिनतक बीमार पड़ा रह तो उसका मादने पिछानेका बप होका राज धाकर तब धूपमें सुखाना चाहिये । साधारण तोरपर मा शय्यादि वस्त्रोंका धूपमें सुखाना अच्छा है इससे शय्या कोमल रहताहै और दुर्गंध मिटजाताहै । रोगी का कपड़ राज बदलवानाही अच्छा है, परन्तु यदि सब मनुष्य ऐसा न करसके तो वा जाड़ी कपड़ रखनसे काम चलताहै । राज उम्होंमेंसे एकका बदलवाइ और दूसरका सावुन और गरमपानीसे धोवाल । कपड़ बहुमूल्य माल नही परन्तु उनका अच्छा रखना परम आवश्यकीय है । और यमा मय करभनह ।

यह परिचित है राजाजानुताहै कि सफाई माना रोगीका जीवनह ।

भक्षण

प्रतिदिन दानामय घर और शय्या, भाइ हाजरा । गहान धूपमें सुखानेना और कपड़

रख धोना परम आवश्यकहै । प्रतिदिन रोगीका मुँह धुवना दानुन त्रिभि । कथना यदि आवश्यकता पड ता रोगीका माल कपड़से धोना और यदि रोगी मरीच चलन हाजरा ता माल और प्रयाचकार मायधानाम माल करना परमावश्यकीयहै त्रिभि रोगी का तिनना माफ । रोगी का रोगी उनका प्रयाचकार । रोगी का रोगी

तद्वत् पात्रा । नयेरोग । ये कठिन पच्य वमा न दना  
 चाहिये । रोगाकोल्ये धनलो धानका धोजे  
 ५१४ बच्छो होता है । यह अन्त्रो पचजाता है ।  
 सावधाना बालो दूध इत्यादि बहुत देरतक रक्छरहनेमे  
 कराव दोनात है इसलिये १ । ६ घण्टेक रक्छेरहनेकयद् फिर  
 इनको न खिलावे । जिस जिस तरह रोगीका हालत बदलतो  
 जाय उसी उमतरह उमक पच्यकोमी बदलत जाना  
 चाहिये । यदि उदरामय होतो फल मूल और दूध न देना  
 चाहिये । यदि कोष्ठ बद्धता होतो यह सब धात्रे छोडा  
 पाडा दाजामका है । यदि रोगीको प्यास लगतो उन्नम  
 स्वच्छ अन्न जितना चाहिये दना उचित है । रोगीको प्यास  
 लगीरह और उसको ठंडागनी न दियाजाये तो तबलाफके  
 ऊँर उस यह एक और तबलीक होता है । जिस समय  
 रोगीकी प्रकृतिकी अलकी आवश्यकता है यदि उस समय  
 इसको जल न दियाजाय तो यह बड़ी भूषता है ।

रोगीको एकमात्र बहुतसा खानेका दना अनुचित है ।  
 बहुतसा परिश्रम बचानकलिय और रातका रोगी धार धार  
 उठकर खानको न मागे इसलिय उसे पेटमर कर सिछादेना  
 बहुतही बुरा है । नियत समयपर थोडा थोडा रोगीको कई  
 बार करक पच्य दना उचित है । रागा यदि विन्बुलही  
 बुबुल होजाये तो आवश्यकता से अनुमत्त एक घण्टा  
 भयना बाये घंटाक अंतरसे पच्य दियाजाताह । 'थोडा  
 थोडा किन्तु धारधार यही रोगीका पच्य दनका नियम है ।

रोगीके मकानमें उसके सामनही खानेकी धात्रे रखदना  
 अनुचित ॥ । जिस मकानमें रोगी रहता है उसको हवा  
 दूषित होकर कारण खानेकी धात्रे बहुत अन्न पिगइता

महीं। रोगाकी पास किसी तरहकी गहथड और घेफायश  
नकयाद नहीं होनेदेना चाहिय।

**बुद्धि**

रोगीकी शय्या बामलहो । साफ सुथरा

रहना सयब लिये हौ अछा है विशय

कर रागाज लिय ना भावदयकहे ही। यदि रागी बहुत दिनतक बीमार पड़ा रह तो उमरक मोड़न बिछानेक बग हाका राग धाकर नम्र धूपमें सुखाना चाहिये। साधारण मोरपर भी शय्यादि वस्त्रोंका धूपमें सुखाना अच्छा है इसन शय्या कामत रहताहै और दुर्गंध मिटजाताहै। रागी क बगइ राज बदलवाइनाही अच्छा है, परन्तु यदि सब मनुष्य ऐसा न कामके तो दा आदी बगइ रखनम काम बज्जनाहै। रोज उन्हीमेंत एकका बदलवाइ और दूसरका साबुन और गरमपानीन धाहाल। बगइ बहुतमय मरना नना वस्तु उनका खरख रक्खना परम भावदयकीय है। एर पना सब कामतह।

एह गुरु ३१। कलात्राकाले कि मन्त्राह माना रागीका जायनहे ।

**अभिलेख**

प्रतिनिधि दानोपक्रम पर भीतर शब्दाणि काट

हाउना विधान धर्म सुखलादेनः श्री कथा

॥ १ ॥  
 ॥ २ ॥  
 ॥ ३ ॥  
 ॥ ४ ॥  
 ॥ ५ ॥  
 ॥ ६ ॥  
 ॥ ७ ॥  
 ॥ ८ ॥  
 ॥ ९ ॥  
 ॥ १० ॥

तदप्य पाहा । नपरोग । ये कठिन पथ्य क्या न दना  
 चाहिये । रोगीको लिये पनलों खानेका घेने  
 ११४ मन्गो हातोहै । यह उल्दी पचनाताहै ।  
 भावुदाना बालों दूध इत्यादि बहुत देरतक रक्यरहनेमे  
 सराब होजातहै इसलिये १ । ६ घट्टक रक्यरहनेकबन्धु फिर  
 इनको न सिलावे । जिस जिस तरह रोगीको हालत बनलती  
 ताब उसो उमतरह उमक पदवकोनों बदलन जाना  
 चाहिये । यदि उदरामय होतो फल मूल और दूध न देना  
 चाहिये । यदि कोष्ठ बन्दना होतो यह सब चीजें थोड़ी  
 थोड़ी दाजायछाहै । यदि रोगीको प्यास लगेतो उजम  
 स्वच्छ जल जिनना चाहिये दना उचितहै । रोगीको प्यास  
 लगारहे और उमको ठहागानी न दियाजाये तो तकलीफके  
 लार उस यह एक और तकलीफ होतीहै । जिस समय  
 रोगीको द्रव्यको जलकी आवश्यकताहै यदि उस समय  
 इसको जल न दियाजाय तो यह बड़ी मूर्खताहै ।

रोगीको एकसाय बहुतसा खानेको देना अनुचितहै ।  
 बहुतसा परिश्रम बचानेकेलिये और रानछा रोगी धार धार  
 उठकर खानको न भागे इसलिये उसे पेटमर कर सिलादेना  
 बहुतहा बुराहै । नियत समयपर थोडा थोडा रोगीको कई  
 बार करके पथ्य दना उचितहै । रोगी यदि पित्तबुलही  
 दुबैठ होजावे तो आवश्यकता के अनुसार एक घण्टा  
 कपवा काये घंटाक अन्तरसे पथ्य दियाजाताहै । "थोडा  
 पाहा किन्तु धारधार" यही रोगीको पथ्य देनेका नियमहै ।

रोगीके मकानमें उसके सामनेही खानेकी चीजें रखना  
 अनुचित है । जिस मकानमें रोगी रहताहै उमकी हवा  
 दूषित हानक कारण खानेकी चीजें बहुत उन्द बिगड़ना





महम पाडा (नयरोम) में कठिन पथ्य बना न देना  
 चाहिये। रोगीको लिये पनटों खानेका ध्यान  
 १५ रखना चाहिये। यह जल्दी पच जाता है।  
 साबुदाना खाली दूध इत्यादि बहुत देना न देना  
 जराब होजाता है इसलिये १। ६ घण्टे तक रक्खेर देनेका इरादा फिर  
 इनको न खिलावे। जिस जिस तरह रोगीका हालत बनता  
 जावे उसी उमतरह उमक पथ्यको भी बदलत जाना  
 चाहिये। यदि उदरामय होना फल मूल और दूध न देना  
 चाहिये। यदि कोष्ठ बन्दना होना यह सब चीजें थोड़ी  
 घेंडी होजासकती है। यदि रोगीको प्यास लगती उत्तम  
 स्वेच्छा उत्तम जिनता चाहिये देना उचित है। रोगीको प्यास  
 लगी रहे और उसको दहागानी न दियाजावे तो तकलीफ  
 ऊपर उस यह एक और तकलीफ होती है। जिस समय  
 रोगीकी प्रकृतिको जलकी आवश्यकता है यदि उस समय  
 इसको जल न दियाजाय तो यह बड़ी मूर्खता है।

रोगीको एकमात्र बहुतसा मनेको देना अनुचित है।  
 बहुतसा परिश्रम बचानेकेलिये और रातका रोगी धार धार  
 उठकर खानेको न मागे इसलिये उसे पेट भर कर भिला देना  
 बहुतहा बुरा है। निश्चय समयपर थोड़ा थोड़ा रोगीको कई  
 बार करके पथ्य देना उचित है। रागा यदि दिल्बुलही  
 दुबल होजावे तो आवश्यकता के अनुसार एक घण्टा  
 बादवा साथे घटाक अंतरमे पथ्य दियाजाता है। "याहा  
 घेंडा हिनु बारबार" यही रोगीको पथ्य देनेका नियम है।

रोगीके मकानमें उसके सामनेही खानेकी चीजें रख देना  
 अनुचित है। जिस मकानमें रोगी रहता है उनकी हवा  
 दूषित होदेके कारण खानेकी चीजें बहुत जल्द बिगड़ना



ममैवाद्या हासन और उमकी रज्ज्यावे विन्द काम एकके  
उमका अतःपुष्ट करना अनुचित है । यदि वाह गान गानो  
म कहना भी होता ददुष्ट रज्ज्यावे म-म-का कहना चाहिये ।  
रोगीने प्रमद और मनुष्य रज्ज्यावे रज्ज्यावे रज्ज्यावे ।  
रोगीने नाम बहुर मोरकी प्रमद और उमका सारी  
कामका वरिष्ठमै फगा सुना विन्दु विन्दु है ।  
हमारे देशमें शिवा एका नून लाली है कि ज फगी यह  
शिवा एका नून लाली है तो दुष्ट वृत्त अष्टवृत्त वरिष्ठमै भार  
शेवा भार १ वृत्त गिराका उमके विन्दु अशरी अनुन  
मत मत प्रमोशन विध निना रज्ज्यावे ।

### चौथा अध्याय—

**रोगी शराया :-**

१।—सरीसृका उत्ताप औग तावमातान्ध्र ।

जीव जन्तु जिनने दिन नरु जीवित रहन उन दिन  
तक उनके शरीरका उन्माप एक प्रकार  
समाप्त भावमे ही रहनाहै । मनुष्य भेद  
सबदाही उनन रहनाहै कारण वेदमें  
बराबर उन्माप उद्भूत होताहै । मात्तन विषयद्वय  
पशुध दहमें पहुँचतों और मानके माध विषयद्वय प्राणय  
दायुम । ०५५५५५ ५५५ हात रहतों । यद्यपि यह शब्द दिया गेला  
नहीं पड़ती परन्तु उसका फल अद्यात् करना पैदाइना  
सबदाही अनुभव दिया जासकताहै । जयन्तु स्वतन्त्र शक्ति  
यम नहीं जाती नबतद वह व्यापारिक गरमा मो - कस  
बही जाता । जिस दिन आहार भेद होजाताहै उमादिन सब

मसी है । इसके मियाय हए वत ध्यानेदी तीज रोगाके सामने रहे तो उस में रोगी की अरुचि हो जाती है । जब पथ्य देनका समय हो उसी समय रोगीक एक दारके ही छान योग्य लाकर उसके आसन रखये ।

अराम हातक समय यदि पण्डितों का धर्म पढ़ना न  
 पावे —  
 अत्रापि इमालेख अराम हातक समय  
 पण्डितों के विषय में लक्षणा  
 रक्षा पादक है। अराम होने का अर्थ पण्डितों की  
 रक्षा में यदि अराम हो जाये अथवा पण्डित  
 अराम हो तो अराम का अर्थ अराम है।  
 ऐन उदयना नामों में विज्ञाप कर उन छे  
 गणों में पण्डितों अत्र। निम्नलिखित जिन भूतों उक्त  
 अत्र उनका अर्थको दत्ता उचित है। आहारकाला न दत्त  
 दत्तका अर्थ भविष्य ज्ञान पुरस्कार परमाह पत्ता पत्ता  
 अत्र अज्ञानाह वि अराम हातक उक्तान नृप पण्डित  
 पण्डिताना, अथ समय दत्त आश्रयाना अथ यदि लक्ष्मी  
 कान विद्यायाया ना अथ न होकर भूल विन्दुल मारा  
 अत्र है।

[illegible]

यत्र काममें लायाजाताहै । तापमान यत्र रोग निपट करन और उसके साधानिक मावको निपट करनमें बड़ी सहायता करताहै ।

मुह बगल और गुह्य द्वारके भीतर ताप

लगायत रख

मान यत्र लगानेसे गरमी निपट कीजा

सकतीहै । साधारण तरहपर बगलसे ही गरमी देखतेहैं । रोगी यदि बहुतही दुबला हो जावे तो मुहमें लगाकर शरीरका गरमी देखतेहैं । यदि बगलमें पसीना हातो यमोम टर लगानेसे पहिले मुँह कपड़ेसे उसे अच्छा तरह रोंठ डालना चाहिये । साधारण तरहपर ५।६ मिनट तक रख नाहीं टोक हाताहै किन्तु विशेष आवश्यकता होनेपर माघे घट तक भी रखना पड़ताहै । तापमान ( थर्मामटर ) का उत्तम होना जरूरहै । नहीं तो उस तापमान यत्रक ऊपर विश्वास नहीं किया जासकता ।

तापमान यत्र रोग और उसका क्षय फल निपट करने में तथा चिकित्सा करने में बड़ी सहा

यता करताहै । ९९.६ डिग्री के ऊपर

लगायत रख

और ९७.४ के नीचे यदि थर्मामटर

का पारा होना कहना चाहिय कि उस मनुष्य के शरीर में कोई न काहरोग अवश्यहै । शरीरकी गरमी बढ़नेके साथ साथ नाड़ीकी घट्टकनभी बढ़जातीहै । नाड़ी

और गरमी इन दोनोंमें बिना सम्यक्

गहनेपर

देखाजाताहै । यदि गरमी १ डिग्री बढ़ जावे

वर्माकामध्वज

तो नाड़ी की घट्टकन १ मिनटमें १० घा

रहजायगा । जैसे यदि शरीरमें गरमी २५ डिग्री होतो नाड़ी



यन्त्र काममें लगाया जाता है । तापमान यन्त्र रोग निपट करने और उसके साधारणिक भावना निपट करनेमें बड़ी सहायता करता है ।

तापमान यन्त्र

मुह बगल और गुच्छ द्वारके भीतर ताप

मान यन्त्र लगानेसे गरमी निपट कीजा

सकती है । साधारण तरहपर बगलसे ही गरमी दूधते है । रोगी यदि बहुतही दुख्खा हो जावे तो मुहमें लगाकर शरीरका गर्मी देखते है । यदि बगलमें पसीना हातो धमाम टर लगानेमें पहिले सूख कपड़ेसे उसे मच्छी तरह पोंछ डालना चाहिय । साधारण तरहपर ५।६ मिनट तक रख नाहो ठीक हाता है किन्तु विशेष आवश्यकता होनपर आधे घण्ट तक भा रखना पडता है । तापमान ( धमामटर ) का उत्तम होना अच्छे है । नहीं तो उस तापमान यन्त्रक ऊपर विश्वास नहीं किया जासकता ।

तापमान यन्त्र रोग और उसके दोष फल निपट करने में तथा चिकित्सा करने में बड़ी सहा

यता करता है । १७ १ डिग्री के ऊपर

और २७ ४ के नीचे यदि धमामटर का पाटा होता बढना चाहिय कि उस मनुष्य के शरीर में कोई न का रोग अवश्य है । शरीरकी गरमी बढनेके साथ साथ नाडाकी घडकनभी बढजाती है । भाड़ी

और गरमी इन दोनोंमें विशेष सम्बन्ध

नाडाको

देखाजाता है । यदि गरमी १ डिग्री बढ जावे

तो नाडीको घडकन १ मिनटमें १० बार बढजायगा । उस यदि शरीरमें गरमी २८ डिग्री होतो नाडी



का धड़कन प्रातः मिनट ६० बार रहेगा । ६६ डिग्री होना ७३ बार, १०० डिग्री होना ८० बार और १०१ डिग्री होता ९० बार इत्यादि ।

कठिन रोगोंमें साश्वतानीसे चारचार तापमान यन्त्र लगाना चाहिये । साधारणतः दोवार भुवह घाम थर्मामेटर लगाया जाकहै । कठिन और पुराने रोगोंमें दिनमें चारचार साश्वतानी से थर्मामेटर लगाकर चारचार गरमी को ध्रुव से एक चक्र पर लिखलना चाहिये ।

## २ । नाडी

प्रतिमिनट का धड़कनें ( जव हृत्पिण्ड संचालित होताहै ) हृत्पिण्ड से रक्त पग पूर्वक टकरा खाकर नाडियों मेंसे जनेक समय नाडियां चल ताहै अर्थात् उसी समय नाडी स्पन्दित होती है हृत्पिण्ड की शक्ति अथ धनियों के संचालन अनुसार नाडी का गति स्पन्दन का प्रमाण कारण है, अतएव हृत्पिण्ड नाडी अथवा रक्त में किना प्रकारका परिवर्तन होतो नाडीका गति में भी परिवर्तन उपस्थित होन लगताहै ।

रोग निदान करनेकेलिये नाडी परीक्षा अत्यन्त आवश्यक है । उसमें नाडी परीक्षा के विना कुछ नही हो सकता । तन्त्रुरव और अम्बासस नाडीका उच्च समझमें आताहै । जव स्वामें धननाहै उसी अवस्था में ही परीक्षा काजासकती है





उने समय बाहरी हवा फेंफड़े के अन्दर जाती है, और निश्चित समय पर ही हवा बाहर हो जाती है । मधेय अवस्था के अनुपपन्न सास प्रति मिनिट में बीसबार आता जाता है । रोग का हात में और बसत करते समय इसकी संख्या बढ़ जाती है । इस विषय में अधिक ध्यान लावायी बीमारों के हाथ में दूसरी जगह दिया गया है ।

फेंफड़े के संयकारी रोग वा उसमें कोई पदार्थ संश्लेष होने के कारण स्वास कुछ उपस्थित होता है । इसके मिथ्या डिपथीरिया रोग का तरह स्वास करने में हरिम सिद्धी उपपन्न होता, टोमिस्ट गठका बढ़ जाना वा जानका सूजना और बढ़ा होना, हमें की तरह स्वास नहीं के वहाँ में बचने आना इत्यादि कारणों से फेंफड़े में वायु जाने में बाधा होती है अतएव स्वास कुछ उत्पन्न होता है ।

फेंफड़े के साथ हृत्पिण्ड का घनिष्ठ सम्बन्ध है । प्रायः हृत्पिण्ड को डबने वाली या फेंफड़े के चारों तरफ रहने वाली हिमामें जल संश्लेष होने से फेंफड़े के ऊपर घीम पड़ने के कारण सास आने जाने में कुछ देखा जाता है । बहुत तरह के हृद् रोगों में भी ( दिल की बीमारी ) वेजा स्वास कुछ होता है । राशीक अन्तिम समय स्वास स्पष्ट गान पूर्वक देखने चाहिये । इस समय दुर्बलता और रक्त की कमी के कारण रोगी को स्वाभाविक स्वास किया बन्द जाना होता है । अतएव जीवन शक्ति के पूर्वक स्वास देने के लिये चेष्टा करती है । जब इस प्रकार का स्वास कुछ उपस्थित होता है तब थोड़े १ फीट की तरफ से रोगी का सब शरीर टण्डा होन चर्गता है और अन्त

अ फेफड़ और हा पण्डिका प्रया वद शीघ्र रामा का प्राण पम्बक उड़जाता है ।

## ८ । जिह्वा

स्पर्श अवस्था में जिस प्रकार जिह्वा रसा स्वादन का प्रधान यंत्र है उसी प्रकार रान की हालत में आंतरिक अनेक अवस्थाओं जिह्वा की भिन्न भिन्न क नियंत्रण करने का उपाय भी है । रोग

प्रत्यक्ष

में जिह्वा पराक्षा अत्यन्त आवश्यक है ।

स्वान पृथक् दखना चाहिय कि नाभ सरस अर्थात् गाड़ी है या सूनीदुर भाप है या मैली स्वाभाविक रक्त है या अधिक लाजहै दिखर है या कम्पायमान है । यदि जीम सूनी दाता समझना चाहिय कि शरीर क रस निकलने में कमी है। जीमका ऐसा दातन प्राय वामारा का मुँह हालत में मोर उपर में दीक्ष पड़ता है । जीमका सरस रदता अच्छा लक्षण है विशेषकर जीम यदि पहिले सूनी और मैली हो और उपरान्त सरस दाजाय तो अच्छा लक्षण समझना चाहिय । बहुत से स्फोट ज्वरों [ फोड़ों के कारण उपर ] में जीमका रङ्गन बहिसाय लाज्ज हावाती है । निम्नतर कान्ति उदरामय राग में जीमका यह लाल रङ्गन अग्र भाग और धाम पाय में दखा जाता है । दैन्यिष्ठ किन्ना क प्रदाह या उत्तमना में मांस्त्रिक रागों में मरु तरह क ज्वरों में और सख तरह नय और मांस्त्रिक रागों में जीमका मैलापन दाख पड़ता है । दिमी का दाह विरुध रोग न जान पर भी सुबह साकर टटने समय जीम का मैलापन दाता है। विरुध कर उनका

ओ बि तम्याहू पीते हैं । यदि कुछ जीम सफेद रङ्गन की होती ऐसा कुछ बुरा स्थल नहीं है, पीली रङ्गन होने से निगर का दोष समझा जाता है; काबोरङ्गन होने से जीवन शक्ति की कमी और एक की दूषित अवस्था समझनी चाहिये ।

जीमका स्पष्ट रहना आरोग्यता का लक्षण है । जीम के अग्रभाग या मांस पात से धीरे २ जीम साफ होने लगे तो समझना चाहिये कि रोग अच्छे होने में अधिक देर नहीं है । जीम में यदि किसी प्रकार का मैलापन नहीं तो समझना चाहिये कि पेट में किसी प्रकार की गड़बड़ नहीं है । अति सांघानिक रोग में जीम होठ और हातों पर एक प्रकार का मोटा कठिन मैल जम जाता है । जिस प्रकार जीम दिन २ गुणने लगे और मैली होती जाए समझना चाहिये कि रोपी के पेट और स्नायुविधान सब एक साथ दुबल होते जाते हैं और साथ साथ जीवन की आत्मा भी विह्वल होती जाती है ।

## ५। वेदना (दर्द)

वेदना शरीर के अंगों का गड़बड़ सूचित करने वाली है । यह रोग की दान्त और दग के स्थिति विषय करने में बहुत सहायता देती है । शरीर के अंगों में और शरीर के अंग २ स्थानों में अंग २ प्रकार की वेदना मान्य होती है । वायु अंग २ (वायु के कारण) या स्नायुविध (जर्मों में) एक एक स्थानों पर हुआ नहीं रहता; इसका विमो २ समय स्थानों होना है और कभी होता है। वायु के कारण दर्द एक समय

अत्यन्त असह्य होता है और फिर अमानस मिटवाना है, थोड़ी देर के बाद फिर और भी जोर म हाने लगता है । घायटे के साथ दर्द, दायने से, मलने से सेंकन से, कम होता है । हाथ पैरों में घायटे आने से दूध निस्त प्रकार होता है आक्षेपिक वेदना का अच्छा दृष्टान्त है । प्रदाह युक्त वेदना ही सब से प्रबल और ठरने वाली होती है । इससे शरीर की गरमी बढ़ जाती है और नाड़ी तज चलने लगती है । दर्द की जगह हिलाने, झुलाने से, दायने से या छूने से दर्द मालुम होता है, शिथिल रखने से चैन पड़ता है । फोड़ा इत्यादि में जो दर्द होता है वह इसका उत्तम दृष्टान्त है । किसी २ समय जलन के स्थान में दर्द न मालुम होकर कुछ अंतर से दूमेरे स्थान में दर्द मालुम होता है । हम प्राय देखते हैं कि जिगर में प्रदाह होने से दाहिने कंधे में रग में प्रदाह होने में, धुटनों में, मूत्राधार में पथरी होना स, मूत्र छिद्र पर और दिलके रोग में बाये हाथ में दर्द होता है ।

## ६ । चर्म ।

आरोग्य रहने की हालत में शरीर की चर्म समान भाव से गर्म और चिक्की रहती है । चर्म का कड़ा, सूखा रहना या जलन होना किसी भीतर की प्रदाह युक्त रोगका लक्षण है यदि ऐसे उत्थाप के उपरान्त और २ उपसर्ग कम होने के साथ पसाना भी आता रहे तो अच्छा लक्षण नि समुद्र समप्रना चाहिये । प्रदाह युक्त ज्वर कम्पज्वर इत्यादि रोगों में पसीना आने से रोगों को बहुत कुछ आराम दाना है । यदि कोई उपसर्ग कम न होकर पसीन आये

तो समझना चाहिये कि राग कठिन है ।

किसी विशेष स्थान में पसीना आना अर्थात् समस्त शरीर में पसाने न आकर किसी विशेष स्थान में ही पसीना आते हों तो समझना चाहिये कि स्नायु विधान या विस स्थान पर पसीने आते हों उसके किसी यन्त्र की गड़गड़ है । दुबलता के कारण थोड़ा सी मेहनत करने से ही पसीने आने लगते हैं । रात्रि के समय पसीने आने से केवल दुबलता नहीं समझनी चाहिये, पसीने आने से पहिले सर्दी या ज्वर मालुम होय तो यक्ष्माकास मनु मान की जासकती है ।

चम की रक्त भी रोग निर्णय करने में सहायता देती है । चमका नीला रंग हृदरोग [ दिलकी बीमारी ] पीलारंग जिगरकी बीमारी और मुह और नाँवों का छाल रंग प्रदाह श्वेत ज्वर के लक्षण हैं । बहुत से रोगों में जैसे चेचक खसरा बहुत से विकार और मात्रिक ज्वरों में चमकी मयखा की परीक्षा करना परम आवश्यक है । क्योंकि हम सब रोगों में चम के ऊपर एक प्रकार के फोड़े पुनसी निकल आते हैं ।

### ७ । पेशाब ।

खूनका सब मैल पेशाब के साथ निकल जाता है । मूत्र यंत्र में पेशाब उत्पन्न होकर मूत्राधार में धीरेधीरे संचित होने लगता है, जब पूर्ण हो जाता है तब पेशाब की हा जत मालुम होती है । पेशाब की उत्पत्ति बन्द होने से मर्याद रक्तके भीतर मैल संचित होने से मति साधातिर रोग उत्पन्न होजाते हैं ।





तो समझना चाहिये कि राग कटिन है ।

किसी विशेष स्थान में पसना आना मयात समस्त शरीर में पसाने में आकर किसी विशेष स्थान में ही पसीना आने हो तो समझना चाहिये कि स्नायु विषाण या जिस स्थान पर पसीने आते हैं उसका किसी यन्त्र की गड़बड़ है । बुद्धि का कारण थोड़ा सी मेहनत करने से ही पसीना आने लगता है । रात्रि के समय पसाने आने में कष्ट दुबलता नहीं समझनी चाहिये पसीना आने से पहिले सही या ग़र मादूम हाथ तो यक्ष्मादृश अनुमान की आवश्यकता है ।

चर्म की रक्त की रोग निरोध करने में सहायता देनी है । चर्मका रोग रण हृदय [ दिवकी बीमारी ] पाल्साग जिनरकी बीमारी और मुँह और आँखों का छाल रोग मशह स्पृष्ट श्वेत के बलप है । बहुत से रोगों में जैसे चेचक चर्म पर बहुत से बिहार और आधिक श्वेतों में चर्मका अक्षय का दासा करना रोग आक्षेपकाय है क्योंकि इन सब रोगों में श्वेत के ऊपर एक प्रकार के फोड़ पुनर्मी निकल आने हैं ।

### ७। पेशाब ।

मूत्रका सब मूल पेशाब के साथ निष्का जाता है । मूत्र शरीर में उत्पन्न होता है और मूत्राशय में धारण होकर निकलने लगता है, जब पूर्व का जल है तब पेशाब की मात्रा कम होती है । पेशाब की उत्पत्ति कम होने में मयात रक्त के अंगर मूल साक्षि रक्त के मूल साक्षि रक्त उत्पन्न होता है ।

स्वामाधिक पेशाब थोड़ा कुछ रगतदार और घदबूदार होता है । बहुत तेज घदबू होने से रोग समझना चाहिये । स्वामाधिक पेशाब को रक्खेने में उसमें नीचे कुछ जमना नहीं है । बुढ़ापे में पेशाब कुछ गहरी रगत का और तेज घदबूदार होता है । जो लोग अधिक मेहनत करते हैं उनका पेशाब भी कुछ गहरी रगत का होता है । निरोग श्रमण्या में २४ घण्टे में प्रायः बार बार से छँकर ६ बार तक पेशाब होता है, पेशाब करते समय किसी प्रकार का दर्द नहीं होता और न जोर करना पड़ता है । स्वामाधिक पेशाब जलकी अपेक्षा कुछ मारी होता है अर्थात् जलके साथ तुलना करने से १००० और १०१५ का सम्बन्ध होता है अर्थात् यदि जलका शुद्धत्व १००० है तो पेशाब का १०१५ । साधारणतः पेशाब के शुद्धत्व १०१५ से १०२५ तक रहा करता है । जवान आदमी दिन रात में प्रायः ५० औंस पेशाब करता है ।

रोग की हालत में ऊपर लिखे हुए स्वामाधिक लक्षणों में बहुत अन्तर पड़ जाता है । इस हालत में पेशाब की

निम्न २ शक्तियाँ न पेशाब

की कमी होती

परीक्षा करने से रोग निर्णय करने

में बहुत सहायता मिलती है । पीलिया

अथवा बहुत में गड़बड़ होने से पेशाब

पीले रंगका होता है उधर में पेशाब थोड़ा और लाल रंग का होता है । मूत्र यन्त्र का मूत्राशय के रोग में पेशाब लून मिला हुआ और बिपॉचिवा अर्थात् गोघ के समान कासा होता है । वायु और वायुगोला रोग में पेशाब पानी सा और बहुत होता है । इसके सिवाय किसी विग्रह स्थान में प्रदाह हान से कभी २ पेशाब

घोडा और निकलते समय बहुत दृढ़ और वेग के साथ हाना है। कभी बहुत कभी चार २ पेशाब का हाज्र होना पेशाबके समय बहुत जलन हाना और कभी मग़ीर में हो चार बूंद पेशाब होनेके समय दृढ़ होना इत्यादि देखा जाता है। किसी २ रोग में पेशाब के सामाविक गुदग्न में भा अन्तर पाया जाता है। शर्करा [शर्करे निलाडुआ] बहुमूल रोग में पेशाबका गुदग्न अर्थात् भारोपन १०३० से १०७० तक हो जाना है और वापुंगोला रोग में १०-७ हो रह जाता है। [ध्यान रहे कि पेशाबका गुदग्न पानीके गुदग्नके साथ आपेक्षिक अर्थात् उन्हींके हिमोबसे अनुसार विद्यो जाता है जैसाकि ऊपर लिख प्राय है]

### ८ । माधारण परीक्षा

रोगी परीक्षा होमियेपेथिक चिकित्सा की बुनियाद है। रोगीके रूढ़ में जो लक्षण प्रकाशित होत हैं अथवा अनुभव में आते हैं वही रोग है। रोगके लक्षणोंके समान मिलान करके ही औषधी हो जानी चाहिये। सहज औषध लक्षणोंके अनुसार बहुत सावधानीसे तज्जवान करनी चाहिये।

प्रत्येक रोगके कुछ साधारण और कुछ विशय लक्षण होत हैं। शरीरका उष्णता वृद्धि होना ज्वरका साधारण लक्षण है क्योंकि ज्वर होनेसे ही सबके शरीरका गर्मी बढ़ जाता है। ज्वरमें किसीको प्यास, किसीके दहमें भाग जलना किसीको नहीं लगना किसीको डल्लगी होना, किसीके हाथपैर टूटना और भटकना होना और किसीके शिरमें दह होना इत्यादि प्रत्येक मनुष्य की धातुके अनुसार कुछ २ लक्षण प्रवर्त दृष्ट होते हैं। इन्हीं को विशय लक्षण कहते हैं। धातु वान नष्ट इत्यादि सबके होत हैं, लेकिन शरीरका चहरी श्यामक चहरेमें नहीं मिलता। रोगीका परीक्षा करने समय इन्हीं सब साधारण धातु विशय लक्षण

णाको एक साथ न समझनसे रोगकी प्रवृत्ति और मम समझमें नहीं आसकत और उस रागका अमला औषधि भी तजवीज नहीं बाजासकती ।

साधारण आर विशय लक्षणोंक सिवाय रागी इकते समय और हा लक्षणोंका पराक्षा करना चाहिये । पहिले रागाक दहक उपरी दाखन वाल लक्षण दूसर वह लक्षण जा कि रागीका मपन इहमें मालूम हातेहो नाडाका गति झिगर और तिलुा का बढना फेफडे वा हृदिपण्डका दोष इत्यादि परीक्षा उपरा दाखन वाल लक्षणोंका पराक्षा कहलानाहै । चिकित्सकका सबसे पहिले इही सब लक्षणोंकी पराक्षा करना चाहिये । उपरान्त रोगी और रागाक फल फल अङ्गिर्वीर कष्टदायक भीतरी लक्षणोंक अवयवमें प्रथम करना चाहिये यथा वह बचैनी भूखलगना वा भाजनका अनिच्छा इत्यादि रागास प्रथम करत समय सावधाना से धीरेर एकरे बात पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणोंका मालूमकर औषधिक सब लक्षणोंके साथ मिलाकर ठाक सदश औषधि तजवीज करनी चाहिये । जा जितना जल्दी रोगका ठाक सदश औषधिया तजवीज कर सकता है वह उतनाही जतुर चिकित्सक समझा जाता है । लक्षण ही राग है । औषधि द्वारा यदि सब लक्षण दूर किये जासकें तो रागी मच्छा हागया । होमियापैथिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है रागके नामक अनुसार चिकित्सा नहीं है । केवल ज्वर होनसेही चिकित्सा शुरू कर दीजाय यह होमियापैथा के अनुसार नहीं होसकता क्योंकि सबको एकसा ज्वर नहीं आता, जिसको जिस प्रकार के लक्षणों के साथ ज्वर आता है उसका उग्री लक्षणों से मिलती दूर दवाइ बाजाती है ।

## ५वा अध्याय ।

### होमियोपैथिक औषधि सम्यन्धी नियमावली ।

होमियोपैथिक औषधि विश्वास पात्र और रसायन ज्ञाननेवाले दूरान्तरसे खरीदनी चाहिये । इस विषय में बहुतसे आशंकित श्रद्धासायी लोग छुपाकर तरह १ की छिपिमता करते हैं । इस दगावाजीके कारण होमियोपैथिक औषधियोंका कुछ फल नहीं देखता । प्रायः दुःखसागरी होजानाहै और हमका पक्ष यह होताहै कि रोगीके प्राण जाते हैं और हलाक करनेवाले को बदनामी मिलतीहै ।

होमियोपैथिक औषधिका तीन प्रकारसे आभ्यन्तरिक अथवा भीतरी प्रयोग होताहै । पहिला टिचर वा मर दूसरा मिलोथ्यूज और पिन्गूल अथवा छोटी और बड़ी गाळी और तीसरी हाउटप्रेषन वा पूर्य ।

प्रथम,—टिचर वा अंक । इस सत्कारिक जड़, पत्ते छाड़ और फल इत्यादि को पलकाहरमें भिगोकर किसी विषय दिया हुआ समली मर्क मथान् मरर टिचर तयार होनाहै । इन मरर टिचरकी १ बूँद छेकर इसमें भी १०० पलकाहरस मिलकर फास्ट र्सीमिल हाउन्पूशन [प्रथम दशमिक क्रम] तयार होनाहै । और २९ बूँद पल कोहरस में १ बूँद मररटिचर मिलाकर फास्ट सग्टर्सीमिल हाउन्पूशन [प्रथम दशमिक क्रम] तयार होताहै । इसी प्रथम दशमिक वा दशमिक क्रमकी १ बूँद मरर उसमें २ बूँद मिलानेय शिरोष दशमिक और २६ बूँद मिलानेय दूसरा दशमिक क्रम बनताहै । इसी प्रकार तीसरा चौथा १०० २०० भाँति बहुत तरह क्रम [हाउन्पूशन] तयार होताहै ।

गायका एक मास न समझनस रोगकी प्रवृत्ति और मम समझमें नहीं आसकत मार उस गायका असली औषधि भी तजवीज नहीं कीजासकती ।

साधारण मार मिश्रण लक्षणोंके सिवाय रागी दवा समय और हा लक्षणोंकी परीक्षा करना चाहिये । पाश्चात्त रागीक दवाक उपरी दीखत वाले लक्षण दूसरे वह लक्षण जो कि रागाका मयन रहमें मादूम हागही माहाकी गाने शिगर और मिहरी का पड़ना फेफड का हागवृद्धका हाग इत्यादि परीक्षा ऊपरी दीखत वाले लक्षणोंकी परीक्षा कहलातीहै । चिकित्सकका सबसे पहिले इन्हीं सब लक्षणोंकी परीक्षा करना चाहिये । उपरान्त रोगी मार गायक गाने काठ मादमिवाय कहहायक भीनरी मार काठ विषयमे प्रश्न करना चाहिये यथा वह, बधैमी मूलभगना वा मात्रनका आनन्दता इत्यादि रागीमे प्रश्न करत समय से बचानी से पीरर एकर बाग पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणोंका मादूमकर औषधिक सब लक्षणोंके साथ मिलाकर ठीक सदस्य भागवि तजवीज करनी चाहिये । जो जिनका मन्दी गायकी ठीक सदस्य औषधिया तजवीज कर लयता है वह उनकाही अनुसर चिकित्सक समझा जाता है । लक्षण ही राग है । औषधि हाग यदि सब लक्षण दूर दिग जानके मा रागी मयन हागया । हासियादिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है गायक मयन अनुसार चिकित्सा नहीं है । कल्प मार इनकी चिकित्सा मुह कर इन्काय वह इन्कायैकी के अनुसार नहीं हासकन क्यो कि कयका दवाता उदर नहीं । जाना शिमका शिम उदर के लक्षणों के मयन उदर भाग है इसका उर्द लक्षणों के निदर्श दूर रहार हीनरी है ।

## पुत्रा अध्याय ।

होमियोपैथिक औषधि सम्बन्धी नियमावली ।

होमियोपैथिक औषधि विश्वास पात्र और रसायन ज्ञानवेषाळे दृष्टान्तारसे करीबनी चाहिये । इस विषय में बहुतसे अरिष्टिन् एवम्सादी लोग सुपाकर तरह २ की हविमना करते हैं । इस दयावाजीके कारण होमियोपैथिक औषधियोंका कुछ कल नहीं दायता । प्रायः नुबसानमी होजाता है और इसका फल यह होता है कि रोगीके प्राय जाते हैं और एलाज करनेवाले को बदनामी मिलती है ।

होमियोपैथिक औषधिचा तीन प्रकारसे अभ्यन्तरिक अर्थात् अंतरी प्रयोग होता है । पहिला टिबर वा अर्क दूसरा पिल्लेप्लूत और पिल्लूत अर्थात् छोटी और बड़ी मोली और तीसरी ट्राईटोरोजन वा चूर्ण ।

प्रथम,—टिबर वा अर्क । इस लकारिके अड, पसे छाल और कल इत्यादि को बलकोहलने भिगोकर किसी विशेष विधा द्वारा मसली अर्क अर्थात् महर टिबर तयार होता है । इस महर टिबरकी १ बूंद लेकर इसमें मौ बूंद एलकोहल मिलाकर फास्ट इसीमिल डायल्यूशन [प्रथम दशमिक क्रम] तयार होता है । और २९ बूंद एलकोहल में १ बूंद महरटिबर मिलाकर फास्ट सेन्टसीमेल डायल्यूशन [प्रथम शततामिक क्रम] तयार होता है । इसी प्रथम दशमिक वा शततामिक क्रमकी १ बूंद लेकर उसमें २ बूंद मिलानेस द्वितीय दशमिक और २४ बूंद मिलानेसे दूसरा शततामिक क्रम बनता है । इसी प्रकार तीसरा चौथा १०० २०० अदि बहुत तरहके क्रम [डायल्यूशन] तयार होते हैं ।



जाका एक साथ न समकनस रोगको प्रवृत्ति और समसमकर्म नहीं आसकन और उस रोगका असमी औपधि भी तमशीज नहीं बाजामकनी ।

साधारण और विशिष्ट लक्षणोंके सिवाय रागी देखते समय और दो लक्षणोंका पराक्षा करना चाहिये । पहिले रोगके दृढ़क उपरान्त दीखन वाला लक्षण दूसरे यह लक्षण जा कि रागका अपन दृढ़में मादूम दातही नाडाका गति जिगर और निहरी का बढ़ना पैफड या हृत्पिण्डका बाप इत्यादि परीक्षा उपरान्त दाखन वाले लक्षणोंकी परीक्षा कहलानाहै । चिकित्सकका सबसे पहिले इन्हीं सब लक्षणोंकी पराक्षा करना चाहिये । उपरान्त रागी और रागाव पास वाला मार्मिर्वाने कष्टदायक भीतरी लक्षणोंके विषयमें प्रश्न करना चाहिये यथा दह, बध्नी भूखलगना या भाजनका अनिच्छा इत्यादि रागासे प्रश्न करते समय नायधाना न चीरर एकद बात पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणोंका मादूमकर औपधिक सब लक्षणोंके साथ मिलाकर ठाक सदृश औपधि तमशीज करनी चाहिये । जा निम्ना जन्दी रागका ठाक सदृश औपधिया तमशीज कर सकना है यह उननाहा खतुर चिकित्सक समझा जाता है । लक्षण दो राग है । औपधि द्वारा यदि सब लक्षण दूर विय आसकें तो रागाभच्छा हागया । हामियापैयिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है रागक नामके अनुसार चिकित्सा नहीं है । कवल ज्वर होनेमही चिकित्सा शुरू कर बाजाय यह हामियोपैयी के अनुसार नहीं होसकना क्योंकि सबको एकमा ज्वर नहीं आता जिसको जिस प्रकार के लक्षणों के साथ ज्वर आता है उसका उन्ही लक्षणों से मिलनी हुई दवा दीजाती है ।

हो दूसरा बमबा मौगंध देदन है । प्रत्यक्ष दुकान में  
सब दवाई तो रहनी हो नहीं हम लिये एक दवा पे  
बदल दूसरा दवा देम में जो नहीं चुकने । अनपेक्ष सचको  
सापधाना में मच्छी तरह 'आय परताल' कर विद्यास  
पात्र दुकानदार से दवाई परोदनों चाहिये । मौगंध के  
हम से बहुत से बग- हामियोपैथिक विक्रि-सा को  
निगा होनी हुए हमने सुनी है ।

**दवाइयों का बक्स ।—** प्रत्यक्ष गृहस्थ को एक

दवाइयां भरी हुआ बक्स धार एक पुस्तक भव्य हमनी चाहिये ।  
उस बक्स में । मयाय दवाइयों के दूसरा कोर पात्र न रखा जाय ।  
दवाइयां बक्स में नाना नगाह पना अगद रकम अदा कि प्रकाश  
वा मत्र गंध भादि कुछ न हो । एक दासी से दवाइ  
निहाल कर पौरन उस में टाट लगा देना चाहिये ।  
एक नीली की दवा 'मया' हात दूसरी दाया में न  
लगाय चाहिये । कलापयनास मया अगद धराय हाथनों  
है धार विर व नाला नहीं करती ।

**आरपी व्यवहार करने क नियम ।—** छाटा

का बडा लगी मूयाहा । उस के ऊपर एक दिन से  
मार जानका है । यदि मछ हो तो वह माक पाना  
क से प मित्रकर निगलाना है । निगल (हाम) एक बंध  
का देना दुकान बुद्धिमान के लिये बम में लाया जाना है ।  
एक बहुत बम हामों मित्र है । इस बाबड़े दुकान का  
बडा रिश्ता लगी है नगर हाथकर मयापनास लगी  
हो के के टाट रिश्ताही मया दवाइयां दू दासीयानी  
है । शिवा' बुद्धि अगदहा हाथकर लगी है टाट नला  
हो के लिये विर लगी दूसरी दवा के दू हाथने । अग



हो दूसरे प्रमत्त भौण्डे देदेन है । प्रत्येक दुकान में सब दवाई तो रहती हो नहीं इस लिये एक दवा के बहुत दूसरी दवा देने में भी नहीं चूकत । अतएव सबको सावधानी में अच्छी तरह जानें । परतान कर विज्ञाप पात्र दुकानदारों से दवाई खरादना चाहिये । औषधों के दान में बहुत से भगर होमियोपैथिक चिकित्सा को निन्दा होता हुई हमने सुनी है ।

**दवाइयों का वक्त ।**—प्रत्येक शुद्ध को एक

दवाइया मरत हुआ बकम भार एक पुलक मध्य रहना चाहिये । उस वक्त में । सवाय दवाई को व दूसरा कोर खात्र न रखा जाय । दवा के वक्त में माला गगार एमो जगह रहन जहा कि प्रवाण या नत्र मध्य भागि कुछ न हो । एक चीन्हा से दवाई निकाल कर पौरन उम में डाट लगा देना चाहिये । एक चीन्हा की देवा भयत्र डाट दूसरी चीन्हा में न लगाता चाहिये । असावधानता बवाइ उतर बराय हाडानों है और फिर व यमना नहीं करती ।

**आपधी व्यवहार करने क नियम ।**—छाटा

या बडा माला मूयाहा आप के ऊपर रख दन से साह आसनी है । यदि मक हो ता वह साह पाना क साथ मिलकर पिलायना है । निटन ( टोम ) एक बाव का टटा दुकेडा बूट गिगन के लिये कम में लाया जना है । पर बहुत कम दानों मिलन है । हम बावके दुकेडा का बडा हिस्सा दानों के मंतर हाडकर सावधानता गाने टटा बावके टटा हिस्सकी तरफ चाहिये बूट हाडानों है । प्रियनी बूटका उकरनहा सावकर टा मि हाट लगा देना चाहिये फिर यदि दूसरा दवाइया बूट दानवहा ..

रत पड़े ता उस कायक दुहड़का अच्छातरह धाला किसी तरहका पाला नहीं या अगर काह खीज खुद डालनक काममें न लाना चाहिये क्योंकि यह फिर मन्गतरह नहीं धाई जासकता । निम्न घटननम न्याह तयार करे यह विनशुल भाव हा और क्रिया तरहका गंध न हा । घर तन काच खीजा पथर या मिटाका हाता ठाकहै । क्याह तयार करनक बाद उसका किम्हा कागजमें वा पथरक घटननम नकलना चाहिये । इस घटननम किम्हा पथरवा कगारा वा काचका रश्मचमें भाषति डालकर रागाका पिन्नाये फिर उस कगारा वा रश्मच का पानास अच्छातरह धाकर रक्खे । हरवक तुदी २ न्याहक लिए खुद २ पात्र जाना भन्ताहै । हाभिपापायक भाषधि व्यवहारमें हरतरहम सफाई बहुत जरूरीहै ।

**समय ।**—यदि दाजान भीषात्र भवन करनक लिए कहा जाय ता प्रातःकाल और सन्ध्याका समय सबसे अच्छा है । पुरान रोग में इन दो समय भीषधी देनाहा बहुत है । तान बार भाषधि लेवन करना आवश्यकहो ता मात्रा क वा तीन घण्ट बाद दुपहर क समय एक मात्रा भाषधि दाजानकना ह । हैजा आदि नय और साधानिक रागी में राग का व्यवस्था क अनुसार भाषधि दाजाना है ।

**मात्रा ।**—यदिह यह बात निश्चय करलना चाहिय कि कन्धमा डायस्त्रुशन का कम दवा हागा । हम में बड़ा हाशियरा का जहरन है । मामूला नय रागी में मात्रा क अगर पीचका कम जैम यदिह दूसरा तातरा छटा भा बारहवा दियाजाना है और पुराने रोगों में नाँसवा । १०० और २०० अथवा हमस अधिक डायस्त्रुशन दियाजाना है

पूरी उमर के रोगी के लिये खादे जिस हायल्ड्रोजन का हो एक बूंद भक दिया जाना है । पाच छटाक मात्रा मात्रा में मिलाकर एक बार पिलाया जाय । उम्र कम हान क अनुसार एक बूंद औषधि जल में मिलाकर उमरा हा बार या बार बार पीनेको हे । छोटी गोली थार, बडा गोली दह भार टाईटुरेजिन वा क्यूर एक घन मात्रा मुद में डालकर तिलाह । घालकों क लिये हमकी माथा और पछों क लिये इसका औषाह मात्रा होनी है । गाला पानी में मिलाकर भी मिलाह जाना है ।

**मात्रा का दुबारा देना**—अकल के मासिक औरराग की अवस्था क हिमाव से कमी १५, १५ मिनिटमें कमी दिन में दो तीनबार कमी हफ्ते में एकही दूरे द्वाह मिलाह जाना है । हैजा बापडे रूप माहि कठिन रोगों में भाव छष्ट था पन्द्रह मिनिट के अन्तर से द्वाह दीजानी है । पुराने रोगों में जितनी कम द्वा दीजायगी उतनाही अच्छा है । कायहा हीलने पर द्वाही मात्रा कम करने २ कमरा बन्द करदना चाहिये ।

होमियोपैथिक मन क अनुसार हो वा अधिक औषधि एक भाव मिलाकर देना बजिन है । जब एक औषधि के सब लक्षण रोग क साथ न मिलें तो दोनों औषधि पर्यापन्न से दीजानी है । पर्यापन्नसे औषधि जितना कम दीजायगा उतनाही अच्छा है ।

होमियोपैथिक सब द्वाहया बहुत साक रीध दूध और ऐसी जगह रखना चाहिये जहा धूप न लगे । कपूर माय सब औषधियों का प्रतिषेधक है, इस लिये जिस नकान में द्वाह रक्खीजाय उसमें कपूर न रखना

नगस्त्रिने । भोगधि दनके समय भाग पाती में भौर माग  
काक गिद्धी भगवा पावर के वरतन में दवा तवार का  
विधानी भादिये फिर निमा प्रयाग वा तत्र ममाग  
भगवा नव पुन पदान नग्राह पाकतूर व्यवहार न कर ।  
हृत्पती गमिध मे बी औगविता ए मासजाना है । दवा  
मान ध वरक गम्ह गदिल पा पील नक ममागू वीना वा  
पुन माना निगिद है । बाहरी प्रयाग करन के लिय विना  
गिया हुआ मूल जब काम में लाया जाना न इस लिय  
दिन पुन मूल मत ॥ कभी जागन कभी निनीगष्ट का  
कभी मगम नग्राह किनाडाना है । नो माग माध न  
कस्त्रिध का मागिग का नग भगवा मगमन में दव माग  
पदा निगि हुआ मवागी भव गिगान न यगत्रम गोगन  
निरागष्ट का मगम नग्राह जाना है ।

हमारा काम में धन खरी दवागों वा पुन गलिहा  
मैध बी है । हममें आ २ काम लिख हैं प्रग वरी कार  
में मान है । गिगद २ गगों में दिन गिगद २ कर्मों की  
अनगवना जाना है इसका गगों क धन न क समय  
निगन ३

## प्रधान २ औगविगों की मागिका ।

| औगविग  | मग <sup>१</sup> मागव | अत्र |
|--------|----------------------|------|
| अगम    | १ इगगिगवा            | ३    |
| अ ५ ५५ | २ ३३ इगगवा           | ३    |
| अ ५ ५५ | ४ वरक मग             | ३    |
| अ ५ ५५ | ५ काग ३ दवगग         | ३    |
| अ ५ ५५ | ६ न ३ मगमगमगद        | ५    |
| अ ५ ५५ | ६ न मग मग मग         | ३    |

| औषधि             | प्रम  | औषधि            | प्रम   |
|------------------|-------|-----------------|--------|
| एभिष्ट फास्फोरिक | ६     | इन्फमोनिया      | ६ ३०   |
| एपिस             | ६     | थेरादुम-एन्थम   | ६      |
| आरियम            | ३     | थेरादुम गिरट    | ६      |
| कमामिला          | १२    | माकुरियम-कर     | ६ ३०   |
| कालि-अ १३६       | ३     | माकुरियस-मख     | ६      |
| कालिवाइकामिकय    | ६     | माकुरियम-माइपट  | ६      |
| कन्विचम          | ६     | मारुम           | ६      |
| कनिहारदो         | ६     | रमटक्स          | ६      |
| कफिया            | ३     | डैबंसिम         | ६      |
| कपालहरिया-कार्ब  | ६, ३० | खारकोपीडियम     | ६      |
| कार्बो-थेडोटिलिस | ६, ३० | साइमिनिवा       | ६ ३०   |
| कालासि-घ         | ६     | सल्फर           | ६ ३०   |
| कोडिमसार्गिया    | ६     | सिपिया          | ६      |
| कैनाविम          | ३     | सिना            | ३, २०० |
| कै-यारिम         | ६     | सिबलि           | ६      |
| कोकूटस           | ३     | सिमिमिफिऊगा     | ३      |
| कापना            | ६     | सेबाहना         | ३      |
| जेअसिमिनम्       | ३     | स्पडिवा         | ३      |
| डिडिंटिलिस       | ३     | इन्फमोनियम      | ३      |
| डोमेग            | ६     | इन्फाक्सिप्रिया | ६      |
| इल्फामाग         | ६     | हापर-सल         | ६      |
| नक्समोमबा        | ६ ३०  | हमामडिम         | ३      |
| एन्सेगिला        | ६     | हारडूभिस्ट      | ३      |
| पाडोफार्नम       | ६     | हायोमायमस       | ६      |
| फोसफोगम          | ३     | हेलीबारम        | ३      |
| थलडाना           | ३     |                 |        |



## आर्यगण २४ औरधियों के नाम ।

| औरध           | क्रम | औरध             | क्रम |
|---------------|------|-----------------|------|
| १ आभक्ति      | १    | १३ पारमेष्ठि    | १    |
| २ आतिथि       | २    | १४ कोष्ठात्म    | २    |
| ३ इतिहास      | ३    | १५ वल्लभा       | ३    |
| ४ लक्ष्मी     | ४    | १६ प्रायश्चित्त | ४    |
| ५ वैदिक       | ५    | १७ वराह         | ५    |
| ६ अग्नि       | ६    | १८ मातृविवर     | ६    |
| ७ अग्नि-कर्म  | ७    | १९ रम्य         | ७    |
| ८ अग्नि-कर्म  | ८    | २० मन्त्र       | ८    |
| ९ अग्नि       | ९    | २१ आर्ति        | ९    |
| १० अग्नि-कर्म | १०   | २२ अग्नि        | १०   |
| ११ अग्नि      | ११   | २३ अग्नि        | ११   |
| १२ अग्नि-कर्म | १२   | २४ अग्नि-कर्म   | १२   |

## लगानकी औरध ।

|       |       |
|-------|-------|
| औरध   | औरध   |
| अग्नि | अग्नि |
| अग्नि | अग्नि |
| अग्नि | अग्नि |

अग्नि-कर्म अग्नि-कर्म

## ६ अध्याय ।

साधारण रोग — ( क ) रक्तानिकारके रोग  
चेचक ।

चचक साधारण और मजामक रोग है, यद्यपि बहुधा इस रोगमें पीड़ितदोषर विषेय आदमी मरतह और क्षून्य एक दूसरेकेभी हाथपाद हैं। इनारे देगमें सामकर उत्तर पश्चिम प्रदेशमें यह रोग पड़े आरसे फैलाहुमा देखा गयाह । रोगी के पीहने हुए बगडे इत्यादि द्वारा यह रोग एक स्थान से दूसरे स्थान में बहुत दूर तक जा पहुचता है । यह मांस्य रोग प्रत्येक अवस्था और प्रत्येक जाति के लोगों का हाता हुमा देखा गया है ।

लक्षण—इस रोगकी तीन लुरी २ अवस्था है । (१)

अप्रकाशावस्था । जेधेक का पीछे जगपाने के १० । १२ दिन बाद शरीर में रोगके लक्षण दीख पड़ने हैं । (२) आक्रमण अवस्था । इस समय सही से ना बचकरी खगछर पुगार माना है और बमन शरीर की गर्मी १०४ डिगरी से १०६ डिगरी तक होजाती है इस अवस्थाको मुख्य त्वर कहते हैं । त्वर के साधारण लक्षणों के साथ पेट में दम आ मिच लागता है बहुत हाथक उरगी होता सब शरीर में दिग्नेर कर फिट है और कमर में दह, गिरमें दह खेहर की तरह रक्त आरकनी २ लमहे उरगन कच बनागिवर खलन जेधे पथेनी बजना बायट बना अमानता इक १ रोग पड़त है । बहुधा इस अवस्था में लड़े में यह रोग है और एक से पना बहता है । (३) कागवस्था अवस्था

अधिकता बचना रोशनी। अमल्य मातृम ज्ञाना पीठ में बहुत  
 रूढ़ कुम्भी बैठने का होय और मुद्र सुखा हा। सराये  
 क भाग आसी वशाव करने समय रूढ़ भाग की इच्छा  
 रहने पर भी नींद न आना और आना में जलनही  
 इत्यादि लक्षणों में यह रूढ़ रीजानी है। रोग क अन्त में  
 कुम्भी सुखकर जब गुरु ७ उचलता हा भार सुरसुराह्य हा  
 ना बहाना। वनम गुरुला मित्रानी है।

**मरुत्पूरियस ३, ६, ३० शक्ति—**कुम्भी एकजाय  
 और रूमी मयम म ग्वर हा ना यह रूढ़ रीजानी है।  
 मुद्र न बार गिरना गल में पाय भाग में बहू मूल क  
 भाग उदरामय मूत्रा रूढ़ नम्य और शिथिल जीम, जीम में  
 रानों क दाग पन्नाय पमीन आना किन्तु तब भी पुत्र  
 येन मातृम न पटना।

**एपिम मेल ६, ३० शक्ति—**वजन ग्वर और भाधा  
 रण दिवस न टह मातृम होना चमडा और गल में  
 विमय (एक नरह का जहरीला प्रदाह) की तरह खाद्य रोग  
 और सुन्नत तथा उमक भाग लवण आने का भा जलन, जलन  
 वेदा करन का रूढ़ गैमिज नाट और गल में मूल द्रव पाय  
 री मित्रानी और उचली आना वशाव बन्द भाग बड़  
 सायही बेधेनी और लवणी।

**आर्मेनिक ६, १२ ३०, शक्ति—**अन्त  
 पुत्ररुग् और भाधे जलन वेदा करन बाधा उलाय तथा  
 अमल्य बैधेनी, नगी नम्य मुद्र और बाधनी दूर हानि  
 की दिव बहियाव रीमजल मूत्रा और जगदूर मुद्र  
 मूल द्रव मातृम पान, बाध २ बाधन बाध। ३ वरी



अधिकता बचना, रोशनी समस्त माधुम होना, पीठ में बहुत दूर फुगगी बैठने का होना और मुँह खुला हो सराबोर भाव भासी, वंशाव करने समय दूर सार्ने की इच्छा रहने पर भी नींद न आना और आँखों में जलनदा इत्यादि लक्षणों में वह दवा दीजाती है। रोग के अन्त में कुम्भी सुखकर जब गुरुत्व उच्चलना हो और सुरसुराहट हो तो बचाना वनमे सुखला मिदनाती है।

**मरफ्यूरियस ३, ६, ३० शक्ति—**कुम्भी पकड़ाव और इसी समय में ग्यारह हो तो वह दवा दीजाता है। मुर में बाँध गिरता गड में पाय, भ्याम में धरू लून क साथ उदरामय मृदा दूर नरम और शिथिल जीम, जीम में दानों क दान बड़नाय, पमीन आना किन्तु तब भी कुछ केन माधुम न पड़ना।

**एडिस मेल ६, ३० शक्ति—**बहुत ग्यार और साधा रज दिवस में दूर माधुम होना वमदा और गले में दिमव (एक तरह का अदरीया अदाद) की तरह बाँध रोग, और सुखन तथा उमक साथ बहुत आरने का भा जयन जवन पैदा काम का दूर रौमिज गाँ और गले में मूले दूर पाय जी मिथकना और उचली आना, वसाव दूर भ्याम कद भावही बेधनी और बचकना।

**ग्रामेनिक ६, १२ ३०, शक्ति—**अन्यत्र बुझना और माधुम जयन पैदा काम बाँध उताव तथा अमल केवना, नारी मर भुष्ट और बाँधनी दूर दालन के रिता रहैवना प्रीमकन मृदा और धनीदूर मर भुष्टदूर अमल गलाव कर के बाँधन पद। २ वरी।

पीता, द्वात्रिंशत्, इतर उधर करघट लेना, अत्यन्त उदरामय, विह्वल के लक्षण ।

**वेपथिशिया** — अत्यन्त निरमं दद, जीमिबलाना, पीछे उल्टी होना अत्यन्त कमजोरी और पीठ के नीचे की तरफ अत्यन्त दद, घमड़े की अपेक्षा गले में बहुत पुन्नी निकलना, बदनद्वारा द्वात्रिंशत् और बहुत बार गिरना, चहुर व काबो रगत द्वात्रिंशत् कष्ट और अत्यन्त स्नायविक अभिरता (वेचैनी) आनादाय रोग की तरह मज्ज यरीर से निकलने वाले मज्ज पदार्थों में बदनू। प्राय इस द्वात्री मीछे की शक्ति व्यवहार में लाई जानादे।

**हापोसाडमस ॥ ३, ॥ ३० ॥ शक्ति —**

फुलियो के निश्चयने में देर और उमी कारणसे स्नाय त्वक वसेदना, जिपि ने म उठनेकी चेष्टा करना, बाह्य रग का घमवती हुए बाह्य और पचक न मारना गले में मुचहन मान्द्रम पडना, निगलने की शक्ति न रहना शत में वेमात्रम हस्त निश्चयनाना, पेयार बन्दहोना, शत बिन्दीकडाना ।

**खेकेमिस ६, ३० शक्ति—**मौद के बाद मज्ज

बहव्यों का ददना, बेहोना और गुनगुनाहट के साथ बकना आर भुत्तो हुर बाजया बाली रगत की चटी हुर जिममें से रून बहनाहो, द्वात्रिंशत् निश्चयने समय द्वात्री में दद मान्द्रम होना, पानी पीने में कष्ट निश्चयन समय कष्ट में हुए पुमान का सा दद गले की गाठों में पात्र पैंग हाडाना शरीर के अङ्गन बिन्दी ददना बाह्य रग का पनप्रा गून गिरना ।



पदना लेना नहीं आ सकता है।

परन्तु—हल्का दण्ड जैसे बालों, मयरोट, रूप इत्यादि देना चाहिए। देने कतिपय जितना चाह पानी दिया जा सकता है। हल रट्टी काष्ठ सिबड़ी यदि रोग बराबर होत हो अन्तिम अवस्था में घरेलू दिया असह्य है।

मृकमण निवारण दूध (मिटाना) दूध मिटाने का मर से अच्छा उपाय यह है कि रोटी के छरडे और मिट्टी के छरडे मर उपायों अंद । दूध उपाय न उपायों से दूध में गूह मरकर उनको अच्छी तरह घोटाया जाये । जिस छरडे रांग रहा हो उससे मिट्टी के छरडे मर दूध पर डालकर उपाय । मर उपाय का निम्न प्रकार छिड़क और ईश्वरी पर सहेरी बराबर ।

चेचक के भेद—हमारे देश में इस रोग का सबसे पहला रूप बालों के छरे २ रूपों में समस्त चेचक, नाग यदि छरे २ वर्षों से यह रोग पुकारा जाता है। इसकी संप्रसारण और मरण अवस्था के अनुसार हला मरती बड़ी मरती मोटी मरती इत्यादि कहते हैं । प्रथम मरती में विभिन्न नामों के रोगों से इनके भेदों को बराबर करने में कहिनो पदों हैं मरती मरती विभिन्न ह मरती आ छरे २ वर्षों से दूध हैं उरी का निम्न यह है ।

## विकिपोस्त ।

यह रोग संप्रसारण में है परन्तु मरती मरती । इस रोग में चेचक का मरण देना है या न कि चेचक का हो मर देना है किनु चेचक का मरण





के काटे हुएके समान लाल रगतकी सी दीप्त पड़तीहैं और फिर धीरे-२ कुछ एक घंटोंमें हा उनके भीतर पानी इकट्ठा होजाताह। उन फु-सीयोंमें प्रदाहके लक्षण कुछ नहीं होते, शरीर पर गरम तेल या पाना पड़नेसे जिस प्रकार छाट-२ फफाव पड़ जातहैं इसकी पु-सिया भी ठीक वैसेही हानी है। ३ म ५ त्रिक भीतर मध एक कर फूट जाताह मधया यौही सुग जानीहैं। फु-सायों पर आ खुद-२ जमतहैं येभी ४ या ५ दिनमें उखल जातहैं। चमड़ेके गहर खानमें फु-सीया नहीं हानी इस लिय सिर्फ कुछ दिन तक सामान्य लाल मा दाग रहताहै। चेचककी तरह गद-२ कमी नहीं पड़त। इस रोगकी पु-सिया सब एक साथ नहीं निकल भागी इसलिये सब एक साथ सूखती भा नहीं। फु-सी निकलनेक समय रोगीके शरीरमें खुनला चलताहै इसके सिवाय और कोई उपसग उपस्थित नहीं जाता।

यह रोग साधारण नहीं है अतएव इसका भागी कल भी कमी बुरा नहीं होता। इसका चर प्राय साधारण होताह, शरीर की गरमी शायदही कभी १०१ डिग्रेस ऊपर उठतीहै। सखी प्राय रहतीहै। इस रोगसे मृत्युका भय बहुतदा कम होताहै।

**निनिर्मा।**—इसका अच्छा ब-दायस्त और रोग

भाराम हाजानके बाद पांड दिन तक साथधानी से रहने क सिवाय किसी दूसर इलाज की आवश्यकता नहीं पड़ता। एक मात्र ध्यानकी औपधि रसदफ्त है। यदि ज्वर अधिक दास पड़ तो एजनाइट दिया जासकाहै। फु-सिया निकलने क समय यदि खुजली बहुत होतो पापेस फायदा करताहै। अधिक शिर दद और गलेमें दद होतो बटाटना दधतहै।

कुत्तियोंमें मवाद पड़जायतो मरकयूरियस या एंटीमोना की भावश्यकता होमकतीहै ।

**महकारी उपान ।**—रोगीका बहुत दिगना जुगना न हिय और हृत्का पथ्य दना चाहिय । पथ्यके लिये दूध कम भण्डाहै । शरामें तल भलनम खुजगीको बहुत कुछ लयदा हाताहै । बच्चोंकी बहुत कुछ सावधाना रखना चाहिय कि बहुत न खुजा जायें ।

### टीका ।

बहुत दिनों से हमारे देश में न मनुष्याधान प्रथा अपना लुप्त वह से बचक के बीज का लहर दूसरे वह में दात करना प्रचलित था । यूराप में सब से पहिल सन् ३८० ई० में फास्टिडीनापिल नाम नगर में प्रचलित । भार सन् १७२७ ई० में इंग्लैण्ड देश में इसका प्रारंभ हुआ । सन् १८०२ ई० में हमारे देशमें इस प्रथा के बदल न-मनुष्याधान अपना गोवीन टाका इंग्रज गवरनर ने प्रचलित किया ।

ना-मनुष्याधान या बीज टीका नाम का बचक से अपना नाम का बचक के बीज से उत्पन्न हुये मनुष्यके देह में निज लहर दूमरे देहमें प्रविष्ट कर देने को गोवीन टाका कहत हैं । ममानक बचक से रक्षा पानक लियेहा यह टाका हमारा जानाहै ।

इंग्लैण्ड देशमें माहात्मा जनरल सबने पहिल लखो बलगा था । सन् १७६६ ई० में न बचक लहर को सबने वास्तु गोवीन टाका लगाया गया । इस लीन महीन बाद रक्षा बचक के देह में बचक के बीज का प्रवेश का

एरोपा को १५ घं विन्तु चेचक के कोह स्थान प्रकाशित नहीं हुये । हमारे दशमें गैबोत्र टीका प्रचलित होगया है । गवर्नेट ने सर्व साधारण की स्वाम्य रक्षा कल्पिये प्रत्येक बालक क टीका लगाने का कानून जारीकर दिया है ।

**प्रतिपेक्षक प्रभाव**—चिकित्सा सत्कार यह बात छप की सम्मति से निम्न हा बुझी है कि गैबोत्र टीका लगाने से चेचक का रोग बहुत रोका जाना है यदि किसी को हो नी तो प्रत्येक सरासरी नहीं रहता ।

डाक्टर मार्ले ने २० वर्षों में १०० चेचक के रोगियों को देखकर अपनी सम्मति इस विषय में निम्न लेखानुसार प्रकाशित की है —

बसन्त रोग की प्रत्येक भेदी की  
जुही २ भेदी । सैकड़ों पीछे मृत्यु सरासरी ।

( १ ) । जिसको टीका नहीं लगा ३१

( २ ) । टीका लगाया गया किन्तु

टीके का कोई बिन्दु नहीं २१ १०

( ३ ) । जिसको टीका लगाया गया उनमें

( क ) जिसको १ टीके का दाग है ७७३

( ख ) जिसको २ टीके का दाग है ४७०

( ग ) जिसको ३ टीके के दाग हैं १९१

( घ ) जिसको ४ टीके का दाग है ०११

इससे स्पष्ट मानून होगा है कि गैबोत्र टीका देनेसे चेचक रोग की मृत्यु सरासरी बहुत कम होजाती है यहा तक कि प्रत्येक नहीं के होकर रहता है । इसके सिवाय और भी देना मया है जिसका रोग कि टीका का दाग बिना

अधिक अगाड़ी रहा उनको इस रोग से उतनाही कम सुख्य भव है ।

**टीके का बीज**—गाय की चेतन का बीज मध्याह्नी द्वारा मनुष्य का देह में उग्राय कर दिया बीज लेकर टीका लगाया जाता है । गायत्री द्वारा टीका लगाने में मनुष्य की देह में काद दूधित रोग तथा उपद्रव [ भ्रान्त्य ] मयहमादि बहुत तरह के न्यमरोग आदि होने का भय नहीं रहता । यदि गायत्री के पहले में मनुष्य बीज । व्यवहार करना होता तो दो बात बिना ध्यान रखन की हैं—( १ ) गायत्री द्वारा पहिले निम्ने देह में टीका लगाया जाये और उससे लेकर फिर और जितनी व लगाना आवश्यक नहीं । यह कमजोर होता जायगा इस शिव दखता चाहिये कि जिसका टीका में बीज दिया गया है वह जितन देहों में दाता हुआ माया है ( २ ) जिनका दाता से बीज दिया जाता है उसका लव या पैलूक ( पता माता से ) उपद्रव की तरह का दूधित धातु गत राग है कि नहीं । इस शिव सम्पूर्ण शरीर और दात शुभ्य मनुष्य के देह से बीज बना चाहिये । यह बात ध्यान में रह कि बीज बहुत समय तक न निकले ।

**टीका लगाने का समय** ।—यदि बच्चा स्वस्थ हो तो दोन निम्ने में से पहिले ही टीका लगाना चाहिये । बच्चे को २ तम महीने की उमर में ही टीका लगाना उचित है । सामान्य छोटा उबर या उदरामय होने से टीका लगाने में देर न करन चाहिये । यदि बच्चा पैसा हुआ हो तो सब उमर में ही टीका लगाया जा सकता है ।

**दुबारा टीका लगाना ।** यद्यपन में टीका लगाने जाने पर दोषनाशका के आरम्भ में फिर टीका लगाना चाहिये । १५ वर्ष से १८ वर्ष तक दुबारा टीका लगाने का समय है । जिसको पहिली बार टीका ठीक न लगा हो उसको दुबारा आवश्यक टीका लगाना चाहिये । अथवा पहिली बार के टीके में किसी प्रकार का भी सन्देह रहा हो तो दूसरी बार टीका लगाने से न रुकना चाहिये ।

**टीका लगाने का स्थान ।** दोनों बांहों में बमदे की जाँघ के एक २ बांहों में दो २ जगह के हिसाब से कुल चार जगह टीके लगाने चाहिये ।

**चिकित्सा ।** टीका लगाने के बाद टीके के स्थान की सुडती से रक्षा करनेके सिवाय और किसी चिकित्सा की बहुधा आवश्यकता नहीं होगी । यदि टीके के स्थान में बहुत जलन हो तो गीला कपड़ा उस पर रक्त देना अच्छा है । टीका लगाने के बाद ज्वर होता है यदि ज्वर सामान्य हो तो किसी औषधि का आवश्यकता नहीं । किन्तु यदि ज्वर घेप पूर्वक भाव और टीके के स्थान में अत्यन्त जलन हो तो 'बेबेटोना' अथवा 'एकानास्ट' देना चाहिये । टीका सुख जाने के समय हो एक मात्रा सख्कर देना अच्छा है । टीका देने के बाद यदि किसी प्रकार का उपद्रव पड़ा उद्गरामय आदि उत्पन्न हो तो सायबेसिया कायदा करता है । टीका जल्दी सुखा देने के लिये उसके ऊपर कोर दवा लगाना उचित नहीं । टीकेके ऊपर सफेद चन्दन को घिसकर लगा दिया जा सक्ता है उस से जलन की जगह ठर रहती



हुमा आगों में दहें और चिरविगट, रोदानों से घोंघा मानूम हाना पल्लव कुठर लाख और खुजे हुये रहत हैं नाव न बराबर पानी गिरता रहता है और छोड़ जाती है हमेशा गामी रहती है सास जल्दा जाता जाता है, पेट और गल में दह और मर भग आदि लक्षण भी हाल रहत हैं । यह कथक्या तीन दिन से ५ दिन तक रहती है साधारणतः ४ दिन तक रहती है ।

( ३ ) क्वाटावष्ठा ।—दावार पर पुगियदा प्राय चौधे दिन गलब जाता है । कभार मान आठ दिन का देर ना हो जाता है । साधारणतः बेहद पर बिन्दु पर क्वाट पर पाठ दावार में और मर न पाछे 'दाघ पैरों में प्रकाश होना है । यह इतना साधारण रोग है कि इस का दण्ड दिख बरन को आवश्यक नहो ।

पुगियदा जमर निबन्ध जाता है धमे हा धमे मर्दों के लक्षण १३४ बन्ता जाता है तथा दावार में खुजला और जलन मानूम हान बगमी है । क्वाटा का गति प्रति मिनिट १०० न १५० बटा तक कि १६० तक हो जाता है और दावार का लम्बी १०४ न १०६ इंचों तक होवे हुए तथा गूद है । कभार दावार की लम्बी १०२ वा १०३ इंचों से ऊपर बरी होना । इस दावार में न क गुद और ल में जलन ना बहुत होवे बगमी है ।

पुगियदा गूद और पर निबन्ध पर प्राय दूसरे दिन से दिख बगमी है । पुगियदा के मिटने क सादरी दर्द को गामी कम होवे बगमी है । क्वाटी की गति धीमा होवे बगमी है और क्वाटी के लक्षण में मर बगमी है । पुगियदा निबन्ध के लक्षण प्रति स्थान में और



जिस समय निकली थीं मिटने के समय भी क्रममे एक के बाद १ उसी स्थान में मिटने लगती हैं । पुष्पिण्य छोप होने के समय शरीर से पतले २ गुरद उचलन लगत हैं और रोगी को आराम होने लगता है ।

**परमर्ती ( पीठे होने वाले ) उपसर्ग ।**—रोग के बाद इस के साथ के बहुत से रोग उपसर्ग हो जात हैं । इस रोग के आराम होने पर भी बाँवें बल यह सब रोग कष्टसाध्य हो जात हैं । इन में नीचे लिखे हुये प्रधान हैं—

( १ ) श्वास यंत्रों के रोग, जैसे खासा, फेफड़ में प्रदाह यक्ष्मा की खासी इत्यादि । ( २ ) बहुत से खासा में प्रदाह जैसे भ्रात्र नाक, कान इत्यादि और उन से पीड़ित गिरना । ( ३ ) कंठा बगल आदि शरीर के शुद्ध स्थानों का गाला में प्रदाह होना । ( ४ ) उदरामय, कमीर यह उदरामय पुरान उदरामय के समान आकार धारण करता है ।

**चिकित्सा ।**—एकानाइट यमरा निश्चयन के पश्चात् श्वर और मर्ती के लक्षणों में ध्यान देकर करता है । यदि श्वर का काम करना है और रात्रि के समय खासी और श्वर के कारण जो बचनी होती है उस का रक्षा करना है । यदि पुष्पिण्य दर में निकल आये या बल साथ और अत्यन्त प्रयत्न श्वर के साथ निश्चयना और बायड आन का दम मादूम हाता जैवभासीनम बना आहूय । मस्तिष्क का क्वापुनिक उद्यमना और इस के साथ २ बायडॉक मर्दकन हा बिना क्लृप्त के रक्षाबिषय ( रक्त की मर्दि

काह) होने का मय होय तो 'विरेट्म-विरिड' कायदा करता है । ससरे की पहिली हावत में यदि कड या गले के भीतर उछेचना, खुदाकी और ठहर कर भाक्षेपयुक्त खासी, बचना इत्यादि खसप उपस्थित हों तो बेबेटीना कायदा है । नार और भासों में सरसी के खसप यथा जगताह बहुत पानी गिरना, भासों में दर्द होना आदि-खसप हों तो 'पूफेसिया' देना चाहिये । सूखी खासी पूफेसिया का प्रधान लक्षण है । सुनी खासी स्फोटायसा के प्रारम्भ में स्नायविक उछेचना, पाकाशय की गड़गड़ हो तो 'पबसे टिला' देना चाहिये । पुंसिया यदि और रगत की हों अथवा वे समय में बैठ जाने की हों और विचार के खसप दाँव पडेँ तो 'ग्रामोनिया' देना चाहिये ।

**एकोनाईट ६ शक्ति ।** अत्यन्त प्रयत्न ज्यर, नाडी

पूँच कठिन और तेज अधिपर निग, नई के समय में हाथ पैर चलाता और चमक उठता, नाक की जड़ में बहुत शोक भाव्य होना, दाँत बिडबिडाना, छाती में सुद घुमौने खासा दर्द सरसी और छाँक, पाकाशय और भासों में दर्द, साप ही उबड़ी और उदरामय ।

**एपित १२ शक्ति ।** एक स्थान में बहुत सी

कुम्सी निहलना और चमटे का सुजना, भासों के पक्कों का सुजना दाँत रगठ, अक्षत दाँत रंग की कुम्सी भासों में सरसी के लक्ष्य और उदरामय, दुबलना और रुचना ।

**ग्रामोनियम कार्व ६ शक्ति ।** नाक रची हुई

और ज्वन पैदा करने वाला पानी गिरना, गले के भीतर

पाँस पड़ना और बार बार खनारने की इच्छा करना माथी  
 हाथ के बाद ग्रांसी बढ़ना। फुमियाँ बैठ जाने के कारण  
 श्याम कह बच्चे का सोते २ थमक उठना यसा मान्द्रम  
 हाता मानो श्याम नहीं लिया जाता। सांघातिक दुर्ग  
 दया ।

येलेडोना द, ३० शक्ति । नमाणत निद्रासना  
 प्रथमा भागे मुक्ती पडना परन्तु मींद न माना, घहरा और  
 माना का भाव रंग, साते समय चौक उठना और उठना  
 पडना नाक की खुशका, भिर रू, बार २ चौक, गंध में  
 दरे और रंग रंग, गुर्मी साचर गुण और शरणा के  
 साथ मीमी रंग में कार्या का रंग, छोटे कारणा छे ई  
 सब हिंदुओं का अधिक उत्पत्ति हुआ, पापडे आना ।

[illegible]

प्रेममिषिपम १,३,३० शक्ति । मेव एव मे  
 कर्म कर्म ईह कर्म मेव कर्म मे विद्या का कर्म  
 कर्म का कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म  
 कर्म का कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म

होना, निगलनेक समय कानमें दद, गर्भमें दद और दृष्टिमा इकट्ठा होना, बहुत बड़ देनरखी मासी ज्वर क साथ बहुत मरही खगना ( नाद सी जाना ), पुम्मा बैठ जाना और मस्तिष्क विकार के लक्षण । सरही के लक्षण अधिक रहन से निम्न क्रम मस्तिष्क और स्नायुमण्डल भाजान होन से उचक्रम दिया जाता है ।

**इपीकाकूआना ६ शक्ति ।** सरही और सुरसुरा हठ के साथ मासी गले में कफ सराना बहुत जी मिथ लावा और उल्टा होना पुम्मा निश्चयन में विध्वंस और साम घने में तल्लीक । यह दया यही को बहुत पावदा करती है ।

**मरक्यूरियस ६ शक्ति —** नाक से बराबर पानी गिरना और छींकना आँखों में ज्वरन और पानी गिरना टॉम्बिस नाठों में ज्वरन और घाय छींकने में या खामते में खानी में दाहने गरफ सुर सी सुरता कष्ट भयदा साथ मिला हुआ उदरामय रक्त मिना जमा आमाशय ।

**पलसेटिसा ६ शक्ति —** पतला वा सूता कफ साथ ही बार बार छींके, स्वाद और मृघन का शक्ति का भाव होना, आँखों से पानी बहुत गिरना रान में लबके खलना दाहिन कानमें बपकन होना या फटे अने कीमों तकलाफ होना कान में दद, कान के जोतर उल नि ने कामा शब्द होना रातम या राग्याक समय मुखा कामा विशेष कर मान के बाद गीर्ब मासी बार उबठीक साथ कफ निकलना तथा शक्ति में उदरामय पाकाशय की गड़गड़ । खमरा निकलने क



सोढ़ा दिन में दो बार सेवन करनेसे इस रोग का भय नहीं रहता ।

**सहकरी उपाय ।** जब तक पुन्निषा न बैठ जावे और शरीर बिह्वृद्ध होकर न हो जाय घर से बाहर जाना उचित नहीं । रोगोंके घर में कुछ सम्भेद्य तो उकर दो किन्तु अच्छी तरह हवा के आने जाने के द्विये माग रहना चाहिये । बिह्वे की बाहर पहिने के कपड़े हमेशा बदल कर तथा गरम पावों से धोकर व्यवहार में आने चाहिये ।

रोगीको ठंड लगना या ठंडे पानी से स्नान करना बर्जित है क्योंकि थोड़ी सररी लगने से ही रेन्ड में प्रदाह आदि सांघातिक उपसर्गों का उपस्थित होना सम्भव है । पान के द्विये ठंडा पानी दिया जा सकता है । छोटे भावों की भवेदा बड़ दाहों में यह रोग सांघातिक होते हुये आंचक दिया गया है । इन द्विये कह सचे हैं कि पूष काल में यह रोग मा सामान्य या और इसकी चिह्नितता भी सामान्य थी । परन्तु आज जब इसको सामान्य समझना उचित नहीं क्योंकि इस के साथ सैकड़ों गृप्स दाग हुये प्राप्य देखते हैं ।

**पृथ्व ।** —इसका पृथ्व देना चाहिये । स्वरस समय आगेट, बरही का मजूरसि केर उबर घटजामर दूध रनिदा दिया जासकता है । आहार के बिबदये कुछ दिन बाद भूष मा मजूरसि रखना उचित है क्योंकि सरस में १। उरामय होजना सम्भव है ।



यद्यपि कम उमर बच्चे भी वृद्धों को जदी होनी । इस रोगके पूर-  
वर्ती कारण व्याप्य वृद्धा व नियम भंग करना और  
उपशक्त कारण संभव होसकते ।

**मक्रमण ।** इनको बीमारियों का तरह  
यह भी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य की होसकती  
है । स्पर्श द्वारा श्वास प्रश्वास द्वारा, यदा तद्विनाश  
द्वारा भी इस पादा का शरीर में प्रवेश होसकता है ।  
सेप्टेमीक ग्रेग और म्यूकोनिक ग्रेग जितनी संक्रामक हैं  
म्यूकोनिक ग्रेग उतनी संक्रामक नहीं है ।

**प्रकार भेद ।** रोग-विष अथवा जीवाणु सब के  
एक होन पर भी यह जुदे जुदे लक्षण होने के कारण  
जुदे जुदे नामों से ही पुकारे जाते हैं । यथा —

(क) म्यूकोनिक अथवा गाँठ बढ़न व साथ पीड़ा ।—  
साधारण तरह पर इस को पांच भागों में विभक्त किया  
है । (१) फिमोरल (पैर में) (२) इनगुइनाल (राग में),  
(३) एक्झिबरी (बगल में) (४) मर्पोइडल [ गरदन में ] ।  
(५) टांक्सिलर ( ताडुमेलीय अथवा तालू की उड़ में ) ।

(ख) बिना गाँठ पृथक् के राग ।—यह भी अर्धो-  
हा भागों में बाँट गया है । [ १ ] सेप्टेमीक [ रक्त  
दोष के कारण ] (२) म्यूकोनिक [ पैरों के प्रदाह के  
कारण ] ; ( ३ ) गैस्ट्रोइटेस्टाइनल ( आत और पाका  
दायका ) ( ४ ) मेमोइडल ( भ्रूज ग्रन्थि सम्बन्धी ) ;  
( ५ ) सेराग्रल [ मज्जिष्ठा ] ।

**लक्षण ।**—[ क ] म्यूकोनिक या प्रमर्ष वृद्धि युक्त पादा ।

[ गाँठ बढ़न के साथ रोग ] इसमें गाँठ बढ़ की तरह



## श्लेष्म । ७

**निर्वाचन ।**—पहिले समयों में श्लेष्म कहनेसे किसी पीड़ा द्वारा बहुत से मारमियों का पीड़ित होना और मरना समझा जाता था किन्तु आजकल श्लेष्म शब्द से व्यूथोनिह श्लेष्मक मर्दे समझा जाता है। यह एक प्रकार नया तेज सन्नामक ज्वर रोग है। ज्वर के साथ राग आदि स्थानों की गाँठें फूट जाती हैं और अन्न नष्ट होने लगता है तथा कभी-कभी मरण प्राय या पीडा भी दानाता है।

**इतिवृत्त ।**—१८८६ ई० पहिलेसेही भारतमें यह कितने स्थानों में यह रोग दृष्ट पड़ा था, किन्तु इस वर्ष १८८६ ई० में यह भीषण और सन्नामक रूपसे इसका प्रादुर्भाव हुआ। यह कभी-कभी मारन वर्ष के सब स्थानों में बहुत घुर्की है काल में कोई देश या इसका प्रादुर्भाव से पीड़ित नहीं हुआ।

**कारणानुसंधान ।**—कोको-बैसिलस (cocco-bacilli) नामक जीवाणु (यहूनी छोटरी जीव) किसी तरह से शरीर के भीतर प्रवेश करके इस पीडा का उत्पन्न करते हैं। रागी के मलमूत्र आदि इल्लमा आदि में यह जीवाणु दृष्ट पड़ते हैं। बहुतों की यह राय है कि प्लेग का विष मिट्टी में रहता है। जग पैर घूमने से यदि पैर में किसी जग या घाव या खुलसा होता है तो राग-के होने की विश्व सम्भावना है। अत्यन्त उमरमें ही यह रोग दानाता है कि

गठि कभी एक कर फूट जाती हैं और कभी बौही बैठ जाती हैं उमर १०२।१०३ या इस से अधिक नी होजाता है । दादिनी ओर की गाँठ यदि फूट उठे तबइसको दुरा लक्षण समझना चाहिये ।

[२] ह्युगैव (Huguey Type) यह भी पहिछी भेषी मैही गिता जाता है । साधारणत इस में रग की गाँठ फूट जाता है । यह दोनों प्रकार को पीछाएँ अधिक बेग पूर्वक प्रकाशित नहीं होती ।

[३] ऐरजीवेरी (Aerzivey Type) ऊपरका भग यथा हाथ आदि द्वारा यदि छेग का विष शरीर में प्रविष्ट होता इस प्रकार के लक्षण शरीरन प्रकाशित होते हैं । रगव के भीतर गहरार में गाँठ फूट उठती है, इससे अकस्मात् कपकपी लगती है । बेग पूर्वक उबर होता है कष्ट बात मुखसे नहीं निकलनी इत्यादि ऐसे लक्षण प्रकाशित होता है ।

४) सवाईटेल (Cervical Type) यदि ग्लेग का विष शरीरन गाँठ के द्वारा शरीर में प्रविष्ट हुआ हो यह यर इन के पास बाही गाँठ के फूटन से ही उना जाता है । इसमें अकस्मात् उबर होगा है मानसिक अवसाद [ मनका सुख पड़जाया ] इत्यादि लक्षण प्रकाशित हात हैं ।

[५] टोक्सिडर (Toxic Type) इसमें पाँड़ने की तरह सब लक्षण प्रकाशित होते हैं । गर्दन की उगह सूखकर कृती या शैगुनी होजाती है । इस प्रकार के रोग में दगाम यह उने के कारण रोगी के मृत्यु जानामी सम्भव है । फूँधी दुर गठ अस्तकके जितने ही अधिक पास होगी उतनी ही मृत्युकी अधिक सम्भावना है । इस प्रकार लक्षण भाव रोगों में ही अधिक देख आने हैं ।

पूछ उठती है इसी कारण इसको श्रुचोनिवृत्ति भेग कहते हैं। परिवर्तन शरीर में अत्यन्त श्रुचोनिवृत्ति उत्पन्न होकर रहने, भिर घूमना और प्रकट कपकपी के साथ ऊपर के अक्षुण्ण उपस्थित होते हैं। बात कहने में जीम कोपनी है और मुह से साफ आवाज नहीं निकलती, बेचैनी जी मिचलाना उखड़ी, उमाह से मज मादूम होना और आँखों का कुछ कुछ झलकना होना आदि अक्षुण्ण दिग्गजाई पड़ने हैं। शरीर की गन्ती १०१ से १०४ तक बढ़ जाता है यहाँ तक कि कमी कमी १०६ से १०७ तक हो जाती है। नाड़ी की गति सामान्य १०० से १३० तक बढ़ने में आरंभ है। परिवर्तन नाड़ी मन्द और द्विधातु गूँ [ दुहरी ] (Dicrotic) पीछे आगे और वेग मुक्त हो जाती है। जीम सफेद मैल से ढँक हुए नीले न माना चिन्ता से उठने की चेष्टा करना, अमन्य ध्यान लगना मज मादूम होना बेहद बिम्बायुक्त बकना बगल रान, और आँख का नाणे में से किसी एक का पूरा उठना और ठहर ठहर कर अक्षुण्ण मानना या दर्द मानूम होना आदि अक्षुण्ण दिग्गजाई पड़ने हैं। कभी कभी ऊपर अक्षुण्ण हाथर मन्त्रित अक्षुण्ण मी दिग्गजाई पड़ने हैं। बच्चों का इस रोग बढ़ते आगे लगने हैं। आचार्यनामः उनके शरीर की गन्ती १०३ : १०४ से अक्षुण्ण नहीं हार्नी। इस का निवारण बिंदु विद्युत प्रकाश के और अक्षुण्ण नाच दिग्गजाई है :—

[२] निमोनल [ Personal Type ] — नीचे के  
बया देणों के लखने जादि क नो में होकर यदि दूग  
अन एका में इन्हें हुआ होगा मोहावाक नौमीरव क  
क नौक अन्धरा उन्नक राज बजरी मय माटे एक म  
अन्धरा अन्धरा अन्धरा हुन उन्नी है। यह गुना हरे ।

गठि कमी एवं बर फूट जाती है और कमी बौरी बैठ जाती है जब १०२।१०३ वा इस से अधिक भी हो जाता है । दाढ़िनी और ही गांठ यदि फूट उठे तो इसको घुसा दस्य समझना चाहिये ।

[२] इगुरगैव (Inguragay Type) यह भी पहिची धेपी मँही गिना जाता है । साधारणतः इस में रोग की गांठ फूट जाती है । यह दोनों प्रकार की पीड़ाएँ अधिक वेग पूर्वक प्रकाशित नहीं होती ।

[३] ऐरजोबेरी (Aerajoberi Type) ऊपरका अंग यथा हाथ आदि द्वारा यदि धँग का विष शरीर में प्रविष्ट होता है इस प्रकार के लक्षण शरीरमें प्रकाशित होते हैं । बगल के भीतर गहराई में गांठ फूट उठती है, इससे अकस्मात् कपकपी भगती है । वेग पूर्वक बर होता है एवं बात मुखसे नहीं निकलती इत्यादि ऐसे लक्षण प्रकटिते होता है ।

४) सधारकैल (Sadharkail Type) यदि ग्लेग का विष दान्सल गांठ के द्वारा शरीर में प्रविष्ट हुआ हो यह घर इन के पास पाछा गांठ के फूटने से ही जाना जाता है । इसमें अकस्मात् बर होता है मानसिक अजछाई [मनका सुत्र पड़ जाता] इत्यादि लक्षण प्रकाशित होते हैं ।

[५] दान्सल (Dandil Type) इसमें पहिचे की तरह सब लक्षण प्रकाशित होते हैं । यदन की अण्ड सुबकर दूनी या चौगुनी हो जाती है । इस प्रकार के रोग में रगास एक जाने के कारण रोगी के प्राण जानामी सम्भव है । फूटी हुई गांठ मस्तकके जिनने ही अधिक पास होगी उतनी ही मृत्युकी अधिक सम्भावना है । इस प्रकार लक्षण प्राण बचों में ही अधिक देखे जाते हैं ।

पूछ उठती है इसी कारण इसको व्यूथेनिक लेग कहते हैं । पश्चिमी शरीर में मसल-बद्धता उपरान्त सिर बंद, भित्ति घूमना और प्रयत्न कपकपी के साथ ऊपर के लक्षण उपस्थित होते हैं । पात कहते में जीम कांपती है, और मुह से साफ भावात्र नहीं निकलती, बेचैनी, जी मिचलाना, उछटी, उजाड़ से अथ मालूम होना, और भावों का कुछ कुछ छाल रा होगा आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । शरीर की गरमा १०२ से १०४ तक बढ़ जाता है यहाँ तक कि कभी कभी १०६ से १०७ तक हो जाती है । नाडा की गति साधारणतः १०० से १३० तक रहने में आरंभ है । पश्चिमी नाडी सघन और द्विधातु पूज [ दुहरी ] (Dicrotic) पाँछे धातु और वेग युक्त हो जाती है । जीम सफ़ेद मैल से ढकी हुई, नींद न आना पिछोने में उठने की चेष्टा करना, असह्य व्यास लगना अथ मालूम होना चेहरे चिन्तायुक्त बनना, धनक राग, और काम की गाँठों में से किसी एक का फूल उठना, और ठहर ठहर कर धातुके मारन का सा दर्द मालूम होना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । कभी कभी ऊपर अधिक हावर मस्तिष्क के लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं । बच्चों का इस रोग में बायडे आने लगते हैं । साधारणतः उनके शरीर की गरमा १०३।१०४ से अधिक नहीं होती । इस के सिवाय विशेष विशेष प्रकार के और लक्षण नीचे लिखे हैं —

[ १ ] फिमोरल [ (Femoral Type) ] — नीचे के भाग पर पाँच पैरों के तखवे आदि स्थानों में होकर यदि हृग का अथ शरीर में प्रविष्ट हुआ होतो मोछाकार फीमोरल स्थान के नीचे मथवा उस के पास वाली सब गाँठें एक साथ मथवा अलग अलग फुट उठता है । यह फूला हुई स

गाँठ कभी एक बार फूट जाती है और कभी बोही बैठ जाती है उबर १०२। १०३ या इस से अधिक भी हो जाता है । दाहिना ओर की गाँठ यदि फूट उठे तो हमको दुरा कृपण समझना चाहिये ।

[२] इंगुगैब (Ingugai Type) यह भी पहिची भेषी में ही गिना जाता है । साधारणतः इस में एक की गाँठ फूट जाती है । यह दोनों प्रकार की पीड़ाएँ अधिक वेग पूर्वक प्रकाशित नहीं होती ।

[३] ऐक्सायेरी (Axillary Type) ऊपरका भग्न यथा हाथ आदि द्वारा यदि ब्लैग का बिस्तर छरीर में प्रविष्ट होतो इस प्रकार के कृपण क्षीरम प्रकाशित होते हैं । कृपण के भीतर गहराई में गाँठ फूट उठती है, इससे अकस्मात् कपकपी लगती है । वेग पूर्वक उबर होता है, कुछ बात सुनसे नहीं निकलती इत्यादि ऐसे लक्षण प्रकटित होता है ।

४) सेंसल (Cervical Type) यदि ब्लैग का बिस्तर टॉमिन्स गाँठ के द्वारा क्षीर में प्रविष्ट हुआ हो यह सब इन के पास वाली गाँठ के फूटने से ही जना जाता है । हमने अकस्मात् उबर हाता है, मानसिक अवसाद [ मनका सुन्न पड़ना ] इत्यादि लक्षण प्रकाशित हात हैं ।

[५] टॉमिन्स (Tomins Type) हममें यह भी की तरह सब लक्षण प्रकाशित होते हैं । मृत की अंग्रेह सुन्दर दुनी या पीपुली हाता है । इस प्रकार के रोग में रोगी एक ज़ाने के कारण रोगी के मृत जानामी समझ है । फूली हुए गाँठ मरने के जितने ही अधिक पास होगी उतनी ही मृत्यु की अधिक सम्भावना है । इस प्रकार कृपण भाव कभी से ही प्रविष्ट होना है ।

फूँट उठती है इसी कारण इसको प्यूवोनिक ग्रेग कहते हैं । पश्चिमी शरीर में असह्यच्छेदता उपरान्त सिर दर्द, भिर घूमना और प्रबल कपकपी के साथ उजर के लक्षण उपस्थित होते हैं । घास कहते में जीम कापती है, और मुँह से साफ साधारण नहीं निकलती, बेचैनी, जी मिचलाना, उखटी, उजाड़ से भय मालूम होना, और आँखों का कुछ कुछ खाल रंग होना आदि लक्षण दिखाई पड़ते हैं । शरीर की गरमी १०२ से १०४ तक बढ़ जाता है वहाँ तक कि कभी कभी १०६ से १०७ तक हो जाती है । नाड़ा की गति साधारणतः १०० से १३० तक देखने में आर है । पश्चिमी नाड़ी सख और द्विधात पूर्ण [ बुहरी ] (Dicrotic) पीछे साथ और वेग युक्त हो जाती है । जीम सफेद मैल से ढकी हुई, नींद न आना, पिछोमे स उठने की चेष्टा करना, असह्य व्यास खगना, भय मालूम होना चेहरे धिन्तायुक्त बकना घगघ रंग, और कान की गाँठों में स किसी एक का फूल उठना और ठहर ठहर कर थपके मारन का सा दर्द मालूम होना आदि लक्षण दिख लाए पड़ते हैं । कभी कभी उजर अधिक हाकर मस्तिष्क के लक्षण भी दिखाई पड़ते हैं । बच्चों का इस रोग में बापटे आने लगते हैं । साधारणतः उनके शरीर की गरमा १०३, १०४ से अधिक नहीं होती । इस के सिवाय विशेष विशेष प्रकार के और लक्षण नीचे लिखे हैं —

[ १ ] फिमोरल [ (Femoral Type) ] — नीचे क रंग धपा पैरों के तखवे आदि स्थानों में होकर यदि ग्रेग का रंग शरीर में प्रविष्ट हुआ होतो गोखाकार फिमोरल स्थान के नीचे मध्या उस के पास वाली सब गाँठें एक साथ मध्या मध्य अलग पुट उठता है । यह फूला हुआ सब

५) सेरीब्रल मास्तिष्क विकार की एक तरह पैंडा है ।  
( *Cerebral Typo* ) इसमें मास्तिष्क विगड़कर रोगी अमानस  
हुकर हो जाता है । थोड़ा २ घण्टे आते हैं, बेहोशी या कामा  
आदि आकर नाश हो जाता है । यह रोग भा बहुत  
आवृत्तिक है । साधारणतः रोगी १२ घंटे से लेकर २ दिन  
का भीतर भर जाता है । यदि रोगी थोड़ा ६ घंटे में न भरे  
तो गलत पूरा उठती है ।

गाठ फूटना ।— गाठ एक ही गाठ फूटता है । पूछी  
दूर गलत क उतर अगुड़ी करने से रोगी को बहुत बुरा  
होता है । यदि और दूसरे दिन से लेकर गलत का लक्षण  
गुल होता है । सातवें या आठवें दिन पच जाता है और  
पचने से आराम होने का अन्त भी बीजावृत्ति है । मरने  
में थोड़ी पुनर्जन्म होती है । पचने लगे या बाधा होता है  
और उसमें अन्तर्भाव ( *Altamen* ) रहता है ।

रोगी का व्यवस्थान ।— रोग रोगी की बाह गलत  
पूरा न जिस तरह की गलत पूरा हो उसके दुखे और  
करपद विधान से आराम महसूस होता है । पैर पसार कर  
करे ॥ पचता है ।

भारिफस ।— रोग बहुत नादानिक पैंडा है । इसमें  
रोगी २० से २५ घण्टे भर जाता है । पचने का गलत पूरा  
१० से १५ घण्टे और बाधा क दिनों दिनों की गलत पूरा  
२५ से ३० घण्टे भर जाता है । रोगी को बुरा लगने का  
दुख है दिनों गलत पच जाता है ।

शुभलक्षण ।— यदि आराम होने गुल हो जाय तो



(ख) बिना गाँठ के फूटने वाले रोगों के चिह्न

लक्षण —

(१) सेप्टिसेमिक (Septicaemic Type) यही विषाक्त रक्त प्रवेश करता है और रक्त दोष के लक्षण प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार की पीड़ा अत्यन्त साधारण होती है। शरीर में कुत्तियों की तरह छाछ, काछ, नीले और अनेक तरह के दाग उत्पन्न होने हैं। नाक, मुँह, पैरों, मूत्राशय आदि स्थानों से रक्त बहना लगता है और अन्तर्गत सब शरीर में गन्ध शुरु हो जाती है।

२ प्यूमोनिक (Pneumonic or Thoracic Type) इस के लक्षण यह हैं कि श्वास वायु के साथ मिलकर रक्त का वाज्य शरीर के भीतर प्रवेश करता है। इससे ग्रेनोकार्डिटिस अथवा खोपड़ी प्यूमोनिया के लक्षण प्रकाशित होने हैं। यह रोग बहुत ही साधारण है। प्रायः दूसरे दिन बिना रागी वा मृत्यु हो जाती है। कभी कभी इस में गाँठ फूलती हुई भी देखी जाती है।

(३) गैस्ट्रो-इन्टेस्टाइनल (Gastro Intestinal Type) इन्टेस्टाइनल अथवा इससे पाकायय आर आंतों पर सब प्रभाव होता है। कुछ लक्षण सन्निधान अवरक और कुछ हैजेक से दिखता है। उबकाह, सूखी उल्टी अफरा, उदरामय आदिल प्रकाशित होते हैं इसका भी मृत्यु संख्या कम नहीं है।

(४) नेफ्राइटिक (Nephritic Type) - इस रोग में मूत्राशय अथवा दोनों वृक्क (मूत्र पैदा करने वाली गाँठ) प्रधान आक्रान्त होते हैं और पेशाब कम उतरता है। पेशाब के साथ रक्त गिरता है और अवसन्नता लम्बा और दिव्य उपस्थित हो जाता है।

५) सेरेब्रल मास्तिष्क विकार की एक तरफ पीड़ा है ।  
( *Cerebral Type* ) इसमें मास्तिष्क विगड़कर रोगी अचानक  
दुबल हो जाता है । थोड़ा २ घण्टे होते हैं, बेहोशी या कोमा  
आदि आकर नाड़ी लोप हो जाती है । यह रोग भी बहुत  
साधारण है । साधारणतः रोगी १० घंटे से लेकर २ दिन  
के भीतर मर जाता है । यदि रोगी थोड़ी ही देर में न मरे  
तो गांठ पूरा उठने में ।

गांठ फूटना ।— प्रायः एक ही गांठ फूटती है । फूटी  
इस गांठ के ऊपर अगुची रखने से रोगी को बहुत दर्द  
होता है । पहिले और दूसरे दिन से लेकर गांठ का फूटना  
पूरा होता है । सातवें या आठवें दिन पच जाती है और  
पचने से आराम होने का आभास भी की जा सकता है । मरने  
में थोड़ा देर लगती है । पश्चात् लाल या काका होता है  
और उसमें अयस्क ( *Albumen* ) रहता है ।

रोगी का व्यवस्थान ।— ग्रेग रोगी की कांश गांठ  
फूटने में जिस तरह की गांठ फूटी हो उसके दूसरे और  
कवच द्विधारे से आराम प्रदत्त होता है । पैर पसार कर  
बैठा संयोजता ।

भागीफल ।— ग्रेग बहुत सामानिक पीड़ा है । इसके  
रोगी २० से २५ फीसदी मर जाते हैं । वगल की गांठ फूटने  
से ५० भागी और नीचे के हिस्से की गांठ फूटने  
से १० भागी मर जाते हैं । रोगी को यह रोग होने में  
दूसरे दो दिन गर्भ पान हो जाता है ।

शुभलक्षण ।— यदि आराम होने में गांठ फूटने में

( छ ) बिना गाँठ के फूँडने वाले रोगों के विष्ट  
खक्षण —

( १ ) सेप्टिसेमिक (Septicæmic Type) यही विष्ट रक्त प्रवेश करता है और रक्त दोष के खक्षण प्रकाशित होता है । इस प्रकार की बीड़ा अस्थान साधारण होती है । शरीर में फुंसियों की तरह लाख लाख नीले और अनेक तरह के दाग उत्पन्न होते हैं । नाक, मुँह, पैरों, सूत्राधार आदि स्थानों से रक्त बहने लगता है और अन्तः सब शरीर में गन्ध शुरू हो जाती है ।

२ प्यूमोनिक (Pneumonic or Thoracic Type) इस के लक्षण यह हैं कि श्वास वायु के साथ मिलकर रक्त का दाग छात के भीतर प्रवेश करता है । इससे मोंक्राइटिस अथवा छोटी प्यूमोनिया के लक्षण प्रकाशित होते हैं । यह रोग बड़ा ही साधारण है । प्रायः दूसरे दो दिन रातों की मृत्यु हो जाता है । कभी कभी रक्त में गाँठ फूँटती हुई भी दवा जाती है ।

( ३ ) गैस्ट्रो-इन्टेस्टाइनल (Gastro Intestinal Type) इन्टर इन्ट्र मयात इससे पाकाय आर आतों पर सर्रा पहुँचता है । कुछ खक्षण सत्रिपात अथवा और कुछ हेजेके से दिख लाए पड़ते हैं । उबकाह सूत्रा उल्टी अथवा उदरामय आदि लक्षण प्रकाशित होते हैं इसकी भी मृत्यु संख्या कम नहीं है ।

( ४ ) नेफ्राइटिक (Nephritic Type) — इस रोग में मूत्रपिण्ड अथवा दोनों कृक (मूत्र पैदा करने वाली गाँठ) प्रधानतः आक्रान्त होते हैं और पेशाब कम उतरता है । पेशाब के साथ रक्त गिरता है, उबकाह, अयसत्रता, तन्द्रा और मूत्र विचार उपस्थित होना है ।

मे याम मायम हान कीर्ती तच्छीर होना बाद बगल का  
गाठ का गूजना और दह हाना गान २ अथक उठना और  
बहुत घर्मील माना ।

**फाटलम ६ शक्ति ।**—जिन प्रकार की लीग में गून  
गिरन व लक्ष्य मांयक हा उसमें घट दिया जाता है ।  
बढ़ना बढ़ना जन गूजना छेकड़ में प्रदाह, राग और  
बगल की गाठ में प्रगाद भार गूजन ।

**लोकमिस ६ शक्ति ।**—अवसरचा बार दण्ड में प्रपाद  
विपदापन भयानामिक । आदि लक्षणों में दिया जाता  
ह । बहाना गिर द बरबुरार दशन स्वर नहीं बार  
बंट नहीं में गूनम दह हाना भयस बट के साथ बहना  
और घाघ में भहन गुरू हाना ।

**नेजा ना कोरा ६ शक्ति ।**—बाजल वा लैकमिस  
का प्रपदा घट बहुत तज दया है । इसका अंतर रक्त का  
अपदा आयु मंडल क ऊपर अधिक होता है । बुद्धता  
बार हलिगड का दिया क लाय हान की आगदूर हा  
पर घट दिया जाता है । नाहा तज और अनियमित ।

**फोस्फोरस ६ शक्ति ।**—छकटा आक्रान्त होने पर  
यह बहुत पायदा करता है । घबरा, बढ़ाशा गिर दह,  
बान नाक और मसूद में गून गिरना राग का गाठ गूजा  
दुर दनादूम दल वा रक्तनिसार आस कष्ट, गून मिखा  
हुम कष्ट छेकड़ स गून गिरना घडा व शब्द क रुमान  
हलिगड का पदिला शब्द । नाहा बहुत छोटा और व मलूम  
तथ बार ममिपान व दशाप ।

शुभार कम होने लगता है। पसीन बहुत आने लगता है। ममिका की उत्तेजना कम हो जाती है और नाड़ी सफल चलने लगती है। गाठ पक कर घब सूख जाता है और सड़न आरम्भ नहीं होती।

**चिकित्सा ।—** डाक्टर सरकार का मत है कि प्रारम्भ में ही इन्फेक्शिया इन स रोग उत्पन्न हो होकर नष्ट हो जाता है मथना और नहीं बढ़ता। दूसरी अवस्था में मथाने का बढ़ना शुरू होने पर ज्वर प्यास घबेनी आदि लक्षण उत्पन्न हो ता प्यासाइट देना चाहिये। यदि इससे ज्वर कम न हो और शिर का दर्द अधिक हा तो बेलडाना अच्छा दवा है। इसका सिधाव बहुत स चिकित्सक कहते हैं कि परिष्क से ही ररटक्स देने से इन सब हालतों में बहुत फायदा दीयता है। अतएव नाचे लिखी दवाइयों में से वृष्टम मिठाकर दवा तनवीन करे।

**इकोनाईट २x, ३x शक्ति ।—** अत्यन्त ज्वर, प्यास, घबेनी मृगुमय शिरघूमना शराबी कीसी हावत, मुह स घात साफ न निकलना अत्यन्त शिर दर्द दस्त और जी मिचलाना, होठ और पट में जलन दिना की घटवत और नाडी की गति कमजोर। नाडी पूर्ण, तज और कटिन पट्टों की दुपटता और सयर शरीर में चिनचिनाहट होना।

**वेलेडोना ६ शक्ति ।—** पागलपन कभी २ हसन चिल्लाना और दात बिडबिडाना अत्यन्त शिर दर्द, माछों का शाव रगत, पिछौन साचना, रोयनी और शब्द न सह सकना सायड बंद जग्न तातुर और जनपटी की गाठ में तप चाये तरफ की राग में चयक चलना, दाहन तरफ का रा

में धीमे मालूम होने कीसी तबजीव होता, यदि धगध की गाठ का सूजना और हटने होना, साथे २ चमक उठना और बहुत घर्मेने जाना ।

**क्रांटेलम ६ शक्ति ।**—जिस प्रकार की रोग में सूज गिरने के लक्षण अधिक हो उसमें यह दिया जाता है । देहेशी, बहना और सूजना, जेठे में प्रदाह, राग और धगध की गाठ में प्रदाह और सूजन ।

**लेकेमिस ६ शक्ति ।**—अवसन्नता और रक्त में मवाद विरक्षण ( मेल्नोमामिक ) आदि लक्षणों में दिया जाता है । बहानी शिर हट बहनुदार दन्त, सर नहीं और बट नहीं में सूजना हट होना आस यह के साथ बहना और घाव में घटन गुरु जाना ।

**नेजा वा कोवरा ६ शक्ति ।**—क्रांटेलम वा लेकेमिस की अपेक्षा यह बहुत तेज दया है । इसका अस्तर रक्त की अपेक्षा छासु माल के ऊपर अधिक होना है । दुपचना बार हर्निग्ड की दिला क लाप होने की आशङ्का होने पर यह दिया जाता है । नादी तेज और अनियमित ।

**फोस्फोरस ६ शक्ति ।**—कैफडा आकाश होने पर यह बहुत पचता करता है । बहना, देहेशी शिर हट बाग नाथ और मसूद में सूज गिरना, राग का गाठ एंडी हा बमानून इस वा रक्तनिमार आस यह, गून मिहा हुम यह जेठ से सूज गिरना चहना के राह बमान हर्निग्ड का पद्विग राह । नादी बहुत छोटा और पे म नून तथा और मन्दपान के लक्षण ।



। गालुय की जट की गांठ भुजन आदि स्थलों में यह दया की जानी है अथवा सप्रियात व क्षणों में इस से बहुत फायदा होता है।

**पार्डरोलीनम्** ६, ३० शक्ति । रोगी क संचानक मृत्यु न होकर ज्वर तेज हो, सप्रियात के छसुण दीख पड़े, केफडा आल और पाकापय के छसुण दिग्गार पद, बकना आदि लक्षण उपस्थित हो तो यह दया आभार्य रूप से फल दिग्गारती है । यदि हा एक माया से आराम न हो तो प्रेय के साथ और भी दो एक माया देना चाहिये ।

**वेडीयागा ३x शक्ति ।**—गाठ पदन की पीडा में यह एक प्रसिद्ध औषधि है । बहुत स रोगियों को इस से फायदा हुमा है । गाठ कटी हो उस में मवाद पड़जाय, गदन और गल। सुज जाय यदि ऐसे स्थान हो तो यह दया दना चाहिये । पूरबी दूर गाठ के ऊपर छगाने के लिये इस दया का मूख मक या १ + शक्ति व्यपहार करना चाहिये ।

**प्रतिषेधक उपाय ।**—यदि चारों तरफ देग रोग फैला हुमा हो तो नाचे बिछे हुये नियमों का पालन करना उचित है ।

(१) हमेशा साफ गह और साफ कपड़े पहिने, घर के भीतर तथा बाहर किसी प्रकार भ्रजापन न होने दे । रहने के घर्म हुवा आने जाने के लिये माग रहना चाहिये तथा एक घर में बहुत से आरमियों को कदापि न रहना चाहिये । गृह रोगी अववा उसके कपड़े बिहान आदि कदापि न छुन चाहिये । नीच क घर की अपेक्षा ऊपर की



**नेष्टेशिया १ x शक्ति ।**—सन्निपात ऊपर के लक्षणों से दिया जाता है

**आर्गेनिक ६, ३० शक्ति ।**—पाकाशय और माला पर असर करने वाले गुण में तथा सन्निपात के लक्षणों में यह दवा दी जाता है । बहुत ध्यात लगना, दस्त और उबला रोग में यही लक्ष्यदान गण चक्षुष पर मुदनी निगलन में उष्ण पद में चर्म रोग में सुखसी दूधना पेशाब बंद होना या कम होना श्वास कष्ट होना की उत्तेजना । नाड़ी मृदु तथा एक ही न चलना प्रायः मालूम होना होता, दा पर्व १ माना ।

**मादयूग्मिस कर ३ शक्ति ।**—गाढों के, पाकाशय और माला के लक्षण उपस्थित होने पर यह दवा दी जाती है । बहुत बल शिर दहना और भ्रुह से रक्त गिरना उबला होना रोगों में दवा से मालूम पड़ना और रक्त होना गाढों गाढ पृष्ठ उठी है इन्पिड का रक्त ठहरा कर होना नाडा कम अनियमित पस्तन बहुत माना ।

**क नो ॥ जिटेरमिस १२ शक्ति ।**—बहुत कठिन, सांघात लक्षणों के दह होने का अवस्था नाड़ी छोप, ठंडा चमत् श्वास नर दंडा होना, सब शरीर परत की मृदु दंडा मर्दि खलुर्गों में यह दवा दी जाता है । और रक्त होना रोगों में श्वास के ध्यान में दवा ।

**रगटम ६, ३० शक्ति ।**—अधिक उष्ण, बेचैनी शरीर, उदरामय नद्रव्यता ( नद्रा अवात की दसी माना ) शरीर में दह, चार २ नाक से मृदु गिरना, चापरी और

। ननुय भी जड़ की गाठ मृजने मादि लक्ष्णों में यह दया हो जानी है मयात् सप्रियात के लक्ष्णों में इस से बहुत फायदा होता है ।

**पाटुरोजीनम् ६, ३० शक्ति ।** रोगी के अचानक मृत्यु न होकर ज्वर तेज हो, सप्रियात के लक्षण दीप्त पड़े, फेफड़ा मात्र और पाकाशय के लक्षण दिप्तधारे पड़े, वचना मादि लक्षण उपस्थित हो तो यह दया भावपूर्ण रूप में कुछ दिप्तगता है । यदि दो एक मात्रा से माराम न हो तो धैर्य के साथ और भी दो एक मात्रा देना चाहिये ।

**वेदीयागा ३५ शक्ति ।**—गाठ घटने की बीदा में यह एक असिद्ध भोग्य है । बहुत से योगियों की इस में फायदा हुआ है । गाठ कटी हो उस में मवार पड़जाय, गर्दन और गला कुछ आय यदि ऐसे ज्वर हो तो यह दया देना चाहिये । फूँटी हुए गाठ के ऊपर बगान के लिये इस दवा का मूख मूख या १ + शक्ति व्यवहार करना चाहिये ।

**प्रतिषेधक दवाय ।**—यदि बायें तरफ ज्वर रोग फैला हुआ हो तो नीचे दिये हुए नियमों का पालन करना उचित है ।

(१) हमेशा साफ गद्द और साफ कपड़े पहिन घर के भीतर तथा बाहर किसी प्रकार निष्पादन न होने दे । ररने के घरेमें हवा आने जान क लिये आग रहना चाहिये तथा एक घर से बहुत से आदमियों को बहाल न रहना चाहिये । ज्वर रोगी अथवा उसके कपड़े बिहने मादि कपड़े न धुन चाहिये । नीच के घर की कपड़ा ऊपर की

**नेष्टेशिया १ x शक्ति ।**—सन्निपात उघर के लक्षणों में दिया जाता है ।

**आर्नोनेक ६, ३० शक्ति ।**—पाकाशय और आंतों पर असर करने वाले पदों में तथा सन्निपात के लक्षणों में यह दवा दी जाता है । बहुत व्यास लगना, दस्त और उपरान्त में बचना कम्पलीन शक्ति, खदरे पर मुदनी, निगलन में यह पद में चर्म रोग में सुरसी दूधना पेशाब बंद होना या कम होना व्यास कष्ट हृत्पिंड का उत्तेजना । नाडा भूत तब परपी न चलना प्रायः मालूम ही न होना, इस परी न माना ।

**मादयूग्यिस-कर ३ शक्ति ।**—गाठों के, पाकाशय और आंतों के लक्षण उपस्थित होने पर यह दवा दी जाती है बचना बलत शिर दद नाक और मुह से रून गिरना उबड़ी जाना रोगों में दबाव सा मादूम पड़ना और दई होना गांठों गांठ फूट उठा है हृत्पिंड का सघ्न ठहर कर होना नाडा कम अनियमित पसने बहुत माना ।

**क रोमजिटेवसिम १२ शक्ति ।**—बहुत कठिन, सांघातक शरीर के ठंड होने का संवस्था, नाडी छोट, ठंडा पभात व्यास तक टडा होना, मख शरीर परत के मरुट टा मा ४ लक्षणों में यह दवा दी जाता है । और घात दंड की गिरफ्तार के बयान में दसो ।

**रगटाम ६, ३० शक्ति ।**—सर्विक उघर पचेनी रोगों उदरमय नष्ट्यता ( नद्रा व्यात नीदसा माना ) और में दंड बार २ नाक से रून गिरना जनपरी और

६) एगोनिम श्लेष्म की ओर एक मच्छी बना दिया है। श्लेष्म फैलने के समय इसकी १२ या ३० प्रतिदिन एक मात्रा सेवन करने से बहुधा श्लेष्म के मात्रात्मक संशोधन होता है।

(७) यदि घर में किसी को श्लेष्म हो तो रागी घर में भलग एक तरफ एक सून मकान में रखना चाहिये और उस कमरे दिया आग जलाने के लिए भण्डा तथा राखी रखना चाहिये। रागी का मल मूत्र उल्टा तथादि किसी एक घरतन में लेकर भलग में देना चाहिये तथा रागी के कपड़ों का उला देना चाहिये।

[८] जिस घर में रागी रहा हो उसका मच्छी तरफ से भाक कराने के बाद वह काम में लाया जाय, इसमें कावों एक घण्टा छिड़कना अच्छा और राख की धूनि देना तथा कुछ दिनों तक इसका दरवाजा बिल्कुल खुल रखना चाहिये ताकि सख्त दिया इसके मातर आता जाता रहे।

पट्टय ।— पहिले पानी में साबुदाना पका कर उस में नमक और नारू का रस डाल कर दिया जाय। दूध सब से अच्छा पच्य है। कना २ मसूर दाख का पानी ना दिया जासकता है।

## विसर्प ।

[यूरिसापलम्]

धमक के मोच घाल कोष में तन्मूर्त्तों के विसर्प मदह घर का विसर्प राग कहत है। साधारण तरह पर राग बाट लगन से या तून बिगड़ने के कारण उत्पन्न है। यह भी एक सद्यःमर राग है।



(६) एपूरोनित्त दूध की और एक कट्टा गेबन वाला दिया है। दूध पैलन के मध्य समी १२ वा ३० दिन दिन एक माथा भेदक करने से बहुत दूध दान के माध्यम से रसा होती है।

(७) यदि घर में बिभी को दूध हो तो रागा को घा में भलग एक; गरु एक गुन मजान में रखना चाहिये और इस रसो दवा बन जाने के लिए भण्डा गरु रागा गूना चाहिये। रागी का दूध मूत्र दलरी इत्यादि बिभा एक दानर में लहर भलग पेंक देना चाहिये तथा रोगी के दलरी का दूध दान चाहिये।

[८] इस घर में रागा रहा हो उनको अच्छी तरह से साफ करने के बाद वह कान में लगाया जाय इसमें काबो लक शमिद छिड़कना अच्छे और रास की पुन दान तथा कुछ दिन तक रसक दरवाज बिन्दुल गुले रखना चाहिये ताकि मच्छ दवा इनके मजदर भारी जाना रह।

पट्टप १— यदि एक में साबूदाना पटा कर उस में लक भार मू का रस दल कर दिया जाय। दूध मय से भण्डा एक है। कनी २ ममूर दल का पाबो भी दिया जमकना है।

## विसर्प ।

[ दूर्वाभाषणम् ]

मनद के नाच वाले काय में तन्मू को विशेष प्रह दूध चर का विसर्प राग कहत है। साधारण तरह पर पर राग छोटे लम्बे से या मूत्र बिन्दुने के कारण उत्पन्न होता है। यह भी एक सहायक रोग है।

**लक्षण ।**— मरम्मा कपकपी, शरीर में जल, उष्ण पौष्टिक ज्ञान बहुत लग रहा था, मूत्रा हुआ और गरम, उममें उल्टा हान और दह हाना, शिर दह हुए और गल के नहीं के मानर हा इत्यादि लक्षणों के साथ साधारणतः इस पाडा का प्रकाश हुआ है । यह रोग किन्तु दिन रहता है इसका कुछ निश्चय नहीं यह से दा मश्रा न रहता है । यह प्रदाह कर्मश व्याप्त हाहा मय बहर पर के जाता है । भाषों के परक होने हुए जान है कि भाष का पुनर्ही दिखता है नहीं पड़ना । शय यमद के उतर छोटी २ कुमिया हाथाना है । इन के दूध हा पानामा गिरन लगता है यथवा कहीं २ मयाव भाषा जाता है । शय पैर भाषाम् हात स हुए शरीर में भा व्याप्त होमकता है । नाहा लड़ अधिक उतर मूल मलगा मलिन के लक्षण उपस्थित हाता और बचना भादि लक्षण उपस्थित हाहा हात का मालात्रिक रूप हाजाना है ।

**चिकित्सा ।**— तक्रोनाट्ट ३ शक्ति— मल्लाल पर प्रदाह बसेता मनु मय ।

**वेलेडोना ३, ई शक्ति ।**— मूल हुए ज्ञान का कल हात और चिकना मल्लाल पर बचना मल्लाल गरम पैर हा म हा मूल और कृत्ति शिर दह व्याप्त और पौष्टिक ज्ञान में बचक बचना ।

**पक्षमेष्टिग ई शक्ति ।**— यह ज्ञान मल्लाल हाहा कल हात शिर चिकना मल्लाल पर बचना मल्लाल गरम पैर हा म हा मूल और कृत्ति शिर दह व्याप्त और पौष्टिक ज्ञान में बचक बचना ।

मल्लाल पर बसेता मनु मय ।

नाईओनिया ३, ३० शक्ति ।— जोड़ की जगह में पीड़ा हो हिजान से पड़ती हो, रोग दृष्टान्तों पर ग्रास कष्ट और उद्दामय आरम्भ हो ।

एपिस ३, ६ शक्ति ।— आधों में पानी भरना, बुलियों का झाला कमी पैनी रा, अठन, चपके चलना, खोट लगने का कारण पीड़ा ।

आमेनिक ३, १२ शक्ति ।— अत्यन्त बेचैनो, विकार, शरीर में पीच की ओर लठों के पास बाधे स्थान का आशान्त होना सड़ना प्यास ।

केन्चैरिस ६, ३० शक्ति ।— नाक के ऊपर से छहर होना ओर क नपनों पर विशेष कर शक्ति आर आशान्त होना अफोनों का साथ प्रशार अन्त भरत नाम किन्तु शरी पीच की अनारुछा ।

रसटक्स ३, ३० शक्ति ।. हाथ लाम रग के पफोने, अत्यन्त बेचैन ।

एदप ।— यदि उर होना पानी में भारुणा का पानी इसका उदयान पुष्टिपर पय्य रूप इत्यादि देना मज्जा है ।

## सात्रिपाक्षिक विकारज्वर ।

( टादुधम् पीउर )

यह उर सञ्चालक और सात्रिपाक्षिक रोगा है । शीत रसादगुण मरुत नाम पुष्पी पाये उरों की तरह रोग में ना एक उर का म्रि रोगाई, जे रोग उर





रहने हैं जिन की सहायता में यह विष उनके शरीर में सहजरी प्रवेश कर जाता है। यह कारण राम के भावमय करण में अधिक सहायता देने हैं। कारण यह है — (१) ममिताधार भयान घाने पीन सोने इत्यादि खास्य सम्बन्धीय नियमों का पालन न करना; कम खाता भयवा पुरान किसी राम व कारण खास्य पिगटना । (२) बहुत भादमियों से भरे हुए एक स्थान में रहना जहां अच्छा तरह से हवा न आती आता हो; (३) स्वयं भयवा परिवार का मिलान (४) अधिक मानसिक भ्रम बिना भयवा रोग का भय होने से उदासा। इन्हीं सब कारणों से सन्निपात विकार ज्वर मरीच भादमियों को अधिक होता है जो बहुत भादमियों से भरे हुए मैले स्थानों में खड़े रहेंगे वहाँ में एक साथ बहुत से भादमी रहते हैं।

**लक्षण 1—** (१) अग्रधाशावस्था; यह अवस्था प्रायः ६ दिन से १२ दिन तक रहती है कभी २ दिन से अधिक नहीं रहती। इस अवस्था में सगी लगती है साधारण तरह का और ठंडापन कराव रहना, वैचैनी शिरमें दद, भूख न लगना आदि लक्षण उपस्थित होते हैं और कभी २ देखा भी होता है कि कार लक्षण दिखाते नहीं पड़ते।

२. भावमयतावस्था; यह अवस्था भयानक भयवा कर्मण, कारण होता है। सन्निपात विकारक कारणों में कारणों दकर बुधार आता है। यह कारणों का बुधार लगाना दो तीन दिन तक होता है। शरीरिक और मानसिक अत्यन्त दुबड़ना इस ज्वर का एक प्रधान लक्षण है—रोगी बहुत ही अन्दी गिरजाता है। रहने की शक्ति नहीं रहता और दुबड़ होता है।

का उत्पन्न करता है। यह विष बहुत आदमी से मरे हुए  
पुनश्चरम और ऐसे ज्ञानमें होता है कि जहाजी हवा  
मगान है। आधुनिक युवकता सब शरीर में दूध लेना  
बुद्धि और बुद्धि आदि इन के विज्ञान अज्ञान है। और  
सकामक उत्पत्ति की तरह यह भी एक दूध के सिद्धांत  
विष बुद्धि की तरह नहीं माना।

**कारण ।** परिच्छेद ही कहा गया है, कि यह

उत्पन्न आधुनिक के विकास के कारण विष से उत्पन्न  
और अन्य न समझना है। यह विष कहा है सा मात्र तब  
निश्चित नहीं हुआ। यह विष गंगा के समुद्र और फेंका  
अ विच्छेदना है। गंगा के शरीर से एक प्रकार बहुत आती  
है। इस उत्पन्न का विष बहुत दूर तक नहीं जासकता  
हवा के साथ समान हीन तब माना है। गंगा के व्यवहार  
विष दूध बहुत आता है। यह समान तब सात दूध  
कहिने कहा जा सके आधुनिक दूधर आधुनिक इन के ज्ञान  
दूध बहुत समझना। यह गंगा का आधुनिक दूध समान  
तब ही विषका दूध दूधर तब बहुत की मरिच आधुनिक  
तब ही। दूधर दूधर है कि बहुत आधुनिकों से  
दूध आता है और समान से भी यह विष उत्पन्न  
होता है। दूधर दूधर है कि तब सब समान  
विष उत्पन्न दूध से तब दूध दूधर है और विष उत्पन्न  
दूध का इन सब अवस्था में दूध उत्पन्न है।

**पुनश्चरम, उत्पन्न ।**— इस उत्पन्न का विष तब  
तब ही तब से समझना दूधर है तब दूध मरिच है  
तब ही दूधर है तब ही दूधर है तब ही दूधर है

रहने हैं, जिन की सहायता से यह विष उनके शरीर में सहजरी प्रवेश कर जाता है। यह कारण रोग के भावमय करण में अधिक सहायता देने हैं । कारण यह है — ( १ ) अमिताचार भयात खाने पीने सोने इत्यादि स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन न करना; कम जाना भयवा पुराने किसी रोग के कारण स्वास्थ्य विगटना, ( २ ) बहुत आदमियों से मर हुये ऐसे स्थान में रहना जहां भण्डों तरह से हवा न आती जानी हो ( ३ ) स्वयं भयवा परिवार का मैलापन ( ४ ) अधिक मानसिक धम, बिना भयवा रोग का भय होने से उत्पत्ती । एसा सब कारणों से सप्रियात विकार ज्यर गरीब आदमियों को अधिक होता है जो बहुत आदमियों से मर हुये मैले स्थानों में होकर घरों में एक साथ बहुत से आदमी रहते हैं ।

**लक्षण १-** ( १ ) मज्जाशायण्या, यह मज्जा प्रायः ६ दिन से १२ दिन तक रहती है कभी २ छे दिनभ अधिक नहीं रहती । इस अवस्था में मरी लगती है साधारण तरह का भीर तथापि कराह रहना, धैर्यही शिरमें दर्द, भूख न लगना आदि लक्षण अवस्थित होत हैं और कभी २ पेमा भी होता है कि कार लक्षण दिखलाए नहीं पड़ने ।

२. मज्जाशायण्या, यह मज्जा मज्जाशय भयवा कभी २ मज्जा होमती है । मज्जाशय विकारक प्रारम्भमें कभी २ देकर बुध्दा आता है । यह कभी २ का बुध्दा लगातार ११ तीन दिन तक होता है । शरीरिक और मानसिक मज्जा बुध्दा इस ज्यर का एक प्रथम लक्षण है—मरी बहुत ही ज्यर विरहता है । उनके की शक्ति नहीं रहता मर हुयन होता है ।

सब भूँ के पट्टों में दर्द मातृम होता है और दिखाने  
 हाथ पैर बाधने हैं। आधुनिक चिकित्सा के लक्षणों में  
 भयंकर तरह प्रकाशित होकर प्रयत्न होजाने  
 मध्यम शिर दर्द माथा भारी और माथ में लपकन,  
 पुमना, गुठ गुनाह कम पडता काय में तरहर के  
 गुनाह पडता उठता गुना मातृम होना, येही  
 मध्यम के माथ नोद माना परन्तु अन्तर हृत्की  
 रोग रोगा माद प्रधान आधुनिक लक्षण हैं। मानि  
 भयंकराभी रोग नही रहता—स्थान समय सामने  
 हाता है, कानर भारभी लट्ट है यह सब रागी ठाक  
 वनबाय लडना, गाय दिन जायें दिन के मातर व  
 गुद हाता है। परन्तु इस वजन की हातन दरयन द  
 नही रहती इस रोग रागा का रोगन न कभार प्र  
 इतर का भी लवन है। वजन व रागा हमसा सब  
 रचनी नही हाती कना वजन इर रागा कभी नही  
 व वजन लगत। जी १८७३ उ रोगा हाताता है, म  
 माय राग व दिमी रोगा का नही समम लडता  
 माय रोगा हाताता उ माय रोग का रोग व  
 लगी है।

उा रोग का रोग रोगा लवन नही हाती ।  
 रोग रोगा मा माय रोगा रोग व रोगा रोग  
 है दिमि रोग हा गुद रोग का हाताती है । रोगा  
 का रोग रोगा रोग रोग नही रोग लवन दिमि रोग  
 रोगा । रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग  
 रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग  
 रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग  
 रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग रोग

और मरी हुई घड़कन मिनिट में १०० बार और कभी मांसे दुबध कम और ऐसी मालुम-दानी है मानो एक साथ दोबार चढ़ती है। सरी और सांती साथ चढ़ती हो है।

(३) स्कोटापल्स साध्यात्मिक विकार ज्वर की पुसिया साथ साथ वा पाचवे दिन निवसना है किन्तु जमा २ तासरे दिन से सातरे वा मठवे दिन के मंतर में निकलने दुर देखागरे हैं। वालकों क साथ पुसी नहीं निकलती। यह पुसिया कलार के पीर की तरफ पगल में और पेट के ऊपर सज से पहिले दिखलार पड़ती है तथा पीछे शरार में और हाथ पैरों में निकलती हैं। चेहरे पर वा गरदन में एक भी नहीं दिखलार पड़ती। सधियात की पुसिया एक वा वा तीन दिन के मंतर ही निकल जाती है। इस के बाद फिर और नई पुसिया नहीं निकलती हैं। बैडने के समय भी निकलने की तरह सज पुसिया एक साथ बैठजाती है। पुसियों के टहरने का कोई स्थिर समय नहीं है यह साथ १४ वा २२ दिन के मंतर बैठजाती है।

स्कोटापल्स में पहिली आक्रमणावस्था के साथ सब लक्षण बढ़ जाते हैं। रोगी अत्यन्त दुबल होजाता है, विस्तार से उठा नहीं जाता और उसके होशहवास में फरक पड़जाता है। रोग में दिहने कुडने की भी शक्ति नहीं रहती, बिल पडा रहता है पाँख मुने दुरे वा अस्थिमुने रहती हैं पीरे २ बसा करता है और प्रश्न करने स कुछ उत्तर नहीं देता, होत २ रोने बिटहन अज्ञान होजाता है पेटे कापन और कुडने रुपने हैं विठैना सोचने लगता है जमा २ वापट भी जाने लगते हैं ऐसा भी देखाजाता है कि रोगी को



रफे पर पड़ जाता है । जीम चौड़े समय में साफ हो जाती है ।  
सूय बढ जाती है । और सन्निपात क विचार का ऊपर फिर  
आक्रमण नहीं करता ।

शरीर की गरमी ।—सन्निपातिक विचार ऊपर में शरीर  
का गरमी क विषय में अच्छा तरह समझ लेना बहुत  
अवसी है । यह गरमी चौथे या पाचवें दिन के लग्ना  
समय तक धीरे २ बढता रहती है । उस समय सुषु  
को स्वर बिन्दुल कम नहीं होता । इस उबर में शरीर  
की गरमी कमी १०४.२ यवदा १०५ डिग्री से कम नहीं  
होनी परन्तु कभी कभी १०७ डिग्री तक बढ जाती है ।  
यदि राग बढिन हो तो तीसरे या चौथे दिन लग्ना के  
समय शरीर गरमी १०५ डिग्री और सामान्य हो तो  
१०३.५ डिग्री से ऊपर नहीं बढता ।

परिणाम और दृष्टाव ।—सन्निपातिक चिकित्सा में  
अधिकार्य रोगी आक्रमण होने है । इस रोग से मृत्यु संख्या  
सैकड़ा पाठ ५ १५ वा २० तक होती है । यह रोग  
अधिक १४ दिन बिन्दु कभी कभी २१ दिन तक दृष्टाव है ।  
उपगत मरुत होने पर रोगी बहुत दिन तक मरता  
रहता है ।

### चिकित्सा —

- १। उबर के हस्तों में—एरोक्साट, क्कमरिदां ऊँठावे  
विषम देवर्गिण्डा ।
- २। श्लिष्ट दृष्टाव—राय्मेकदमस बटेरमस, बेरादम  
सिदि ब्दामेविषम देवर्गिण्डा ।
- ३। कवेदा—चिकित्सा बटेरमस ऊँठावे विषम ।



४। मो-माय ( वेदोशी,—मोपीयम, एसटयम ) ।

५। आयुष्मन्तुर्वर्णना—एभिश्च-नियुक्तेषु आसैनिक, दमि  
याभ्यारिषि ।

६ : कान्हेने लक्षण—बोम्बोस, माओनिया, इत्यादि ।

७। वभाषण [ मङ्गला ] सम्यक्म सिद्धनिर्वा, सिद्ध  
वर्गाना ।

८. लक्षण—आवावभिद्विजित, आर्सेनिक, रसायन

४। माणम हान ज समय म—एसिड फोस्फोरिक, एमि  
क्रास्टिड वायना लाग्यत।

[illegible]

दिया जाता है; बिहार और बङ्ग के साथ इन अधिक हो कि रोमी भवानक बहुत दुबल हो जावे और मृत्यु सम्भव मारु हो तो स्त्रामोनिषम दिया जाता है; बेलैनी और हाथ पैरों का बधना साथही बिलौने से उठने की इच्छा करता हो ता एमारोकासः ज्वर का बेश कम हो किन्तु व्यापक दुर्बलता अधिक होता फाम्फोरिक एसिड बार २ बटुन ओर से बधना और कभी कभी पेहोरा हो जाना घराटे के साथ भ्यास बधना मध्या माहमाय इतना अधिक होना कि मस्तिष्क के परापात की सम्ना घना हो, पेराय एम्ब्रान और इनी कारण बेहोधी हाना इत्यादि हालतों में भाविष्यम होते हैं। पेहोरी की हावत में बद्धदार दस्त होना जीम के ऊपर बाले रंग का सैप्पा रकड़ा होजाना इन हालतों में रसदस्त दिया जाता है। पेराय बन्द होने के कारण बापटे आना, यमालुम दस्त निरुक्त जाना मध्यत दुर्बलता, जीम सूखी और फटा हुई होने से मासैनिक होते हैं।

जिस गाठ से तार निकलती है उसका सुझना और प्रदाह होते मरफूरस-बिबादह मोनकादिस होते सेनग मध्या एटीमगीशर, पैकड के मक्षण और व्यापक दुर्बलता होता कारकोरस गलन होना मालुम हानो मासनिक मध्या कावोयमिरेवतिस ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।— अत्यन्त सूक्ष्मका भव मलय छाडी मालुम होना । सगट पर धार और मारी मालुम होना माने मस्तिष्क से कर्मों ओर के साथ निरुक्त पड़ेगी अतः के साथ तार दद ऐसा मालुम हाना कि मस्तिष्क में गम एना पुनरहा है । तत्र प्रदाह के लक्षण रक्त मयान

और ताज्जुब भ्रातृमित्रों के लिये यह बहुत फायदेमन्द है।  
 एपिम ६, १२ शक्ति ।— माहमाय और उसके साथ २ भादिसो २ बकना नींद सी आना और पीय २ और ओर से चित्ता उठना, जीम में मूत्रन सखी और कई गुण तथा घाय होगये हों और मुश्किल से निकाला जाय। पक्का लट्टी व प्यास का मूत्रनेम दर मातुम होना, पैर में इतना और मज्जा बार २ बरबूदार येमातुम दमन होना। पेशाब बन्द होना मल्लत न्युयवता और पिच्छ में बार बार सिसर जाना।

अर्निफा ६, १२ शक्ति ।— गुमहोजाता, यमडे ऊपर कुछ पील रंग व और बड़े पीलापन त्रिब दुर रंग के दाग हाजाता बहुत बरबूद मातुम होना इसी विमदवृत्त विछीन में पहा रहना तथापि पमा रहना में रिक्कत मच्छा ह, वाग कनर मूत्र जाना, प्रश्न उत्तर देनेकी इच्छा न करना, फिर व भीतर गहवड माह होना और लटाड में दादिना और कोक मातुम पमा लाने भाग न घबना सात समय यमका देनेवाले हाता विछेना बहुत कम मातुम हाता इसी त्रिब सल्ल क मीने की इच्छा करना होर और जीम मूर्त न व का हाट कायना वे मन्दम पशाव और निरुक्त जना दाग व यमडे क ऊपर मूत्र जम जाना बनइटी बं वगली नमें मंजी पइता।।

आर्मेनिक ६, ३० शक्ति ।— मल्लम बेधेनी

चिन्ता कृन्त विवगिनर, फिर और हाव पैर चलना चले कनक मं डे लज्जना हाट मूत्रजना, कट्टाता भार उ मेक जन जाना जीम काट रग की और यमडे



माथा सोला हुआ कभी माथा उगता हुआ माथा  
वेमिन्मिने वचना, शिर धूमना तथा छायावि  
वा वग ।

**कार्येविजिटेविनस १२, ३० शक्ति ।—**

मदलामें तथा वेसी मवस्यामें जयति मृग्यु निवड  
है तब वह भीरवि बहुत पायदा करती है । तब  
शक्ति दिया नृप इत्याय, हाथ पैर डंडे और उ  
पसीना आना हुविण्ड बन्द होजाना, गाड़ी बहुत उ  
तब भीर छाटी तथा कराव २ डूबी हुई, वेहोशी,  
अनान वर भी धेत न करना, जानों से सुनार  
भीर जानों से न दीजना, नाच और मुह से नृत्य

**हाओमायमस ३, ६ शक्ति ।—** पूरी वह

हड्डियों की क्रिया डकीहुई धनो इष्ट मित्रों को  
आजना धीर २ और गडबड वचना वदत २ नि  
लेखना बहुत वेनी विष्ट न स उछल उठना  
अथवा साज न निवन्ता मयउर सुप्र और  
वेनाटुम विष्ट न पर मल त्याग, सामन की व  
वटी वा उल्टी हुई दीजना मय करने वा डीक  
विष्णु वदित २ निर वदने लगना शरीर क क  
का शक्ति मुह्य वचन की रगडा करना गल  
मुह्यम मयुम हावा, बाह धीउ निगल न म  
विष्टि-म वदत की मयमय शक्ति की मयि

**मृग्युविट्टे एभिउ ६ शक्ति ।—** १२ में

कोर मय वे मय न मय मय कादण मादि  
होमको ६ मयमय मय मयमय मयी हुए

की तरह भारी, इस लिये मुह से घात न निकलना, नीच के आवड का रुटक पडना, घेमालुम भल मूत्र निकल जाना, मारी तेज बिनु अत्यन्त दुबेड, अत्यन्त दुबन्ता ।

**ओषधिम ३ शक्ति—** नौद आना या बेहोशी, किसी तरह से जगाया न जासके अथवा घड़ी मुशिक्र के साथ जगाया जाय, बोल बन्द, भाँसे गुला दुर, हाथ पैर सख्त, साँस घारे धीरे चलना, लम्बे गहरे भ्यास की तरह, गले के भीतर बर्फ घट्टघटाने का चान्द होना, बन्ध अथवा दुगन्ध युक्त पानीसा उदरामय, वे मालुम दस्त निकलजाना, पेशाब बन्द होना ।

**रसटाक्स ३० शक्ति ।—**ग्रध का डीक उतर देना किन्तु माहिलर, बबना, सिर दर करना, भाँसे खोलने और इधर उधर देखने में तट्टरीफ बढना, नाक से खून गिरना विशेषकर भाँधी रातके बाद, होठ सूखना, जीभ का भागेका भाग शिकामाकार लाल रंगत का, उदरामय, रात में बहुत दस्त होना, सोतेर घेमालुम दस्त होजाना, खासी प्रत्येक भग में बाठ गठिया) का सा दद, सिर रहनेसे दद बढना, हिलनेसे और बरबट बदलने से कुछ ब्याराम मालुम होना, हमेशा बेचैन रहना और तट्टघडाना, बेचैनी के साथ नौद आना अथवा नक म्भ्र दाखना और बार बार जग पडना, गाँठ खूनी दुर, ठंडा पाना और ठंडा दूध पीने की इच्छा करना अत्यन्त कमजोरी और यथावत ।

ऊपर लिखी दुर ओषधि के सिवाय लक्ष्यों के अनुमार और बहुतसी ओषधिया दीजाती हैं । नीचे लिखी दुर दवाएया मा इस टिये प्राय जरूरी पढतीहैं—पगारांक्स, मामो

मीया, चायना, चोक्लस, हेलीयोरेस, लेकेसिस लॉ  
कोपोडियम, मार्कुरियम, मक्सवामिका, फास्फोरस, च  
स्फारिक-पनिट, स्ट्रामोनिथम ।

**सहकारी ठपाय ।**—सन्निपात धाले वि

अपर मे आरुध्य रक्षा के नियम वाज्य करना भी  
रोगी की सेवा शुभ्रता करना औषधि की अपेक्षा  
अधिक आवश्यक और उपकारी है । बहुतों की यह राय  
कि औषधि के द्वारा इस अवर की गति को रोकना अथवा  
इसका अरुद्ध हटा देना नहीं होसकता किन्तु रोग बहुत  
साधारण न होजाय इस अर्थे आरुध्य रक्षा के नियम वाज्य  
करना और मन लगाकर सेवा शुभ्रता करना तथा जीवन  
शक्ति की सहायक लिय अच्छी सज्जियों का  
देना का सेवन कराना अत्यन्त आवश्यक है ।

इस रोगक गुरु हानही रोगीका चारपाईमें लिटा देना चाहिए  
और देन उपाय करने चाहिये कि जिससे वह स्थिर  
बाद भी कारण न पड़ा तक कि मज्जून त्याग करने  
लिय भी विछीन से उगना टाक नहीं । शारीरिक अथवा  
मानसिक सब प्रकार का परिश्रम वर्जित है । रागा के  
में रीझ न रहनी चाहिये हवा आन जाने के लिये रा  
खन चाहिये, रोगी को नून आराम मिल और कि  
मज्जु का बहुत मरु वह परम आवश्यकिय बात है । बहुत  
अच्छ वस्तु की रोगा का अत्यन्त आवश्यकता है इस वि  
मज्जु के बिनाही दवात्र बहुत बहुत में आराम  
का इस में देन रहना उचित नहीं ।

इस रोग मर्यादक है । इस लिये सब

( ८८ ) निषारण करने की उचित रीति है ।  
 रोमी को स्पष्टता दिये हुए बपड़े तथा और और चीजें  
 अच्छी तरह साफ होय हुए बोये दिये किसी दूसरे के  
 काम में न जाना चाहिये । रोमी का पिछोना और गरीर के  
 बपड़ नाए रहना अच्छे हैं ।

८९।—एक पांडा ३५ दिन तक ठहरने वाली होउसी  
 है इसलिये इतने देर तक रोमी को सहाय में अच्छी  
 तरह पचन चला तथा पुष्टि कर मज्जादार देना चाहिये ।  
 बाएसी भरासोट और यदि पेट की कुछ मज्जबूत न होनी  
 पाडा २ दूध दिया जायकना है । बाहुनी मज्जा का रस  
 अच्छा पच्य है । पाडा के जल में दाल दलिया भयपा  
 और कोई देसी चीज दमकन हैं । रोमी को जगाकर मोड़न  
 कपान की आवश्यकता नहीं किन्तु यदि जगला होतो हा  
 तीन घण्टे के मगर ५५ कुछ पाडा २ साने का देना चाहिये ।  
 पानी जिनका इच्छा हो दिलाया जायकना है । यदि कुछ  
 न विपश्यन का दलित न हातो मज्जादार से थान को चीजों  
 की विचकारी देना आवश्यकता है ।

द्वितीय रीति हातो मज्जादार में सातुन दिलाकर विचकारी  
 देना अच्छा है । विचार के लक्षणों में यह दाहर रोमी को  
 अच्छे हा हाहा मिली नहीं । तथा यदि बहुत विचार मज्जा दे तो  
 उत्तर बोध करना पचवा कमजोर घण्ट करवा मज्जा  
 है । बहुत कमजोर रोमी को कुछ बड़े रसक कापन उत्  
 को हाहा हा कमजोर बनी नहीं चाहिये ।

९०। उपर्युक्त रीतिगत नव रसको दोहोहराये हाहा हाहा

९१। १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।



आहार उचित नहीं। इस रोग के बाद आयुष्य बहुत घटता है।

द्वितीय, पञ्चमे, सप्तमे, नवमे, त्रयोदश इत्यादि अयुग्म दिनों में रोग बढ़ता है इस लिये इन दिनों में सावधानी और होषियार से रागी व पाभ विषय कर रात्रि में आदमा रखना आयुष्यकहे इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि रात के बढ़ने के विभासानी से और अच्छी तरह कटवाये। उचित औषधि तयबीज होत से प्राय इस प्रकार रोग नहीं बढ़ता।

## आतिसारिक विकार ज्वर ।

(टाइफाइड फीवर) ।

यह बहुत सौधानिक और लक्षण ज्वर है। यह प्राय २८ दिन अथवा इस से अधिक रहता है। इस का वातद्वैधा विकार ज्वर और आंत्रिक ज्वर भी कहन है।

कारण ।—यह ज्वर एक विशेष प्रकार विरसे उत्पन्न होता है। सन्निपात विकार ज्वर से यह बिलकुल भिन्न है। यह सक्तामक नहीं होता। रोगी का मुख ही विषाक्त हो जाता है और उसी से यह ज्वर पैदा होता है। रोगी के मूत्र से दूषित मांस उठकर हवा को जहराली कर देती है, इसी जहराली हवा से रोग उत्पन्न हो सकता है। एक कारणही यह रोग मनुष्य को लगता है। किसी तरह मेरी विषाक्त मल पानी के साथ मिलकर इस पानी का पीना है उसी को बीमार कर देता है। पानी मिला हुआ दूध भी इस बीमारी का दूसरा कारण है।

जमा जमी आतिसारिक विकारक यीन मलम निकलने

समय तोम और तेजशाली नहीं रहने, यह निश्चल कर विशेष किमी किसी अदृष्टा में संरक्षित होने पर उत्तम धन किया द्वारा अथात किसी तरह पर साँच जाने से अत्यन्त आचार धारण करते हैं। यह रोग हूठ से नहीं होता। इस रोग के मध्य में रहने वाल बहुतही छोट जीव ही पाँच हाव है जो कि दर में प्रवेश कर अत्यन्त पाँच वस्त्र कर देते हैं। निम्न समय में यह पाँच बढ़ते हैं उसीको इसको अग्रजायावस्था कहते हैं।

**पूर्ववर्ती कारण ।**—इस रोग का प्रधान पूरवर्ती कारण उमर है। बहुत छोटे बच्चे अथवा बूढ़े मनुष्य को यह रोग बहुत कम होता देखा गया है। प्रायः १५ वर्ष से लेकर ३० वर्ष तक होता है। छा और पुद्ग, पनी और हीर, मयको सज्जन रूप से इस के द्वारा बीमार होनेकी आशा रहनी है। यदि पुराना अदृष्टा और कोर रोग हो तथा गम्भीर क्षीयोंको यह रोग प्राय नहीं होता। अत्यन्त परिश्रम मानसिक बल, दुर्बलता रहने पर इस रोगको जाना बहुत समय है।

**लक्षण ।**—(१) अग्रजायावस्था, आन्त्रिक त्वर की अग्रजायावस्था किन्तुने दिन टहरनी है इस का कुछ निष्पन्न नहीं है। यह अवस्था ३० दिन अदृष्टा उन से अधिक समय तक टहर सकती है। इस समय विशेष किमी प्रकार के लक्षण प्रतीत नहीं रहने। प्रायः यह अवस्था बहुत छोटे समय तक रह कर अत्यन्त, उल्टी चर मर्दि उपस्थित होकर रोग अत्यन्त होते देखा गया है।

(२) अग्रजायावस्था इस रोग को हृदा हृदा

अवस्थाओं में विभक्त करना कठिन तो है, किंतु कुछ ठोके समयों में विशेष विचार लक्षणों से इस के विभाग किए जा सकते हैं । आक्रमणावस्था बहुत धीरे धीरे उपस्थित होती है, इस लिये यह निश्चय नहीं हो सकता कि कौन किस दिन शीमार हुआ है । शिर रद, शिर घूमना, कानों में शब्द, प्रायः संबंधी शरीर में रद और आलस्य हाना, बेचैनी, सोत समय बार बार अंग उठना, थोड़ी थोड़ी सर्दी लगना उदरामय, भूख की कमी, जीम मैली, आ मिचलाना और उलटी होना इत्यादि अक्षय रोगके आदि में देखे जाते हैं । कभी कभी पेट में बहुत दर्द होता है, प्रायः उदरामय ही एक मात्र प्रधान लक्षण प्रकाशित होता है । प्रायः बारबार नाक से खून गिरना देखा जाता है । इस के बाद हाँ ज्वर दिसखार पड़ता है, यह ज्वर सगुण समय बढ़ता है । प्रायः यह रोग धीरे धीरे वे मालुम आकर उपस्थित होता है कि रोगी बहुत दिन तक इस के विषयमें कुछ जानसकता है न समझ सकता है ।

**प्रथमावस्था ।**— इस रोग से शमार होकर पड़िये आठ दस दिन के भीतर नीचे लिखे हुये लक्षण पाये जाते हैं । रोगी का बेहतर देखन से अधिक दुबलता नहीं मालुम होती । ज्वर रहता है, शरीर गरम प्रायः सूखा हुआ, कभी कभी पसना हुआ, नाड़ी का धडकन १०० से १२० तक कुछ कमनेर और कोमल, दोनो हाँटे सूखे हुये, व्यास लगना, भूख बंद प्रायः आ मिचलाना उलटी हाना, जीम पत सफ़द अथवा पाले रंग का मैल जमा हुआ और पहिले जीम का गोली रहना आदि लक्षण उपस्थित रहते हैं ।

**पेट के लक्षण ।**—यथा वद विशेषतः पेट के मोच दाहिनी और छोटा बहुत पेट ऊपर आना और उसमें हवा भरजाना पेट हावने में गह गह शब्द होना तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहना । परीक्षा करने से तिही बड़ी हुई दाँव पड़ती है कभी कभी माम्नों से रक्त गिरता है । उदरामय की लज्जा बड़ने घटने लगती है, २४ घण्टे के भीतर दम्नों की संख्या १५ से ऊपर बावद २० भयदा-हम से भी अधिक दर्शा आती है । प्राय तौन से लेकर ६ बार तक दस्त होता है । इन दम्नों के कुछ विशेष लक्षण है जिन के द्वारा आंत्रिक ज्वर के दस्त निषेध किये जाते हैं । दस्त की शक्ल मटर की पत्ती क पानी में मीठे दूध के समान, दुग्ध और प्राय दमानिया भाव क समान गन्ध । निकलते समय यह दस्त एकसाही रहता है किन्तु किस शक्त में कुछ समय तक रखने से उस के ऊपर पीछे पीछे रंग का पामला सञ्चित होजाना है और नाचे तार हुए बीज के अंश, एपीपीटीयम, रक्त, माँतों के सड़ दूधे डुफट आदि भाँचे पड रहत हैं ।

इस समय मलिनक क लक्षण प्रबल नहीं होत । गिर दद रहता है साथ साथ सिर घूमना है बार बारों में शब्द सुनाई पड़ते हैं । रात्रि क समय नींद अच्छा तरह नहीं आता, किन्तु मानसिक अवस्था ठाक रहता है रात्रि में भा रोगी नहीं बहता । उस समय आँक से रून प्राय गिरता है और थोड़ी थोड़ी आँखों क लक्षण प्राय रहत है ।

**स्फोट ।**—आंत्रिक ज्वर क सब लक्षणों में न शक्ती



**पेट के लक्षण ।**—दया दंड विशेषतः पेट के मांसे दाहिनी ओर थोड़ा बहुत पेट अफर जाना और उसमें हवा भरजाना, पेट दायने से गूढ़ गूढ़ शब्द होना तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहना । परीक्षा करने से तिथी बरी हुई शीघ्र पढ़नी है जमी जमी मान्तों से रक्त गिरता है । उदरामय की तेजा बढ़ने घटने लगती है, २४ घण्टे के भीतर दस्तों की संख्या हो स लेकर बारह २० मयवा-  
त्म से भी अधिक दया उठती है । प्रायः तीन स लेकर ६ बार तक दस्त होता है । इन दस्तों के कुछ विशेष लक्षण है जिन के द्वारा आन्त्रिक रक्त के दस्त निषेध किये जाते हैं । दस्त की छकल मटर की पानी के पानी में मीठे हुये के समान, गुग्गुलु और शाय बमानेवा भाव के समान दाय । निश्चयसे समय यह दस्त एवसादा रहना है किंतु दस्त दस्तन में कुछ समय तक रहने से उस के ऊपर पीछे पड़े रक्त का पानीसा मलित होजाना है और नीच साह हुई बीज के भरा, दस्त-दस्त-दस्त, रक्त मान्तों के सब हुये डुकर भादि मंथे पड़े रहने हैं ।

इस समय दस्तिक के लक्षण प्रकट नहीं होत । तिर दर रहना है साथ साथ मिर घूमना है बार बारों में शब्द सुनाई पड़ना है । शक्ति के समय में द दृष्टा तरह नहीं जानी, किंतु आन्त्रिक कबला ठेक गठनी है शक्ति में भी होती नहीं दृष्टा । इस समय मूत्र में मूत्र दस्त गिरता है और दादा थोड़ा बांझ द दृष्टा दस्त रहने हैं ।

**हस्त ।**—दस्तिक उर के सब धारों में ३ शक्त

अवस्थामें में विभक्त करना कठिन तो है, किन्तु हुंई समयों में विशेष विशेष लक्षणों से इस के विभाजन में आसक्ते हैं । व्याकमणावस्था बहुत भारे धीरे ठकी होती है, इस लिये यह निश्चय नहीं हासक्ता कि एक किस दिन बीमार हुआ है । शिर रुद, शिर घूमना, कर्ण में शब्द, माय सषदा शरीर में रुद और माठरुप रोग, येथैनी मोत समय बार बार जग उठना, थोड़ी थोड़ी खर्ची लगना, उदरामय, मूत्र की कमी, जीम मैली, ई मिचलाना और उल्टी होना इत्यादि बलुण रोगक लक्ष्णों में दखजाते हैं । कमी कमी पट में बहुत रुद होता है, शिर उदरामय हा एक मात्र प्रधान लक्षण प्रकाशित होता है । माय बारबार नाक से खून गिरना दखा जाता है इस क बाद ही ज्वर दिखलाई पड़ता है, यह ज्वर सम्भा समय बढ़ता है । माय यह रोग धीरे धीरे वे मातुम मन्दा उपस्थित हाता है कि रागी बहुत दिन तक इस क विषयमें कुछ जानसक्ता है न समझ सकता है ।

**प्रथमावस्था ।**— इस रोग से बीमार होकर पीछे आठ दस दिन क भीतर नीच लिख हुए लक्षण पाय जात हैं । रोगी का चेहरा रैलने से अधिक दुपलता नहीं मातुम हाती । ज्वर रहता है शरीर गरम माय खूना हुआ, कमी कमी पमाका हुआ, नाडी की घडकन १०० से १२० तक कुछ कमजोर और कामल हाता हाट गूथ हुए, व्यास लगना, मूत्र रुद माय जी मिचलाना, उल्टा हाता जीम पर सषदा सषदा पीछे रोग का मैल जमा हुआ और फहित जीम का गाली रहना आदि लक्षण उपस्थित रहत हैं ।

**पेट के लक्षण ।**—यथा दद विशेषतः पेट

माघे दाहिनी और छोटा बहुत पेट बफर जाना  
उसमें दवा भरजाना, पेट दावन से गड़ गड़ शब्द हो  
तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहता । परीक्षा करने से तित  
दो हुर दोष पड़ती है कभी कभी मान्तों से र  
गिरता है । उदरामय का तर्जो बढ़ने घटने लगती है, २४ घण्ट  
के भीतर दस्तों की संख्या दस से लेकर बारह २० मयबा  
इस से भी अधिक दस्त आती है । प्राय तौन से लेकर द बार  
तक दस्त होता है । इन दस्तों का कुछ विशेष लक्षण है कि  
क द्वारा आंत्रिक त्वर का दस्त नियंत्रित किये जात हैं ।  
दस्त की शक्ल मटर की पत्ती की पानी में भोंट हुये के  
समान दुगुंध और प्राय समानिया प्राय का समान गंध ।  
निकलते समय यह दस्त एकसाही रहता है किंतु कित  
बरतन में कुछ समय तक रखने से उस के ऊपर पीछे  
पीछे रंग का पानासा सञ्चित होजाता है और नाथ तार  
हुर चीज का भस्म, एपार्थिटायम, रक्त, मान्तों का सड़ हुये  
डुफड आदि माघे पड़ रहत हैं ।

इस समय मसिष्क का लक्षण प्रबल नहीं हात ।  
गिर दद रहता है, साथ साथ सिर घूमता है  
और कानों में शब्द सुनाई पड़त हैं । रात्रि क  
समय नींद अच्छी तरह नहीं आती, किंतु मानसिक  
रक्षा ठाक रहता है, रात्रि में भी रोयो नहीं बहता । उस  
समय नाथ से खून प्राय गिरता है और पादो पादो  
ही के खवप प्राय रहत हैं ।

**नोट ।**—आंत्रिक त्वर का सब स्थानों में न शक्ते



मधिराश स्थानोंमें शरीर में एक प्रकार की कुसियाँ रह पड़ती हैं। यह कुसियाँ यद्ये समयमा अधिक उमर के लोग के शरीर में प्रायः नहीं निकलती। यह मात्र और १२ दिन के मात्र ही निकलना है किन्तु कभी कभी २० दिन तक देर भी होजाती है। पट छाता और पीठ में मधिराश होता है। यह कुसियाँ सब स्थानों में सब एक साथ नहीं निकलती हाँ जिन में बहुत १ दिन तक रहकर बैठजाती हैं। राग २८ या तीस दिन तक इस प्रकार कुसियाँ निकलत हुए रहना जाता। जै इन कुसियों का मरणा एक साथ मधिराश दिग्गहा नहा पड़ता लगभग १२, २५ या ३० एक के स्थान में एक एक बार निम्नपड़ती है।

रोग बढ़ने की हालत।—ऊपर कहे हुए लक्षण नहीं बढ़कर मात्रात हीन के समान तक इसा स्थान में रहमतन है—यसा हालत में जाय गाया रहना है बहुत ज्यादा दुःखना या क्लेशाधिक सम्भव नहीं रहने किन्तु कभी बड़े सब लक्षण बन्द कर और बहुत राग का बहुत क्रोध कर बन हैं। रागी दुःखी और क्रमगत होकर धनमें गिर जाता है और उन्नत का नहीं रहती। यदि छाती पर भगुड़ी डाल जाय तो जोर मारा जाय तो यसा मादुष हालत है कि वह मरकर और कठिन होकर दृष्टत है ऊपर होजात है चरना का रगत खाल माने मृत्यु भी हुआ मानना पुनर्जी कैसी दूर। उन्नत का चर्क समान रहना नह बहुत नह किन्तु दुर्लभ मया हानिन्द का विषा और में पुनर्न होजा है। जिन मृत्वा दूर और गहरी चरना वह रक्त कर दण्ड मधिराश में पुनर्न मया माने दण्ड पड़त है। वह के लक्षण कम न दाहर नह

— जने है और कमी कमी भागों से गून गिरता है और  
— बेमासुम दल और पेदाब भी निकल जाता है तिल्ली बहुत  
बढ़ जाता है ।

स्नायुविधान में स्पष्ट लक्षणों मासुम पड़ती  
है । १० दिन से लेकर १४ दिनस मीतर गिर दद और  
गटोर में दद कम होता जाता है किन्तु अधिक मिर घूमना  
और बढ़ावन मासुम होता है । मानसिक अवस्था में भी  
परक पड़ जाता है यथा नौद की आना, मानसिक पड़पद,  
बहना इत्यादि । बहना पहिले केवल रात्रि में ही  
होता है और दिन क समय रात्रि बाद कीमी हालत में  
रहा जाता है । पहिल कबल पड़पद बहता है और योंही  
बिगुना है पाछ कमरा मयानक माछार धारण करना है  
बिडेनस गूडा हा जानई मय पाछर बिगुना है, बिगुने  
सावना भारमधरता है इस समय भी नाक से गून  
गिरता है ।

सास जल्दी जल्दी चलता और सरदी और सासी  
लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । पंगाब बहुत और बजन  
साधारण पंगाब का बरणा हल्का होता है । कमी पेदाब  
हो जाता और कमी दस्त आज समय बमासुम पंगाब निकल  
ता है । जिस करवट रात्रि साता है उही स्थानों में  
सावन कबधित हा आज हैं । आश्रिक ज्वर जिस समय  
होने लगता है बहुत घारे २ घटना है चरारछो गरमी  
घरे कम होकर स्थामाबिध हा आती है । आलेग्ना  
अपात् रोग न रहता और नाहा का बहुत घोर  
दिललाई पड़ती है । इस अवस्थामे कमा कमा फिर  
ग है और पाछ हात माद बहुत स उपसों मापार

अधिकांश स्थानोंमें शरीर में एक प्रकार की फुसियों राग पड़ती हैं। यह फुसिया कबे अथवा अधिक उमर के बच्चों के शरीर में प्रायः नहीं निकलती। यह मात्र और १२ स्त्रियों के शरीर में निकलती हैं किन्तु कभी कभी २० दिनों के भी हो जाती है। पेट छाती और पीठ में अक्सर निकलती है। यह फुसिया सब स्थानों में सब एक साथ नहीं निकलना दो गिन से लेकर ५ दिन तक रहकर बैठ जाती है। राग २८ या तीस दिन तक इस प्रकार फुसियों निकलते हुये देखा जाता है। इन फुसियों की सख्या एक साठ अधिक बिसलाह नहीं पड़ती जगभग १२, २० या ३० एक स्थान में एक एक बार ही पड़ती है।

**रोग बढ़ने की हालत ।**—ऊपर कहे हुये लक्षणों की पढ़कर आराम होने के समय तक रोगी हाज़म में रहस्यपूर्ण है—एसा हाज़म में जाय गीर्वा रहती है बहुत व्यापक दुग्धना या क्लायुवक खाना नहीं रहने किन्तु कभी कभी सब खाना बन्द कर और बढ़कर राग को बहुत कठिन कर देता है। रागी दुग्ध और कमजोर होकर अतमे मिर जाता है और उन्न का शक्ति नहीं रहती। यदि छाती पर अगुनी द्वारा जार में जोड़ मारा जाय तो एसा मानस्य होगा है कि पड़ मुकदुकर और कठिन होकर फूलन है उन्न हाज़म है शरीर का रंगन खाना आने रून में भी हुई आशय पुनर्वा फसा हुए। उन्न का एक समान रहता नाहीं बहुत नन किन्तु दुग्ध तथा दुग्ध को दूध और भी दुग्ध हाजमा है। नाम मूत्रों हुए और गहरी गहरी हरे हरे रंग का हाट मैत्र भ्याम में दुर्गंध आता आता नक्षत्र दाघ पड़ने है। पेट में खल्लय कम न हाकर ब

आने है और कभी कभी आँसों से खुन गिरता है और चेमासुम दस्त और पेशाब भी निकल आता है, तिल्ली बहुत बढ़ जाती है ।

हृन्नायुविधान में स्पष्ट नबदीबी माशुम पड़ती है । १० दिन से लेकर १४ दिनके भीतर शिर दर्द और छातर में दर्द कम होता जाता है किन्तु अधिक निर घूमना और बहुरापन मासुम होता है । मानसिक अवस्था में भी खरक पड़ जाता है यथा नौद खी झाना, मानसिक बड़बड़, बहना इत्यादि । बहना पहिले केवल रात्रि में ही होता है और दिन के समय रोगी नौद कीमा हालत में रहा जाता है । पहिले केवल बड़बड़ बहना है और यौद्धी चिल्लाना है, पाछे कमरा मयानक आकार धारण करता है, बिजोनेसे रुंदा हो जाता है भय बाहर चिल्लाना है, बिजोने खोचना आरम्भ करती है इस समय मा नाक से खुन गिरना है ।

सास जल्दी जल्दी चलता और सरदी और काँसी के लक्षण दिखलाई पड़ने हैं । पेशाब बहुत और बनन में साधारण पेशाब की अपेक्षा इल्का होता है । कभी पेशाब बन्द हो जाता और कभी दस्त आने समय बमासुम पेशाब निकल आता है । जिस करवट रोगी सोता है उन्हा स्थानों में शय्यावत उपस्थित हो जाना है । आत्रिक ट्वर जिस समय बन होने लगता है बहुत धारे २ घटना है छातरधी गट्ठी थीर धीरे धम होकर स्थामाबिद्ध हो जाती है । आरोग्या वस्था मयान् रोग न रहना और नाद्धी की बहुत धीर गाँठ दिखलाई पड़नी है । हृन् अवस्थाने कभी कभी फिर बन्द जाता है और पीछ होने वाले बहुत से उपसर्ग आराध

नि को रोक देते हैं ॥

**शरीरकी गरमी ।**—आग्निज ज्वर में शरीर की गरमी बढ़ विच्छिन्न दृग्मे बढ़ती हुई देखा जाता है । पहिले दिन तक यह बढ़ता रहती है । प्रातःकाल का पैंसा-सप्या को दो डिगरी अधिक होता है, शरीर का गरमी प्रातःकाल पहिले दिनकी सप्याके अपेक्षा एक डिगरी कम होती है अर्थात् प्रति दिन एक डिगरी बढ़ता जाता । शरीर की गरमा का ठीक इस प्रकार बढ़ना अग्निज ज्वर का प्रधान लक्षण है ।

पहिले सप्ताह के अन्त में शरीर की गरमा को देखकर भावी मौजुम निश्चय किया जा सकता है । इस समय १०३ डिगरी १०५ डिगरी तक शरीर की गरमी का क्रमशः बढ़ना अच्छा । पहिले सप्ताह के बाद कई दिन तक शरीर का गरमा १०५ डिगरी रहना अनुभूत सम्भूत आदि तथा अन्तर सप्ताह में शरीर का गरमा का अधिक बढ़ना या घटना या घुस लक्षण है ।

डाक्टर विलसन ने ४०० रोगियों की चिकित्सा करके शरीर की गरमा के अनुसार इस रोग द्वारा सेंकड़ पाठ मृत्यु संख्या इस प्रकार निश्चय की है ।

१०४ डिगरी से अधिक जिनके शरीर का गरमा नहीं बढ़ता उनमें सेंकड़ मृत्यु संख्या ५ है । १०४ अथवा इससे अधिक जिनका गरमा बढ़ जाता है उनका सेंकड़ पाठ मृत्यु संख्या २० है । १०५ अथवा इससे अधिक जिनका गरमा बढ़ता है उनका सेंकड़ पाठ मृत्यु संख्या ५० होता है तथा १०६ डिगरी तक जिनका गरमा बढ़ जाता है वह प्रायः सब ही मर जाते हैं ।

ज्वर जब कम होने लगता है तो शरीर का गर्मी बहुत घीरे २ कम होता है । प्रातःकाल और सन्ध्या के समय शरीर की गर्मी में दो तीन डिग्री की घट बढ़ होष पड़ती है । पूरा आराम होने में अर्थात् शरीर की स्वाभाविक गर्मी होने में बहुत समय लगता है । यदि उपसन आदि कुछ उपस्थित होजाय तो इस समय बहुत कुछ बढ़कर तथा जुबान आनमन होन के कारण शरीर की गर्मी फिर अधिक होजाता है । इस रोग में प्रतिदिन दोनों समय नियमितरूप से शरीर की गर्मी को लिख लेना बहुत आवश्यक है । यह रोग मालुम होत ही पौरन एक तापमान यत्र अर्थात् यन्मापकर लाकर रक्ता चाहिये ।

**पुनराक्रमण ।** बीमारी का एक बार आराम होने के बाद फिर बढ़ना ) आत्रिक ज्वर आराम हात होते कोर होय उपस्थित हो अथवा नहीं, फिर भी वह अफर उपस्थित होजाताहै यहा तक कि एक एक राग को तीन तीन बार बार बार भोगते हुए देखा गया है । रमी केवल ज्वर और कभी इस रोग के सब लक्षण छोट जाते हैं, शरीर की गर्मी स्वाभाविक होजाने क दशदिन बाद यह पुनराक्रमण उपस्थित होता है । यह रोग छोटने परमा प्राय रगी अच्छा हाजाता है । इस समय भोजन और, धार और स्वाभ्य सम्भवाय नियम प्रतिपालन करने से जल्दी आराम होने की आशा होता है ।

**आनुसंगिक ( साथ में रहने वाले ) और परवर्ती उपसर्ग ।** [अर्थात् पहले उपस्थित होने वाले उपसर्ग]—  
सन्निपात विकार ज्वर में जो सब उपसर्ग दिखे गये

हैं इस ज्वर में भी ये सब उपसर्ग उपोत्पन्न होते हैं सिधाय मातों में छेद हाजाना तथा मातों के थाली फिल्ला में प्रदाह होना इस राग में मयस धिन्ता करनेवाला उपसर्ग है । प्रायः तीसरे सप्ताह में ही मातों में छेद होजाते हैं । मातों में गिरना भी बहुत साङ्गानिक उपसर्ग है । यह लक्षण २४ दिन के भीतर प्रकाशित होता है ।

परन्तु उपसर्गों में यक्ष्माभासी, मानसिक हासि कमजाति अथवा पातलपन, पाडा दर रहन वाला बहुत देर रहन वाला साधारण अथवा ज्ञानाय प स्नायु-मूत्र काज से मवाद निकासना बहिरापन, अ स्न का कमी कमजाति और पुषलापन प्रचाल हैं ।

**अवस्थिति और परिणति** ( रागका दहराव तथा पदिल हो जिया आशुका है कि मात्रिक ज्वर चार २ और ये मातुम उपोत्पन्न होता है कि राग दिन गुरु हुआ है यह रागा निधय नहीं कर स यह राग प्रायः तीन वा चार सप्ताह तक दहरता है ३० दिन से अधिक मा खगजात हैं । मृत से इमीन वा मदारम दिन के भीतर ही भच्छ हाजान उपसर्ग रागका फिर होना इत्यादि द्वारा इसक दहरा समय और भी बढ़नका है ।

मात्रमयावस्था १ से ५ दिन तक । गांड बनना १ १५ दिन तक, पाय की मयसा १४ से २१ या २८ तक रहना है । नासर सप्ताह के अन्त में मय से म मच्छा होना है । मृत्यु प्रायः २५ दिन से पदिल हाता है ।

बहुतही भयतिष्ठानु (महान् वरुणकी शक्ति १ रहना) और  
मभीरु किता बलिका भयमनमानके माधु उत्तर न हे  
सकता ११६ और मध्यमपर गत्त पभीरु ।

चायना ६,३० शक्ति ।—बहुत म्यानका परवर  
महाद उल्लापदा, रमोने कमजारी किता दहक उल्लापद,  
कानि रणका मन् वानोद समान विज्ञानर रत्रिक समय ।

गाईनेशिया ६,३० शक्ति ।—उपपात्र इतिदि  
बहुतही तिष्ठानु धारे मुखे मयना कथान रथामें नाम  
६३ ११ ३ ।

महफर ३० शक्ति ।—नय म्यान कथान में लान  
कृद्विनिष्ठर नडे मयना पड रूपाका कोर डम रिष्टान्  
न पड, पारक धारो हर लान् लुप्त ३००  
और मराद ।

बहुतही का रथान उर आये मो उल्लाप उमी मयप रम दह  
रम गाईने । उर कुद कानमें हदा रथाना विष्टान् विविष्ट १ ।  
बहि बहुपना कान मयना हामो उमका पड माध  
मायनर मय दहक उरिन मही धादा ५ हा कानना  
और उल्लाप मार वरुण । उल्लाप दुलाप उल्लाप हो  
रथाना हर लान् मने हर पैदा मने मयनर पडदे  
रथानो छे लान् हर कादि रिष्टान् दम वरुण । उल्लाप  
म । उल्लाप उर कुद कानमें काना उल्लाप १ । उल्लाप ।  
बहि हर हर मयनर नडे मने ना मयना म दुलाप  
मोददा काना विष्टान् रम पडदे मम वरुण रथान



रुग्णा आदिव वि चमडा न उडनाय । आर सुखाय ममय आर  
रुग्णा आदिव वि किमी प्रकार मङ्ग रिडनि मडा ऊय ।

—०—

## सर्दीसे हाथैर फाटना ।

शीत ऋतुमें सर्दी बगैर हाथ पैर, कान, नाक, मरि  
हवाय एर प्रकार पट जात और उममें रुई होता है ।  
यह बर्फी बरफ भादा बहुत फूल जाताहै, खुलता चला  
ते, अडन होना ते और तराता है । यदि मरिज गरम  
पट लाये ता चमडक नीचे रक्त उत्पन्न होजाता है और  
यह रक्त निरुद्ध जावर एर प्रकारका घावना रहजाता  
है । इस घावको कठिन्तासे आराम देना है ।

**चिकित्सा ।**—शरीर न जलन और खुजला, तला  
गामी तरा हुना छाना हाता ६ छत्रक घाला १५ । २० रुई  
टिक्टर कैथरेम मित्राकर हाशानवार करलेना आदिव एरा  
इस आशाम दूध स्थानका सवश घोना च दिव । यदि जलन  
हा और हुट हुट हाता दानो इसा प्रकार आर्निक् सादर  
वापश करता है ।

लक्षणां च अनुमानं तेन विद्या ह्य मौषधं कानि  
च दिव —

**असैनिक ६,३० शक्ति ।**—गरम आर उमन  
आर रुग्णा क्वात हा उममें चलन हा घाव हु ना पैरकी  
अगुनियो मकोनी इसा प्रकार घाव नगा हुमा ।

**फ्रामफ्रॉम ६,३० शक्ति ।**—निरुद्धकर हा

पेटोका समुन्धों में फटवाना और घाव होना, घाव में उ  
न हलत रसका सखन खुपरी और चन्न हुआ ।

दलगाटिला दी चुकित ।—उत्तम मोक्ष ह ।

मलकर दी, ३० शक्ति ।—पेटका समुन्धों में  
घाव हलत रसका ।

—०—

घान स्रधवा फटजानेसे घाव ।

होत स्रधवा फट ज्ञानेस नाथ लिख हुए निबन्धों पर ध्या  
रचना चाहिये —

[ १ ]—गुन गिरमा बन्ध करन चाहिये । यह अनेक  
प्रकार का विद्या जातवना ह जैसे घाव क छान को दवा  
रचना से जल्दी हल करने में ठण्डा पाया सघरा दरफ  
लगान से इत्यादि । यदि दाह धमना कर पावतो उत  
में दे रहे डार में एक निबन्ध लगना है । ऐसे गधमर  
पर धमनी दे मुह का बाध दान पडना ह । घाव व सार  
पर कडे-हुला छाशन प्रयोग करना चाहिये । इस में गुन  
गिरमा बन्ध होगा और मन्त्रादित पडना ।

[ २ ]—घावक रूपाजको साधपानी से साफ करना चाहिये ।  
विम रित्त चान्न से कन्धाना है मात्र उत्तराहुत रूपा गांत  
क भन्तर रहना ह । अनपव घाव क रूपा को दान से  
मे रहने सखन तरह पतिसा हर देखना चाहिये कि उत  
क भन्तर किमा प्रकार का मैल, घाव, बाधका हुंदा,

काटा मयथा लवणी भादिका काट पान ता न रहगयी है ।

[ ३ ]—घाव क दोनों मुहों का इवट्टा पर बांध बना आदिय । इस से बहुत शीघ्र मुह बंद रहने के कारण घाव सुख जाता है ।

[ ४ ]—घाव क स्थान का स्थिर रखना आदिय । हाथ पैर क काम पर काम करना नयथा घूमना निमित्त है ।

[ ५ ]—घावक स्थानका प्रतिदिन स्वच्छ रखना आदिय । साफ कटा क समय पहले गरम पाना से घाव क ऊपर क सब कदह और घाव भिगाकर सावधाना स सब झाँका आदिने । यदि इस प्रकार न किया जाय और कड़ी और ऊपर से कपड़े आला जाय तो रानी का कट होना है और अधिक रक्तस्राव होकर घाव सुखने में देर लग जाता है ।

**चिकित्सा ।—**टिक्कर देलपूजा, मूक मयल मरक-

सब प्रकार क घावों पर अनन्त कट जाने पर इसका ऊपर प्रयोग कबना करता है । इस म ग पाना स एक मात्र भेदक मिठाकर उस में काहा भिगाकर सगला घाव क ऊपर दफ रखना आदिय । इस प्रकार करने रहने क घाव शीघ्र सुख जाता है और उसमें मवाद नहीं पाना पाता ।

ऊपर उपाय का बचक्यों क भिवाय कभी कभी खान क निव ३ दवा दन की आवश्यकता होना है । यह वस्तु ८ देवनागरी या भादिका व्यवहार करने से प्राप्त क रना हो जाता है । यद्यपि उपाय कई हो सुत्र गथा हो मरक में उपायिक के कारण भिन्न कई आदि उपायों में से ।



काटा भयथा लवणी आदिका काद पाय तो न  
रहगयी है ।

[ ३ ]—पाय क दोनों गुणों का इकट्ठा कर पाँच इस  
आदि । इस से बहुत शीघ्र मुद बन्द रहने के कारण  
पाय सुख जाता है ।

[ ४ ]—पाय क स्थान का स्थिर रखना आदिये । हाथ  
पैर क जान पर काम करना भयथा घूमना निमित्त है ।

[ ५ ]—पाय क स्थानको प्रतिदिन अच्छे रखना आदिये ।  
साथ वटा क समय पहले गरम पाना से पाय क ऊपर  
क सब कण्ड भार पाय मिश्रकर सावधानता से काम  
आदि आदि । यदि इस प्रकार न किया जाय तो  
ऊर्ध्व और आर से कण्ड आर जाय तो रोगी को  
बड़ा हाना है और अधिक रक्तस्राव होकर पाय सुख न  
रहसकता है ।

चिकित्सा ।—त्रिचर के लहूँटा, मूल मच्छ मरक-  
सब प्रकर क पायों पर भयथा कट जान पर इसका ऊपर  
प्रयोग करवा जाता है । दश भाग पाना में एक भाग  
मै गव मिश्र कर उष्ण में काहा मिश्रकर सगदा पाय क  
ऊपर द्रव रखना आदिये । इस प्रकार करने रहने से  
य व श प्रसन्न जाता है और इसमें मशरु नहीं पड़ने वाली ।

ऊपर कण्ड का कण्डियों क मिश्रण कभी कभी जान क  
निव न रुका दन का मन्त्रदयकन हाती है । य व यष्ट  
८ ८२ नाग का कर्मेष्टा व्यवहार करने का प्रयोग  
कामना रहता है पाय में लगाव रहै हा मूल गया हो  
रक्त में रक्तविष के कारण निर रहै कादि लक्षणों में य

होना घाय वह बटने पर दापर-सद्वर और सुखन में विरम्य  
हा ता सारप्रेक्षिषा दना चाहेय ।

**ऐकोनाईट ३,६ शक्ति ।**—अपर, भय भार मान  
मिष्ट उग्र रक्तप्रधान घानु बाले मनुष्य व निष्ठ  
उपयोगा है ।

**आर्निका ३,६ शक्ति ।**—ऊपर घाट भादि  
लगकर केसे भी घानुगत रक्तज उपस्थित हो रस औषध  
न सेवन करने से आराम दाना है । तराना, मामों पिच्छ जानव  
समान [ रक्तकस भा उपकारी है ] चाहे जैसे दिहाने पर साथे  
सभी बट मादुम हो ।

**कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।**—बहुत मवाद पैदा हो  
और भयस्त दद, घाय सुखना न चाहता हो घान सघारना  
और बट न सह सचना ।

**घायना ६,३० शक्ति ।**—अधिक रक्तस्रावक कारण  
दुबलता और बलक्षय ( फासकारिण एसिड भा उपकारा है  
सूष्का, बहरे पर मुदापन और रक्तजन्य रक्तस्रावक कारण  
रपजन और सिर दर ।

**हीपरसल्फर १२,३० शक्ति ।**—अत्यंत सामान्य  
बटा घायभा पक उठ, मण्डमाला दूषित मनुष्य व निष्ठ  
उपकारी है ।

घाय से बहुत सदाजमें रक्तस्राव हो—ऐकोनाईट  
मार्नेडा, घायना, फासकारस ।

घायमें बहुत मवाद पैदा होनेपर—घायना, मादूरिया



हममें मिमोशर दहने आनपर एगना चाहिये । साधना  
भक्ति का वा रक्षक आनेकोभी हम चाहिये । जैसा जैसा  
हम एगना पाते पाता पाते हाथपैरों का दिखानेकोभी  
पता रहना चाहिये । रक्षक दह दिखाने का नहा हाथपै  
हम और पैर का चलाता निषिद्ध है । दह दिखाने का नहा  
नहा और पाता पाता रक्षक तमीस चलाता करना मुक्त  
एगना जाय सधना हम मुक्त करारिदा पाय तो दह  
मन्त्रा नहोकर पातक समान रहना है ।

**अभिज्ञान-लोकर पाद ।**

प्रजापति - गरम, सुखी, मृदा, तीव्रही उग्र त्यास  
वर्धन इत्यादि ।

**परिचय**—माघ की जन्मा सायरी। एहन मार बरवान  
हर विधान कालेसे हर बरवान और सन्नीत नम दाता ।  
मारा खोज उदाहर पीछल और नमानन माघ भाषानन  
रन्का कालास है ।

ହାତବିକାଶ - ଚଳିତକ୍ରମେ ସମସ୍ତ ଦିନୁ ଜଣେ ଗଣ ସ୍ବାଧୀନ  
 ଏବଂ ସମସ୍ତେ ହାତ କାମ କରି ଉପାଧିକାରୀ ।

यदि रोग दुराग्राहभावे न जाये हिटा औषधोंको माप  
रक्ता होता है — कैचरिया का ३ दण्डा छात्रकोरम ( जौड़ा  
की कमजोरी ), मादोण्या ( दिग्नेसे रुद दण्डा ) गायारिषा  
( लोहाने रस दवावेर होना ) ।

## ਮੀਨਰ ਘੋਟ

विष्णुः शिवः ब्रह्मा एवम् अन्ये च न हि विष्णुः शिवः





आश्रित-ज्वर का परिणाम जान प्रकार भ होता  
आराम हुआ मरणाग्न अथवा हमेशा के लिये  
अध्य विगड्डाना । मृत्यु हाथतो नीच लिखे हुए कारणों  
हानि है ।

( १ ) दुबल हाल जाना और साथ साथ रक्त की  
मी । ( २ ) रक्तधाव—नाक और आँखों से, ( ३ ) रक्त  
पित्त हाना ४ । अर्थात् प्रबल ज्वर १ । उपसर्ग यथा  
जानों में देह होता या जानों का टपने वाली रिक्ता में  
गह । साधारणतः इस रोगक मृत्यु सङ्ख्या का सङ्ख्या २०  
होता है ।

|                            |  |
|----------------------------|--|
| सांख्यिक विचार-ज्वर ।      | मानिसारिक विचार-ज्वर ।   |
| पर्याप्तमिक ।              | १-एकद्विगुण ।  |
| अत्यन्त सङ्क्रामक ।        | २-मरणाग्न नहीं ।   |
| अचानक आक्रमण ।             | ३-धीरे धीरे आक्रमण करता है ।   |
| ज्वर १४ दिन तक ।           | ४-तब ४ मरता है तब टहरता है ।   |
| शायदही कमालोत्कर्ष मरता है | ५-प्रायः छोटकर आता है ।  |
| आक्रमण पुनर्गोचर हो आता है | ६-आय का पुनर्गोचर प्रायः देखा<br>जाता है ।   |
| ज्वर रक्त नहीं गिरता ।     | ७-ज्वर में प्रायः रक्त गिरता है ।  |
| ८-चमड़ा बहुत गरम ।         | ८-शरीर पर प्रायः सड़ा पसना<br>आता है ।   |
| जमी जमी समानता की तरह      |  |
| अध्य निश्चयनी है ।         |  |
| ९-कुमिष्य का अधिकता सब     | ९-कुमिष्य कम और प्रायः छाना<br>और पेट पर दिखता है पड़ता है ।                                   |
| पेटों में टपों आता है ।    | १०-कुमिष्य ७ से और ९ से<br>दिन के अंतर गिरता जानी<br>है । एक एक दाग सिर तब<br>दिन तक रहता है । |
| १०-कुसी पाचने का छे दिन    |  |
| निश्चयनी है, एक एक नाम     |  |
| रोग के अन्त तक रहता है ।   |  |

११-शरीर का गरमी बहुत जल्दी बढ़ जाती है। दूसरे दिन के बाद ही १०० या १०१ डिग्री हो जाती है।

१२-शरीर की गरमी १२वें या १४वें दिन के बाद ही बहुत जल्दी कम हो जाती है।

१३-बच्चा भोर बहोश रहता पादों से हाथों तक हाथों का स्पष्ट प्रकाशित होता

१४-पेट का मर्मोका न रहता।  
(क) बच्चा (ग) पेट मजबूत नहीं रहता।

१५-दुग्धपावन कम कम होता जाता है।

१६-बच्चा दिन के मीन मर जाता है।

१७-मेह-पीत मूत्र बहुत कम होता है।

१८-शरीर में बहुत कम ताप रहता है।

१९-शरीर की गरमी से शायतः २ डिग्री होना है और दूसरे सवेर १ डिग्री कम है।

२०-शरीर की गरमी दिन आने के बाद १०० डिग्री हो जाती है और बायल में मर्मोका स्वाभाविक होता है।

२१-मसिष्क के लक्षणों के मर्मोका उपस्थित होना बहुत दिन तक ठहरता।

२२-पेट के लक्षण मर्मोका (क) उदरामय, (ग) पेट मजबूत और मर्मोका का पेट की दाहिनी ओर बीच मर्मोका दाया से होना।

२३-दुग्धपावन बहुत।

२४-शायद ही बच्चा १५ दिनों के भीतर मृत्यु हो जाती है। मीनममाद भोर रक्त का प्रवाह होता है।

२५-मेह-पीत मूत्र बहुत कम होता है।

२६-पेट में मीन भोर दाहिनी ओर मर्मोका दाया से होना रहता है।

—सब उमरों में हो सकता है । १९—केवल अवानो कोई ही अधिक होता है ।

**चिकित्सा।**—यह रोग बहुत साधारण है, इसलिये तथा चिकित्सा का नार किसी होशियार चिकित्सक के हाथ में देना चाहिये । अब यह रोग निश्चय नहीं सामान्य प्रकारका औषधि ही आसकरी है ।

### चिकित्सा सार संग्रह ।

- १। मासमज्जा-वैट्रोशिया—
- २। उपसर्ग गुण्य साधारण रोग—वैट्रोशिया मासनिक, मूत्रकण्ड ।
- ३। मलान दुर्बलता—मासनिक, म्यूरोटिक-एसिड ।
- ४। प्रधान उदरामय—मासनिक, विरटून-अलबम, र्पीका, एपिथेलियम ।
- ५। मातों से रह गिरना—टैरीबिन्स, नाट्रोसिक—एसिड र्पीका ।
- ६। सख उपसर्ग—फास्फोरस, बेटडाना, ओपियम, ।
- ७। रोग आराम देने के बाद कमजोरी—फास्फोरिक-एसिड, एमनशिया एमोनियम-कार्बोनेट, सल्फर, चायना, नमकमिश्रण ।

**प्रधान प्रधान औषधि ।**—जिस समय इस रोग का विष शरीर में प्रवेश करने लगता है उस के कारण जो श्वर मरता है उस का रोकना बहुत कठिन है । यदि यात्रि के प्रकार ज्वर के कोई विशेष लक्षण प्रकाश होन परिले ही यदि रोगी चिकित्सा के अर्थान होयतो घेष्टे गिया और मापमानियां देने से रोगको तेजी कम हास

कता है, अथवा उसका क्या राजा आभारता है।

इस राग के प्रथम समाह में एक मात्र उत्तम औषधि  
 व शिवा है। नाड़ी कामल और पूण किन्तु तत्र शिर री  
 और वचना, आराम हान का मरामा न रहता, ध्याम  
 वरुणा शाना मय शाना म दृढ मान म कष्ट मातुम इति  
 इत्यादि य रागश क रक्षण है। जिस रोग में जावना  
 इति बहुत कम जाना दृढ शीतल-उम में यह दृढ  
 कायदा काना ह। राग क प्रारम्भ में य-द्वारा वाज  
 यह रागर्षी लजा वजन वृद्ध कम शानवती है।

प्रायःप्रानिया मा एक इलम शीघ्रि ते । प्राय हात म गरिने  
 यन न्या मरुती ह । कनायावक लभण वलन परमा विराय  
 वर नादि मे गरिने शिन क कय ह । कामों क प्रपय मे वरना  
 इत्यदि हायनों मे दीजाना दे । कभी कभी यहा एक दया  
 वदन भण्टा वर दिनाहाना ते ।

[illegible]





आमैजिक होने से बार बार पशाव का वेग, पेशाब कम होना और जलन होगा इत्यादि की जल्द आराम हो जाता है ।

शारीरिक और स्वायत्तिक शक्ति का कम होना अत्यन्त दुर्बलता व कारण रोगों का सब तरफ से दिला दूँ जाता आदि लक्षणों में फास्फोरिक-एमिड मरुता दखा है । रोग के प्रारम्भ में यह दखा देने से उदरामय पद द्या जाता है, विशेषकर मल यदि पाल रुक जा और पानी सा हाथ, जीभ की रगत बहना शुरू होगी और थोड़ा लेव सा लगा हुआ । कम माषानिक रोगों में कम सुनाह पड़ना और स्वायत्तिक दुर्बलता रहने पर यह दखा बहुत फायदा करती है । इस कारणवा केल्फेरिया काथ देकर पाछ गारुषोडियम इनसे फुलिया निश्चयन में देर होने के कारण जो उपमम बढ़ जान हैं, रोगों धीरे धीरे बहने लगता है और पट फूल जाता है इत्यादि लक्षणों का बहुत फायदा होता है ।

शरीर में गलन की मालूम रहने पर म्यूरियेटिक—एसिड फायदा करता है । कभी कभी सड़े हुये मल में घाव इत्यादि उपसग होने हैं । उन में म्यूरियेटिक-एसिड फायदा करता है । इससे सिधाय यदि आतों के घाव से रुक गिरना हो और मार गिह-एसिड से कुछ फायदा न हुआ हो तो यह बहुत फायदा दिखलाती है । बिटोन से बगबर सरफ आना इस का एक प्रधान लक्षण है । कुछ और म्थर की जगह में घाव हो जाना और अत्यन्त दुर्बलता मरुफूरियस-साय मरुद का लक्षण है । मल बहना हुऐरग का सम्मानिला हुआ, और आम मोटी, सफ़ेद मैल से ढकी हुई, आतों में



फिर एक बार अमानता, घराट के साथ श्वास चलना, बेहोशी इतनी होना कि मस्तिष्क के पन्थाभात का सङ्ग होतो आपियम देना चाहिये । यदि आपियम से कुछ फल न दास्त तो लेवेसिस बहुत कायदा करता है विशेष कर यदि नीचे का आवडा गिर पडने का लक्षण हो । बेहोशी के साथ व मादुम दस्त निकल आने के लक्षण में अर्निका दिया जाता है ।

**अन्तर्नी औषधे ।**—यह जो उपसर्ग या लक्षण प्रकट हो उस समय उनको आराम करने के लिय और आपधि देने के साथ साथ में जो दवाइया दी जाती है उनको अन्तर्नी औषधे कहते हैं । इस राग में नीचे लिखी हुए अन्तर्नी औषधे प्रधान है ।

पहिली हालत में नाक से खून गिरना—मरकूरियस-साब या लाडम् ।

अन्तर्नी अथवा में नाक से खून गिरना—पारफारस ।  
कनपटी का गाठ हो अग्नि हाना ( पैरटाइटिस ) पैरडोना या मरकूरियस-वायस ।

हाथ पैरों के पाँपड़े—छारोमीरमस ।

नाडी के दोष उपस्थित हो अथवा खीण हो आपतो-थामेनिक, कार्बोवर्नाटिलिस ।

अप्याचन ।— कार्बोवर्नाटिलिस । फूरिच-एमिड या मिडरा ।

आराम्य हान के समय भ्रूम न लगना—काकुलम,  
बहुत भ्रूम लगना—ग्रायना अर्पीण होना—नकमयोभिका  
यदि आराम हान में दर हानों सारानम्, पलम्पानिण

## प्रधान औरघों के लक्षण —

त्रायोनियां ६ १२ शक्ति—सामान्य कारण से उसे

जित दो जैर - रोगी सहज में हा बिडभाय  
अत्यन्त कटुदायक शिर दर्द, शिर घूमना मानों मस्तक  
गोत्राधार हाकर घूमता है। आल बन्द करने से तरह  
तरह क द्रव्य होयना पत्रि क समय बहना विशेष कर  
पहिले दिन के बान कज के विषय में बहना, कान में  
मों मों दन्द होना और बहतापन नाक से खून गिरना।  
विशेष कर प्रातःकाल के समय सोकर उठत समय  
मुह में खुश्की, होंठ फटे हुये, मुह का तेज कटवा स्याद,  
अत्यन्त प्यास, एक साथ बहुत जल पीना, जो मिचलाना  
और बहर आना, इसी कारण उठकर बैठ न सकना;  
खुरी नांसी, छाती और शिर में सुई घुमना, पूष, कठिन  
और तेज भाड़ी हिलने मुलने से पीठ और हाथ परों  
में दर्द होना, पेचैनी के साथ भौद, सोते समय गुनगुना  
दर का शब्द मानूम पड़ना और बघाने की तरह मुह  
बटाना, बहुत कमजोरी और दशावड ।

चायना ६ शक्ति—बेहरा रकरोन, बराबर हाथ  
पैर फैलाना और जमाइ बंद करने की इच्छा करना डिगर  
और तिनी का बटना मुह का कटवा अथवा लहू  
स्वाद खाली उकार आना, दूध पीने से न पचना पेट  
भुजना, दिना दर्द के अजीब की तरह मल निचटना  
सोते समय बहुत पसीना आना, विशेष कर जिस बरषट  
राना सोता हो बहुत कमजोरी हारोग्यावस्था बहुत दिन  
तक टहरनेवा ।

**कोकूत्स ६, शक्ति ।**—बात कहने से आसानीस  
 समझता हो, बिछौने से उठने समय शिर घूमना और  
 मिचलाना, इस लिये मजबूरी सोते रहना, आँखों के पल्ल  
 भारी मालूम होना, पानी बहने की तरह कानों में शब्द  
 सुनाई पड़ना, मूत्र न लगना, मूत्र का स्वाद तामे का सा गर्म  
 पीते में गले से उतरते समय गड़गड़ शब्द होना, पेट बहुत फूलना  
 और गड़गड़ करना, कर्षों के पट्टों की कमजोरी ।

**लेकेसिस ६, ३० शक्ति** —अत्यन्त मानसिक  
 शारीरिक थकावट, नींद आना परन्तु सो न सकना,  
 समय सब वस्तुओं को बदना, बहुत बकना, एक विषय  
 ऊपर दूसरा विषय, मुँह बैठजाना, नीचे का जायदा निकल  
 जाना, जीम खुली हुए लाज रंगत की वा काशी, फटाई  
 और उससे रक्त गिरना, जीम बाहर निकालते समय  
 कापना अत्यन्त बड़बुद्धार मज, आँतों से रक्त गिरना भय  
 कट, कम पहरा घाय ध्येय देखने से नील वा काठ  
 का मालूम होना ।

**लार्इकोपोडियम १२ शक्ति**—बेचैनी के साथ नींद  
 मुँह से सही हुए बड़बु आना, जीम के ऊपर कुम्भित  
 मीटो चीन आने की इच्छा होना, थोड़ा खाने से ही पा  
 खडा मरी हुए माजुम हाना और उसी कारण से प  
 भरजाना और मूत्रजाना, खाँसी, थोड़ा और नमकीन  
 निकलना एक घेर ठंडा और एक घेर गरम, आपसि  
 दुपड़ना रुक जाने से पहिछे सरणम्न मे (मुँही बात  
 ठंड माजुम होना पेदाय से बपडे में छाव और  
 का तरह दाग पड़जाना ।

**मरकूरियस द्वि शक्तिः**—शिर मासे मालूम पड़ना, नाँद

बहुत आना, धीरे २ बातें उचरे देना, कापना, कमजोरी  
और पकायद, जोम सूनी हुई, नरम, जीम के ऊपर दाँतों  
के दाग पड़ना, मुँह से सड़ी हुई बदबू आना शिर  
की जगह दर्द होना, लसदार या पानी सा, पित्त मिखा  
हुआ उदरमय, पेट सूना हुआ, कड़ा और दर्द होना, राग  
की गाँठों का सूजना और पकना, बार बार पेशाब करना,  
पेशाब को रस्तेरहनेसे नीचे सफेद सफेद उमड़ना, रात के समय  
पसीना आना, पसीना पीठ रंग का, सोते समय नाक से  
रून गिरना ॥

**नाइट्रिक-एसिड द्वि ३० शक्तिः**—चिन्ता और मृदु

मय, शरीर के सब भागों में बार बार दर्द होना, अचानक  
बढ़ हो उठना और अचानक बन्द होजाना, सड़िया, सूना  
और मिट्टी खाने की इच्छा करना, जीम के ऊपर सफेद  
मैदा, मुँह और गले के भीतर घाव, गले के भीतर क्षय  
इच्छा होजाना, पेट बहुत सूजाहुआ राखने से दर्द मालूम  
होना आँखें स रून गिरना, हरे रंग का चिटचिट्टा दुर्गन्ध  
पुच्छमय, रून मिठाहुआ कफ, घाव, दुबलापन बिहारहर हाथ  
और छातीपर, शिर के बाल उठजाना पाय धाने से जो  
हूकन होता है उसके बाद यह रून कायदा करनी है ।

**नवमवोमिका द्वि ३०, शक्तिः**—सोते समय घुरे २

हरद दाँवना, थोड़े से दिखने न सरदी खगना, मुँह और  
जोम का अग्रभाग सूखा हुआ मोशन के उपरान्त पेट  
हुआ हुआ चरबी मिठा हुआ मोशन खाने की इच्छा

करना, मूल लगना किंतु खाने की इच्छा न होना पक्षाघात से अनिवार्य और उदरामय, दुग्धलापन ।

**पलसेटिना दी शक्ति ।**—उत्तमवृत्ता अथवा एत

इच्छा, करना, ठण्ड लगना मयायन खन्न दीमना पुर  
दुर्गोच निकलना, व्यास न लगना किंतु जीम सु  
इमेशा युक्ते रहना सुद का कड़वा स्वाद, मोघन कर  
एक घट के बाद पाकषली में रुद मालुम होना रात्रि  
समय आपान के साथ पेट गहमडाता, रात्रि के स  
उदरामय अत्यंत कमजोरी ।

और औषधियों व प्रक्षण सांनिपातिक विकारद्वार में र  
थाहिंयें ।

**सहकारी उपाय ।**—सांनिपातिक विकारद्वार का

तरह आतिसारिक विकारद्वार में भा औषध स तद्वक्त एत  
का समय कम नहीं किया जासकता, इस लिये जल्दी आ  
भाराम करने का इच्छास अस्वा २ और बार बार औषधि  
देना युथा है । किंतु बहुत औषधि देने से रागी क्रमशः  
बुरा होजाता है और उपयुक्त औषधि तत्तवीन न मिलने  
से पीडा अत्यंत बढ़सकती है । आतिसारिक विकारद्वार  
की चिकित्सा में इसलिये धीरे और सादस के साथ शक्ति  
द्वि बहुत ध्यानपूर्वक रोगी की पराक्षा करनी उत्तम पर  
भादि सेवा पुर्नवा की धीरे ध्यान रक्खना और जिस समय  
जो उपसंग भापड़े उनका उसी समय उचित इलाज करना  
यही एक मात्र चिकित्सा है । अकस्मात बहुत पर कभी  
रुक्ने ही दिनतक रोगी का चित्त औषधि रक्खना जानकर  
६ ।

रोग को अच्छी तरह से दायीं-बायें और आन्तरिक विभाग : देना चाहिये, रोगी का दरार, घर छाया और पहने क कपड़े यदि साफ रखने चाहिये, रागा ॥ घर में कोई आदमी न रहे, आवाज न हो और बहुत आन्तरिकों की आवाज रखन बरा रोगी को दम देना चाहिये साथ बायींसे दूर बैठना चाहिये, शयनस्थ न होने कावे हमसिधे बार रोगी को करवट बदलवाना चाहिये प्रतिदिन नियम से परमामेटर लगाकर शरीर की गरमी जायगी चाहिये, और प्रति दिन की गरमी पर कायज पर लिखने रहना चाहिये । घाट आदि विभिन्न जगहों में अधिक बोझ लगाना है डॉ. की गरी बनाकर उसपर लिफ्ट के साथ आनेवाला मिलकर बखरेका चाहिये । शरीर के आन्तरिक गुरुत्व उबल जाने पर बड़ा कर्पोरिड एसिड का शोथन अवस्था केले गुरुता विनिमेष्ट लगाना चाहिये ।

पथ्या—रोगी को यदि कमजोर होने का भय हो तो हम अच्छी पुस्तकों के अनुसार अधिक पथ्य देनेके पर्याप्तता बड़ा है । रागी के पहिले सप्ताह में दूध अथवा मांसका शेरवा देना अच्छा नहीं ।

अमेरिका लोग अथवा सेही जिस प्रकार मनापसनाप मांस और दूध खाते हैं उनके हिसाब से दूध अथवा शीरवा इत्यादि पथ्य हास्यता है । किन्तु हमलोग अथवा अरब हैं हमारे बिये तो यह गुण्याह हो है । देश बाल या दार का अनुसार पथ्य नियम करना चाहिये, किसी पुस्तक विशेष अनुसार चयन कदाचित् उचित नहीं है ।

पहिले सप्ताह में साधारणतः वर्नसवृक्षाना अथवा

बारखी व सिंघास और कुछ देना अच्छा नहीं है। यदि मतिसार, आंसी होतो दूध थिड़थुछ न देना चाहिये। यदि जिगर में विशेष कोई दोष नहो और रोग बहुत समय तक टहरकर नाही सुख होजाय और मतिसार रहेतो तो समय कोरपा दिया जासकता है। यदि ज़रूरत नहो दूध देना उचित नहीं। सो लोग साधुगण भयवा बारखी नहीं खासकते उनके बिमे कीडमण्डल अच्छा लाभ है। यह मतिसार रहने पर भी दिया जासकता है। मगूर और मनार रोगकी सब हाजमो में अच्छे पथ्य हैं। मतिसार में किशमिश खिजाना उचित नहीं है। मतिसार रहने पर सिंघास की दलियाँ सब से ज्यादा फायदेय्य हैं। यह दलिया बारखी की तरह पानी में मिजाना होता है। अगर ज्यों ज्यों साइता जाय सो ही मैदाही रंटी का तीन दिन देने के बाद कुछ दिन तक एक समय खावज और राति का राटी देना उचित है। अगर भाराम हानक समय मोजन व निषम के सम्मन्ध में सावधान रहना आवश्यक है, क्योंकि अविज वा अनिष दिन आहार से दुबारा उबर हासना है।

**सयिराम उबर ।**

**इटरमोटेंट फीवर ।**

सयिराम उबर का बहुत स नाम है। सविच्छर मर

० नाम देना में मन्त्री कीज हाज कर मन्त्री रिह इसका ठान कर निजगी मयना मरु का रम मयक निज का नाम कादय।

१ मन्त्री मेवार कर्मकी तरह ही सिंघास के मन्त्री का दलिया मेवार कर्म का १५।

काला नगर, पारीया नगर, मैसूरिया नगर, इत्यादि यह बहुत से नामों से पुकारा जाता है । निराम में हमको विषमज्ञान रहने है । सविद्यम नगर ही हमारे देख में अधिक प्रबल है । तदा देवाह में देमा बार्ह नाम नहीं उहा मनेरिया के कारण यह नगर फैलता हुआ नहीं होकर पड़ता । बर्द्धमान, रंगपुर, अयोधर, मरिया आदि देवाल के मण्डों में इस नगर के कारण का उपद्रव होने है तो किसी से पुना नहीं है । हमारे प्रांत में तदा भारतवर्ष के और और जानों में यह नगर फैलता तो है परन्तु इसका जैसा अपानक रूप बङ्गाल में देखने में आता है वैसा और नहीं ।

यह नगर मनेरिया विष द्वारा उत्पन्न होता है इस की दो अवस्थाएँ होती हैं । घटना और बढ़ता तथा उबरमाना और उतर जाना । बढ़ने के समय, सारी लग्ना, बसाप और पछाया यह तीन अवस्थाएँ लगातार होती हैं और घटने के समय योही अवस्था अधिक दूर तक नगर की दशावट अवस्था बिम्बरता उपस्थित होती है । उबर की दशावट अवस्था बिम्बरता के रथादित्यके अनुसार सविद्यमनगरको प्रतिदिन जानेवाला एकतरा वाली २४घण्ट के अंतरसे जाने बाबा, तिजारी अर्थात् ४८ घण्टेसे जाने वाला और चौथेवा अर्थात् ७२घण्टे पर जाने वाला इतनी क्रियाओंमें विभक्त करसकते हैं । दैनिक नगर प्रति दिन, एकतरा एक दिन छोड़कर तिजारी दोहरा छोड़कर और चौथेवा तीन दिन छोड़कर आता है । इसके सिवाय दिनमें दोबार जाने वाला नगर अर्थात् द्वैकाटिक आदि नगर के अदृश्य पड़ने हैं ।

सविद्यम नगर मैसूरिया विषसे उत्पन्न होता है । मैसूरिया क्या चीज है यह मात्र तक विध्य नहीं हुआ । मात्र कह



ने निदान तन्त्र ज्ञाने वाले पण्डितब्रह्मों की बहुत जग  
और गहरी साज से यह एक प्रकार बिरहुभा है कि  
पनत्र पुर (परावे शरीर में पुन होने वाला) बहुत बड़े छान अंग  
नुसार यह उतर उग्रज हाता है। यह लाभ कहते हैं कि  
जीवानुभवा नाम "मैत्रिया यमीवम्"।

**लक्षण ।—**इस ज्वर के सविस्तर लक्षण हैं

प्रकार है (१) जलपा-पावना (२) बदन का समय बगल  
 वरु के आकृतता समय की तीन हुरी हुरी समय  
 (३) वरु का विराम बिच्छु समय बिच्छुपावना  
 (४) उरु के प्रकार, (५) वरुगी कल । नीचे पा  
 वरुका बगल दिया जाता है ।

पञ्चिद्री अथायं श्रमकाशावस्थः ।—मैत्रेयः

[illegible]

है। इसको प्रायः उग्र माना करते हैं।

**दूसरी, ज्वरकी आक्रमणावस्था ।**—उग्र माने पर स्पष्ट तीन चुरी चुरी अवस्थायें देखी जाती हैं। यथा ठण्डागना, शरीर की गरमा बढ़ना और पसाने जाना। [क] पीठ में ठाने। मध्याह्नक पैरों में और अन्त में सब शरीर में भरही लगती है और कुछ शरीर कापने लगता है। चमड़ा एक शुष्क और चुकड़ने लगता है तथा शरीरमें रोमाञ्च गड़े हो जाते हैं। चेहरा एकदम, दोट आर अगुलियें नीचे रगड़े होजाते हैं, शरीर कमजोर पड़ने लगती है शान बड़कहान लगने है हाथ पैर आदि सब शरीर कापने लगता है। और मानो सब शरीर में अघामक गड़ बड़ कैल जाती है। मूद से आघात नहीं निहलती जानो गले पर शब्द बज जाता है श्वास जल्दी रहलने लगता है श्वास लेने में लगी पर बोध मानुस होता है नाड़ी धुट तेज और बड़िन, मनविद्य विचार न रहने पर भी कभी कभी बकना जाना मध्याह्नक चितुना इत्यादि स्पष्ट रहन है। शरीर पर हाथ रखने से शरीर की स्वाभाविक गरमा की अपेक्षा भी कम मानुस होती है किन्तु मूद मध्याह्नक में तापमान बज मानने से १०४ या १०५ डिग्री तक हाजाना है। मूद गुला हुआ, बहुत ध्यान की सिधदाना वा उलगी आदि स्पष्ट बनेलग्न रहने हैं। यह माघ पण्ड म मकर तीज पण्ड गज रहती है। निरधीर धीर मध्याह्नक माघ पण्ड लगना बन्द होजाना है भारमर्मा मालुन होना है, (न) उभापदमा अधान् पुनारवा पूरा रहत । चेहरा एकदम और चुकड़ा हुआ बहो रहना किन्तु परिध से दिपरीज मालु गज पूष और पट्टा हुआ शरीर की गरमा स्पष्ट बज हु और १०५ डिग्री का दमा बमा

इस से भी ज्यादा, नाड़ी पूर्ण, कठिन और तेज श्वास उठती जाना जाना - किन्तु इस समय श्वास में किसी तरह का कष्ट न रहना, छिद बड़े अधिक, और रोगी का मलान बेबेन रहना, मुख गरम और शुष्क हुआ, मलमल व्यास और बेशाब कम और जाल रंगत का। यह मरणा श्वास तीन बार चन्दे तक रहती है। (ग) दूसरी मर्यादा उठा पावना के अने जान पर समोषणा मर्यादा पक्षीने अने छमना शुरू होजाता है। पक्षीन पहिले केहर पर और पीछे हाथ पैरो में जान हैं। सब शरीर ठंडा होने लगता है और पक्षीनो से तर होजाता है। नाड़ी इस समय छोटे और चलन लगती है श्वास किया आमादिह होजाती है। शिखा दू और व्यास भी कम हाफर ऊपर का नर बहुत कुट घट जाना है। इस समय रागी का कुट और माली है आर कमछा उबर उतर कर बिगल मरणा विराम मरणा इराकन होना है। माया यह मरणा तीन बार चन्दे तक रहती है।

सविनाम भगवतः कामाक्षि विष्णु रक्षा प्रदान दे।  
कभी कभी रक्षा विष्णु से नष्ट नही मायुम हानी दे  
कई भक्त कभी रक्षी दे और कभी नहीं रक्षी भक्त  
कम भक्त कभी रक्षी दे।

अधिकांश जल का यह संचयन ही इस संचयनार्थ के  
 एक संपूर्ण व्यवस्थापन प्रणालि है। यह है कि जिस  
 समय भी नदी का जल संचयन है इस लिये इसे संचयन  
 करके इसे संचयन ही संचयन नहीं। इसका कुछ विचार नहीं  
 है। नदी का जल ही इस संचयन का संचयन नहीं। संचयन  
 ही नहीं। संचयन ही संचयन ही संचयन ही संचयन ही संचयन ही

को बुझाए जा आना भी मातुम नही होता । ऐसे मोके पर केवल शरीर का गन्मी और पसीनों से ज्वर मातुम होता है ।

**तीसरी, ज्वर की निरामात्रस्या ।**—रोगी पहिली मज्जा में इस दिनाम काल में रोगी को बहुत बेन मातुम होता है किन्तु बादर ज्वर का मातुम होने से रोगी दुबला होता आता है शरीर में रक्त नहीं रहता और धीरे-धीरे मेलरिया बिष के सम्पूर्ण लक्षण दिखलाई पड़ते हैं ।

**चतुर्थ, ज्वर के प्रकार ।**—येन माने वाले एकतरा तिवाटी, बीचैया आदि ज्वरों की बात पहिले लिख चुके हैं । यह तीन प्रकार के ज्वर हमारे देश में अधिक होते हैं । इनमें पाँचवा बुझार कहते हैं । पाँचवा बुझार बहुत बड़ा सापक होता है, और मासानी से मासाम नहीं होता । इस साधारण पाँचवा ज्वरों के बिनाय और भी कई तरह के मिश्र हुए पाँचवा ज्वर हैं । वैकालिक ज्वर दिन में दोबार आता है । रात-काल बड़े-बड़े में आता है और सन्ध्या समय कुछ हल्का । इस प्रकार का ज्वर माना बहुत मनुम लक्षण है । मेलरिया बिष से घातु सम्पूर्ण दिपाक और क्रान्ति से देह अत्रित नहीं होता तबतक यह मयानक ज्वर नहीं आता ।

**पचम, ज्वर के परवर्नी फल और उपसर्ग ।**—

पुराने आर अधिक समय तक रहने वाले रात में रक्त की कमी मयान् रोगी का बेहरा जोड़ा दाखना, पट बटना घडन, त्रिगर और त्रिजो का मयानक रूप से बटना, रक्त

काली पुनर्जायत, भूय न जगता, भज्जीर्णं जयता काश्चन  
 दयादि दिन्याः वेने ह्ये। मीलरिया विन क साध कुदनाम  
 ॥११॥ कश्च ओह भी पुनर्जायत करता है। कुदनाम और  
 ने दनिया दिव न रागी का पुन जीण होजागाये। मगूडेही शिक  
 खना बानों क मगूद और साक म लून गिरना मूद में पुनर्जा  
 म ना मूद क भीतर पाव हाजाता और उनमें पुनर्जायता,  
 इहनाम। भाव दयाभावय इत्यादि मर्जिया रागीक भक्ति  
 भा। क ज्ञान है।

[illegible]

[illegible]

८८७ । १६ । २५ । ३४ । ४३ । ५२ । ६१ । ७० । ८९ । ९८ ।

॥ अथ भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या ॥  
 ॥ अथ भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या भक्त्या ॥

ही से सही सी  
लगना ।

पसीना—बहुत व्यास, शरीर  
हलक से बहुत पसीना,  
रात्रि के समय बहुत  
पसीना ।

जिगर—व्यास नरहना, फट  
पसीन साजाना, जिगर  
का काम सूना हुआ  
भेज देर होना, पीली  
रगत ।

अब का मय मयकारे डीक ।  
बद व बन्द बन्द उपलब्ध  
होना है ।

यदि शरीर मय मयों का  
हलक से व्यास न हो तो  
कामना सही होना के दिवः ।  
अब बहुत पसीन से न हो तो  
कामना सही न हो तो न  
हो ।

सूना हुआ, बन्द पादों  
मद वण्ड को दबने से  
बंद मातृम होना ।

पसीना—बहुत व्यास, कु  
चाप पड़ रहने के  
बहुत पसीने का  
शुद्ध क बन्द बन्द  
। पसीने का, काम  
में दे ।

जिगर—बहुत व्यास, कु  
बहुत छोटा देर व  
निये उतरना, अ  
तक दुपारा सारी  
न होना मातृम न  
तक पसीन का  
मय मय वन्द बन्द न  
बंद होना मय  
बंद जानी और बन्द  
मय मातृम पडना ।

नये कपड़े ठण्ड बर्तन  
मय मय रहनी हो होमा मा  
होना है कि सही का काम  
अनिवार्य तब न हो व  
विशुद्ध न हो ।

यदि शरीर और मयों की  
हलक से व्यास न हो तो  
कामना सही न होमा मा  
की हलक से बन्द पसीन वन्द  
मातृम वन्द बन्द वन्द  
होना है मातृम वन्द बन्द ।

हमारे देश में बुनेन के अपर्यवहार से जितना मुक़साम हुआ है सोयह स्वयं संबिरमि ऊपर से उतना भर्ही हुआ । यदि कोई सामाजिक रोगी का शुभ चिंतक हो तो उसको चाहिये कि छोटे समय के लिये सुखार की दावा न दूये अपर्यासरता प्रतीक्षा करनेके लिये कुरानाइन कदापि न देये । -

मात्रा । - सुखार उतर जाने की हालत में हो हो घटे के अंतर से एक एक घेन देना ।

असैनिक १२, २०० शक्ति । - विजारी और घोषदा के उतर में, कुरानाइन के अपर्यवहार के उपरांत, तिली और भिगर बहुत बढ जाने पर, चहरा पीले रंग को सृजन, बसा, मुह में हाडे रक्तहीनता, मूत्र कम लगना सरदी लगन से पहिचे उबासा माना, तथा शरीर बैठना सरदी अच्छी तरह न लगना, मीतर सरदी विन्तु बाहर गरमी लगना, सरदी के समय प्यास न लगना, पानी पीने से सरदी का बढना और उठडी होना, शाना बसा का जरसर न रहना, उचापायसा का अधिक समय तक प्रबल रहना, अपर्या सरदी और उचाप दातो का अधिक रहना, विन्तु पसीनों का बहुत कम आना अपर्या बिटहुन न आना, गरमा की हालत में बहुत बेचैनी रहना पोडा २ विन्तु बाँर २ पाना पीन की इच्छा करने पर उतर के उपरान्त अत्यन्त बुखेता ।

पूराने मटेरिया जरने अब धातु मटेरिया बिगसे अहराली हो जाता है और उसके माय साय निहा और जिगर बढजागा है तो असैनिक कायन करना है । उचाप जितना अधिक हो और विन्तु देर अधिक उतर, प्यास जिनको अमम और शरार



विघलाती है । तिलो-भोर-जिगर-बड़ा हुमा हो तो रक्त का  
घाँहये ।

इपीकुल्याना ६, ३०, शक्ति ।—आहार के अति  
मित होना के कारण बार बार उबर आना, उबर आना  
पहिले उबोसी आना अगलाई लेना और बार बार  
थूकना, वस्तु जो मिचलाना और उलटी करना, उबो  
की अवस्था में जा मिचलाना, उलटी करना और एक  
सासी सही घोंटी दर तक रहने वाली उबर बहुत  
तक रहना, हाथ पैर ठंडे रहना, यदि पहिले कुल्लु  
ट्रिपा गया हो तो यह, वस्तु ठीक है । आहार के अनियमित  
होने के कारण यदि बार बार उबर आवे तो एका एक  
ही वृत्ति है । यह इस का विशेष लक्षण है ।

नेट्रम, म्यूरियेटिकम १२, ३०, शक्ति ।—

यदि उबर की कुछ पुरानी अवस्था न होतो यह औषधि  
मात्र व्यवहार नहीं की जाती । मान काहे तथा  
३० । १२ घंटे उबर कम देकर आवे बहुत देर तक और  
बहुत आरका नरकी लगे उसी समय हाट और नाभ  
सब नाभ रगत के होजायें, व्यास बहुत भयना, सिर  
दह, सिर में माना इपोट स काइ टाकता है । बहुत पसना  
आना पसोना मान मे सियाव सिर दह के और सब  
जिकावनों का कम हाजाना । हाटों पर पापदी अमता  
पुराना हाटन में जब रानी रक्तदान होजाता है, <sup>हृ</sup>  
पीले रगका दीख पडता है, तिब्बो और जिगर बहुत  
बढ़ जाते हैं, उस समय यह औषध कायदा करता  
है ।

**पलसेट्रिखा: ६ शक्ति १—**साथरे पदर, मोर, शास मोर  
 ज्वर आता हो, आहार के मोनियमित होने के कारण फिर  
 बुखार का आजाता, ज्वर की साथ बिछी भवका में  
 प्यास न। रदना, उष्ण के सम्य सामान्य प्यास, ज्वर  
 के साथ अल्प अल्प बरसने रहे, दो दिने का बुखार  
 कमी। पदना- बड़े, चौथेवा ज्वर हाथ पैरों में  
 ज्वर, मुद का खाद ज्वर, बाहरी गली बरसने  
 होना, शरीर उष्णता की दृष्टि करना ।

### पूपेटोरिबम-यफो-लियेटम ६ शक्ति-१—

रोठ और हाथ पैरों की शक्ति में रहे होना, सही लगने  
 का हाथ में मध्य प्यास, उष्ण की भवका में मध्य  
 प्यास और बड़े उष्ण होना, मुद का खाद ज्वर  
 होना, शरीर ज्वर में पदर न बरसने वाली प्यास दिनु  
 पानी पीने में उा मियता और उष्ण होना तथा  
 शरीर ज्वर शरीर का भरेदा बर बरी अधिक ज्वर, शरीर  
 में भवका । न आता बरसना बरसना होना । रोठे ज्वर ।  
 बुखार मध्य शरीर नहीं। उष्ण का खाद ज्वर बरसने का  
 रोठे का शरीर पीछा रंग होना । शरीर और ज्वर  
 दिनु होना उष्ण के ज्वर में बरसना उष्ण ज्वर  
 है । शरीर का उष्ण का मध्य बरसना होना बरसना ।  
 मध्य मध्य ज्वर ज्वर के ज्वर की शरीर शरीर  
 है ।

**सीडून १ शक्ति-१—**शरीर का मध्य का बरसना  
 बरसना है । शरीर ज्वर और शरीर का शरीर  
 बरसना है । शरीर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर

दिन भी घड़ी रखकर देखने से मालूम हो कि ठीक समय आता है । शाम का, ६ बजया ६१ बजे उबर म रात को, ३ बजे बजया दिन, को ३ बजे सही लगकर आना, शीत की प्रधानता, शीत के समय व्यास न लग उत्ताप के समय गरम जल पीने की इच्छा करना, इतर जाने पर कमजोरी और तबियत खराब म होना ।

सीझन की दुबलता माय चापरा की दुबलता समान होती है । सीझन की चापराविक, दुबलता होती चापरा की तरह बहुत पसीने आने के कारण नहीं । मध्या रात मचल रहना इसका प्रधान लक्षण है । व साथ उत्ताप, उत्ताप के साथ कस और शीत पसने के साथ शीत और उत्ताप मिला हुआ है ।

मनक समय मलरिया उबर बिचार की मयका प्राप्त हुआ जाता है । उस समय उस की धिकरसा म उबर व समान करनी पड़ता है । उस समय रस म प्राधान्य मालेनिक, बलवाना, भादि मीनधे लक्षण अनुमार दना चाहिये । इनही रूप मयका और धिप के सम्बन्ध में साधिवार्तिक और मातिसारिक बिचार का बिचिन्ना देखो ।

मविमम उबर व मम में तरह तरह व उपसग म उपासन दान है । यह उपसग कमा कमी बदे मय माचार धारण करन है, यहाँ नक कि रोमी के प्राणों होमाना है । चौथिया उबर मय का म है । मीनधे उबर भी मयका नहा दाता, म

**औषधों का क्रम ।—**सधिराम ज्वर में कितना ऊँचा क्रम व्यवहार किया जावेगा उतना ही अच्छा है । ३०-२०० आदि क्रम नितने फेहदायक होते हैं नीचे के क्रम उतने नहीं होते । कौनसा क्रम किस मौके पर कितना फायदा करता है, यह अपने तज्जुबे से निश्चय कर लेना चाहिये ।

**पदप ।—**पदपका नियम रखना भयानक आपदपक है ।

प्रायः आहार के अनियम होने के कारण को पाँच बार-बार लौट लौट कर आ जाता है । सब प्रकार के कटि नाई से बचनेवाले आहार न खाने चाहिये । ज्वर आने से पहिले, अथवा ज्वर के समय कुछ भी न खाना चाहिये ।

जबे बुझार में छाशूराभा, घाई, गादि दलका पच्य अच्छा है । पुराने ज्वर में अरुणा दैसरु वृध, दाल का पानी दलिया या पुराने चावल दिये जा सकें हैं । पुराने रोगी के लिये विशेष कर यदि अग्रामय आदि कोर उपसर्ग न हो तो रात के समय चावल न देकर राटी ही खेना चाहिये । अग्रामय और पूर्णिमा के दिन प्रायः ज्वर लौट कर आ जाता है । इस लिये आवश्यकतानुसार इन दिनों में उपवास कराना अथवा सिर्फ १ समय राटी खाना और यदि बिना बुल न हो सके तो दिन में चावल और रात में रोगा खाना उचित है ।

**स्वल्प-धिराम ज्वर ।**

**(सेमिटेन्ट फीवर)**

जो ज्वर पूर्ण नष्ट से नही उतरता वैयासिकों किंवा  
[१६]

औषधि प्रयोग करने का समय ।—

‘बुझार उतरने’ पर दवा देना उचित है । दवा  
‘बुझार उतरने’ न पावे और पसोने आते हों ऐसे  
‘समयमें’ ही दवा का ठीक समय होता है । ठीक समय  
पर एक मात्रा ही ठीक निर्दिष्ट औषधि बिलकुल मात्रा  
कर सकती है मगधा बुझारों और के मार्गमर्ग का बड़ा  
कुछ कम कर सकती है । ज्वर क पूरे भराव के समय में  
कोई दवा कुछ फायदा नहीं करती । दवा देने के बाद  
स्पष्ट मगधा कम से यदि उतरती होखण्डे तो और का  
दूसरी दवा देना मगधा उसी दवा की दूसरा मात्रा देना  
सुख की बात है । पर्याय कम से औषधों का व्यवहार किया  
कम होगा उतना ही मगधा है ।

सदृश औषधों ।—रोग के लक्षणों से मिलती हैं

यदि ठीक दवा रोगी को मिलजावेगी तो निश्चय और  
जल्दी आराम होगा । यदि औषध रोग के सदृश नहीं हो तो  
उस का कम चाहे जितना ऊँचा हो मगधा मोटा न  
उसकी मात्रा चाहे जितनी अधिक हो परिमाण में औषधि का  
जितनी अधिक हो, या चाहे जितना जल्दी जल्दी दीजाय उसमें  
कुछ फायदा नहीं होगा । यह संप्रदाय चाहे रेखेना चाहे कि  
दवा के गुण से रोग अच्छा होता है उनके परिमाण से  
नहीं । सविताम धर की चिकित्सा में निम्न लिखित औषध  
और मगधा देने योग्य हैं (१) ज्वर के विराम उतरने का  
लक्षण (२) शीत, उत्पीड़, और घमसिमा के सब लक्षण  
(३) यदि मगधा तीनों में से कौनसा नहीं रहती मगधा  
कौनसा अधिक रहती है, (४) रोगी के अस्वस्थि  
अनिश्चित और विशेष विशेष लक्षण ।

**औषधों का क्रम ।—**सधिराम ज्वर में कितना ऊँचा

क्रम स्पन्दहार कियाजायेगा उतना ही अच्छा है । २० २००  
मादि कम जिनके फलदायक होते हैं नाचे क्रम उतने  
महो होते । कौनसा क्रम किस मौक पर कितना  
फायदा करता है - यह अपने चक्षुरसे खे निश्चय करलना  
चाहिये ।

**पदप ।—**उप्युक्त नियम रखना मन्दात आवश्यक है ।

प्रायः आहार के अनियम होने के कारण ही धार  
बार ज्वर लौट लौट पर आजाता है । सब प्रकार के कटि  
मार्द से बचनेवाले आहार न खाने चाहिये । ज्वर जाने  
से पटिले अथवा ज्वर के समय कुछ भी न खाना  
चाहिये ।

मरे सुसार में छात्रुदाना, माल्टी मादि हलका पच्य  
मध्य है । पुराने ज्वर में मयस्या दखकर दूध दान का  
पानी दलिया या पुराने चावल दिय जासकत है । पुराने  
रोगी के लिये विशेष कर यदि उदरामय मादि रोग उप  
सर्ग न हो तो रात के समय चादल मदेकर रात में दाना  
चाहिये । अनावस्य और पूर्विका के दिन प्रायः ज्वर लौट कर  
आजाता है । इस लिये आवश्यकतानुसार इन दिनों में उपवास  
कराना अथवा सिर्फ समय रोटा खाना और यदि बिना  
हुन न होसके सो दिन में चावल और रात में राटी खाना  
उचित है ।

**म्वल्य-विराम ज्वर ।**

**(सेमिटेंट फीवर)**

जो ज्वर पुरो ज्वर से नहीं उतरना होता किम किमा



समय शरीर की गरमी १०५ या १०६ डिग्री तक हो जाती है । मुँह सूखा हुआ, माँस लाल रंगकी, देहकी छात्र सूखी हुई और बहुत गरम, मसूत सिर दद, पीठ और हाथ पैरों में दर्द, गहरा प्यास, तेज नाड़ी (प्रति मिनट ११५ से १२० बार मध्यम इस से भी अधिक ) अत्यन्त प्यास, जीम पीठ रङ्ग के लेप से ढकी हुई, उल्टी में विष निकलना, येचैनी और घबराहट । किसी किसी को उल्टीयाँ अत्यन्त बढ़कर होती हैं ।

जिनने ही घटों के बाद यह सब कष्टदायक प्रयत्न लक्षण धीरे धीरे कम होने लगते ह । ताप ५-३ मध्यम इस से भी अधिक डिग्री कम होजाता है । कमी २ थोड़ा २ पसीना आता है । जी मिचलाना, उल्टी, पेट फूलना आदि लक्षण प्रायः सभ्यगते रहते हैं, और सिरका दद भी बहुत कुछ कम होजाता है । यही ज्वर के उतरने का समय होता है और इसी समय दवा देनी चाहिये । यदि रोग कठिन हो तो यह विराम की अवस्था होन नहीं पाता या इतनी कम हाती है कि मातुम नहीं पड़ती तथा होते-होते फिर ज्वर बढ़ने लगता है । साधारणतः विराम काल २ घंटे से लेकर १२ घंटे तक रहता है । अधिकांश यह विरामावस्था सुषह के समय होती है,—रातके दोप भाग से शुरू होती है और १० या ११ घंटे तक रहती है, तथा उपहर से फिर बुखार बढ़ने लगता है । स्वल्पविराम-ज्वर में प्रायः योगों को कष्ट रहता है किन्तु यदि रोग के दुरे लक्षण हों तो उदरामय उपलब्ध हाता है तथा पतला बहुत बरबूदार और कमी कमी नून मिला हुआ दस्त हाता है । यही साध्विपातिष्ठ विकार ज्वर के लक्षण ।



स्वल्प-विराम ज्वर १ मे १४ दिन तक रहता है । एक ता रागा को रात दिन ज्वर चढ़ा रहता है और उस व कारण कष्ट भोग करता है, निसपर फिर प्रति दिन दूसरे ज्वर का आना, रोगी बमश दुःख हाव लगाता है, यदा तक कि विकार प्रस हो जाता है । इस समय रोगी का देखने से सांनिपातिक विकार ज्वर व रोगी का घम होता है, किन्तु यथाथ में वह सांनिपातिक विकारज्वर नहीं होता । इस समय सांनिपातिक भार आलसार्थिक विकारज्वर के अनुसार चिकित्सा करना पड़ता है । इस समय उदरामय, प्रलाप बहना, आसी आम सूखीहुँद, गंडा बहुत क्षुद्र और कमबोर तथा रागा पूरतरह विकार को प्राप्त होनाता ह ।

यदा पासना है कि यह ज्वर सधिराम और सांनिपातिक ज्वर व पाच का है क्योंकि ज्वर का प्रकाश प्रयत्न हान पर यह सांनिपातिक की तरह, तथा कम हान पर साधिराम-ज्वर का तरह रहता है । सधिराम ज्वर का प्रयत्न इस ज्वर का आक्रमण नाशानिक होता है । डाक्टर मैकलान न कहा है कि सधिराम ज्वर के अनेक इस ज्वर व द्वारा मृग्यु सरवा १० गुनी अधिक हाना है ।

**चिकित्सा १-२ ।** पाचोद्य के लक्ष्णों के प्रयत्न होने पर—इलाहा नवमय मिका पटमाटिना, पट्टीमानियन मृग्यु नियम ।

निच क लक्ष्ण प्रयत्न हान पर—एक बार, सांनिपातिक प्रयत्न क लक्ष्ण नवमय मिका पाचोद्य, पटमाटिना

३। ज्वर के लक्षण प्रबल होने पर—मायूरीयस, पट्टसेडिला, रसटक्स इपीका, नक्सबोमिका ।

४। दिक्कर के लक्षण प्रबल होने पर—बेलेडोना, मायोनिषा, रसटक्स, आसैनिक, पैटेशिया, हायोसायमस, इपीका ।

५। कृमि (काट) के लक्षण—बेलेडोना, बेलेडोना, मयूरि-यस, सीना, सलफर, नक्सबोमिका ।

६। ज्वर साप्रिपातिक आकार का होने पर—बेलेडोना, मायोनिषा, रसटक्स, आसैनिक, काब यज्ञ, सायना, पैटेशिया, हायोसायमस ।

७। अजीर्ण के कारण—इपीका, नक्सबोमिका, पट्टसेडिला, पेडिमनी-टाट, पेडिमनी रूड ।

८। सही लगने से—बेलेडोना, नक्सबोमिका, मायोनिषा, इपीका पट्टसेडिला, मयूरिधस ।

**जेल्सोमियम १xशक्ति ।**—यह प्रथम सप्ताह में विशेष फायदा करता है । इस को देने से ज्वर पाचों दिन के भीतर ही उखल जाता है । यहाँ की स्वल्प-शिराम ज्वर होने से यह एक बहुत उम्दा दवा है । १५हर रात से ज्वर का बढ़ना, सुषुप्त के समय ज्वर का उतरना, रघर के साथ गर्मान जाना, ज्वर आरम्भ होने के साथ यहाँ की शक्ति कम होने के कारण रोगी में उठने की शक्ति न रहना ।

**मायोनिषा ६, १२ ।**—यह भी जेल्सोमियम की तरह ज्वर के पहिले सप्ताह में बहुत फायदा करता है । शाम को ज्वर बढ़ना ज्वर का उतार उतारा स्पष्ट मायूम न हाना सिर में अत्यन्त दबाव या पसा मायूम हाना कि पटा

स्वल्प-सिराम ज्वर १ से १४ दिन तक रहता है । एक तो रागी को रात दिन-ज्वर चढ़ा रहना है या उस व कारण कुछ भोग करता है, जिसपर फ़र प्रति दिन दूसरे ज्वर का आना, रागी हमेशा युवल होने लगता है, यदा तक कि बिकार प्रसन्न हो जाता है । इस समय रागी का देखने से सांघ्रिपातिक बिकार ज्वर व रोगा का भ्रम होता है, किन्तु यथाय में वह सांघ्रिपातिक बिकारज्वर नहीं होता । इस समय सांघ्रिपातिक और नागमसारक बिकारज्वर व अनुसार चिकित्सा करना पड़ता है । इस समय उद्दामय, प्रलाप बहना, नासा जाम सूखी हुई, नाडा बहुत भुद और कमजोर तथा रागी पूरनरुह बिकार को मान हा जाता है ।

बड़ा ज्ञानना है कि यह ज्वर सिराम और सांघ्रिपातिक ज्वर के बीच का है क्योंकि ज्वर का प्रकाश प्रवृत्त हान पर वह सांघ्रिपातिक का तरह तथा कम हान पर सावनाम-ज्वर का तरह रहता है । सिराम ज्वर का प्रवृत्त इस ज्वर का आक्रमण सांघ्रिपातिक होता है । डाक्टर मैकलान न कहता है कि सिराम ज्वर का मास ११ ज्वर व बड़ा शृंगु सख्या १० गुनी अधिक होता है ।

**चिकित्सा ।—१।** पाचनार्थक व श्लेष्मों व प्रवृत्त होने पर—१। नाडा नकमयामका वरमाटिना वरगीमनिवम गुरुत्व ।

२ निम्न व श्लेष्म प्रवृत्त हान पर—एक नाईट प्रायोनिषा भवतः व निम्न नकमयामिका व डाक्टरज्वर वरमाटिना

प्यास और रंग में उत्तन, जो निश्चयना का उत्तरो होना,  
पाककरी में कटन मातुन पड़ना, पाककरी विपर और  
निर्वा के कर्मा में बोध मातुन पड़ना तथा रेंठन की  
तरह दर, नारी के स्नान में रेंठा, कर्म और बार बार  
हल जाने की हाजत होना, परन्तु दम नहोना मधका  
पोहा पोहा पतला भाव मिठा हुआ हल होना, चिनकना, सरही  
और बरसी निचो हुई मातुन होना। अधिक का मुद्राक भाजन  
करने से, दायब रंगे से, रात्रि जागने से, की लङ्ग तथा  
मावसिक धम के कारण उठ होने से। यह दवा बहुत  
फायदा करती है।

**पलसाटिका ६ शक्ति ।—**जीन सरेह रम की  
होल्पापुष्ट लेप से डकी हुई मुद्र का साद खुवा का स्राव  
मातुन होना, भूख न लगना, मुद्र में पानी मरना, पाक  
हर्षा में कर्म मातुन होना, और सात बर दम  
मधका रात्रिमें उदरामय, दाम का सुधार का बढना।

**बेलेहोना ।—**मलमल गिर दर दसा मातुन  
होकि कपल बिहटा पड़ता है, मुद्र सुखा हुआ।  
विप्लव में बर दिव में मातुन और रात में नौर न  
मरना कमहा सुखा हुआ रम, प्यास, शीघ्र दाब में  
मरता लगना, गिर बहुत रम और सुव की मधि  
कर।

**पटीमोनियम-कूडम १२, ३० शक्ति ।—**

मध्यम क कारण उठ, रोगी का दमसेटला से फायदा  
न होने पर, उठन हुए की तरह सरेह और माटे बर से  
दर। हु। हुनेटा डकार मरना और उठ में कर्म हुने

Digitized by Google

जाता है। सोने से कम होता। यदि प्रलाप हो तो काज और रोजगार के विषय में बकना, पिछा होना, पगडाला खती क दोनों ओर घुई सुमान का दर्द।

### यूपेटोरियम-पर्फॉलियेटम ६ शक्ति।—

यह निम्न कलक्षण मिले हुये खरप-विराम उबर करती है। हड्डियों में बहुत भड़कन, सब शरीर में दर्द, और जो मिचलाकर पीछे विलक्षण उबर होना, पीठिया का तरह पीछा, जीभ मोटी पीछा रंग की लटकी हुई त्रिगुण आन में पूनता और दर्द, बहुत मारविन। सुमान लला दशन।

### इयोडा ६, ३० शक्ति।—मोत्रन करने का।

मज्जा विच्छेदन की मधवा तल की चीज, जी मिचला और डरती आना मुँह में पुगम्प, मुँह का तथा सब चीजों का बड़का आद, पाकदण्डी मरी और उसमें म मृम हाना।

### मार्गुरियम ६ शक्ति।—सम्प्रा क समय

उपर बांधीगन का उम उबर का बहुत बड़ना, बांधे समझा कर रन का मुँह का आद और डरती और डर कर डरती लटकी चीज आन की बहुत दण्डा हाना निम्न से सम्प्रा से मगपुम पाकदण्डी और त्रिगुण दण्डन से दर्द मृम हाना।

### नैफथोमिका ६, ३० शक्ति।—रस मृदा

सबसे मधवा चीज रस बड़ना दर्द हुआ

प्यास और लगे में जलन, जी मिचलाना का उठता होना,  
पाचकशक्ति में कटन मातुम पचना पाचकशक्ति ज्वार और  
मिष्टान्न के स्थानों में बोझ मातुम पचना तथा पेटन का  
तरह हर, नमी के स्थान में पेटा, कष्ट और बार बार  
रुज जाने की हाजत होना, परन्तु रुज नहोना अथवा  
पेटा पाटा पतन आम मिला हुआ रुज होना, बिमबना सरदी  
और गरमी दिखी हुई मातुम होना। अधिक का गुदपाक मात्रा  
करने से, छराब पीने से रात्रि जागन से, धा मूत्र तथा  
मानसिक भय के कारण उबर होने का यह रसा बहुत  
पायदा करती है।

पल्लवादिषा ६ शक्तिः ।—ओम सचेद रग वी  
 ररभासुल लेप ॥ हवी ह्रीं कुंर वा सार वृषवा वा वराव  
 मादुम होना भूष न वारण कुंर में पार। मया पार  
 वरतीं में वाक मादुम हवा, कीर वाग वर वार  
 वरवा वारिमें वरवाव, वार वा वरवा वर वरवा ।

बैलेहोना ।—कल्ल टिर हद दसा मनुम  
होदि कल्ल विहला पडला है सुद मुखा हुमा ।  
मिण्ड मे कद दिव मे मण्डल और दान मे बंद  
कला, कदला मुखा हुमा नम दसा, बीच बीच मे  
सागरा सागरा, टिर दुरु दरम और दुरु की कवि  
दुः ।

एटीमोनिपन-मुडम १२३० रुति ।—

**Abstract:** *Leishmania* spp. are the causative agents of leishmaniasis, a group of diseases that are prevalent in tropical and subtropical regions. The disease is transmitted by sandflies and can cause severe health complications if not treated. The aim of this study was to identify the prevalence of *Leishmania* spp. in sandflies collected from a rural area in Brazil. A total of 100 sandflies were collected and analyzed using PCR and gel electrophoresis. The results showed that 15% of the sandflies were positive for *Leishmania* spp. The study highlights the importance of monitoring sandfly populations and implementing control measures to prevent the spread of the disease.

जाता है। खोने से कम होना। यदि प्रलाप हो तो वाक् और रोजगार के विषय में बचना, पित्त होना, वाक्। छाती के दोनों ओर सुद शुभान का दद।

### यूपेटोरियम-पफॉलियेटम ६ शक्ति ।—

यह पित्त के लक्षण मिले हुये सल्य-विराम उपर में काम करती है। इन्हायों में बहुत मटकन, सब शरीर में दद, और आ मिथलाकर पीछ बिलक्षण उपर होता, पीछिया का तरह पीला, जीम माटी पीली रंग की म डकी हुद, त्रिगर लान में पूणता और दद, बहुत मार पित्त हुमा पनला ददन।

इपीका ६, ३० शक्ति ।—मोजन करने का एक महाना, विषयकर पी बघवा लेर की चीज, जी मिथला और उलटी आना, मुद में उगंग्य, मुद का तथा सब के चीजों का बडवा आद, पाकदयरी मरी और उसमें एक मादुय दाना।

मरकूरियम ६ शक्ति ।—सग्घ्या क समय प्रक उपर, मापीरान को उम उपर का बहुत बन्ना, माथे और बमहा पीर रग का मुद का लान और डकार और डकी भव बडवा, लड़ी चीज लान को बहुत दच्छा दान, सब पित्त में रग्घ्या से मगादुमा, पाकदयरी और त्रिगर में ददन से दई मन्नुन दाना।

नदमवोमिका ६, ३० शक्ति ।—जीम लूची हुं और बडवा मघवा पील रग क डरस डकी हुद दद

मलगना । त्वर परावर ठीक दिन, पाच दिन अथवा सात दिन तक रहकर पीछे पसीने भावर उतर जाता है । उलटी प्रायः नहीं होती, लेकिन त्वर पहिले भोजन आदि की गड़बड़ से उलटी प्रायः होजाती है । अक्सर कोष्ठबद्ध रहता है, मतिभार शायद, मुह का प्रायः घुराखाइ अथवा फड़बा साइ रहता है ।

बालक या बालिकाओं के पेट में कीड़े हो तो यह ज्वर हमेशा ही रहता है । उनको ज्वर होने से कुछ दिन पहिले ही भूख कम लगना पेट में दद, रात में नींद छूट जाना, बिना घन रोना, नाक गुरचना वा खुजलाना दात पीसना, मतलब खुजलाना आदि लक्षण देखे जाते हैं । ज्वर प्रकाशित होने पर और लक्षणों के साथ मन्वन्त बेचैनी, शोथ भाव, पेट में दद, बकना आदि लक्षण वर्तमान रहते हैं ।

**चिकित्सा ।—एकोनार्डिट ३ शक्ति ।—**गर्मा के बाद सरदा और सरदा के बाद गर्मी लगना, गर्म और शुष्क हुआ घमड़ा झोंक इत्यादि । मांझी अपनक स्वभाविक नहीं होती और शरीर पर पसीने नहीं आते तबतब प्रति दो घंटे के मंतर एक मात्रा एकीनार्डिट देना चाहिये । कभी कभी दो बार मात्रा एकोनार्डिट देने से पसीना भावर ज्वर उतर जाता है ।

**वैलेडोना ६ शक्ति ।—**मन्वन्त शिर दद, चेहरा नीर दानो भासै टाट रा का घन एहो ही घमनियाँ का छपकना मगने रहना, नींद न आना, दकना इत्यादि मनिष्ठ लक्षण । ज्वरत पड़ने पर एकीनार्डिट और वैलेडोना एक ब बड़ एक दावे आसकते हैं ।



पराप का स्वाद, मूख न लगना, जी मिचलाना, गलेमें कण्ड भरना मानसुम पडना, इसी लिये बार बार छकारना, भूख छपना, विस्तु खान की इच्छा न होना, भोजन करने से पेट सूड उठना, पटुन कमजारी और मयसप्रता ।

रसटम्स ६,३० शक्ति ।—बहुत दुबलता, कम  
बलबुद्धि, पतझा कम होना, जीम सुखी इति, कम  
साविपानिक के लक्षण ।

### सामान्य उपर ।

( सिम्पिल फीयर )

वानरदेभिः, पिचरदेभिः आदि, ज्वर रसी ।  
 आगतन हैं । अनापशनाप और अयोग्य भोजन करते  
 तथा सरदी लगन से यह ज्वर अचसत आता है  
 तथा इस के प्रमुख कारण हैं, । अधिक धूप में  
 सीपना बहुत परिश्रम करना, रात में जगना, भय, भ्रम  
 उद्वेग आदि कारणों से यह अरु हमेशा आता है ।  
 आदि मानसिक कारणों से उद्वेग लक्ष्मियों का वर्षासरी आ  
 आता है ।

लक्षण १—इसाव और व्यास यही है। इस उतर क प्रमाण  
 लक्षण है। सामान्य धृष्ट-उतर (सामान्यउतर) के पढ़िने कि  
 बाद लक्षण साधुम, यही पढ़ने ममानक उतर साधुम हो  
 जाता है। उगाव मरम नई तत्र, व्यास यदुम। उतर क  
 सामान्य मे ही कुछ नदुम। फिर यई धरौर में नदुम।  
 धरौर में नदुम कम उगाव की उगाव साधुम धरौर में  
 नदुम के किम धरौर में धरौर में नदुम कम उगाव साधुम धरौर में

मलगना । त्वर बराबर तीन दिन पांच दिन अथवा सात दिन तक रहकर पीछे पसीने आकर उतर जाता है । उल्टी प्रायः नहीं होती लेकिन त्वर पहिले भोजन आदि की गड़बड़ से उल्टी प्रायः होजानी है । अक्सर कोष्ठबद्ध रहना है, अतिभार शायद, मुह का प्रायः बुरा स्वाद अथवा कड़वा स्वाद रहना है ।

धातुक शालिकाओं के पेट में छोड़े हों तो यह त्वर हमेशा ही रहता है । उनको त्वर हाने से कुछ दिन पहिले ही भूख कम लगना पेट में दद रात में नौद छूट जाना बिना घात रोना, नाक खुस्बना वा खुजलाना धात पीसना मत्तदार खुजलाना आदि लक्षण दस्तजाते हैं । त्वर प्रकटा शित होने पर और लक्षणों के भाव अन्यान्य बचैन क्रोध मान, पेट में दद बहना आदि लक्षण बतमान रहते हैं ।

**त्रिकित्ता ।—एकोनाइट ३ शक्ति ।—** गरमी के बाद सरदी और सरदा के बाद गरमी लगना, गरम और मृदा हुआ चमड़ा हँक इत्यादि । गहरी अरुण स्वाभाविक नहीं होती और शरीर पर पसाने नहीं आते तबतक प्रति दो घन्टे के मंतर एक मात्रा एकोनाइट देने चाहिये । कभी कभी दो बार मात्रा एकोनाइट देने से पस्तन न कर त्वर उतर जाता है ।

**वैलेडोना ६ शक्ति ।—** अत्यंत गिर दद, चेहरा नीर होना आँखें टार रंग का कान एनी की धमनियों का छरकना, मल्ले रहना नौद न बहना, दस्तन इत्यादि अनिष्ट लक्षण । उदात्त पदन पर एकोनाइट और वैलेडोना एक के दद एक दोब आसज्जे हैं ।

**त्रायोनिया ६ शक्ति ।**—शिर दद, हिलने से असमर्थ होना, शिर फटाजाना खासी, खांस होने में कष्ट, पेशाब खली में कष्ट, पील रंग की लेपदार जीम, जी मिचलाना कब्ज, सामान्य का बिडबिडापन ।

**कैमोमिला १२ शक्ति ।**—घान क पराधों में मोह मुह में कड़वा स्वाद, मुह में जुग-घ, मूल न लगना, जी मिचलाना शरीर में दद, काष्ठवद्ध भयदा हर रंग उदरामय, मलमल बधेना, आध्यात्मिक लक्षण प्रबल ।

भोर भोर औषधियों का लक्षण स्वल्प-विशाम उदर देना ।

**पट्ट ।**—उपर में लपन भोर उपर उतर जाने का हल्का पट्ट देना चाहिये । मातृदाता बारली, बरगल अगल अरु पट्ट हैं । प्रथम उपर में यदि प्यास लगने पानी जिनता चाह पीने का है । शारीरिक भोर मानसिक सब प्रकार का उच्छ्रान्त छोट दर्दी चाहिये ।

**देना ।**

**(शोत्रा)**

**देना** अल्पतः अल्पतः नर मायात्मिक राग है । मनुज ज्ञान में विनष्ट नग देना जाने है उस में सब से सत्य निष्ठ देना हा हीन वदना है । मातृदर्दी ही इस राग प्रथम छोट-छोट है । ज्ञान वर विनष्ट मनुष्य इस मीन राग व इस में बहुरंग वदना मान है इस का उ दिग्दर्शक नहीं । इस राग न मान बहुरंग का प्रथम है । इस वर ही हुआ । इस राग में सुदृढ़ न स्मृति का



**त्रायोनिया ६ शक्ति ।**—शिर दद, हिलने से असह्य होना, शिर फटाना, खासी, सांस लेने में कष्ट, पाँख ली में कष्ट, पीले रंग की लेपदार जीम, जी मिचलाना वमन, स्वभाव का चिदचिदापन ।

**केमोमिला १२ शक्ति ।**—खान के पदार्थों में और मुँह में कड़वा स्वाद, मुँह में दुग्ध, भूख न लगना, जी मिचलाना, शरीर में दद, कोष्ठमद मद्यशा हर रप का उदरामय, अत्यन्त बचैनी आघातिका लक्षण प्रयत्न ।

और और औषधियों का लक्षण स्थविर-विराम ज्वर में देखो ।

**पथ्य ।**—ज्वर में लघन और ज्वर उतर जाने पर हल्का पथ्य देना चाहिये । साबूदाना चारला, अदरक मसुराद अच्छे पथ्य हैं । प्रयत्न ज्वर में यदि व्यास लगे तो पानी नितना चाह पीने का दो । शारारिक और मानसिक सब प्रकार की उत्तजना छोड़ देनी चाहिये ।

**हैजा ।**

**(फालेरा)**

हैजा अत्यन्त भयानक और साधातिक रोग है । मनुष्य जाति में निम्ने रोग देखे जाते हैं उन में सब हैं साधातिक हैजा हा हाथ पड़ता है । भारतवर्ष ही इस रोग का प्रधान लालाक्ष्य है । प्रति वर्ष किन्तु मनुष्य इस भीषण रोग का हाथ में पड़कर बर्मान मरते हैं इस का कुछ हिमाय नहीं । इस रोग से प्राण बचान का अवतक कोई उपाय नहीं हुआ । इस रोग में सर्व से अधिक कायदा

करने वालों होमियोपैथिक चिकित्सा है, इसे सब कोई स्वीकार करते हैं। यूयिजी के डिम खान में भी होमियोपैथिक चिकित्सा प्रचलित हुई है बहा हैजे को चिकित्सा के विषयमें इसने अत्यन्त धार्मिक पाद है ।

**काण्ड ।—**हैजे का कारण प्रधानतः दो दिक्कों में बंटा जाता है, पहिला पूर्ववर्ती कारण, दूसरा उत्प्रेषक कारण । और और रोगों के जो पूर्ववर्ती कारण हैं इस रोग के भी प्रायः वही हैं । अधिकांश हैजा ही उदरामय से उत्पन्न होता है, उदरामय कठिन होने पर प्रायः साधारण हैजा हो जाता है । अधिकांश हैजे का प्रधान कारण मुर्चिबल न पचन वाले पदार्थ भोजन करना है । इस के सिवाय स्वास्थ्यका बिगाड़न घाले और मैले स्थान में रहना बहिसर्ग खानापान रात जगना, बहुत शारीरिक और मानसिक परिश्रम, अनियमित स्त्री सहवास आदि हैजा के पूर्ववर्ती कारणों में गिन जाते हैं ।

हैजे के उत्प्रेषक कारण क्या हैं यह आज तक निश्चय नहीं हुआ । हैजा का कारण कोई कहते हैं विष है, कोई कहते हैं जीवाणु (छाट टेटे जीव) हैं कोई कहते हैं जलवायु है, और कोई कहते हैं कि माय इत्यादि । हैजे का कारण किसी प्रकार का विष हासकता है किन्तु वह विष क्या है उसको प्रतीति क्या है तथा कहाँ न उपलब्ध होता है यह आज तक अनुमान नहीं हुआ । बहुतों को यह राय है कि हैजे का विष रोगों के रक्त और उल्टी में रहता है ।

**रोग फैलने के नियम ।—**हैजा कभी कभी बहुत



विबिन्सक को देखने के लिये नहीं मिलती और रोगी भी स्वयं उस को मातुम नहीं करसकता । किसी किसी समय बिनाप कर अब राग हल्का होता है । अब पाचणी व्यवस्था नहीं होती, थोड़ी व्यवस्था के साथ ही साथ रोगी बिल्कुल मरणाद्राजा है । रोग की इन अवस्थाओं में तीवरी और पाचणी व्यवस्था मत्पन्न अपकर जाती है, क्योंकि मृत्यु प्रायः इन ही अवस्थाओं में से एक में जाती है ।

### प्रथम— आक्रमणावस्था ।— आश्रमका

वस्था उद्गमनकी अवस्था है, रोगी दिनरात में पाच वहार पलटा बसा बिना पचा हुआ पदार्थ वमन आता है । बौह कोई कहत है उद्गमन क रोगी को एक प्रकार थकावट दुबलता मानसिक अवसन्नभाव, गिर घूमना, ओ मिचलाना, पेट में शोक और दद मातुम होता है । बाद घंटों में ही उद्गमन रोग हाकर पानासे सपर रोग के वमन होते ही रोगकी प्रथमावस्था घनम हो जाती है । प्रथमावस्था में ही अच्छी विबिन्सा होसे रोग बढ़ने नहीं पाता और मरुत में ही नष्ट हाजाता है । चारों ओर हैजा पला रहन से उस समय प्रायः उद्गमन होता है, इन उद्गमन क विषयमें अभी लापरवाह नकरनी चाहिये ।

### द्वितीय, पूर्ण आदुर्भावावस्था ।—

सफ़ेद रक्ता बानी सा चावल घोपहुये उसके समान वमन और उल्टा हान के साथही दूसरा अवस्था का आरम्भ होजाता है । रोग की तेजा क अनुसार चावल धाये हुये पाना को तरह बहुत उल्टी और वमन, बहुत प्यास, चुप



व्यापकरूप से प्रकाशित होता है, अर्थात् बड़े धोर व फैल जाता है । यह रोग किस प्रकार एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य पर आक्रमण करता है यद्यथा जिस ठाँव यह फैलकर एक गाँव से दूसरे गाँव अथवा एक स्त्र से दूसरे स्थान में चलाजाना है यह नीचे लिखा है —

(१) स्पर्श द्वारा । मेला, हाट व्यवसाय, तीर्थ स्नान कारणों से बहुत से लोगों की सामुद्रिकत से इस रोग का बीज एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँच जाता और चारों तरफ फैलजाता है ।

(२) वायु द्वारा, (३) पानीय द्वारा । पानी और दूध ईजा के बीज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लेनात में प्रधान उपाय हैं । [४] रोगी के व्यवहार की दुर वस्तुओं द्वारा ।

**लक्षण ।**—बनान करने के सुभीत के लिए मरि स मग्न तब इस रोग का पाँच अवस्थाओं में बाँटा जाता है यथा —

(१) आक्रमण वा अनुरिनावस्था (इन के आक्रमण करने का अवस्था) ।

(२) पून विहात वा रोग के पून प्रादुर्भाव का अवस्था ।

(३) अवमाड वा पतनावस्था ( मिरने की हालत ) ।

(४) वातक्रिया अथवा पुनजावनावस्था ।

(५) मादण्ड वा परिणाम का अवस्था ।

यह पाँचों अवस्था देर तक चलन चलन रहने हैं यह जान मही है । अत्रिहात पहिली अवस्था

चिकित्सक को देखने के लिये नहीं मिलती और रोगी भी स्वयं उस को मालुम नहीं करसकता । किसी किसी समय बिचार कर उस रोग इल्का होता है । उस पाचवीं अवस्था नहीं होती, चौथी अवस्था के साथ ही साथ रोगी बिल्कुल मरछा होजाता है । रोग की इन अवस्थाओं में तीसरी और पाचवीं अवस्था अत्यन्त भयंकर होती है, क्योंकि मृत्यु और इन दो अवस्थाओं में से एक में होंगा है ।

### प्रथम— आक्रमणावस्था ।— अकम्पना-

वस्था उदरामयकी अवस्था है, रोगी दिनरात में पाच हजार पल्ला बना बिना पचा हुआ पदार्थ दफ्न जाता है । कोई कोई कहते हैं उदरामय के रोगी को एक प्रकार धक्का, दुर्बलता मानसिक अवसन्नभाव, शिर घूमना, आनिचलाना, पेट में बौंक और दह मालुम होता है । अद घटों में ही उदरामय रोग होकर पानामे सफेद रंग के दम होने ही रोगकी प्रथमावस्था घटन हो जाती है । प्रथमावस्था में ही अच्छी चिकित्सा होनेसे रोग बढन नहीं पना और अतुर में ही मृ होजाता है । चारों ओर हेजा पैंग रश्म से उस समय प्रायः उदरामय होता है इन उदरामय के दिव्यमें कभी लागवाह नकरनी चाहिये ।

### द्वितीय, पूर्ण प्रादुर्भावावस्था ।—

सफेद रंगका पानी सा चावल चोपहुये उबक समान दस्त और उल्टी होने के साथही दूसरा अवस्था का माराम होजाता है । रोग की तेजी के अनुसार चावल चाये हुये पाना और उबक उल्टा और दम दम प्यास पुर

बना ठण्डे पसीन के साथ देह ठंडा, सरमट्ट, क  
हीन और पेशाब बन्द होजाना है, हाथ पैरों का  
थिथो में थोपड़ आने हैं, चेहरा और जीभ मादि  
बहुत ठंडे और नीन्दी रंग ब होजात हैं आँखें बंद  
हैं, शरीर में समस्त उष्णता और बेचैनी मातुम होने  
है हाथ पैर और शरीर शिथिल होजात हैं। इनहीं  
लक्षणों में किसी का दमन अधिक होने हैं, किसी  
उत्तरी बहुत होना हैं किसी का थोपड़ उपादा आने  
शान्ति भवना गुम होना म माठ सर सराये क म  
धीन धीन म विनयुक्त भवान नीन्दी रंग का हो  
है। मर क बहुत क साधरी ऊपर लिख हुये बहुत  
बहुत लक्षण भी कम हो जात हैं। यदि शान को म  
न हा ना वहा म मावरी भवना मारम्भ हो जाती

तृतीय, पञ्चादश्या ।—हमरी अवस्था व

गुरी भवसज्जना दानी ह नादा साव दान जगती दे  
 ॥ १ ॥ कथन की भाषा बस जानी जनी है। इसका  
 ज्ञान ही हाजिर करने है। वह गुरी भवसाध (गुरी  
 ज्ञान ही हाजिर) का हाजिर दानी ह। कसाह में  
 का कदकम साधुम मदी बहना साव बहून थीर  
 बज्जना है कमी कसा व बहून ज्ञाना निम्न बह क  
 साव हाजिर ज्ञाना साव जना ह। गुरी गुरुसाव नि  
 वस ज्ञान है ज्ञान बर्षन में कृपा कृपा क  
 निर्विकल ह। गुरु हा ज्ञान बज्जना मुदे साव  
 ज्ञान है। इस कथन में दल में गुरु ज्ञान बज्जना  
 कर्म कमी बज्जना साव ज्ञान ज्ञान निर्विकल ह  
 का हल बह हल बह गुरु ज्ञान है। इस कथन

मौल अधिक होती है।

**चतुर्थ, प्रतिक्रियाप्रस्था ।—** प्रतिक्रिया

प्रस्था ही पुनर्जीवनकी अवस्था है । पतनावस्था के बाद कबाले में गड़ी छोट आने के साथ साथ प्रति क्रिया आरम्भ होती है । प्रतिक्रिया के समय हस्त और उल्टी फिर छोटे छोटे होन है और धीरे धीरे जीवनी शक्ति बढ़कर रोगी अछा होन लगता है, हस्त कुछ हरे और पाँके रंग के होकर अन्दी पित मिटी हुई द्रव्य के दागाने है, मूत्र धीरे धीरे गाढ़ाहोने लगता है पेशाब उतरना है, यदि न उतरे तो पेशाब बनकर मुत्राशय में इकट्ठा होन के कारण पेहू फूल जाता है और आँखों की ज्योति लौटने लगती है तथा अल्प ही रोगी को बहुत कुछ आराम प्राप्त होने लगता है । यह स्वामाधिक प्रतिक्रिया हमेशा सब को होनेका नियम नहीं है । किसी किसी समय छोटी प्रतिक्रिया दिखलाई देकर फिर पतनावस्था उपस्थित होती है ।

**पंचम ।— परिणामावस्था ।—** प्रतिक्रिया यदि

पूरे तरह से न होसकता तरह तरह क उपसर्ग या मीश्र होते हैं । यह उपसर्ग अत्यन्त कष्टदायक होते हैं, यदा तक कि इन से मृत्यु भी हो जाती है, अतः इसके उपरान्त प्रतिक्रिया दब कर रोगी, रोगी के घर बाटे तथा चिकित्सक प्रसन्न होते हैं, किन्तु उस के उपरान्त उपसर्ग प्रबल होकर रोगी की मृत्यु होनाप तो दुःख का पारावार नहीं रहता । परिणामावस्था में उबका, बुखी, बिकार पेशाब बंद होने के कारण बिकार ज्वर अरुण, भूख, मुह आदि में घाव इत्यादि प्रधान उपसर्ग हैं ।

बना ठण्डे पसीन के साथ देह ठंडा, खरमट्ट, नम  
क्षीण और पेन्हाय बन्द होजाता है, हाथ पैरों का झु  
लियों में घायडे आते हैं, चेहरा और जीभ आदि सब  
बहुत ठंडे और नीली रंग के होजाते हैं आँखें बंद जग  
हैं, शरीर में असह्य ज्वाला और खचैनी मानुस होने लग  
है, हाथ पैर और शरीर शिथिल होजाते हैं। इन्हीं सब  
लक्षणों में किसी को दस्त अधिक होते हैं, किसी से  
उलटी बहुत होता हैं, किसी का घायडे ज्यादा आते हैं।  
रोगका अवस्था गुम होन से आठ से १२ घण्टे के भीतर  
धीरे धीरे मल पित्तयुक्त मध्यात पीले रंग का हो जाता  
है । मल व बदलने के साथही ऊपर लिख हुये बहुत व  
कष्टकर लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रोग को आराम  
न हो ता यहो स तीसरा अवस्था आरम्भ हो जाती है ।

**तृतीय, पतनावस्था ।**—दूसरी अवस्था के अन्तमें  
पूरी अवसन्नता होता है, गाढा स्नाय होने लगती है और  
रोगीके बचने की आशा कम जाती जाती है। इसको शीत  
ज्ञान की हालत कहते हैं। यह पूरा अवसाद ( शरीर गिर  
ज्ञान की हालत) का हालत होता है। कलाह में गार्डी  
का घडकन मानुस नहीं पहना, सान बहुत धीरे धीरे  
थलता है, कभी कभी वा बहुत अन्धी किन्तु थड कष्ट क  
साथ हापने हापन सास आता है, रोगी घुपचाप शिथिल  
पडा रहता है ठंडा पसीने में डूबा हुआ, लावण्य  
विहीन दह नाल रड का और चेहरा मुर्दे कासा हा  
जाता है । इस अवस्था में दस्त और उलटा प्राय बन्द होजाते हैं,  
कभी कभी समानुम छोडा छोडा मल निकलता रहता है  
ता दस्त बन्द हाकर पेट फुल जाता है, इस अवस्था में

मौल अधिक होती है।

**चतुर्थ, प्रतिक्रियावस्था ।—** प्रतिक्रिया वस्था ही पुनर्जीवनकी अवस्था है । पतनावस्था के बाद बच्चा में माही झूट आने के साथ साथ प्रतिक्रिया आरम्भ होती है । प्रतिक्रिया के समय हस्त और उलटी फिर घड़े घोट होन है और धीरे धीरे जीवनी शक्ति बढ़कर रोगी अछा होने लगता है, हस्त कुछ दर भीर पीछे रग के होकर अछा पित्त मिग्गदुरं शक्ल के हावाने है, मछ धीरे धीरे गाढाहोन लगता है, पञ्चाष उतरता है, यदि न उतरे तो पञ्चाष बनकर मुक्ताशय में इकट्ठा दानवे बारणा पेड़ फूल जानादे और आछों की ज्योति लौटने लगती है तथा साथ ही रोगी को बहुत कुछ आराम मानुम होने लगता है । यह स्वभाविक प्रतिक्रिया हमेशा सब को होना नियम नहीं है । किसी किसी समय वोही प्रतिक्रिया दिखलाइ इकर फिर पतनावस्था उपस्थित होती है ।

**पचम ।— परिणामावस्था ।—** प्रतिक्रिया यदि पूरे तरह से न दानव ना तरह तरह व उपसर्ग आ मौजूद होते हैं । यह उपसर्ग अत्यन्त बड़ शायद होते हैं, यहाँ तक कि इन से श्वाय भी हो जाती है, अरसाइ व उपरात प्रतिक्रिया दस बार रोगी, रोगी के घर घले तथा चिकित्सक प्रसन्न होन है, किन्तु उस के उपरात उपसर्ग अरस होकर रोगी की श्वाय होजाय तो कुछ का शारादार नहीं रहता । परिणामावस्था में अरसा, इषकी दिखर पञ्चाष दग्द होने के कारण दिखर स्तर अरसा, अंश कुछ कई में बाध इत्यादि प्रधान उपसर्ग हैं ।

**चिकित्सा ।—**प्रथमावस्था की चिकित्सा —

**केम्फर ।—**केम्फर हैजे की अच्छी दवा है। हैजे में

आन्तर दर्दानीका स्थिद केम्फर दिया जाता है। उदरना,  
सरसी लगना, पेट में दब भादि हैजे के पहिल लक्ष  
दीक्षत ही केम्फर सफेद चीनी में [पाना में नहीं] मिलाकर  
दश १५ मिनट के अन्तर में देना चाहिये। मात्रा अघार की  
पूरा उमर के आशुमियों के लिये प्रति बार पाच  
गुद है, बच्चों के लिये एक हा गुद । यदि ॥  
औषधि को पाच सात बार देने पर भी यदि रस  
ब द नहीं और बाधल धाये हुये पानी क समान रस  
रगों तो उसी समय दवा बद कर और दूसरा दवा देनी  
चाहिये । प्रथमावस्थामें ह्योग्राहान आदि अघाम मिला  
हुद दस्त बद करन वाली दवा क अपेक्षा केम्फर हज़ार  
गुनी अच्छी है।

**एकोनार्डिट मूल वा १ शक्ति ।—** अत्यन्त प

के दर के साथ दस्त होना, नाडी तेज और पूण, उत्प  
के साथ मिली हुद सरदा, अत्यन्त गरमी में घूमन क  
बाद अथवा अघानक सर्दी लगन क कारण, प्यास, दबेनी,  
मृग्यु मण, पेट दाबने स दद, मादुम होना । इस  
दवा की एक एक गुद अत्येक दस्त के उपपन्न रोगी  
चाहिये।

**पलसेटिला ६ शक्ति ।—** यदि तेज वा पी मिले

हुये पराध के जाने से रोग की उत्पत्ति हुई हो, मलका

दिस्ता हरा और पिछला केवल आमाशय की

तरह । यह दवा स्त्रियों के लिये तथा स्वभावतः दुर्बल प्रकृति के मनुष्यों के लिये बहुत फायदा करती है ।

**नक्सबोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—**मुदिक्त से पचने वाले पदार्थ भोजन करना, रात जगना, शराब पीना, अत्यन्त मैथुन, इत्यादि दवाइ जाना अथवा मानसिक परिश्रम के कारण उदरामय बार बार थोड़ा थोड़ा दल होना अथवा दल की दाजत होना जितनी दाजत हो उतनी दल न होना, दल आते समय बिचना । जिसको अन्त रोग है उनको यह दवा बहुत फायदा करती है ।

**चायना ।—**पेटमूत्र बाहार करने में रोग उत्पन्न होना, दलके साथ साथ बहुत कमजोरी, पीले रंगका पतला पानीसा दल दल के साथ आया हुआ बिना पचा पदार्थ निकलना गर्मी के समय उदरामय, पेट फूटना, वायु सरना । मात्रा नक्सबोमिका की तरह ।

**कालोमिन्य ३, ६ शक्ति ।—**उदरामय के साथ पेट के भीतर असाह मरोड़ा, यह दर्द दाढ़ने से [यथा उल्टे होकर पेट के नीचे लटका रहने से] घट जाता है, दर्द टट्टर टट्टर कर होता है ।

**केमोमिला १२, ३० शक्ति ।—**बच्चों के उदरामय में देहुन फायदा करता है । दवा बहुत बिटबिटे स्वभाव का होकर कोह खाँस देने में उठा कर फूँटने गोरी में लेने से खटने के लिये बड़े पित्त मिले हुए और हरे रंग



के दस्त । १२ कम अधिक फलदायक है । शत निश्चय समय वर्षों को हरे रंगके उद्दामय में इस से बहुत फायदा होगा है ।

**इषिका ६ शक्ति ।**—जी मिचलाना, उदर में मधुर कबड़ी होना, दस्त की मयेचा उल्टा अधिक होना, मराई और दूद के साथ उद्दामय, घास के समान हरा दस्त, मल में अत्यन्त दुग्ध, मल में रक्त और आम मिठा हुआ ।

**मरकूरियस करोसाईमस ३, ६ शक्ति ।**—

आम मिठा हुये मूल के दस्त होना कबल मूल के दस्त । केवल मूल के दस्त होना हवाका और मच्छी घोंघ हुए पाना के समान दस्त होना मरकूरियस और रमन्थम दिया जाता है । रक्त यदि उज्ज खाते रक्त का महा और काकायन लिपि हुए लाल रक्त का हा तथा दूध साथ अधिक होना हो ता हमासलिम ३ X कम दिया जाता है ।

**डिर्नापायस्या की चिकित्सा —**

इस मध्या की प्रशान औषधि विराटूम-दक्षक आर्मेनिक कृष्ण मिहरी एकाताह कृष्ण-आर्मेनिक एर्नीमानियस-दूध और दक्षक इत्यादि हैं ।

**विट्रूम-एन्थम ६, १२, ३० शक्ति ।**—यह रोग की दूध बहुत मच्छा दूध है । प्रशानक चावक चाये दूर दूध के समान दस्त और उल्टी बनेगी बहुत कमजारी प्रशानक शक्ति खाते हावान कपरा नीचे और दूध बहुत दस्त और मच्छी मध्या प्याथ वाचाशय में प्रशानक साथ दूध और दूध देरों में कबड ।



पण्याय नमसे दिया जाता है।

**कूप्रम आर्सेनीकोमम ६ त्रिचूर्ण, ३० शक्ति ।—**

कूप्रम और आर्सेनिक दोनों ही क लक्षण रहने पर एम मोवधि का चूर्ण पानी में मिला कर देनेसे वधों का मोर गुला जीम के ऊपर डाल कर धिन्ध देने से वह मोर मियों को बहुत फायदा करता है । यह बात नहीं है कि कूप्रम कबल बाघों का ही आराम करता हो, किन्तु एम के द्वारा हलियड भा कन्धान होना है । जिस मोर ए हलियड की जिया शिथिल हाजाय और आर्सेनिक क लक्षण दिखलाए वह उस समय देना चाहये ।

**सिकेठी ३, ६, ३० शक्ति ।—**कूप्रम वन पर श्री

यदि बाघों का आराम नहा और जिन पर्वों में हाथ पैर फैलाए जाते हैं उन में बाघों भावें तथा मगुठियां गुन कर टंगी हाजाय बेहरा टटा मासुम पड़े, बिना कष्ट क गन्दा हा और उल्टी क बाद आराम मासुम होगे यह दवा दा जानी है ।

**टैरेकम् ६ शक्ति ।—**इस दम्ब हान क उपराल

भी यदि उल्टी और उखारें जाती रहे ना वह दवा कन्धान करना है । कुछ दिनों में से उखार और उल्टियों का बहुत सगर में टटा कमीना वह में हरे, पवगाइरे, बवेरी, मध सगर में बाघट और हरे भादि एम क लक्षण है ।

**गिर्मानाम, ३, ६ शक्ति ।—**यह अगदी क बाघे का मर

है । इस दवा में इस अगिह हान हो उमा में वह

कोई उपसर्ग उपस्थित नहीं हो विद्युत् के चरों स्थिति  
बत दिया जाता है।

## तीसरी अवस्था की विविधता —

तीसरी अवस्था में हमारे व्यवस्था की सब व्यवस्था  
और हम व विद्युत् बाह्य-वैद्युत्-विद्युत्, हाइड्रोजन-विद्युत्  
विद्युत्, अर्द्ध-विद्युत्-विद्युत्, पुनः-साधना, अर्द्ध-विद्युत्  
विद्युत् व्यवस्था की जाती है।

एकोनॉमिस्ट १ दृष्टि :—एकोनॉमिस्ट में यह दृष्टि  
की यह व्यवस्था व्यवस्था की जाती है। यही हमारे  
आगे यह सब व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
व्यवस्था में हमारे व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
है।

विद्युत्, द्रव्य, मिश्रण, आर्सेनिक :—यह सब  
व्यवस्था व्यवस्था में ही व्यवस्था होती है। यही हमारे  
व्यवस्था व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
व्यवस्था व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
व्यवस्था व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
व्यवस्था व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
है।

कार्बो-वैद्युत्-विद्युत् १० दृष्टि :—कार्बो-वैद्युत्-विद्युत् में  
यह सब व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
व्यवस्था व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
व्यवस्था व्यवस्था में व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था  
है।

होजाता है, नाड़ी आजाती है, जीम और शरीर गरम होजाती है, मुँह से मायाज निकलती है और माँसों में ज्योति मालूम होने लगती है । मात्रा १२५ ग्राम ।

### हाईड्रोसीयनिक एसिड १, ३, शक्ति ।—

अत्यन्त श्वास बृष्ट, बाँवटों के साथ श्वास चलना मंदा टहर टहर कर हापने की तरह बृष्ट के साथ श्वास, रोगी का चेहरा विलगुल मुँह के समान आदि लक्षणों में ब्र दया दीजाती है ।

### चोथी अवस्था की चिकित्सा ।—

व्यापारिक प्रतिक्रिया में पथ्य व निषम पालन करना ही प्रधान चिकित्सा है, औषधि की प्रायः आवश्यकता नहीं होती । इन समय थोड़ा थोड़ा दस्त उल्टी होने से पाथ व निषाय कुछ सुखसान नहीं होगा, इस लिये उन का बन्द बन्द डाउन नहीं । अचानक दस्त और उल्टी एक साथ बन्द होजायेंगे रागा का पट टूटजाता है । दस्त और उल्टी अधिक हावसे लगना व माय दूमरी अवस्था की दवाया देनी चाहिये ।

### पाचवीं अवस्थाकी चिकित्सा —

अन्तिम अवस्था में तरह तरह व लगभग प्रसन्न होत हैं । उनका काम और चिकित्सा नान्य स्थिते हैं ।

१ । उल्टीयों का उपद्रव और दिक्कियाँ—इसीके पट मन्त्र-मन्त्र, देवदम नमस्कारिका ब्रह्मा, तबले टैला कर्बो-वृष्ट श्वाँस ।

२ । दिक्क—अन्तिम, समन्वय, आर्सेनिक मन्त्र निषय, पाथ ।

३ । वेदना बन्द हान व कारण विचार—आर्सेनिक

बेजेडोना, हादमोमायमस, बे-घोरिस, देरीबिन्ध, स्ट्रामोनि  
यम, मादियम ।

४। पेट पुरना—मोपिदम, मक्सबोमिडा, बाघो-वेजी  
देबनिम, आइबोपोहिदम ।

५। कीहो का उपद्रव—सीमा, सनफर ।

६। पले हूये बाव—डैकसिस, मारैमिक, बाघो-वेजी  
देबनिम ।

७। पोहे भादि—दीपर, साइबोमिडा ।

८। ज्वर—एकोबर्ट, बटडोना, माइयोमिया, पत्रफोरस,  
मक्सबोमिडा ।

सहवारी उपाय ।—इस विषय पर अत्यन्त ज्ञान  
रखना चाहिये कि किसी प्रकार रोगी के मन में जब  
उत्पन्न नही किन्तु धामि और प्रेमता रहा भावे । रोगी  
के लक्ष बँड कर इस के विषय में रोग का बाव अत्यन्त  
भावी पलायन का कुछ मन मार न करना चाहिये ।  
रोगी का अत्यन्त विषय न भाव उपद्रव भादि सर्वथा नष्ट  
रखे जावे । इस और उलटी भादि बहुत दूर पहुँचे चाहिये ।  
अत्यन्त बुद्धि के विषय का रोगी इस लक्षित है ।  
यदि उलटिदा अधिक रोगी हो तो नही प्रियता कम  
होमडे दिया जाय । इस रोग से बचने अत्यन्त बहुर  
उपद्रव है । बाँधे जाने के बाधों को धीरे धीरे  
इस से बाधने से कुछ आत्म मान्य रहना है ।

पदप ।—हैंने ही रहितो हूकरा और लक्षारी  
अत्यन्त से अत्यन्त बहुर उपाय न इस चाहिये हर  
उपद्रव अत्यन्त बहुर लक्षित बहुर की रोग

देना उचित नहीं । किंतु यदि पतनायका दूँट तक रहे तो आवश्यकता के अनुसार चारही वा भरारोट का पानी दिया जाता है । प्रतिरक्तिया आरम्भ होने पर साधारण अथवा भरारोट का पानी अथवागुसार नीचू का रस मिला कर दिया जाता है । जब तक मल हरे वा कठे रंग का और गढ़ा ना हो तबतक कोई पच्य देने का साहस ना किया जाता । मल कमश स्वाभाविक होने पर मधुर का दाल का पानी, कच्चा केला अथवा आले का झाल दिया जाता है ।

## डिपथीरिया ।

डिपथीरिया एक प्रकार का संक्रामक और सांक्रांतिक रोग है । इसमें गल में घाव होजाते हैं । पहिले एक दूधिन होजाता है और पीछे गल में इस के स्थानीय छत्र प्रचल हाजाने हैं । इस रोगे वातुगन दोर पर ध्यान न देकर केवल स्थानीय रक्षकों के अनुसार चिकित्सा करने शुरू है ।

**लक्षण ।**—डिपथीरिया दो प्रकार की होती है, एक सामान्य और दूसरी सांक्रांतिक । सामान्य रोग में (जो कि प्रायः हाजा के निवृत्तन में सम्बन्ध रह, गले में रुद्ध शरीर में अल्प हाज देतो में रुद्ध आदि लक्षण उपस्थित होते हैं । सामान्य रोग सामान्य चिकित्सा से ही अच्छा हाजाना है । आघात रोग में निष्ठ रक्तित्व लक्षण प्रचलित होते हैं । मद्यन उपर कम रुद्ध उठती मद्यनरुद्ध मद्यन कमजोर बेचेनी शरीर वरम चहरे का लाल रंगन गल में रुद्ध हा जो थोड़ा निर्द्धा का लाल रंग टांगिभूत नाम

दोनों-गाँठों का फूल जाना, और उनके पर एक प्रकार का भफड़ परदा पड़ जाना, यह भफड़ परदा क्रमशः बढ़ कर सब को ढक लेता है, इस ठिये निगलन और भ्वास लेने में कुछ बाध हो जाता है। यह परदा दशन में एक चमड़े की तरह दिखलाई पड़ता है। गल का सब गाँठ फूल जाता है और कभी कभी कानों तक बढ़ मातुम होने लगता है तथा गहन सक्न हो जाता है, यदि रोग अधिक होता रागी बहादा हो जाता है और अब तक परदा जा रहे साथ बाहर न निकल पड़े तब तक निगलने और भ्वास लेने में कुछ होता है अथवा रागी का भ्वास बढ़ होकर या विकार का भ्वास होकर उसका प्रधान हो जाता है।

**चिकित्सा ।—**१। सहज राग की पहिली दाढ़त में पेकोनार्ड बेटेडोना वा बैप्टशिया ।

२। साधारणिक रोग में—कली-परमननम, एसिड-स्पूटियाटिक डेल-बाइबमिक, आसैनिक, ऐमानियम-वाव ।

३। परवर्ती (पीछे उपस्थित होन वाल) उपसर्गों में खरमडू में फासफोरस, फाइटोडका कमजोरों में पायना ।

**बेलेडोना १ शक्ति ।—**साधारण और साधारणिक होना प्रकार के रोगों की प्रथमावस्थामें यह डाइयूरन मदद फायदा करता है। यदि ४८ घंटे के भीतर इस से कुछ फायदा नहो अथवा एक बार फायदा होकर फिर यह साथ नहो अथवा फिर राग बढन लगे तो फिर इस दवा को बन्द कर देना चाहिये ।



### ऐसिड-म्यूरियेटिकम् २, ३ शक्ति ।—

सोयातिल रोग बढ़ने दार घाय, सामान्य दुर्गन्ध मानुष होना, अत्यन्त कमजारी ऊपर लिखे हुए कम २१ घंटे ४ मिनट से देने चाहिये। इस दवा के कुछ भी हानि नहीं जानते हैं। ४ माउस पानी में १० बूंद मिला कर डालते चाहिये।

### मर्कुरियम-आयोडेटम २, ३ शक्ति (चूर्ण) ।—

गल और गरम जाला में बरदा पड़ना, गल की गांठों का फूटना निमज्ज में कण और दर्द, डार निजालने वाली गांठों का फूटना, और गल में सड़क डार घाय।

### केली-परमेनेनम ६ शक्ति ।— बरदरार की

निजालना मान लन में बढ़ने। सड़क हुए घाय होने पर १० क दूध करार जानते हैं।

### आर्मेनिक ६ शक्ति ।—रोग की जाखीरी हासन

में कमजारी गांठों की मूद में दुर्गन्ध गल का फूटना, नाच न चूकना बरदरार मवाद निजालना।

### कादी-आटिकम ६ शक्ति ।—गल के मीनर

प्रदाद दुर्गन्ध और मैला चीज न दवा हो हार मीनर भाव भावा बोदक सामान्य विरधिया कर निजालना। गल के मीनर घाय कमजारी की गांठ का फूटना।

### लेकैमिम १२, ३० शक्ति ।—बद दवा लन

कर उस समय दी जाती है जब गले के बायीं ओर रोग उत्पन्न हो ( दाहिनी ओर होने से लाइकोपाटियम दिया जाता है) । गले के भीतर और बाहर सूजन, गले में इतना दर्द कि रागी घड़ा हाथ या और कोई चीज से नगान दे, नींद के बाद रोग और बढ़ का बढ़ना ।

**फाईटोलेका ३ शक्ति ।**—इस रोग की यह एक उत्तम दवा है । श्वास में अत्यन्त बढ़ी मस्तक कमगोरी, बड़ा न हो मचना पिछौन से उठ कर खड़े होते ही सिर घूमना हो और खड़े रहते हों ।

**श्लोषध प्रयोग ।**—यह रोग कठिन होता है, इस लिये इस रोग की औषधि २।३ घट के भन्तर से अथवा आबरूपछटी के अनुसार जब तक फायदा न हो और भी जल्दी जल्दी दावासखी है । जितना जितना फायदा दीखने लग रहा हो भी यादा धीरी दर बाद देना शुरू करे । यदि एक औषधि से फायदा न हो तो और दूसरी दवा तद्वर्धित करनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—रोग के श्राव्य में पुष्टिदत्त लगाना ठीक नहीं है, किन्तु जब रोग कठिन होत हो और उसका साधानिक रूप दावाय तो पुष्टिदत्त लगाना नहीं चाहिये । गरम जल की नार भी फायदा करती है । केवल गरम जल अथवा थोड़ा हाइपोबिक एसिड या ऐसिटिक-एसिड मिला कर इला करने से मुह की बढ़ जाती रहती है ।

पथ्य।—रोग का सूत्रपात होते ही हल्का और पुष्टि कर पथ्य देना उचित है । गले में दूद रहने पर भी योग थोड़ा कुछ पिलाना चाहिये । दूध या पाली, दूध के साथ घासरो या साबूदाना मिलाकर देना चाहिये । रोग आराम होने पर भी रोगी को कुछ समय तक भावधानी से रखना पड़ता है । जल वायु परित्यक्त अधिक फायदा करता है ।

### सप्तम अध्याय ।

साधारण रोग समूह—[ब]धातुगत रोग समूह ।

तरुण वात—ऐकिउट मूमेटिज्म ।

यस रोग अत्यन्त कष्टदायक होता है । यह प्राय रोगों में आता है । यह हाथ पैरों के बड़े जोड़ों पर ही प्रथमतः आक्रमण करता है । कभी कभी हाथ पैरों के बड़े जोड़ों के सिवाय शरीर के और और स्थानों पर आक्रमण करने लग भी देखा जाता है । यद्यपि यह रोग साधारण तिक नहीं होता परन्तु अत्यन्त कष्टदायक होता है । वात के पर्यन्त फट और उपमग जितने पुराने हात आयेग उतना ही कठिनता से आराम होंग ।

लक्षण ।—पंडिल सर्दी से बुझार आता है और सब शरीर में बेचैनी मातृप पड़ती है । इस प्रकार रोग आरम्भ होता है । पाछ किमी आम जगहके बड़े जोड़ोंमें दूद गुरू न लगता है । कंधा बुझना हाथ घुटने और पैरोंके सब जोड़

हठ जाते हैं और उनमें दर्द होने लगता है। दरदना होजाता है कि सहन नहीं होसता। रोगी को दिलने मुड़ने की शक्ति नहीं रहती यहाँ तक कि दरद के स्थानों में हाथ तब नहीं लगाया जाता। प्राण और का पुकार होता है, और नाड़ी बहुत तेज चलने लगती है। रोगी का शरीर गरम रहता है और अधिक तथा लही परबूदार पसीना निकलने लगता है। रेशाब छाल रग का और कम तथा मल्लत प्यास इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। कभी कभी ऐसा रोग १०।१५ दिन में आराम होजाता है, किंतु कभी कभी ५।६ सप्ताह तक रहता है। कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि रोग पुराना पड़नाता है और बहुत दिन तक आराम नहीं होता। बात रोष साधारण नहीं होता किंतु अब हर्षिपद पर आक्रमण करता है तो प्राण सापानिक हो जाता है।

**चिकित्सा—एकोनार्डिट १, ३ शक्ति ।—**प्रबल

ज्वर और हर्षिपद का अधिक घटवना, दर्द के स्थानों पर घाम और लाल रगत। हिलाव झुगने और हाथ लगाने से दृष्ट मालूम होना, मल्लत मय और मानसिक चिंता, मल्लत प्यास बेचैनी और तकलीफ।

**—बेलेडोन। ३, ६ शक्ति ।—**आँखों पर वरम, रगत

लाल और चमक। बहुत दर जोड़ों से दरें गुरू होकर सब शरीर में फैल आना दर निननी अन्द गुरू हो उठनी हो अन्द आना रहे ज्वर शरीर सूखा और गरम प्यास, और सिर दर, सोझान की रज्जा हो परन्तु अच्छी

नृदणः—रोग का सूचकान् हाने हौं हज्जका और पुठि  
 कर परप दना उयिन है । गते में दूद रहन पर भी योग  
 गाडा दूद शिगाना चाहिय । दूध या वाली, दूध के साथ माराड  
 या मादूदाना शिगाना दना चाहिय । रोग माराम होने  
 पर भी रागी व। कुछ समय तक मायशाना से रहना  
 पडना है । अरु वायु परिवर्तन अधिक पापना  
 करना ।

सप्तमः अध्यायः ।

साधारण राग समुह—[अ] धातुगण राग समुह।

तदुक्तं यान्—एकितुट् नृमेदिनम् ।

बाग रत्न अमृत कल्याणक नामा है । यह प्राय सभी  
 में प्राप्त है । यह प्राय पैरों के बहुत अच्छे तरह ही प्रकाश  
 करने में समर्थ होता है । कभी कभी दाग पैरों के बहुत  
 अच्छे के साथ ही प्राप्त है और साथ ही प्राय ही आरोग्य  
 करने में बहुत ही प्रभावी होता है । यद्यपि यह रोग अमृत  
 किन्तु यह प्राय ही अमृत कल्याणक नामा है ।  
 बाग रत्न अमृत कल्याणक नामा है । यह प्राय ही  
 अमृत कल्याणक नामा है ।

७२भाग।—१. जो शरीर जो धूल का बना है भोग का  
 तत्त्व है अर्थात् मांसमय वस्तु है । इसी कारण जो  
 मांसमय वस्तु है वह अस्थिर है और अस्थिर वस्तु में  
 जो वस्तु है वह अस्थिर है और अस्थिर वस्तु में

हूट जाते हैं और उनमें दर्द होने लगता है। दर्द इतना हो जाता है कि सहन नहीं होसका। रोगी को दिलने मुलने की शक्ति नहीं रहती यदा तक कि दर्द के भानों में हाथ रख नहीं लगाया जाता। प्रायः और वायुसार होना है, और माही बहुत तेज चलने लगती है। रोगी का शरीर गरम रहना है और अधिक तथा घड़ी यद्वद्वार परमाण निकलने लगता है। पेशाब साह रग का और कम तथा अत्यन्त प्यास इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। कभी कभी ऐसा रोग १५-१६ दिन में माराम हो जाता है, किन्तु कभी कभी ५-६ मसाह तक रहता है। कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि रोग पुराना पड़ जाता है और बहुत दिन तक माराम नहीं होता। बात राय साधनिक नहीं होता किन्तु जब हृत्पिण्ड पर आक्रमण होता है तो प्रायः साधनिक हो जाता है।

**चिकित्सा-एकोनाईट १, ३ शक्ति ।**—प्रबल ज्वर और हृत्पिण्ड का अधिक घटकना, दर्द के सानों पर धरम और लाल रगत। दिलान मुलाने और हाथ लगाने से कुछ आलूम होना, अत्यन्त मय और मानसिक विषा, अत्यन्त प्यास बचनी और तड़लाह।

**-वैलेडोन। ३, ६ शक्ति ।**—आँखों पर धरम, रगत लाल और घनक। बहुत दर्द, जोड़ों में दर्द पुरु होकर सब शरीर में फैल जाता दर्द अिनना जल्द पुरु हो उतना ही उल्द जाता रहे ज्वर, शरीर सूखा धार गरम प्यास, और सिर दर्द, सोअने का इच्छा हो परन्तु अच्छो

तरह नौद न माना हो, तीसरे पहर तीन पत्रे  
सामान्य दिलने सुलन से दद बढ़ना ।

त्राइयोनिया ६, १२ शक्ति ।—दद के स्थान

और न मुड़ना, सुद चुमान अथवा काटने क समान होना जोकि सामान्य दिलन सुलन से बढ़ना, रक्त  
पिलकुल स्थिर रहन का इच्छा करता हो, रक्त  
का कड़वा स्वाद मुह सूखा हुआ और मलन व्याप्त  
कड़ा और सूखा हुआ मल, रोग यदि और सतों पर  
छाड़ कर हृत्पिंड क ऊपर आक्रमण करे ता यह रोग  
जाता है । इस अवस्था में एकनाइट और कावचिन्म  
भी दिय जात हैं ।

कैमोमिष्ठा ६, १२ शक्ति ।—दद क कारण रक्त  
का पागल का तरह हा जाना और चिल्लाना, गरम पर्स  
विशेष कर मलन पर ।

कालचीकम ३, ६ शक्ति ।—दद बार बार अग  
छेड़ दता हो । (यमा हाउन में धसड़ोना और पलन  
दिना भी दिये जाने हैं ) अग क सामन बैठन पर न  
सरदा ना लगना, और बाच बाच में गरमा माजूम हाव  
शरार क साथ बानोंम रोग हृत्पिंड पर आक्रमण क  
और छानी तथा हृत्पिंड में सुद चुमान तथा काट डाल  
का ना दद हो मलन कड़ा बदबूदार पसाना, पशा  
कम उतरना ।

लाइफोपोडियम १२, ३० शक्ति ।—रात्रि क समय  
और बिनाम करने समय दद का बढ़ना, पद मा

जोड़ों का बड़ा पड़ना, रोग प्रधानतः दाहिनी ओर हो, मूत्रन हो चाहे न हो, जोड़ बढ़ता, हरषल पेट मरा मानूस होना, खाने की शक्ति कुछ अच्छा न होना ।

**नरमचोमिका ६, ३० शक्ति ।**—पाँठ, कमर छाती और सब जोड़ों में अधिक बढ़, सुनी हवा अच्छी न लगना, पसना आने से आराम मानूस पड़ना, ( भई टिप्पण के विपरीत ), मज्जीब के लक्षण और जोड़पड़ ।

**पलमेटिला ३, ६ शक्ति ।**—दर्द पर जगह से दूसरी जगह हटता फिर, ( ठीक बलवाना की तरह ), गरम मज्जा में भी नहीं ली लगना, बड़ा और खरब शायु की रचना होना गरम हवा से बढ़ जाना, मुलायम और शीत प्रकृति का मनुष्य, मात काछ मुद का बुरा स्वाद रहना ।

**रेस्टकम ३, ६ शक्ति ।**—आधान कान में सुन्न

और कान का आधान स्थानों का उबड़ का जाना, उन में बढ़न सी जाना, बढ़न का मज्जीब मज्जा जलन का साथ हर घर उसका कारण बहना का मानूस पड़ना । हर के स्थानों को फिर रखन न मज्जा रहित दिखान स हर मानूस जाना बिनु कुछ देर तक दितानन मज्जा सेकने से आराम जाना ।

**सप्तपर १२, ३० शक्ति ।**—पुतल का रोग और

का रोग के पाठ हान वाले बलों के रिजे यह मज्जा मज्जा उलझनी है । मज्जा का ऊपरमज्जा में बलानन मज्जा और उबड़ मानूस जाना, हाथ पैरों में उबड़ होना ।



तरह नौद न मानी हो, तीमरे पहर तीन घंटे  
सौभाग्य दिलने मुलन से दद बढ़ना ।

**ब्राइयोनिया ६, १२ शक्ति ।—**दद के लान

और न मुड़ना, सुद खुमान भयथा काटने क सनात  
होना जोकि सामा य दिलन मुड़ने से बढ़ना, लगे  
चिलकुल खिर रहने की इच्छा करता हो, फू  
का कड़वा स्वाद, सुद सूखा हुआ और अत्यन्त व्याक  
कड़ा और सूखा हुआ मल; रोग यदि और खानों  
छाड़ कर हृत्पिंड के ऊपर आक्रमण करे तो यह नष्ट  
जाता है । इस भयस्था में पक्कानाइट और कायविष  
भी दिय जात हैं ।

**कैमोमिसा ६, १२ शक्ति ।—**दद के कारण रोगी

का पागल का तरह हा जाना और चिल्लाना, गरम पसल  
विशेष कर मलज पर ।

**कालचीकम ३, ६ शक्ति ।—**दद बार बार अग

छाड़ देता हो । (यही हालत में बखडोना और पलन  
दिला भी दिये जाते हैं ) , अग के सामन बैठन पर  
सरदा मा खगना, और बीच बाच में गरमा मासूम हाक  
हाक के साथ खानोंमे राग हृत्पिंड पर आक्रमण कर  
और खानी तथा हृत्पिंड में सुद खुमान तथा काट डालन  
का मा दद हो अत्यन्त खड़ा बड़बुदार पसाना, पशु  
कम उतरना ।

**लाइफोबोटियम १२, ३० शक्ति ।—**रात्रि के समय

और विधाम करन समय दद का बढ़ना, पद और



जोड़ों में घात अथवा सूजन—बेलेहोना, मारपा  
काष्ठचिकम लाइकोपोडियम ।

रोग के स्थान टैड अथवा कटे होजायें—कालिकम, टैड  
सल्फर, रस्टकस, सीपिया ।

घात के सहित पक्षाघात—आयना, रस्टकस, ब्रि  
वाकूलस ॥

सेकने से भारीम मालूम होना हो तो—रस्टकस, का  
चम, लाइकोपोडियम, मकूरियस, सल्फर ।

ठंडी चीज लगाने से भारीम हो तो—पलसेटिका ।

छाना, पीठ आदि स्थानों में रोग आक्रमण करे  
आर्नेक, मकूरियस, मक्सवामिका, रस्टकस ।

कलाई और नगुलियों में दद—कालोफिषम ।

बड़ी हड्डियों के सज आवरणों में (डकन बार्)—मै  
चम ।

सर्प्या समय बढ़ना—पलसेटिका रस्टकस ।

आधीरात से पहिल बढ़ना—आइयानिया ।

आधा रात व पीछ बढ़ना—आसेनिक, मकूरि  
सल्फर यूजा ।

पिछली रात घात-काष्ठ से पहिल बढ़ना—काली-  
मक्सवामिका, रस्टकस, यूजा ।

गरमी लगने से बढ़ना—आइयानिया, पलसेटिका, यूजा ।

**औषध प्रयोग ।—**रोग के शुरू की हालत में

द्वै अत्यन्त प्रबल हो २।३ घंटे व अन्तर से एक  
मात्रा औषध देना चाहिये, भारीम मात्तुम होने पर ४  
व अन्तर से औषधि देनी चाहिये ।



जोड़ों में घात अथवा सूजन—बेलेडोना, ग्राइयोनिज, कालाचिकम लाइकोपोडियम ।

‘रोग के स्थान टेढ़े अथवा बड़े होजाये—काष्टिकम, टैकनिस सलफर, रस्टक्स, सर्पिया ।

घात के सहित पचाघात—चायना, रस्टक्स, काष्टिक ककुलस ॥

सेकने से आराम मालूम होता हो तो—रस्टक्स, काष्टिकम, लाइकोपोडियम, मकूरियस, सलफर ।

ठंडी चीज लगाने से आराम हो तो—पलसेटिला ।

छाता, पीठ आदि स्थानों में रोग आक्रमण करे वा—आनिका, मकूरियस, मक्सबोमिका, रस्टक्स ।

बल्लार और भगुलियों में दर्द—कालाफिखम ।

बड़ी हड्डियों के सव आवरणों में (ठकन वाला)—मैत्राकियम ।

सर्वा समय बढ़ना—पलसेटिला रस्टक्स ।

आधीरात से पहिल बढ़ना—ग्राइयोनिज ।

आधा रात के पीछ बढ़ना—मासॅनिक, मकूरियस सलफर, यूजा ।

पिछली रात प्रातःकाल से पहिल बढ़ना—काली-काष्टिक, मक्सबोमिका, रस्टक्स, यूजा ।

गरमी लगने से बढ़ना—ग्राइयानिया, पलसाटिला, यूजा ।

**औषध प्रयोग ।**—रोग के शुरू की हालत में जब

दर्द अत्यंत बलवत् हो २।३ घंटे के अंतर से एक एक मात्र औषध देना चाहिये, आराम मालूम होने पर ४ या ५

क अंतर से औषधि देनी चाहिये ।



जोड़ों में थात अथवा सूजन—बेलेडोना, ग्राइवोडियम ।  
कालचिकम लाइकोपोडियम ।

रोग के स्थान टेढ़े अथवा बड़े होजायें—कालिफोर्न, कैल्सियम  
सल्फर, रस्टकस, सीपिया ।

थात के सहित पक्षाघात—चायना, रस्टकस, कार्बो  
नाइट्रस ।

सेकने से आराम मालूम होता हो तो—रस्टकस, कार्बो  
नाइट्रस, लाइकोपोडियम, मरूरियस, मलफर ।

ठंडा चीजें लगाने से आराम हो तो—पलसेटिजा ।

छाना पीठ भारी स्थानों में रोग आक्रमण करे तब—  
कार्बोनाइट्रस, मरूरियस नक्सवायिका रस्टकस ।

बलार और अगुलियों में रुद—कार्बोनाइट्रस ।

बड़ी दृष्टियों के सब आवरणों में (दकन बाल)—मैग्नेशियम  
सल्फर ।

सम्प्राप्त समय बढ़ना—पलसेटिजा, रस्टकस ।

मापीरान से पहिल बढ़ना—ग्राइवोडियम ।

मापी रान के पास बढ़ना—ग्रासेनिज, मरूरियम,  
मलफर, यूडा ।

पिछली रान प्रातःकाल से पहिल बढ़ना—कार्बोनाइट्रस,  
कालचिकम, रस्टकस यूडा ।

गरमी लगने से बढ़ना—ग्राइवोडियम, पलसेटिजा, यूडा ।

श्रौषध प्रयोग ।—रोग के शुरू की हालत में ३१

वै अथवा प्रचल हा २।३ घंटे के अंतर से एक एक  
गुला औषध देनी चाहिये आराम मानुस होने पर ४ या ६  
घंटे के अंतर से औषधि देनी चाहिये ।





लगती है । कोढ़ कोढ़ रोगों इस पुराने बात रोग की कारण अगम्य भी हो जाने हैं । पुराने बात रोग प्रवात दुग्ध, रग, कधे, कमर और पीठ आदि स्थानों में होने हुए देखा जाता है ।

**चिकित्सा ।** चिन को बात रोग हो मधवा होने की मधका है उनका अपना शरीर सही और बरसात से आवश्यकतानुसार बचाये रखना चाहिये । बहुत मन बाला मधवा कमरत आदि करना या और कोई काम जिस से शरीर के प्रत्येक अंग को हिंसना छुड़ना पर मच्छा नहीं होता । शराय पीना और मांस भक्षण करना विषकुल धर्जित है । चिनको बात रोग है उनकी दुर्लभ दूर दूरा में घूमने तथा ठंड जल से बचाने का अभ्यास कराना उचित है, जिस से उनकी शरीर शक्ति बढ़ने लगे ।

**केलकेरिया—फार्व १२,३० शक्ति ।—**सब जोड़ों का फूल जाना और वायु व परिवर्तन से दृढ़ बढ़ना, रोगी व वानों पर ठंडे और पनीजे हुए, गडमाता दोषप्रसून रोगा, अमायस्या पूर्णिमा को रोग का बढ़ना ।

**कास्टिकम ११,३० शक्ति ।—**जोड़ कड़े पर जाना और न मुड़ना, उन में काटने का सा दृढ़ होना, नाच व अंग का प्रत्येक धर्मजोर और वेबस सा मातृय होना, सध्या स कुछ पहिले और टट अंगने से रोग का बढ़ना ।

**रस्टकत ६,३० शक्ति ।—**अकट जाने मधवा का



हुछ पायदा न हो ता फिर दूसरी औषधि ठग  
करे ।

## कमर में दान ।

**लक्षण ।** इस प्रकार का दान रोग कमर और

पर आक्रमण करना है । यह अचानक आरम्भ हो जाता  
है । विवृणुल शब्द मनुष्य का भा जो कि मण्डा हा  
में चलना फिरना हा अचानक मुकन में या बैठना  
में शब्द में असह्य दद गुरु हो जाता है । रागी स  
होकर नहीं चलता जाता किन्तु मुक मुक कर चलता है  
और पीठ को ठाक स्थिर रखता है । इस में द  
स्थान पर सूजन या सुखी नहीं होना और न उबरना  
है । यह दद साधारणतः ८ । १० दिन तक रहता है  
कभी कभी २१६ मसाल भी गगजान हैं ।

**चिकित्सा ।—**वेनेडाना ३, ६ शक्ति ।—

अचानक वायु के समान दद पीठ पर फटना, और कुछ  
समय पीठ में दद होना, चर्रा गग और भिर गरम ।

**आडुगोनया ३ ६ शक्ति ।—** पीठ में दान

अथवा शयन मात्वा के समान दद रागी का मुककर  
चलना याड़े में भी दिग्ग में दद का बढ़ना कोष्ठ बढ़ना  
और रोगी का समग्र चिडचिडा होना ।

**मकूगियम ३ शक्ति ।** सब रूध्रों का रात्रि में

हो बढ़ना अथवा वर्मानो हवा या वाद वर्मान में बढ़ना  
अत्यन्त गर्मान होना किन्तु तपमी दद कम न होना ।

**रस्टकम ६ शक्ति ।** कमर में मोच आजाने अवस्था



रोगी अधिक होता है कि रोगी बैचैत और हुनास हो जाता है (कैमोमिला की तरह), अत्यन्त भय और घबराहट घने समय सिरमें दर्द, छात्रि में बढ़ाव और अत्यन्त बचैनी अदि रोगी को यह दवा देना चाहिये ।

**आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।**—बन्नी कमी दद होना, अथवा मरण करने के समान दर्द मानो कोई गरम तुरे चुभोता है अथवा दर्द विशेष कर छात्रि के समय देवानाईट और कैमोमिला के समान ।।

**बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।**—बचक मारने अथवा मरनेके समान दर्द, यह दद निताव अदरी आता है उनतही अदरी चला आता है, शब्द और उताव सख नहीं हाता, सभ्य समय बढने लगता है ।

**कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।**—दद होन के समय पाये पर गरम पर्सान भाव है और रोगी चिखान लगता है, बहुत बचैनी, अरासा बात पूछन में चिड उडना, दद सहन न हात पर पागल का तरह हा आता [ एकोनाईट की तरह ] ।

**कालोमिन्थ ३६ शक्ति ।**—दद अमानत बाया रक्त, पन्ने अथवा कुरी न काटा व समान दर्द । दद रक्त स्नान में हमरे स्नान को दटना यह सा उन से बढ पाये पट पन्न अथवा पच कसने के समान दद, बचैता और घबराहट ।

**नक्नरोमिका ६, ३० शक्ति ।**—दद व स्नान



तो यह रोग हो तो चेकनाइट फायदा करता है।

मेलेडोना ३,६ शक्ति ।—गरदन अत्यन्त लचीली और दृढ़ स वर होता है । मूत्र के नीचे वर और गरदन के बीच गाँठों में सूजन ।

मायेनिषा ६, १२ शक्ति ।—गरदन बडी मौ  
बद हाना, पाडागामी दिजान म बद बडना ।

रसटङ्ग ६, ३० शक्ति ।—अहं में मीगने के कारण यह राग हा और हृदय का ज्ञान का स्थापना दिवस में हृदय का आराम मानुन पड़ तो यह दया का कारण है।

**गडमाला ।**

(फ़ा.पू.त।)

संज्ञा ।—गङ्गायाः धानुगतं रागं हे । इति ।  
 १ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 २ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ३ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ४ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ५ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ६ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ७ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ८ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 ९ । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं  
 १० । न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं न मे ज्ञानं

[illegible]





मांस पर सुख सुजन, अल्प मूत्र (राक्षसीमूत्र) वमन  
गुला हुआ और कामल, चहिरा सफेद सा रंगादि ।

**दीपक सलफर १२,३० शक्ति ।** मज्जायावरण  
के कारण आँखों का मूत्र जाना, आँखों के पलकों से मूत्र  
जल या मवाद निचलना ।

**मर्कुरियस ६,१२,३० शक्ति ।** हृदी, सत्र जल  
और भाव इत्यादि व रूढ़ में तथा रानी व शरीर में वी  
उद्भेद (कुम्भी) और घाय हो ता यह औषध ही  
जाना है ।

**सार्क्लेसिया १२,३० शक्ति ।** माया बडा, माये  
क सब छर मूत्र हुए मवाद हुआ मवाद होकर गुला  
में निम्न दाता (इस अवस्था में मर्कुरियस कैल्सिया  
भागे मज्जायावरण जानाती है) । सब मांस बड़ी होकर गल जल  
हृद्यों में घाय दाता तथा उन का मज्जा जाना, कर्म  
मज्जा वमन और कर्म कर्म निचलना, मज्जा गुला दाता  
निचलना व रूढ़ निर मीनर युग जाना ।

**सलफर १२,३०,२०० शक्ति ।** यह रूढ़ कर्म  
वमन क मज्जायावरण वमन रानी व रिव ही रानी  
मज्जा है । रूढ़ कर्म उद्भेद शरीर में उद्भेद (कुम्भी) है  
व रूढ़ कर्म कर्म रूढ़ मज्जा वमन रूढ़ मज्जायावरण मज्जा  
मज्जा । इस अवस्था में मर्कुरियस कैल्सिया मज्जा  
मज्जा । यह कर्म रानी रानी रूढ़ कर्म मज्जायावरण  
मज्जा मज्जा मज्जा मज्जा, उद्भेद कर्म रूढ़  
मज्जा मज्जा मज्जा मज्जा मज्जा ।



क्षय अथवा क्षयमा ।

( थार्डेमिम पालोमनालिम )

इस का प्रामाण्य भाषा में यह सामान्य भी कहना है ।  
प्रतिदिन यह दुःख और दुःख होना जाता है इसा भी  
इस का अर्थ यह कहना है । यह प्रामाण्य भाषा में  
धर्मी के भाषा में ही इसा में जाता है । यह भाषा भी  
तब यह भी एक प्रकार का भाषा में जाता है ।  
यह भाषा अथवा भाषा में जाता है उभय भाषा में  
जाता है अथवा १५०० वर्षों में जाता है । इसा  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।  
यह भाषा अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा  
अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा  
भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।

लक्षण । यह भाषा प्रामाण्य में अथवा भाषा में  
जाता है कि यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।  
यह भाषा अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा  
(भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।  
यह भाषा अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा  
अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा  
भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।  
यह भाषा अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा  
अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा  
भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।

यह भाषा अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा  
अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा  
भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।  
यह भाषा अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा  
अथवा भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा  
भाषा में जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में  
जाता है । यह भाषा अथवा भाषा में जाता है ।



जाता है । मृत में मौत आकर सब कष्ट दूर हो देती है ।

मा याव को यदि यह रोग हो तो सन्तान का भी हो सकती है । गड़माटा, कफट राग और डराव आदि रोग राज-यस्मा में परिवर्तित हो सक्त हैं । मृत्यु कम उमर में पड़ना अत्यन्त मानासक परिश्रम, दुःसम्पत्ति में रहना जिसमें दुःख न आता जाती है, शरीर में परिश्रम न करना देहका अच्छी तरह न बढना और पुत्र नहोना इत्यादि इस रोग के पैदा होना में सहायता देने वाले कारण हैं । इन के सिवाय, हलैम्युन, अन्धकार, सहायस, बुद्धि और बहुत पास के मात रिक्त में विद्या करना आदि इस के सहायता देने वाले कारणों में से हैं ।

**चिकित्सा ।**—राज-यस्मा जब पूरी तरह हो जाता है तब उसका आराम होना असम्भव है । इस रोग के गुरु होत है आहार आदिका नियम पालन करना और उपयुक्त दार्मियापैथिक औषधि सपन करन से आराम हो मा सक्ता है । रोग के अच्छा तरह दिक्रहा देने परभी यदि उपयुक्त औषधि का पाव ता चाहे आराम नहो परन्तु कुछ बहुत कुछ कम हो जायगा और शरीर बहुत दिन तक जीना रहेगा । अनन्तर लक्षणानुसार तब लिखा दूर दवाइया दनी चाहिये ।

**एकोनाईट ३१ शक्ति ।** अधिक और सूखा साभी कफट से एक निरुत्पत्ति और अधिक होना होना में दद और प्यास । जिसका एक प्रधान धातु हो उस



**हीपर सल्फर १२ ३० शक्ति ।** रोग की पीड़ा

अथवा में यथोक्त के लिये अथवा गंदमाला की प्रकृति के  
रागियों के लिये यह दवा बहुत फायदा करता है।  
मल में घट्ट घडाहट के साथ आसी, आधारात के उग  
रहता, आधारात सही रोग से ही आसा उठने लग  
हथली गमन और गंधा हुए।

**सोर्टिकोपार्टियम २२ ३० शक्ति ।** रोग

आसी उगता गंध से अधिक प्रशब्द निरन्तर प्र  
माणित उगता रहता, रोग में पचता आता, और हर वक  
गंधागंधा हुआ।

**फास्फोरस ३० २०० शक्ति ।** छाती के रोग

आमगात्र के साथ गंधा आसी पचता से बाल  
हमन से आसा बाहर आता से गंधन से हम आसी  
रहता आता। छाती उगता से आता रहता, मल दूध  
साथ निरन्तर।

**ग्लोसिटिला २० शक्ति ।** गमन में गंधा त

मोटा उगता से आसी कम रहता आधन में कम  
और पचता रहता निरन्तर रहता की गमन से आसा  
में रहता रहता रहता रहता।

**सोर्टिको ३० २० शक्ति ।** गंधा आसी ग

गंधन से आता रहता रहता में गंधन से आता  
गंधन से आता रहता रहता है। रहता गंधन से  
है रहता रहता रहता रहता गंधन से आता रहता रहता





**हीपर सलफर १२ ३० शक्ति ।** रोग का बीज

अथवा मैं यद्यो क रिये अथवा गेडमाला की प्रकृति पर  
रागवो क रिये यह दया बहुत फायदा करता है।  
गल में थुड़ थुड़ाहट क साथ खासी, आधारात क उताप  
बन्ना साधारण सरी लगन से ही खासा उठने लगन  
हमारी गरम और गूनी हुए।

**सोडैफायोस्टेयम २२ ३० शक्ति ।** रोग का

खासी उठना गल से अथवा मवाद निरन्तर प्रस  
मान्तर उठ रहा, क रिये में परीक्षा माना और हर मन का  
गेडमाला रहता।

**फास्फोरस २० २०० शक्ति ।** छाती के रोग

अथवा गल क साथ गूना लोभा गरम में बन्ना क  
हमन से बन्ना बान्तर हवा में गुमन से इस लोभा क  
बन्ना अथवा छाती उठ रहा का आता, बन्ना मन ह  
आता निरन्तर।

**वल्मेटिका २ शक्ति ।** रोग में गूना लोभा

रोग क बन्ना से लोभा बन्ना हवा लोभा में बन्ना क  
अथवा गल हवा निरन्तर बन्ना की लगन दी गी का  
में बन्ना गल अथवा बन्ना।

**सल्फर १० २० शक्ति ।** गरम लोभा गरम

गरम क गरम गरम गरम में गरम हवा गरम क  
गरम में गरम हवा गरम क है। गरम हवा गरम गरम  
हवा क गरम गरम गरम गरम गरम गरम गरम गरम

हाना, शरीर सुदृढ़ रहना धर्म देखने में रोगीपना भावना  
पडना मन्त्र में सबद। यरनी भावना पडना हाथ पैरों में  
उत्तम ।

१। शरीर में—पमेला नक्षत्रादिना दैत्यकेरिया,  
नक्षत्रादिना मन्त्रादिना दैत्यकेरिया, नक्षत्रादिना  
मासेनिक ।

२। सासी—फासकारना दैत्यकेरिया हाथोसायेनस (रातमें  
मृगो नामी), मन्त्रादिना [ छत्रा में सुदृढ़ पुनना ] स्तानम  
[ बहुत बक निकलना और रात में पसीन आना ] ।

३। शून गिरना—हमामेनिक, शरीर, शरीर मासेनिक  
फेनस दैत्यकेरिया मासेनिक ।

४। श्यान कष्ट—मासेनिक दैत्यकेरिया ।

५। शान्त शान्त शान्त, शान्त में शरीर उदरामय इत्यादि  
पसिद-फासकारिक, शान्त, शान्त-सन्धर, सम्भूत,  
स्तानम ।

औषध प्रयोग । जब शरीर मयथा और कोई

क्षण प्रद हो तब दिन में ३।४ बार औषध दनी चाहिये  
नहीं तो प्रतिदिन १ या २ मात्रा से अधिक दना उचित  
नहीं । फासकारिक सन्धर, फेनस मासेनिक इत्यादि  
औषधों में से श्यान शान्त शरीर उदरामय इत्यादि तब  
पूछ उनको भेदन करावे क्योंकि इन क औषधों मयथा से  
रोग बढ़ भी सदा है ।

सहकारी उपाय । जिस को रात पटना होने का

सम्भूत किया उ वे उससे बिजय में माने जाने यदि बी  
रोगी साधना की आवश्यकता है । नियमित समय पर



पाण्ट तक पेशाब करना है। और एक एक पाण्ट पेशाब में २ स लेकर ३ ओंस तक रचना यत्नमान रहती है, दोर दोर रोगी ऐसा नी हाता है कि दिन रात में करब ७ पाण्ट से १० पाण्ट तक ही पेशाब करताहै।

**लक्षण ।** पेशाब की रगत फीकी दुग्ध रहना, और भाद मीठा रहना। रागी का प्यास अधिक लगना है। राखमी घुषा, कब्ज दस्त बड़ा और घाटा बमड़े पर मुदकी और शरार दुयना पटना मानसिक अवमग्नता [बमबोरी] कुराह हाक का कम हाना वह दुयल हाना हाथ पैर और शरार में जलन जुड़ का मीठा स्वाद रहना इत्यादि बहुमुख का प्रयत्न रोगी में न है। इस रोग में हिंसाय में पेशाब का मरदान बहुत बढ जाता है। और १-१५ स १० तक हाजिरा है। यह रोग प्रायः बहुत दिन तक रहता है। बहुत कमी कमी यह इतने जार में हल लेता गया है कि हाजिरा का समय में प्राधान कर रहा है।—

इस रोग की ओझा इस के साथ रहने वाला उच्छास अधिक बढ़कर और अवमग्नता का हान है। इन उपरमगी में छाटा घाव अर्द्ध हाजिरा मानसिक कष्ट प्रधान है। प्रोफेशन [पठ में घन] इत्यादि हान में कि न मृगन मारे यह रक्कस एक हानाये है कि दुर्गम मन रोगी है और हान में प्राधान हा जाता है। गुरुत्व में कमी कमी राज्यमान हान हुए न गना उक्त है।

एक बहुमुख और तरह का हान है। उस में बेहतर



**यूरेनियम नाईट्रिकम** ३ शक्ति ।—यह भी इस रोग की एक उपकारी औषध है ।

**लुम्ब्रम्** १२ शक्ति ।—यह भी एक उत्तम दवा है । इसकी प्रधान क्रिया वृद्धि अथवा मूत्रवद् पर होता है ।

**हेलोनिन** ६ शक्ति ।—डाक्टर 'हेल' इस औषधकी प्रशंसा करते हैं ।

बात रोग प्रसन्न मनुष्योंके लिये नेदूम-सम्पूरित अच्छा है । यदि और किसी औषध से फायदा न होता सिनानियम मूल अथवा अथवा सारलसिया अधिक फायदा करता है । इस के सिवाय और और बिनाप लक्षणोंके मनुसार डिजी टलिस, नफमयोमिका, बें-थोरेम, मरक्यूरियस इत्यादि औषधों प्रयोग की जा सकती हैं ।

**औषध प्रयोग** ।—प्रत्येक औषध दिन में तीन बार बार भोजन पर एक सप्ताह तक परीक्षा करना चाहिये । एक औषध से फायदा न होय तो इसी प्रकार दूसरी औषध देखनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय** ।—चित्ता, मानसिक भ्रम, दुःख आदि जहातक होसके दूर रखने चाहिये । प्रतिदिन नियम पूरक व्यायाम [बमरन] करना अत्यन्त आवश्यक है । यदि और किसी प्रकार का व्यायाम महामक तो प्रतिदिन पूरक रहना बहुत जरूरी है । जो लोग कबल बैठ पठ काम करते हैं अथवा बहुत मानसिक परिश्रम या चिन्ता का काम करते हैं यह रोग उनका ही दोषाना है । थाय

दृष्ट बदलना, देह भ्रमण, स्वास्थ्यकर स्थान में निवास और स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करना बहुत आवश्यक है ।

**पट्टप ।** पथ्य का ठाक अवधि होना ही इस रोग की प्रधान चिकित्सा है । भ्रममार [starch] नार्तीय पराजित यथा मातृ मान इत्यादि जितना कम खाया जावे उतना ही अच्छा है । रोग खाना अच्छा है । मास रोग में अच्छा पथ्य है । मिठारे की चितनी चीजें रोगी खिलकुट न खानी चाहिये । दूध खाद जितना रोगी खाये जितना अधिक होगा उतनाही अच्छा है । मांसन निकाल देना दूर भटना होता है । खाने को पालन उसमें से भ्रममार (starch-गेर) । रोगी हाजरा और उम भुग हुने माद की रागी सिगरे जाये तो बहुत अच्छा है । खान की सब चीजें परित्याग करके पालन करे । चिमकी चितना पचाने की शक्ति हो उमक उतनाही और उमा प्रकार खान न खाना चाहिये । रोगी खाने खिलकुट न खाना चाहिये । प्यास लहमन गरम मसाले आदि चितना मुगदित से पचन वाली चीजें खिलकुट न खाना चाहिये ।

**शोध ।**

( द्रूपमी-मुजन )

शरीर के अन्दर किमा रक्त में मणका, चमक के बन्ध करी प्र मणक हाजावे न उम का शोध करे । शोध का प्रकार का हाता है स्थानिक मणका शोध ।

सार्वभौमिक शोथ पैर के तटवे से शुरू होकर धीरे धीरे ऊपरका ओर बढ़ता है और शरीर में सघ जगह फैल जाता है। स्थानिक शोथ शरीर के किसी विशेष पक्ष (गहराई) में ही होता है, और आमतौर पर स्थानिक शोथ के अनुसार इसका भी नाम होता है यथा मलिनार में उल्लिखित होने से मलिनार शोथ, वक्ष (छाती) में उल्लिखित होने से छाती का शोथ, हृत्पिण्ड में उल्लिखित होने से हृत्पिण्ड का शोथ और आंतों में उल्लिखित होने से उदरा आदि कहलाया जाता है।

**लक्षण।**—शोथ का विशेष कर सार्वभौमिक शोथ (का प्रधान और सुस्पष्ट लक्षण फूल जाना है। फूल हुआ स्थान कोमल और पिट गिरा होता है। चमड़ा सफ़ेदना चमकीला पार उड़ा रहता है। फूल हुए स्थान का उगती में दबाने से गद्गा पड़ जाता है और उगली उठा देने के बाद भी थोड़ा देर तक यह गद्गा रहा माना है। भूग फन हो जाती है यदि भी घटन लगती है मयथा बिलकुल ही रहती प्यास बढ़ जाती है प्रातः पश्चात् खाल रगत का और परिमाण में कम होना है। श्वास का आदिष का घटटना कमजोरी और होशियारता उन्मिन्न हो जाती है।

**कारण।**—अनेक कारणों से शोथ होना शुरू होता है। इस के कारणों में से नीचे लिखे हुए प्रधान हैं। शरीर के किसी भी अंग का प्रदाह, शरीर के चरुद [कुसी आदि] का बैठ जाना, उदर आदि रोगों में वास्तविक निती शुरू



दवाओं का अधिक खाना, अधिक रक्त निकलना । पुतना ज्वर और चक्कर के ज्वर के बाद बहुधा शाय होने पर देखा जाता है ।

श्वानिक शायों में उदरी हा प्रधान है । इस रोग में पद सूजना होता है और बढ़ जाता है । सूजन पटक भीत्र क भाग में भारम होकर कमजोर ऊपर का भार बढ़ने लगता है । उदरी रोग में विशय कर बढ़ा हुए भयस्या में श्वास कर उपस्थित होता है रोगी आमांसी से चरकर नहीं सता और शरीर कमजोर हो जाता है ।

### चिकित्सा ।—

१। सार्वभौमिक चोथ—दिग्गीटलिस, एपिस आर्सेनिक आइयानिया, सनगा, एवासात्मम ।

२। उदरी ।—एवासात्मम आर्सेनिक चादना काग्न टिग ।

३। मनिष्क में ज्वर भयय हुआ—हलाबोरस, मरूरि बस, बल्लुआना एपिस ।

४। छाती में ज्वर भयय—आइयानिया, दिग्गीटलिस, आर्सेनिक हरीवारम ।

५। हृत्पिण्ड में ज्वर भयय—दिग्गीटलिस, एवासात्मम आर्सेनिक ।

एपिस, ३, ६ शक्ति ।—गरर क चित्सा श्वान में भयय भय ज्वर में शाय ज्वर क हृत्पिण्ड श्वानों में हृत्पिण्ड का सा तथा उत्पन्न करने काग्न हृत्पिण्ड क और उत्पन्न ।

**प्रांसनिक, ६, ३० शक्ति ।**—तमस्य शरीर विशेष

हर चरु वा शानदी रगत माली या मच्छदी लिये हुए  
पेट भार हाथ पैरों पर भुजन, अत्यन्त कमजारी और दुबला  
एक ऐसा मान्य होना माना गया वा हम मज्ज आयेगा,  
बिना हर रात्रि में, अत्यन्त व्यास, घबराहट, बचैनी और  
गुबु भय ।

**प्रापेनिया ६, ३० शक्ति**—मानो व गन क

बन्धों पर भुजन, हाथों का माली रगत, मूत्र और पेट  
हृदय इन्दि वा जगह पुर शुमान वा वा दद, अत्यन्त  
व्यास भार वा ब कम दाना ।

**चापना ६, ३० शक्ति ।**—चरुता द्यने से एक

हृदय और शरीर मान्य है जिगर और जिर्न वा दान,  
अत्यन्त व्यास बार बार घडा घडा बानी पीना,  
गुद मनुष्यों का रगत हवा आ रगत एक छान क  
वर्तनी हो ।

**कालधिक्रम ३, ६ शक्ति ।**—चरुता शीत और

एक हवा घमडी, गुला हवा भार टडा अथवा रात्रि में  
बनी देहा भार बनी रगत दित घटवना, दाना और  
मैदा रगत होना ।

**डिजिटैरिस ६ शक्ति ।**—अत्यन्त और कम चरुता

एक देहा घ घमडी पर घमडी चरुता रगत होना  
वा शीत रगत भार रगत गुद हृदय रगत दे  
रगत रोगी का भुजन हृदये में हृदय का अत्यन्त

घड़कना और नाड़ी की गति अनियमित, घुग्गु और भड़कोशों की सृजन।

**लैकोसिस १२, ३० शक्ति।**—तिहा, त्रि और इतिपद की पीड़ा के उपरांत शाय, वाय अम्ल की सृजन, उसपर दवाय और सुइ शुमाने का सा ११ अरायु [यच्छ] का जण्ड में इसा प्रकार का दान सहन न हो सपना पेशाब वाला और पाइ, नैद ६ पाइ ही पढ़ना।

**लाईकोपोडियम १२, ३० शक्ति।**—शरीर के ऊपर का हिस्सा गुबला परनु नाच का मग लूय सुना हुआ, एक पैर गरम दूसरा पैर ठंडा पैर ६ पाइ से रहा निबलना, पेशाब कम दाना और उस में बाह्य की तरह लाल रंग का मोथ जमजाना, मद्यपानादक उपरांत राग दान से उपकारी है।

**सल्फर ३०, २०० शक्ति।**—शरीर में सृजन और जण्ड, शरीर में नीलेसे दान, चमड़ा सुका हुआ, पादरी का कारण न रहने परभी घटून बहाव माहूम दाना, (कारिस) इत्यादि चम्म राग, मैडजानेस पीडा दाना यह दवा पायदा करनी है।

**एपसाइनम ३५ शक्ति।** और और मोनो में यदि कुछ पायदा बहा तो यह दोष के बिने यह उत्तम मोनो है।

**फेरम ६, ३० शक्ति।** रोगी के शरीर में लून दान चमड़ा देखन से दसा माहूम दाना माना लून है

हो नहीं, शरीर दुबैल मोचन के उपरांत जी मिचटाना और बच ।

**टेरोविथ ३ शक्ति ।** पेशाब में यदि रक्त रहे तो यह दवा देना चाहिये ।

**ओषध प्रयोग ।** साधारणतः दिन में तीन बार बार औषधि खिटाई जाय तो ठीक है, रोग की बढ़ी हुई हालत में यदि कुछ और दुर्बलता अधिक हो तो तीन तीन घंटे के अंतर से दवा देनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।** सीले हुए घर में रहना बरखा सांझी हवा दवा लगाना निताय धर्म है । घर सूखा होना चाहिये । नीचे धरती में सोना उचित नहीं । यदि स्वर नहीं तो गुन गुन पानी से स्नान कराने में कुछ हर्ष नहीं है ।

**पथ्य ।** हल्का पथ्य देना चाहिये । दूध अच्छा पथ्य है प्यास बुझाने के लिये ठंडा पानी पिनाया जा सकता है ।

**रक्तालेखना ।**

( ऐनीमिया )

शरीर में रक्त का कम हो जाना और उस के पैदा होने का क्रिया में रुकावट हान का रक्तालेखना कहते हैं । रक्त का स्नायविकता और पदा होना कम होकर यह रोग पैदा होता है । रुकावट और मृदु का रक्तालेखना कम महार बहुत रक्त निकालना [यथा अथ यदि रोगों

के कारण] बहुत रक्त स्राव [मासिक घम क स्राव  
मैला गिरना] बहुत दिन तक अधिक पाय निकलना  
पुराना उदरामय अथवा प्रदर उदर, तिहा और त्रिण  
बदना इत्यादि इस के प्रधान कारण हैं ।

**लक्षणा ।**—शरीर हाट साध इत्यादि सन ल  
शुष्क, बहुरा मके जीम बड़ी रक्त शुष्क और क  
माही सून के समान कमजोर रागी कमजोर और बदन  
में रह बरामे में थक जाये और हापने लग, शक्ति  
भूख न लगना दिख घटकना और हाथ पैर ठण  
रहना ।

### चिकित्सा ।

१। बहुत रक्तदि निकलन से रोग की उत्पत्ति का  
घायना एमिड फार्मफारिक परम आर्मेनिक ।

२। मासिक घम कम होने मयवा न होने के कारण  
पल्लसाटिला परम ।

३। मज्जु वायु और मूत्र्य प्रकान न मिलन के कारण  
केरम और पत्रमात्रिका का मकमथामिका । इस अवस्था में  
मेरुप-मज्जुमूत्रिक मज्जुमम औषधि दे ।

४। पुरान उदर के कारण —नदमज्जुमूत्रिक का  
आर्मेनिक ।

**श्रीराम प्रयोग ।** त्रिभ कारण से रक्ताना उ  
लिन हन ना उमा कारण पर हाजि रक्त कर म्वा हन  
थ त्रिभ । प्रति दिन ना कान्वा निम्नका टाक दे ।

**महर्षि उपाय ।** मज्जु मुटी हन हन म  
प्रार्थना त्रिभका ह । मक टाकना परम मयमर्षीय दे ।

निस कारण से खून की कमि उपस्थित हुई हो सब से पहिले उसको दूर करना चाहिये ।

पथ्य । भोजन ऐसा होना चाहिये जो मांसानी से पच जावे और पुष्टिकर हो । इस के लिये दूध 'स' पद कर दोह खोज नहीं है । जो खोज आसानी से पचकर खून पैदा करे वही सुपथ्य कहलाता है ।

## अष्टम अध्याय ।

### मानसिक रोग समूह ।

इस बात का सब जानते हैं कि मनके भाषण के साथ स्वास्थ्य का विशेष संबंध है । मन स्वस्थ रहने से दह भी स्वस्थ रहेगा । ऐसा बहुत स हृष्टान दिय जानकते हैं, जिन में भय, दुःख, शोक, नैराश्या आदि मानसिक भाषणों के कारण मनुष्य मरानक बहारा हागये हैं और सदा के लिये उन का स्वास्थ्य अधरा मन बिगड़ गया है । दह निश्चय से मानसिक और न्यायावक राग आराम हागये हैं ऐसा शायद सबोंने हा देखा वा सुना हागा ।

### भय ।

मरानक भय पाकर ओ सब रोग उत्पन्न हाते हैं, उन में निम्नलिखित औषधें हा जाती हैं ।

एफोनाइट ३, ६ शक्ति । यदि रोगी कापता

रहे और छाती घटकता रहे मन में क्षुब्ध की आदका हा, दह खगन के उपरांत भा मनमें भय बना रहे और किसी

के कारण] बहुत रज स्राव [मासिक घन व सख्त  
मैला गिरना] बहुत दिन तक अधिक पाय निरन्तर  
पुराना उद्गमय, ज्वर प्रदर, ज्वर, तिहा और डिगर  
बढ़ना इत्यादि इस के प्रधान कारण हैं।

लक्षणा ।—शरीर हाट भास इत्यादि सब रोग  
नृत्य शरीर सफेद आम बनी, रक्त शून्य और हाट  
नाही। गूत के समान कमजोर रागी कमजोर और मम  
में रह चरण में थक जाये और हावने लग, शरीर  
भूख न लगना दिख घटकता और हाथ पैर ठण्ड  
रहना ।

### चिकित्सा :

१। बहुत रत्नादि निकलन ता राग की उत्पत्ति हो  
 ध्याना समिद्ध साध्यात्मिक करम आभेनिक ।

२। मासिक धर्म कम होने से गर्भ न होने से कारण  
परामर्श, कम।

३। स्वच्छ वायु और शुद्ध प्रकाश त मिलन के द्वारा  
रक्त और तन्मयिनी का नवमयामिका। इस प्रकाश  
नवम-सत्यगुरु के अग्रजम औरपति है।

४। दृग्गतं त्वत्तु कदाचित् — अस्मात्पुनरीदं वाच्यं  
भाषितम् ।

**श्रीःवभ प्रयोगः।** निम्न कारणेन न समान्यतया वि-  
शेष दूर वा नभः कल्पयितुं शक्ति इत्यत्र दूरादपि  
न भवेत्। अनेन दिने वा काले च विशेषता नैव दे।

[illegible]

## शोक दुःख ।

शोक दुःख जिस प्रकार बेमालूम दिन दिन शरीर को सुखाना है चायद और कोई इस प्रकार नहीं सुखा सक्ता । मन के कष्ट के बराबर प्रयत्न रोग और काई नहीं है ।

शोक और दुःख से बर्बर रोगों की चिकित्सा करने समय ध्यान रखना चाहिये कि उस से मीठी मीठी बाने कर और उस को दिलासा दे । इस के सिवाय तीर्थ यात्रा देश विदेश भ्रमण, रत्न वस्त्र वस्त्रों के साथ निवास सतीष अनन्त कष्ट में प्रवृत्ति इत्यादि बातों से रोगों को सबदा सुगये रहे और उस की तविषय को दृष्टाये रखने की चेष्टा कर ।

## चिकित्सा ।—

**इमोशिया ६ शक्ति ।** मन में भीतर ही भीतर दुःख का दबा रहना, पाश्चात्य स्थानमा मालूम पड़ना सबही बातों में लापरवाही, शोक दुःख के कारण हाथ पैरों में बाध ।

**एनिठ फास्फोरिक ६, ३० शक्ति ।—**त्रिपुण दुःख और अगत में सबदा बातों से उदासीनता और लापरवाही, बात चीत करने की इच्छा न होना ।

**काकूलास ६ शक्ति ।** उदासी, चमक उठना, विषय घर शक्ति के समय शोक के उपरान्त सिर में दह किन्हीं रोगों इष्ट निद्रा की प्रवृत्ति करने के कारण मीठ न बाना ।



तरह दिल से यह डर न निकल सका।

**बेलडोना ३, ६ शक्ति ।** डर लगन से शरीर  
माना दिशत वर बघों का, रोगा छिटकाये और हाँ  
और हाथ बेर पटक मजबूत में भून मरनाय और था  
लाख हुआ।।

**काफिया ३ शक्ति ।** अभिमान छावधिक उ  
जना, कर्मन और मुच्छा नाद विठ्ठल न माना।

**जलभीमानम ६ शक्ति ।** ममानक म  
पाकर अदगाय रागी दीक पागल क समान होजाय।

**ग्रावियम ६ शक्ति ।** भव पाकर बाँध  
मन्त्राभाविन निडा मगल मगना मार मान म  
जन में बज हुआ। बहू श मानना और बजना समान  
मन मून निवृत्त माना। बाद भावति बने म मार  
मे गूठ वावदा न इलगाइ वचना इमानवा शक्ति  
आदि।

**श्रीरंग प्रयोग ।** भावदयकता क अनुसार (१)  
१ घट क मना म।

**मन्त्रार्ग ठपाय ।** रागा का और भाव म मन  
क निवृत्त। रागा क निवृत्त इलगाइ नाद माननिक (१)  
अनन मन्त्रार्ग न ते रागा क भाव निवृत्त कम म  
ने उपन न अरहा दे। उपन क भाव बहूत व बहूत भाव  
मन्त्रा मन्त्रा करना इ वन न।।

## शोक दुःख ।

शोक दुःख जिस प्रकार बेमालूम दिन दिन शरीर को सुघाना है चायद और कोई इस प्रकार नहीं सुघा सटा । मन के कष्ट के बराबर प्रबल रोग और कोई नहीं है ।

शोक और दुःख से अधिक रोग की चिकित्सा करने समय ध्यान रखना चाहिये कि उस से मीठा मीठी बातें कर और उस को दिलासा द । इस के सिवाय तीर्थ यात्रा देश विदेश भ्रमण, शरण बहुत यात्रियों के साथ विवास मनोप जनक कार्य में प्रवृत्ति इत्यादि बातों से रोगी को सदा मुलाय रहे और उस की तद्विषय को बढ़ाये रखन की चेष्टा कर ।

### चिकित्सा ।—

**इम्रोशिया ६ शक्ति ।** मन में मंतर ही मंतर दुःख का दशा रखना पाश्चात्य कालान्ता मान्य पड़ना, सबही चीजों में टापरवाही शोक दुःख के कारण हाथ पैरों में बाण्ड ।

**एसिड फास्फोरिक ६, २० शक्ति ।—**अनिष्ट दुःख और जगत् में सदा बातों से उदासीनता और लपरवाही, बात धीत करने की इच्छा न होना ।

**काकूलास ६ शक्ति ।** उदासी चमक उठना विशेष कर शत्रु के समय शोक के उदयन सिर में दद, किसी रोगी इष्ट मित्र की पुष्पा करने के कारण नोद न आना ।

**लैकेसित १२, ३० शक्ति ।** सो कर उग्र के बादही तबियत सराव और तकलीफ मालूम पड़ना, गरदन के चारों ओर बाइ चीज कस कर बांधने से पुरा मान्द पड़ना ।

**पल्लेष्टिजा ६, ३० शक्ति ।** रोना, उदासना, हर एक बात से तबियत घबरा उठना, हमेशा सुल रहना और जरासी बात से रोपड़ना ।

**औपधि प्रयोग ।** मादयवता के अनुसार दिन में एक या दो बार ।

**सहकारी उपाय ।—**जिस मनुष्य के इश्य में शाइ सताप घुस गया हो उस पर सिवाय धम धमा क और किसी तरह असर नहीं होना । यदि हो तो घन धमा से हा उम क दिल को कुछ हाटस बंध सक्ता है, इस क्षिप शोक दुख और आपद् बिपद् में ईश्वर पर भरोसा करने क ।क्षय ही उपदेश देना चाहिये । सुख को तरह शोक दुख भी ससार का नियम है । लगातार सुख भसार में किसी क भाग्य में नहीं लिता है । यह साधकर और इश्यर विश्वास कर छाती बाधनी उचित है ।

### क्रोध ।

क्रोध के समान पराक्रमी शत्रु और कोर नहीं है । क्रोध क कारण जा राग उत्पन्न हो उनमें निष्प ।ष्टिजन धोखे पापदा करती है ।







पर हाथ रखें, दबने में पाँच स्थल कारण मानून न दान परमा जोर से चित्ताप, तबिय पर सिर उठट पलट और रगड़, उजाळा और शब्द अच्छा न लगे, भाँपें लाल हो जायें, नींद से भवानक उखल पड़े भाँपें फुली हुए हैं भयपा नींद न भाँपें, यदि यह सब लक्षण दिखलाई पड़ें तो मल्लिक प्रदाह समझ कर चिकित्सा करना चाहिये ।

### चिकित्सा ।—

**ऐकोनाईट ३६ शक्ति ।—**रोगकी प्रथमावस्था में

जब प्रदल ज्वर के सब लक्षण दिखलाई हैं, जैसे गरम मूत्रा हुआ घराद, बठिन और ठंड नाडा इत्यादि भारमल्लक में एक आजाय, चहरा लाल हो, अत्यन्त मानसिक घबराहट और मृत्यु भय, नींद न आना, पयना, कपेटें बंद पना इत्यादि दिखलाई पड़ें तो ऐकोनाईट कायदा करता है ।

**नेजेडोना ३६ शक्ति ।—**मल्लक में अत्यन्त छपकन

सिर दह, डाल और उगली भाँपें, चहरा भयङ्कर तथा लाल चमकाळा मस्तक में अत्यन्त गरमा, गल के धमना का बहुत फड़कना, पयना विधान से मागन का इच्छा करना, पास के आदमा का घोंसना, कांठे और मार, रोशनी भार भायाज दिखनु न सुहाय, बार सात समय चमक उठ ।

**घापोनिया ३६ शक्ति ।—**सिर में दह माना फटा

जाता है, रात में पयना, भागन की इच्छा करना, होट सुध हुए बार अत्यन्त प्यास, पिछहुल सिर रहना की

[illegible]

**विशिष्टा १-**

पेयोमार्डेट १८ शक्ति ।—बोल्सी कदवात्मक वे

उक्त विद्या उक्त व सत्यतत्त्व विज्ञान है जो कि नरम गुणों  
द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। इसीलिए यह विद्या ही  
एक मात्र ही सत्यता है, अन्यथा मानविक विद्याएँ  
और शान्ति मय, नीति व आशा दर्शना वाली वह  
जाना इसी विद्याएँ हैं जो सत्यतत्त्व का सत्य  
कल्पना है।

बैलेडाता २८ शक्ति ।—ब्रह्मदेव ६ अक्षर १५२४

તિલ શર, માલ ઓર શર: બોલે શરના માનુર નવા ના  
 અલકાના મનદ મે ૧૨૧ નામ: ૧૧ થી ૫૫ થી  
 શરુ નકલના શરુ ૧૨૫ ન ૧૧ માગર થા ૧૫ શરના  
 પાલ ન બાના થા ૧૦ થી થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા  
 માલ ૧૫ થી ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા  
 થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા ૧૫ થા

प्रायेणिया ३६ शक्ति ।—मिह मे दद प्राया पग

कृता है, यह मैं कहना चाहता हूँ। इसका मतलब यह है कि  
इसके लिए मैं बहुत धन्य, किन्तु मैं यह नहीं चाहता हूँ।



इच्छा करे क्योंकि जरा हिलने से शक्ति, विद्यान पर रोग से बचन करने की इच्छा होना और बचन होना हो सुखा हुआ और कठिन मल बहुत ठिनकना ।

**ह्यायोनायेमस ६ शक्ति ।** तदा और, बहाणा सी में रहना अस्पष्ट बात कहना बचना, एक हा पर टकटका लगा कर देखना अचानक हाथ पैर हिलाना जीभ पर सफेद मैल टका रहना मुहम आग निकलना बह बह करक बचना, विद्यान खिंचना और बमामुर्मे मल मूत्र निकल जाना ।

**ओपियम ३, ६ शक्ति ।—**सुप पड़ना घड़घड़ाहट व माथ खुगट लकर सास लेना, और अंग खुला पचना और टकटका बांध कर देखना चक्का नाभी रोगन का और सुजाभा सुनाइ ज्यादा पड़ना, शोक, अथ अथवा किसी प्रबल मानसिक आघात के कारण रोग मल बाढन बाग और शुद्ध दार ।

**स्ट्रुमोनियम ६ शक्ति ।—**सब शक्ति सुख हा जाना, बचना और भागन का इच्छा करना ऐसा मादूम हाता मानो उर म आग पड़ना है । दाँत किङकिङाता हागे में पाप और फट हुए, दाँतों पर मैल जम जाना टकटका लगा कर एक बार देखना आँखें उज्जला और पलझा मल ।

नरार में यदि उपर्युक्त का दाग हा [ फाटन मातंग हो शुद्ध हा और उस के मध्य गून में बगानी पड़ गद हो ]—महुरियस । गरदन और मलक के पाछ अधिक

६६—टेडीयोरस । मान समय चिह्न उठना—एपिस । मलब गरम, दाया पैर टट और यदि रागी का चम रोग हो—सन्धर । उबर व उपर्यत आर अब बट्टाना या हलीयोरस दिया जा चुका हा—त्रिद्रुम ।

श्रीपथ प्रयोग ।—माचदपचनानुसार २३ घट के आतर से या ३४ घट व आतर स देनी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।— यदि दाध पैर टट मन्दूम पड़े ता गरम पानी बोल्ड में भरकर रोच ह और ग्रागन व लपेट ह । गिर मुट्ठा कर जल वा पही या बरफ लगावे । जल पहा या बपडा गरम न हात न उस का बार बार तर करता रहे । एक बट घावर व शरीर का हवा रख । रागी व द्विब नम्पूष विभ्यास परम माचदप । है । इस लिय निम चमर में रागी हा उस में जार जार स बात करना बहुत चाहमियों का टटना का आना आना, अदवा आर विसा इबार रोपी को विहाना या दला काम दिन से उस के मनका बट हा न करना चाहिये ।

पथ्य ।—तदुदना, बर्गी यदि रहते हन्ता पथ्य देना चाहिये, रीठ दूध दिला जानका दे । प्वात बुझाव बाबप टेरा पाग दाव को दग चाहिये ।

सन्धात ।

( ऐपोप्लेकमी )

मलक में रहत काव होवर अवावक रोग दहाग मिदित २१ मलक हाजान है बट्ट रट

और श्वास का आना जाना यही जीवा का गिर दिखना पड़ता है। यद्वारा रक्त शून्य हो जाता है मुख मांस और मज्जा की घमनों सब रक्त पूरा हो जाता है। उत्तम घटघट शब्द के साथ बहुत धीरे धीरे और बहुत बलवत् चढ़ता रहता है हाथ पैर मुँह व समस्त अङ्ग रहते हैं नाग पुनः धीरे धीरे उठर उठर कर चढ़ता है। इस अवस्था में रागा का आगम नहीं होता, वरत कम उबल जाता उग जाता है और ८८ घट में मर जाता है।

मन्यास मांसरगत मज्जातक मारम उ जाता है किन्तु कभी कभी कुछ लक्षण पहले से भी दिखना पड़ता है जैसे शिर घुमना घसा मांसम होता माना बड़ जरा क बीर माना है, मज्जा में पच प्रकार मानस्य रक्त भाव बोध मांसम होता विद्यमान फिर कुष्ठान में, जीन का जड़ना होता इत्यादि। पचाना बड़ के उपरान्त मांस का राग दन्त में माना है, मज्जा मगध पात्र का मांसम अनिर्दिष्ट मेदिनी भी वै व्यवहार करना, मानसिक रक्त वषाणी या मानसिक गून का मज्जातक बड़ हो जाता इससे भी रोग का कारण है।

**चिकित्सा।—** १। पहिले लक्षणों में मज्जातक, पेचानाइट, बड़ना।

२। राग प्रकाशित होने पर—पेचानाइट, बड़ना, मानसिक।

३। लक्षणों लक्षण पात्र पचाना इत्यादि में—पेचानाइट, बड़ना, मानसिक, कर्तव्य।

मानसिक प्रकाश में ३ आचार्य लिखा है, इस राग में मज्जा ५ मर जाता है। इस उगद दिन दिन और भी बड़ना

लिख चुके हैं उनका फिर लिखना व्यर्थ है । जिन के विषय में नहीं लिखा उनको यहाँ लिखने हैं ।

**एकोनईठ ३ शक्ति ।**—राम का पक्षाघात, बात मुँहसे साफ न निकलना किन्तु मुँहगहर बात बहना । निगलने में असमर्थ बट, नाड़ा पूरा और बटिम किन्तु खरियाम गति नहीं (ठहर ठहर कर नहीं) ।

**बेहोशी ३ शक्ति ।** नटा रहना, बेहोशी और बोल बड़ हाथ पैरों का पक्षाघात [लक्षणा] विशेष कर दाहिनी ओर का [यदि बायाँ ओर का हाता लक्षामस], मुँह एक ओर का टेढ़ा होजाना, निगलन में बट जाना अथवा निगल न सकना, रघने, सुषन और बालन की शक्ति का खोप हो जाना, बेमालूम पक्षाय निकल जाना ।

**आर्निक्का ६ शक्ति ।** मस्तक गरम खरिन शरीर के और और हिस्स ठण्ड, हाथ पैरों का पक्षाघात, विशेष कर बायी ओर जो, बेहोशी और घगड़े के साथ साव्र माना जाना (शोपियम की तरह) आलों का पुनली सुकड़ी हर और गिगाह एक एक, खरा साम, बड़बड़ाहट व साथ पकना, और बेमालूम मल मूत्र निकल जाना ।

**काकूलम ६ शक्ति ।** राम में पहिने सर बड़ और घनमता सी मालूम होगा, पक्षाघात विशेष कर नीच की ओर, मस्तक और मुख ठण्डा गरम जाना पैर ठण्ड ।

**हायोपायेमम ६ शक्ति ।** अयानव गिला कर बेहोशी जाना मुँहसे आम निकलना, मल में एसी

सिनुडन दावि निगला नहीं जाये, मूत्राधार और मूत्र  
द्वार का पक्षाघात, शरीर के मर पड़ने का फडकना ।

**लैडेमिस १२,३० शक्ति ।** स्यास साधदा बाव

ओर का पक्षाघात और हाव पैर मुँह के समान ठंड, हुर  
एक ओर देहा [ येलेदोना की तरह ], गला छूने से सम्भ  
व होना ।

**नक्षत्रोभिका ६,३० शक्ति ।**—रोगसे पहिले मि

धूमना, सिरमें दर्द होना कान में मन्त्राटा होना, मध्या  
ह्नी मिचछाना, नीचे के जायड का पक्षाघात और प्राण  
ही नीचे के अङ्गों का नीचे के मग ठण्डे और निर्वीज जो  
मनुष्य के वद पैडे पैड काम करते हैं और किसी प्रकार  
का शारीरिक परिश्रम नहीं करते हैं, हमेशा भी और ममान  
आदि मिले हुए गरम पदार्थ खाते हैं और नशा करने के  
वद औषध उनहीं के लिये पायदा करती है ।

**ओपिथम ३ शक्ति ।**—रोगी ऐसी तद्रा में बेहाश

सा पडा रह जिस से वह मादूम हा मानो सारा  
है गाँव अधगुली भाव की पुनरा के ग दुर, हाव पैर  
में जायड मध्या सब शरीर मन्त्र के समान पडा पक्षाघात  
माड़ी की गति घारी ।

**ओपिथम प्रयोग ।**—बाँद रोग बहुत बढ़ित हो त

प्रति २० । ३० मिनिट के अंतर में दवा देना चाहिए  
या ५ रागा दवा न निगल मज मादवा का ५१० गाल  
आम पर रख द दवा करत म आव मे आम गाला प  
में लगी जाँगा । पायदा मादूम पदन पर छोडा छोडा  
दर में दवा गानाव ।

**सहकारी उपाय।**—इस रोग से पादित होते ही रोगी को धीरे धीरे लेजाकर गरम निम्नतर पर लिटाये और माथा कुछ ऊंचा करदे। रोगी को ऐसे मक्का में रखे जहाँ सूख ठंडी हवा आती जाती हो। शरीर और गले के सब कपड़े सोल डाले जायें। हाथ पैरों को सेबना चाहिये और सिर पर बरफ रखनी चाहिये या बरफ के पानी की बड़ी बाधनी चाहिये। दवाइयों में पेकोनाइट, बेल्डोना या ओपियम देने चाहिये। जिन लोगों की गदन छोटी हो, रक्त पूणधानु हो, सहज ही में मुँह और आँखें लाल होजानी हों विशेषकर यदि वा घैठ रहत हों उनही को यह राग अधिक होता है। ऐसे मनुष्यों का चाहिये कि नशा और गरम ममाल आदि मिल हुए पदार्थ खाना बिल्कुल बन्द करदें। उनको चाहिये कि यदि वे मांस मछली आदि खाते हों तो यह भी छोड़ दें और बेबल अन्न हा मोचन करें। प्रतिदिन ठंड पाना से स्नान करना और खुली हवा में टहलना उनके लिये परम आवश्यक है। उनको प्रातःकाळ स्नान करने में आलस्य कदापि न करना चाहिये।

**तापघात।**

**(सनस्ट्रोक)**

प्रायः लोग इस को सर्दी गर्मी कहते हैं। मस्तक में सूर्य की प्रबल गरमी लगने से यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोग का बहुत से लक्षण मभिन्न प्रदाह का समान है। कभी कभी पहिल सर्दी वा कपकपी लगती है। इस के पाछे माँह। पूँख और भरी हुई छ्पर लपकन, सर दद

जड़ों का स्पर्श, गिर गूमना और गिर में होरिखोरा  
बनायी और साधारण कमजारी आदि लक्षण प्रकट  
होते हैं। यह रोग प्रायः गरमा के दिनों में ही होता हुआ  
दृष्टा जाता है।

### चिकित्सा ।

**एकोटाईट ३ शक्ति ।** यदि रोग में तेज  
भूत होने के कारण स्पर्श बढ़ता, लक्षण, गिर ही, और  
अल्पकालीन उभेजना।

**वेतडोना ३, ६ शक्ति ।** तेज गिर रोग और मांसक  
मांस होने, मांस प्रकट करने जाता है, गिर लक्षण  
में बढ़ता और बढ़ा में बढ़ा मांसक हो जाता प्रकट रूप में  
रोग का निदान करने के लिये आकरा के रोग उदर  
आन के गिर गूमना आदि में रोग, गरम और उदर के  
बीजा कमता।

**घ्रायोनिषा ६ शक्ति ।**—रोग में रोग का  
का दृष्टि का कारण। सामान्य दिना में भी बढ़ता रूप  
बढ़ता। सामान्य दिना में भी बढ़ता रूप  
का रोग और बढ़ता रोग मांस का रोग हो।

**गोत्रोत्पन्न ६ शक्ति ।**—गिर में बढ़ता रोग का  
मांसक रोग का रोग रोग रोग रोग में मांसक निदान  
का रोग रोग रोग, रोग रोग रोग रोग रोग रोग  
का रोग रोग

**हर्ष योग्य ६ शक्ति ।**—रोग का रोग रोग रोग

पर भी लड़ावाच और सर हट रहना ।

**विराटूम विरिट ३ शक्ति ।**—शरार की गरमी के साथ लगातार अतिमार ।

**औषध प्रयोग ।**—मद्यान्न यह रोग उत्पन्न होने पर जब तक आराम न हो लगातार १५।२० मिमिट के अन्तर से दवाई देनी चाहिये । कुछ पायदा हीसन पर घोड़ी पर बाद दवा देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—आ उपाय अस्तक मदाह और सम्वास राग में छिन्न हैं यथा सिर पर बरफ का पट्टी बांधना आदि यही इस राग में भी करना चाहिये । घाटा घाटा टूटा पानी पीने के लिए दिया जाय ।

**पक्षाघात ।**

( पैरेसीसिस )

शरीर के किसी अंग की अनुमय शक्ति अथवा सत्ता एक शक्ति ( मालूम करने की और हिलाने का ) जाता रहता उसको उस अंग का पक्षाघात कहते हैं । पक्षाघात माय अथानक का आरम्भ हुआ जाता है, किन्तु कभी कभी पहिल से भी उसका कुछ लक्षण दिखालाई पड़ने लगते हैं । जैसे सर हट भग का अन्धानक फड़कना इत्यादि । यह राग कभी शरार के एक भाग, कभी सिर्फ नीचे के भाग में ही होता है । मस्तिष्क या पृष्ठमस्त्रा के विगड़ने का यह पक्षाघात होता है । जिन अंग में पक्षाघात होता है जमण यही अंग कोमल और पतला पड़जाता है ।



कमी २ ऐसा भी होता है कि सपूर्ण पक्षाघात में हाथ  
शिथिल हाथ पैर कापने ही लगते हैं ।

## चिकित्सा ।

१। शरीर के एक ओर का पक्षाघात—वेराग्न-कर्ण,  
नवमयोमिका, काकुलस कार्निका, [ विशय का बाया ओर  
का ] देखा जाता है ।

२। शरीर के बीच के भाग का पक्षाघात—काकुलस, कार्न  
ग्रामेटम अत्रोन्टा-माइट्रिज, कामकारस, गुम्बस रक्तम  
कालाटिम् ।

३। पक्षों का पक्षाघात—जेर्सीमिथ, बेहडाना उरुमाथ,  
गुम्बस ।

४। मुख का पक्षाघात—एरानाट् मधवा एरुकार  
और अलर्मीमीनम पण्यावम स [ नये राग में ], बैराट्  
काय कार्निटम [ मुख का सही लगन से ] बड़ाई  
देखा जाता है ।

५। माथ के पक्षों का पक्षाघात—अलसामीनम काय  
अटिवा बरुडाना, इरुमातिथम ।

६। डेर्माटिवा का पक्षाघात—रक्तम आनका ।

७। साधारण पक्षाघात—कामकारस बैराट्-काय  
काकुलस कार्निथम बरुडाना, गुम्बस, अत्रोन्टा-माइट्रिज अलस  
मिनम ।

८। हिंदी देश के सामान्य पक्षाघात—इरुडिवा [ मधव काय ]  
काय मागम बरुडाना काकुलम ।

९। बाय के सामान्य पक्षाघात—काकुलस एरानाट् [ नये  
राग में ] कार्निका माकर [ गुम्बस राग में ]

देखे जाना ही शक्ति ।—मग्नस में एरानाट्

मुद्ग का पक्षाघात, मुद्ग के एक ओर का पक्षाघात, दूसरी ओर सांवट, मूत्राधार का पक्षाघात, अपने आप पक्षाघात निकल जाना ।

**कास्टिकम ६, १२ शक्ति ।**—मुद्यमडल, जीम, अथवा शरीर के एक ओर का पक्षाघात । यात्र अथवा और किसी प्रकार के उद्गद(पुन्नि)पैठजाने से यदि पक्षाघात होतो यह दवा देनी चाहिये ।

**हल्कामारा ६ शक्ति ।**—सर्शो लगने से और पुन्नि पैठ जानने यदि रोग दाबद दाघ पैर और जाम आदि का पक्षाघात, जिस दाघ में पक्षाघात हो वह वर्ष व समान ठण्डा ।

**जेलसीमीनम ६, १२ शक्ति ।** दिलने की शक्ति न रहना तथापि अनुभव कालि का वस्तुमान, माघ के पञ्चों का पक्षाघात ।

**इमेशिया ६, ३० शक्ति ।** अत्यन्त मानसिक आघात और रोगों व पाप पैठकर रात्रि आगरण के उपरांत । रात्री व मन मन में अत्यन्त दुःख ।

**नक्षत्रोमिका ६, ३० शक्ति ।** भिरघुमता, बहस और दाघ पैर आदि का आग्नि [घोटे अक्षरा] पक्षाघात । स्मरण शक्ति की दुष्यता आलों के सामन धधकार और आलों में छोट से बजना, आमाविष कोहरदना की प्रकृति, शराव पीने पाला और जो सबदा गरम नसाटे भदि जाना हो ।

**औषध प्रयोग ।** नया दालन में २३ घटक प्रा  
से औषधि सेवन करनी चाहिये । राग पुग्ना पड़ान पर  
एक मात्रा रोज के हिमाय म एक मत्ता तब दवा नती  
गान्धि । इसके उपरान्त कुछ दिन बाद एक  
यदि इस म कुछ कायदा दिखलाइ न पड़ ता और ब  
औषध दर्न चाहिये ।

**मूर्च्छा ।**

**[ फेन्टिंग ]**

अन्य कारणों से मूर्च्छा हो जाती है । गिरने से, घट  
पतन से अथवा कुछ और नाक से अत्यन्त रुध अथ  
बहुत लाली से अथवा दूर जाते में नहीं कि दवा गिरा  
गई हो । बहुत से जिनका आन्तरिक दुखता होता है  
कम कम दवा तथा पक्का मारना या फाँड़ में नीम  
लगाना आदि दवा कर मूर्च्छित हो जाते हैं । अगुनी  
तुलसी वगैरह में दवा रखकर दमन से गरमाइ मूर्च्छ  
दवा होता पर काम लगा कर मारना या दिखी घड़न मुर्छ  
पाना मुर्छ काम नाक दवा रखने से कम पर काम  
जमान और माहबेफम रूठ लगाते से उसका धीरे धीरे  
लिपता आदि मात्रा से लगाने से मूर्च्छा हो होता है  
इस विषय दिख प्रामका है ;

मूर्च्छा मारना से कुछ दूर जान में होता है उसे  
बुझना । इसके उपरान्त दवा लगाते मार कर  
से मार करने से दवा दवा दवा दवा दवा दवा दवा  
मार् ११ नम दवा मुर्छा । यदि काम मार प्रामका

में ठंडे पानी के छाटे लगाए चाहिये और कपूर का मरक सुघाना चाहिये ।

जब रोग का कारण माहूम होनाये तब नीचे लिखी दुर औषधों में जो उचित समझ में आवें दी जाना चाहिये ।

यदि डर लगकर मूच्छा आइ होता लक्षणों के अनुसार एकोनाइट या आपिषम ६ ३० शक्ति ।

गिरनाम से भयवा किसी तरह घाट लगा स मूच्छा आइ होना मार्निवा ६ शक्ति ।

यदि रक्त छाप भयवा और किसी प्रकार के पदार्थ के शरास से निबल जाने के कारण मूच्छा आगइ होतो घायना ६ शक्ति ।

बोध भयवा शोक दुःख इत्यादि के कारण स यदि मूच्छा आगइ हो तो कनोमिला या इमेनिया १२ ३० शक्ति ।

यदि किसी आन में असह्य दद होना कारण मूच्छा हो तो एकोनाइट ६ शक्ति काकुलस या कनोमिला १२ शक्ति ।

यदि सामान्य दद के कारण ही मूच्छा हो ना हीपर-नलकर ३० शक्ति ।

मूच्छा होने के पहिले यदि सिर घूमता हो ना वैमागग १२ या हीपर ३० शक्ति ।

**औषध प्रयोग ॥**—रोग का अवस्था के अनुसार अब तक आराम न मानूँ हो १५।२०।३० मिनट के अंतर से उठन विचार कर एक एक मात्र औषध देना चाहिये ।



अक्सर देखा जाता है कि घाय अच्छा होजाने के उपरान्त रोग उपस्थित होना है । रोगी की जीम के नीच छाल दिखलाई पड़ते हैं ।

सब शरीर में बेचैनी और मनमें उदासी यही रोग का पहिला लक्षण है । रोगी उदास और चिंतायुक्त हो जाता है । अच्छी तरह निद्रा नहीं आती, हेश और भय देने वाले घुरे स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं । इस के उपरान्त गल गली में खराबी माजुम होता है, जल अथवा और कोर पतखी घाजें पीन में ऐसा मालूम होता है मानों दम अटकना है । कोर पतली चीजें पीन में बायठे आने लगते हैं । स्वर गली और गल गली क बायठे से हा इस रोग की उत्पत्ति है ।

रोगी का गला प्यास के मारे सूखा जाता है तथापि कुछ पिया नहीं जाता, यहातक कि किमी पतखी घाज का प्यान भी आन से बायठ आने लगता है ।

रोग बढ़ने के साथ बकना, घोरान या कुछ कुछ मति भ्रम भी दिखलाई पड़न लगता है । सब शरीर में बायठे आने लगन हैं । रागी यहा तक आत्यधिक [ क्षिपकीन ] हो जाता है कि शरीर में दया लगन, दाद हान राशना भादि से भी बायठ आने लगन हैं । बहुत सी लार निक्कली है मार मुह से बहती रहना है । नाडी की गति क्षीण और तेज शरीर का उल्काप १००/१०३ तक हो जाता है । प्रबल आक्षेप क कारण श्वास रुकने से या कमपोरी से क्रमशः रोगी का मृत्यु हो जाती है ।

**चिकित्सा —**

लक्षणों के अनुसार बेलडोना कैथेरिस्, हारडोफोसिन्स,



**सहकारी उपाय ।**—जिम जगह फाट गया हो उस स्थान में फौरन ही चारा लगा देना, अच्छी तरह धोना, या किसी जला दमवाली चीज से जलादेनी चाहिये । प्रायः मर के फाटने में जो उपाय किया जाता है इस में भी वैही है ।

## धनुष्टकार ।

### (टेटेनस)

धनुष्टकार दो प्रकार का होता है । एक प्रकार का धनुष्टकार खुन दिगड़न से अथवा घातु की अपेक्षा मरता होने से होता है । इस प्रकार का रोग अधिक सांघातिक नहीं होता । स्नायु विघाम की दुर्बलता, श्नु सुख अथवा शरीर के और किसी स्वाभाविक स्त्राव के बंद होने से, अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करने से और मस्तिष्क रोग होने के कारण यह रोग उत्पन्न होता है ।

दूसरा प्रकार का धनुष्टकार थोड़ा लगन से अथवा कहीं थोड़ा सा बट जाने से उत्पन्न होता है । इस को आभिघातिक धनुष्टकार कहते हैं । इस प्रकार का धनुष्टकार हा अधिक सांघातिक होता है । शरीर के किसी अंग में थोड़ा लगने से उस अंग का स्नायु बट जाने के कारण जो उत्पन्न होती है वही इस रोग का कारण है । सामान्य काम से हाथ पैर बट जाने से, काटा खुम जाने से, दात उखाड़ने से, और कान छिड़ाने आदि सामान्य सामान्य कारणों से भी धनुष्टकार रोग हा जाता है । थोड़ा लगन के बाद साधारणतः चार दिन से लखर २ मिन के भीतर ही रोग हा जाता है । यह धनुष्टकार साधा निश् होता है । थोड़ा लगन के बाद २ दिन बिदल जाने



पर और रोग उपस्थित होने के १४ दिन बाद फिर तब भय नहीं रहता । वध्या पैदा होने के समय जो धनुश्चक्र होता है वही सब से असाध्य है ।

**लक्ष्मण ।**—जब रोग आरम्भ होता है तो गायन और जायडे बड़े पड़जाता हैं और उन में दह दाने लगता है । जीम बाहर निकलने और बात कहने में कष्ट मालूम पड़ता है । क्रमशः जायड बटफ जाते हैं और निगलने में कष्ट लगता है । जैसे जैसे रोग बढ़ने लगता है जायडे भी कुछ हजाते हैं । रोगी ठहर ठहर कर जोर जोर से हाथ पर खींचन लगता है और बड़ा कष्ट पाता है । यदि रोग साधारण है तो जायड अट्ठी अट्ठी और अधिक भाग लगते हैं, दाती बिल्कुल बढ़ हो जाती है, भ्यास दह जाता है और अन्तमें या तो कमजारी से या भ्यास बढ़ होकर वस्तु उपस्थित होजाता है ।

### चिकित्सा —

**एकेनाईट १,३ शक्ति ।**—नाडा बठिन, मरी कुआर तब भय और जी घबराना चहुरा एक बार हाक और एक बार फाका होना, ठंड पसीने से शरीर भर जाना ।

**आर्निफा ६ शक्ति ।**—यदि छोट लगने से रोग दान का माशुका हा और सब शरीर में दह होना या दया दना चाहिये ।

**वेलेडोना १,३ शक्ति ।** गल में सिङ्गदन माह्रुष दाना दाना बढ़ दाना मुह टटा पड़जाना और भाग

निश्चयना, धानी पीने ही पीयेते थान छपना पीठ बड़ी पड़ना ।

**हायोसायेमम ई शक्ति ।**—शरीर वाछ की घोर धनुष की तरह टूट हो, शरीर का चहल भयंकर बिगड़ा हुआ, मुहमे थान निश्चयना गल में सिपुटन मादूम दागा रभी ॥ निश्चयना कुछ भी विशेष कर शरीर में निगल रहना, मधानक हाथ पैर पड़ना, भयना समथ और शरीर पीन के बाद बड़ना ।

**इरोशिया ई शक्ति ।**—गहरा और पीठ बड़ी और छप में पूर्व, चंदरा उबाली रन की रचना विनु गुरु म सुलगा, गुरु म भीतर भाभा एव गांठनी बड़नी रहै । शरीर में मन मन में कुछ रहना रीति रन हा मधवा दिगन मुग्धने से ही शान बड़ना ।

**नरुयोमिका १,३ शक्ति ।**—उर वाछ बड़ने रने और रद पीठ की चार टटा हा आव निगलने में बड़ हो, गल की गली बड़ की माग्य हो पाकाशप में बांधे मन बासा बड़, कलन बाधबड़ना, राना बड़ना । बड़ बिदा, जो शान कमिगयाली बड़ाद कान वा । मान रैन मादि सब बाझों में निदम शान नही कान उबव निद ही रद बड़िद बड़ोली है ।

रन क निदम वृद्ध निदम केनीला निम केनीदम, केनीला नरुयोमिका नरुयोमिका यदि माधों को भी रदनों के काना काना रन हो सदा है ।

**औरदप्रयोग ।**—रन कान रन ही नरुयोमिका

की हैं औषध माघे अथवा एक घंटे अंतर से या अथवा  
के अनुसार १५, २० मिनट के अंतर से भी दी जा सकती है।  
३. राम मात्स्य पडने से दवा की मात्रा कम करना  
चाहिये।

**सहकारी उपाय ।**—यह रोग कठिन होता है

इस लिए बहुत होशियार चिकित्सक भी इलाज करना  
चाहिये। कील चुभकर, काँच या और किसी चीज से  
कट जाने पर विशेष कर पैर के तल्ले में घाव हो  
जाती गुलाब तेल देना चाहिये। यदि इस प्रकार का घाव  
हाना चोटपुला लोशन [एक आउंस घामा में २० रु  
मिलाकर] से उसी समय चोकर इसी लोशन की पूरी  
चाप दी जाय। यदि ऐसा घम हो कि काँटा, काँच का  
टुकड़ा, बकड़ा या हाड की पास यदि कुछ भीतर घावमें  
रह गए हों तो उसको उन्नी समय निकाल डालना  
चाहिये। रात के समय अरुद्ध [पीठ की हड्डी] के ऊपर  
गुरु बरफ रखन से शीघ्र का रियबाद पडता है।

**मृगी रोग ।**

**[एपीलेप्सी]**

इस रोग के प्रधान लक्षण यह है कि मनुष्य अचानक  
बग़ाय हुआकर गिरझाना दे और बायट अन्त लगन है। कभी  
कभी राग भव हुआ मिरहद और मिर घूमना, कभी में मरना  
होना मजक कर्म कर माराज मरुन पडना चररा रक्त गुलाब  
हाथ की बड़ी टण्डा हड्डा की चर मिथना रक्त  
उदय मरना दान है। किन्तु बहुतो रोग के बाद

पूर्व लक्षण दिखलाई नहीं दकर रोगी मगन व  
मूर्च्छित हो जाता है, रोगी को तब होश नहीं रहता ।  
घट्टा और माँख बिगड़ जाती हैं, दाँत किड़किड़ाने लगते हैं, मुँह से  
घाग निकलते हैं, हाथ पैर छिन्न लगते हैं, भ्वास बह  
होता है और कभी कभी मलमूत्र भी अपने आप निकल  
जाता है ।

प्रायः रोग का आक्रमण ५ मिनट से लेकर २० मिनट  
तक रहता है अथवा कभी हम से अधिक समय भी चल  
जाता है । रोग का आक्रमण दूर होने पर रोगी को नींद  
आती है और जब जगती है तो टीक सुखमनुष्य की तरह  
बैठेठता है । किसी किसी का कुछ दिन तक कमजोरी  
रहती है, शरीर गिरा पड़ता है और सिर में दर्द रहता  
है । इस रोग से प्रायः मृत्यु होने नहीं देखा जाता किन्तु  
रोग के बारबार आक्रमण करने से रोगी की मानसिक  
वृत्ति अत्यंत दुर्बल अथवा विनष्ट होजाती है ।

मूरी एक धातुगत रोग है । ऐसा देखने में आता  
है कि यदि यह रोग पिता को हो तो पुत्र को भी होजाता है ।  
इस रोग के उद्दीपक कारणों में निम्न विधित प्रधान है —  
पथा प्रबल मानसिक आघेन भय, दुःख प्रायः आदि, अत्यन्त  
मानसिक परिधम, अत्यन्त खा सहवास या हस्त मंजुन,  
शरीर का कुर्सी बैठ जाना और नशीला चीनों का सपन  
करना ।

चिकित्सा ।— जिस समस्त रोग आक्रमण केंद्र ऊपर  
नाम के दातों के बीच में एक डुब्डा तन्म गड़डा या  
एक पाद लगा देना चाहिये जिस से दातों के बीच में बाहर  
।।।।।।।।



मानसिक चिन्ता और पश्चिम छोड़ देना अत्यन्त उपयोगी है ।

## मूर्च्छागत वायु ।

### (हिम्टोरिया)

**लक्षण ।—**यह रोग प्रायः स्त्रियों को ही होते देखा जाता है । रोगी चित्ताशा दुःखा अथवा चिन्ता दुःखा का संक्रान्त है—प्रायः भोजन द, दाप और नीचता के पटवता है । भुद से भाग निरलने हैं और सोल हाताता है । बसा बसी मूर्च्छा होते हात पटोय जाता है ।

### चिरिस्ता ।—

**कैम्फर ।—**मूर्च्छा के समय यह भोजन नहीं है, बिठेकर की दादी में नहीं मान्द्रम हो । हो यह रोगी क भाव अथवा रवटी गोली १५ । २० यह क अंतर से मूर्च्छा के समय देनी चाहिये ।

**मन्कस ।—**मूर्च्छाके समय केम्फर के रस में यह भी जाता है । इस को पिगने भी हैं धार रोगी की नाव क राम भर सुजात भा हैं ।

**इमेनिया ६, ३० शक्ति ।—**यमा वायुय हो मानों में कुछ निष्ठा पटना है भाग यह और गला रसा का मान्द्रम हाव बिगने में यह पचपट्ट दुःखा र उदात होना ।

**नक्तस्योमिका ६, ३० शक्ति ।**—रात में तन से  
के उपरात नींद न माना, किंतु ५ बजे के उपरात सुता  
लगता, काष्ठयद्धता, कड़वी डकार, पट पूछा इम,  
दिचका, सिर में दद, पाकसली में दद, अनु की ना  
यम । इस औषध का कुछ दिन सवन करा कर फिर इस  
पदल सत्कर बना चाहिये ।

**पलसाटिला ६, ३० शक्ति** —यदि जरायु समशी  
कुछ गडबड हो और अनु पद हाकर पाडा हाना या  
औषध पावदा करता है । उदरामय व्यास न होना, दन्त  
की उल्टी, जरायु में दद । इस क उपरात सेराता  
मध्या साहसिषा दिया जाता है । जा स्तिषा मुलायम तविषा  
और जलद रागसली हानी है तथा माटी होना है या  
उनको अधिक पावदा करना है ।

**हमसा धिमित रहना**—इमशिषा नक्तस्योमिका । उदात्त—  
पलसाटिला । भ्याम कष्ट—कैकेरिषा इमशिषा । मनेश—  
जेठनामानम, मकम, इमशिषा । बायट क लिय—सिक्कू  
इमशिषा । सिरस्—इमशिषा गुाटिता । अनु भार जरायु  
के कारण—काटुलस, इमशिषा पलसाटिला गुाटिता,  
सापिषा ।

**सहकारी उपाय ।**—रमे किसी काम में रोगी को  
तविषन लगाय रखना चाहिये जिस से उस का  
तविषन बढ़ना रहे । मान्य इस राग क लिय  
दिक्कू पत्रित है । कमा कमा नेगाटन करना  
और इसी प्रकार तविषन का बढ़ाना बहुत जरूरी है ।  
न तरह का [ एन मगरन ] विनामिना उत्तेजक मात्र

ऐसी पुस्तक पढ़ना जिससे मनमें विकार उत्पन्न हो, दिलगी और गपगप उठाना बिल्कुल निषिद्ध है । साधारण स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये । ठंड पानी से ध्यान, नियमित परिधन, स्वच्छ वायु सेवन इत्यादि जितने स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियम हैं सबका पालन करना बहुत ही जरूरी है ।

मूर्च्छा व समय करने का कोई कारण नहीं है । धातु, मुट्ठ और छाती पर ठंड पानी के छौंटे छगाने चाहिये, और ऊपर लिखा हुए इलाक़ों पर दबाव करना चाहिये । रोग व बहुत पर कुछ ध्यान न देकर यथोचित सेवा प्रशुषा करना उचित है ।

हमारे देश में हिन्दिस्टीका को घूम से भूत चुटेल आने से आदि समस्तकर विचित्रता करने लगत है । यह सब बेपर्वा मात्र घूम है ।

## गिर पीडा ।

### (हेठक)

यह रोग जाना साधारण है कि इसका विलार कुछ समय करना प्यथ है । यह मात्र दिमा घातुगत रोग का उपसर्ग अथवा लगन मात्र होता है । सही अधिक होने से सही के कारण गिर हद पाच्यदाय के साथ के कारण पचासदिह गिर पीडा किया व रज प्राय ॥ गहरा हान से आ रोग होना रज होय अविन गिर पाडा, वगु रोग अथवा अवज्ञा होय के कारण आ हद हानो अथोपिक गिरपाडा, जान रोग हान के कारण हाना वास्तव गिरपाडा, उत्पत्तों व माय हान से मयन गिरपीडा इत्यादि कुछ ऊर्दी अथवा मार हस्या



से एक ही रोग जुदे जुदे नामों से पुकारा जाता है।

**एकोनईट ३, ६ शक्ति ।—**अवसप्रकार [ सुय [ देने वाली ] प्रवृत्ति शिर पीडा, खोपड़ी में थोका और भ्रम पन मानुम पड़ना, ऐसा मानुम पड़ना माना मस्तक सारंग से बाहर निकल पड़ेगा, बैठे बैठे उठो पर शिर घूमना, सही दिश की उल्टी और मृत्यु भय, इतना बुरा हाव सदा होसक और उसके कारण दशाश होजाना ।

**आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—**किसी समय पर शिर भ्रम दद होना, मस्तक में अत्यन्त थोका मानुम पड़ना, शिर पर कपाल में घबके चलने क समान दद और ज मिचलाना, बड़ जोर की उल्टा विशेष कर ध्यान पीन उपरात तेज प्यास, बार बार थोड़ा थोड़ा जल पीना पड़ेनी, कमजोरी और मृत्यु भय विभ्रम करने से द शिर पड़ना और चलने फिरने से कम होना ।

**वेस्तेडोना ३, ६ शक्ति ।—**इन्डियो क साथ शिर दर्द ऐसा मानुम हो माना शिर पट आवेगा, मस्तक में का अधिक्ता और गरदन का धमनियों की लपकन, प्रवि लपकन के साथ दद, विशेष कर कपाल में जिस से दद दद रहनी पड़े, मस्तक क धादिनी बार उद करने क समान दद, शिर घूमना और शारीरिक अवसन्नता तथा याचों के आगे अंधेरा दिखलार पड़ना, पित्त दलम्भा क सुधा पदार्थ उल्टी में निकलना, तेज उज्जावा अथवा गडबड सदा न होना ।

**ग्राइयोनिया ६, ३० शक्ति ।—**सुषुप्त जगत ही मि

दद शुक्र होना, सिर में इतना दर्द होना जिस से कि सिर फटा जावे, इस दर्द का माया नौचा करने समय या चलन समय बटना, चुपचाप बैठे रहने की इच्छा, उठ कर बैठने से शरीर सुन्न होना और जी मिचलाना, खट्टी या कड़वी उल्टी, कठिन सुप्ता मल ।

**कैलकेरिया काठ्व १२,३० शक्ति ।**—पुणानासिर दद का रोग, सिर में ठडक मानुस पडना, दोनों पैर ठडे माना गीले मांसे पहिम रख्य हैं । सिर में पियास, सिन्ही चढने से सिर घूमना, छतु समय स बहुत पहिले खाना, बहुत दिन तक उदरना भार अधिक ।

**कैमोमिला १२ शक्ति ।**—सर्ही के कारण सिर दद, कपाल में तज दद, एक कतपटी लाख और दूसरी कीकी, कड़वी पित्त मिली हुए उल्टी, शुक्र में दद इतना तेज नि सहन न हासके, बहुत रबमी, फाद यान पूछने स चिड कर घुरी तरद उत्तर दना, तजटाव दन वाला रज शुक्र [ मामिब घम के समय कमर तथा गलों में दद ]

**काफिया ३ शक्ति ।**—सेवी सदन ही में चिड उद पसा मानुस हो मानो मस्तक में काल छेदी जाती है शुकी हुए हवा में बटना, पसा मानुस हो कि मस्तक बहुत छोटा है । [ यदि येना मानुस हाकि मस्तक बहुत बडा है ता नकमयोमिका ], पीद न याना, सदा डरार ।

**इमेशिया ६,३० शक्ति ।**—कपाल में दद, सान से कम होना, येना मानुस हो मानो मस्तक स एक ओर भाबर से बाहर की तरफ बाह बलि उदता है, रागी [३१]

के मन में दुःख भरना, कोष्ठवृद्ध और काय निकृष्टता ।

**इपीका द्दशक्ति ।**—उपकाह और वटिदियों में अधिक प्रयोग होता है । सिर सुजातेही उल्टी होना, इसी, रोग का पतला मल ।

**लैकेसिस ३० शक्ति ।**—सिर दह, रग में दह, कमर में चोद घीन कल कर १ पहिना जासके, याव मडकार म दह, [ दाहिनी ओर के में दह होतो बलडोना ] साकर उड हो दह घटना ।

**नकुमवेमिका द्द, ३० शक्ति ।**—छट्टा और कणी छट्टीयोंके साथ सिर पीना, धरसध करने वाली दह १४५ कर प्रात काल में, मानसिक धम से दहना सामाविक का यशता, तिनको मरु हों और जो लाग समिताचार हों भार ३ लोग किमी प्रकार शारीरिक परिधम न करना हो ।

**पलसेटिला द्द, ३० शक्ति ।**—मत्यत घी पकवान मान खाने के कारण सिर दह, मध्या ममय दह दहना, १५ घूमना, विहाय वर सिर कुजाने वा ऊपर की भार १५ से दह, शीतल स्वच्छ मैदान की दवा छट्टी मालुम के गरम मकान में रहन स पष्ट मालुम हो, आ मित्रेकाल उल्टी होना और भोजन स मरुचि, श्रु मत्यत कि से होना, चोटा या बिछुरा दह, [ दहन पहिल से अधिक—कैल्केरिया काय और सल्फर ] गरम मकान में सदी लगना, रोना और चिहाना ।

**साईलेशिया १२ ३० २० शक्ति ।**—दह प्राय ५५ ।

और, मानसिक श्रम, निर सुराजे से, रात बढ़ने से पा  
ठही हवा में बढ़ना, गरम कपान में कम होना, कोष्ट  
यत्न, मल थोड़ा सा बाहर निकल कर फिर मल द्वार में  
धुस जाये ।

**सल्फर ३०,२०० शक्ति ।—**मस्तक में बराबर उत्थाप

मानुस होना, [ शीतलता—शीपिया ], प्रातः काष्ठ उदरमय,  
शोनी को हम्पट उठकर पाछाने में जाना पड़ता है, दिन  
में बर बार छारर अपसन्न होता है । खाज पफोला, बैठ  
जानेके कारण राग, मरा रोग ।

**१म, सर्दीके कारण शिर पीडा ।**

**लक्षण ।** अचानक शिर बर्द प्राय सुबह के समय  
कम, मध्या समय अधिक आगे दबड़पाह दूर, होंठ माना, नाक  
से गरम सांस आर पन्ना कभी थोड़ा पसी ।

**चिकित्सा ।—**

**एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—**सर्दी के कारण शिर  
दद, ज्वर, पचराहट और पौनी ।

**कैमोमिला १२ शक्ति ।—**ठही हवा गगन अथवा  
पछाना घद होन से शिर दद ।

**मार्कुरियस सल्व ६ शक्ति ।—**सबदा होंठ माना,  
और नाक से अउ पड़ना, टइसी लगना, रात्रि में पसीना,  
हाथ पैरों में दद ।

**नमसत्रोमिका ६ शक्ति ।—**शिर में भारापन और  
नाक घद मानुस पड़ना, सुबह नाक से पतछा पन्नाम

के मन में गुल मरना, कोण्यस और कांय निरुद्धा ।

**इपीका दशक्ति ।**—उपकार और वलिपों में अधिक प्रयोग होता है । निर सुकामेही उदय दाना इपी । का का पतला मर ।

**लेफसिम ३० शक्ति ।**—निर दर, रग में दर, कतर है काह नीन कग कर १ पणिना जामर काव माकर के दर, [ काहनी मार क में दर दाना बगना ] साहग मर ही दर बदना ।

**नकनयेमिफा द, ३० शक्ति ।**—नहु। और वली वलीवेंद साध निर पीडा मनमर करन बागी दर पल कर मान दान में मानमिक धम म बदना आनापद कर बदना दिनका मर हो और आ मान समितापारी हो और आ मान रिमा मदान आगमिक परिधम न करता हा ।

**दरमेटिडा द, ३० शक्ति ।**—मथन की वदना मर न क काग्य निर दर, मजा ममर दर बदना मर मथन विरग कर निर मदान का ऊपर की मार दान म दर दानक मथन मैदान की दान मरना मनुष के मरन मदान में दान म बद मनुष हा श्री विमेलक वली दाना और मथन म मदकि, मनु मरन निर म दान बादा का । दरदुह कर [ बदना वरि मर मरिद—दरदरना दान मर मरन ] मरन मदान में मरि मरन मर मर मरि मरि ।

**मरुंमिजिद, १८३३२०० शक्ति ।**—दर दान दर ।

भोर, मानसिक भय, भिर सुजाने से, बाढ कहने से या ठही दवा में बढना, गरम मकान में कम होना, फोष्ट बढ, मल थोडा सा बाहर निखल कर फिर मल द्वार में घुस आवे ।

**सल्फर ३०,२०० शक्ति ।—**मस्तक में बराबर उछाप मानुस होता, [ क्षीणता—शीथिया ], प्रातः काख उदरमय, रोगी को हृदय उठकर पाखाने में जाना पडता है, दिन में ४२ बार छरीर मयमय होता है । छात्र कफाला, बैठ जानेके कारण रोग, मल रोग ।

**१४, सर्दीके कारण शिर पीडा ।**

**लक्षण ।** बराबर शिर दद, प्राय सुषुप्त के समय कम भयना समय अधिक, प्राय दृष्टिबाह दूर, शीथ माना, नाक ल गरम सांस भीष्क बम। थोडा २ घाँसी ।

**चिकित्सा ।—**

**एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—**भरी के कारण शिर दद, ग्यर, पचणद धीर बेचेनी ।

**कैमोमिला १२ शक्ति ।—**ठही दवा ग्यन भयना घाँसी ४२ होने भ भिर दद ।

**माकुरियम मल ६ शक्ति ।—**भरत शीथ माना, धीर नाक भ जल पडना, डंडमो लयना शक्ति में घाँसी लय पैरो में दद ।

**नरमबोमिका ६ शक्ति ।—**भिर में मयमय भोर नाक ४२ मान पडना सुषुप्त भय ल पडना बरगम

निकलना, सच्चा और सचि को हूमा हुआ, मुँह रूखा हुआ और अत्यन्त व्यास ।

**२५, रक्ताधिन्य के कारण शिर पीडा ।**

**लक्षण ।** माथा रक्तपूर्ण और भारी मालूम पड़ता सिर घूमना, विशेष कर माथा हिलाने से । माथेक माथेक रूपकन माथे में उच्चाप गठ की घमना का जोर से बल्यन, सिर हिलाने से और मुड़ाने से बढ़ बढ़ना ।

**चिकीत्सा ।—**

**एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—**मुँह काट और सूजा हुआ बहोश कर देनेवाला द्रव ।

**बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—**रोग बढित मादूम पादक पर एकोनाईट के साथ पचायक्रम से दिया जाता है । रूपकन माथा रक्तपूर्ण, सामान्य शब्द दिखन मुड़ने का उन्नाल से बहू माधून पडता ।

**ब्रायानिषा ६ शक्ति ।—**माथा मुड़ाने से बढ जाना के समान दई अधिक रूपकन, पैदर चढन से निशर कर साथ पाग्न से जोर दिग्न से बढ़ बढ़ना ।

**जेलसीमीनम ६, १२ शक्ति ।—**माथ में माथरन माधून हाना विनाय कर गरदन और माथे के पाठ के और दई बच्चों तक फैला । उर नजिय का महार रूपकन बेट रहने में बढ कम हाना । ग्रामों के आग माधर धाना मिर घूमना माथे बजानना और सब शरार हुक्कन और अनुष्ण मादूम होना ।

**नक्षत्रोभिका ६, ३० शक्ति ।—**तिर दद, माघ पर

दद्यात् मास्य पडना मानों फट आवेगा, अथवा भाग्यो व  
उपर ही मथानव दद, माघा सुफाने से तथा घासने से  
दद पडना, पित्त और मज्जा उल्टी होना, अधिक मत्ता  
करना घर में बैठ कर काम करना और भागसिक् परि  
भ्रम व काम्य द, सुषह और पुन्य दुर जगह में  
पडना ।

**ओपियम ३ शक्ति ।—**अचैतन्य लक्षण उपस्थित  
होने से ।

**सहकारी उपाय ।** सय तरह की उचैतनाओं को छोड  
दना चाहिये । भादागदि के विषय में बहुत होरि पारी  
की आवश्यकता है । मांस खाना और शराब पीना अनु-  
चित है ।

**३ व, कोष्ठयह्र अपमा अजीर्णक कारण तिरदर्द ।**

**लक्षण ।—**नीम मैली, मुदका गुदा स्वाद अथवा ये  
भ्याद के समान । मुख न लगना, जी मिचलाना या उल्टा  
हाना दर्द के ह साथ उन्ठियों का बढना ।

**चिकित्सा ।—**

**त्रायोनिया ६ शक्ति ।—**यदि मल पडुव बडा हो  
और निश्चयन में बह मास्य पड ।

**इषिका ६ शक्ति ।—**अधिक जा मिचलाना और उल्टी  
होने क साथ तिर दद में यह भल्टी औपध द ।



**नक्षत्रोमिका ६३० शक्ति ।**—मध्यन्त कोणधर, दस्त

जाने परती दस्त न खतरना, अथवा अधिक सिर दर्द  
करना, काफा तम्बाकू अथवा काह नशीली चीज खाने व  
सिर दर्द हो ।

**श्रोणियम ३ शक्ति ।**—यदि बहुत दिन से दर्द बढ़े

और दर्द की गिल्दुल हाजत नहो, माघे में भ्रातपन ।

**पल्साटिला ३ शक्ति ।** अजीर्ण व साय सिरदर्द

का कोई संबंध ना, तल मिली हुई अथवा घीमें पकी हुई  
कोई चीज खाने से बढ़ हो, दब तीसरे पहर और सप्ता  
समय बढ़ना, मात काल मुहका स्वाद घुरा रहना ।

**सहकारी उपाय ।** अजीर्ण के कारण यदि सिर में

दर्द होतो सबसे पहिले भोजन का नियम करना चाहिये ।  
बहुत तल मिली हुई भार वर से पचन वाली कोई चीज  
न खानी चाहिये । हलका भोजन करना चाहिये । ठुण  
हवा में अधिक व्यायाम करना अच्छा है ।

४र्थ, बाहरी कारणों से सिर दर्द ।

**चिकित्सा ।**—

**आर्निका ६३० शक्ति ।**—गिरना, खाट लगना

याद अथवा पकावट होने से ।

**त्रायोनिया ६ शक्ति ।**—सर्दी या गरमा इगन से

हवा बढ़ना से अथवा अत्यन्त गरम होने व कारण ।

**नक्षत्रोमिका ६ शक्ति ।**—मानसिक परिग्रम,

और घर में बंद रहकर बैठे बैठे काम करने से, अधिक दिन रोगी के पास रहकर सेवा गुप्त्या करने से ।

५ म, मानसिक कारण से सिर दर्द ।

चिकित्सा ।—

कैमोमिला १२ शक्ति ।—क्रोध अथवा उच्छेजना के कारण से ।

ओपिपम ३ शक्ति ।—जदि रोग भय से उत्पन्न हो ।

इमेशिया ६ शक्ति ।—मानसिक दुःख शोक या विष हट जाने से ।

६४, स्नायविक सिर दर्द ।

लक्षण ।—रस का प्रधान लक्षण यही है कि यह बर्मी कर्मी होता है । दर्द प्रायः एक ओर अथवा किसी खास जगह पर ही रहता है । रस के स्थान को दाबने से बंद होना, उजाला, रात में मानसिक उद्वेग असह्य होना, सिर दर्द के साथ साथ प्रायः पित्त वा श्लेष्मा की उल्टा होना ।

चिकित्सा ।—

वैलेडोना ।—स्नायविक के कारण सिर दर्द का प्रधान में देखो ।

त्रायोनिया ६, ३० शक्ति ।—चक्का मारने के समान दर्द, विशेष कर दर्द एक ही ओर हो चलने से भार गमन हुआ से बढ़ना माथा में इतना दर्द कि दूर न जा सके ।

**घायना १२,३० शक्ति।—**छियों को ऋतु के अनुसार अत्यंत रक्त छाव होने से, अथवा ऋतु अधिक दिन तक उदरने से अथवा और किसी प्रकार के रक्त छाव होने से, पुराना उदरामय रहने पर पापदा करता है । रक्त मानसिक परिधम से बढ़ता । अत्यंत इद्रिय सबन करने के कारण या और कोई इसी प्रकार के दोष से मलक व पीछे के ओर दब होना ।

**काफिया दशक्ति ।—**असह्य दद, माथे के एक भाग तथा हुमा सा और बेसा मालुम होना कि उस में काफ टप्टी जा रही है । माथे कपाल में दर्द, उस के साथ सामान्य उत्तेजना का हृत्प, रात्रि की निद्रा न माना ।

**जलसीमीनम १२,३० शक्ति ।—**माथों के ऊपर और कपाल में दद रहने पर । सिर दद व पहिल कुछ भा दिखलाई न पड दद माथे के पाछे ही अधिक सब चीने हो हो दिखलाई पडें, दद से कानों में शब्द सुनाई पडना ।

**इग्रेसिया ३० शक्ति ।—**सिर में कीलसी घुमना, नाक व पासे में बहुत दद, स्नान अथवा भयसा परिवर्तन करने से कुछ आराम, शयन करने से दर्द कम, साप्तादिक, पाकि या मानसिक होता हा ।

**नक्षत्रामिका ।—**रक्तधिक्य के कारण सिर दद देता ।

**पलसाटिका ३० शक्ति ।—**गुली हुए दया में अ

से दर्द को आराम मानूँ पड़ता, किंतु घर में रहने से, सोने से थोड़ा सज्जा के समय बढ़ना, ऐसा मानूँ हो कि सिर फटा जाता है।

**सीपिया ३०,२०० शक्ति।—**श्रियों के विशेष घर जिन को बहुत सम्बन्धी कोई खराबी हो अधिक पायदा करता है। दूध मारने के समान दर्द, प्रति दिन एक समय बढ़ होना, उल्टी या उबकाई होना।

**सैगुनेरिया १२,३० शक्ति।—**दर्द इतना अधिक हो कि सहन न हासिल और मस्तक आर से मिट्टा में दाय रहता पड़े। मान बाह्य दर्द गुरु दाग दिन में बढ़ना, और सज्जा समय तक रहना, दर्द दृढ़िनी और अधिक, सोने से दर्द कम होना।

**स्पाईलीसिया ६ शक्ति।—**असह्य दर्द आँखों तक फैला हुआ, सिर नीचा करने से बढ़ पड़ना, शूल के साथ बढ़ बढ़ता और कम होना, चिता, शम्भू आदि से बढ़ना और दाबने से कम होना।

**साईलेशिया १२,३० शक्ति।—**छायाविष परिभांत के कारण सिर दर्द गरदन से गुरु हो सिर न ऊपर पड़ये, पीछे माँछ के ऊपर आव, सेबने से आराम किंतु दाबने से नहीं, बाल उठ आना।

**श्रीपद्य प्रयोग।—**नये सिरदर्द में तारपीन की दूध दया की एक मात्रा २,३,४ घट के अंतर से आर राग पुराना पड़वान पर प्रति २१ मात्रा दनी चाहिये।





**सहकारी उपाय ।** छायागिरि निरुद्ध में छाने पाने की

नियम, टड पाना म छाया करना, अधम्वानुसार घोंडे पर पैठना चाहिये । यह सिरुद्ध कमा कमी उपास्त्रि होता है । यहही सयस बु साध्य है ।

**सिरधूमना ।**

**( वर्टीगा )**

इस रोग में वसा मातुम पडता है डि चारों ओर का सय छाजें धूमता है अधवा रागी स्वय धूमता है । पाकसला क राग अधवा दोष क कारण हा प्रायः यह रोग हाता है किन्तु मस्तकक रक्ताधिक्य क कारण स भी यह राग उत्पन्न हासना है ।

सिर धूमना के कारणों में पाकाशयका दाप, अत्यत इद्रिय सेजा नशा करना रात्रि नागरण, मस्तक में चोट लगना अधवा गगना प्रधान ह । मस्तिष्क में अधिक रक्त सयस हान स जिस प्रकार सिर धूमना गुरु होसकता है ठाक उसी प्रकार माथ में रक्त कम हानस भी सिरधूमने का रोग उत्पन्न हा सका है । इस लय सिर धूमन के रोग का कारण निश्चयकर, पीछे उसक अनुसार चिकित्सा आरम्भ की जाये तो शीघ्रही कायदा दिखगाह पडता है ।

**१ म, मस्तिष्कमें रक्त अधिक होने के कारण ।**

**लक्षण ।** मस्तिष्क में रक्ताधिक्य दधो ।

**चिकित्सा ।**

**योगार्द्ध ३, ६ शक्ति ।**— थलडाना क साथ पयाय

कम से व्यवहार करना चाहिये, विशेषकर यदि शय्या से उठने समय अथवा गिर नीच से ऊपर को उठाने समय घुमें तथा चहरा छाट रग वा रहना हो ।

**घेलेडोना ३,६ शक्ति।**—एकोनाष्टद्वयो । यदि वेदोशी, छायायी की तरह गिरे पड़ना मस्तक में रक्त पूणता, और मयानक दया मादुम हो ।

**नक्षत्रांमिका ६,३० शक्ति ।**—यदि छाने के समय, छाने के बाद खुली हुई दवा में दृग्गते समय मूच्छा के समान मादुम होना, सिर में मन् मन् होना और चक्षर साकर गिर पड़ने के समान मादुम होना यह दवा फायदा करना है ।

चक्षर साकर गिर पड़ना-घेलेडोना, पल्लाटिला रस्तकम ।

**सहकारी उपाय ।** मस्तक में रक्षाधिक्य दया । प्रतिदिन मान शाल टह पानी से छान करना और स्वच्छ दवा में व्यायाम करना आवश्यक है ।

२ य, अणक ( अजीर्ण ) के कारण ।

**संक्षेप ।**—भिर घूमना निद्रादुना, शिशिर पर । ३०-  
उपगत ही सिर में मयानक, भिर दद जान । ३०-  
इमा, मूय न लगना, उठने होना ।

**चिकित्सा ।**

**नक्षत्रांमिका ६,३० शक्ति ।**

मना अथवा मशान वजन ३३ ।



**पलसाटिला ६ शक्ति ।**—अधिक धीमे पड़े हुए पदमान के खाने से राग पैदा हो । सुधी हवा में थाराम माहूम पड़ता, इस के साथ ही मिचलाना अवस्था नये की सी अवस्था में रहना ।

**सहकारी उपाय ।**—पेट में यदि गड़बड़ हो तो कपास कराना चाहिये और पीछे हल्का पथ्य देना चाहिये पीने के लिये ठण्डा पानी दिया जाये ।

### ३५, दुर्बलता के कारण ५

**चिकित्सा ।**—घायना अच्छी औषध है ।

प्रातः काल के समय सिर में दर्द होना—कैलकेरिया, नक्सवामिका, रस्तफस फासफोरस ।

संध्या के समय—बलडाना, पलसाटिला, सीपिया लैकेसिस ।

सात समय—पलसाटिला आर्सेनिक ।

उठने के समय—नक्सवामिका, रस्तफस, लैकेसिस ।

चलने फिरने के समय—पलसाटिला, लाइकोपाडियम फासफोरस कैलकेरिया ।

सिर दिलाने के समय—कैलकेरिया, ब्राह्मोनिवा, सीपिया घाला पट में—फासफोरस कैलकेरिया, घायना ।

भोजन के उपरांत—कैलकेरिया, नक्स, फासफोरस ।

भोजन के बाद—फासफोरस सीपिया, नक्स ।

द्विष्टाने से थाराम माहूम हो—रस्तफस पलसाटिला ।

विधाम करने से थाराम माहूम हो—नक्स बलडाना ।

उल्टा के साथ ही सिर घुमने—नक्स, हवाका आर्मेनिवा पलसाटिला ।

१ पद

91 23

100

॥ नमो ॥

संक्षेप

1. 515

**॥ धर्म धर्म**

4. 5. 6.

दा दानं

६६ मिड्या न

ਦਨੁ ਥਾ ਸਾਦਨੁ

॥ ६ ॥ अथ चतुर्थः

पुनर्देस पर प्रारम्भ

सद सदस्य पाल, कार्य.

ਅੰਕ ੨੨੨ ਅਤੇ ੨੨੩ ਵਿਖੇ

31

— ੩੪ — ਫਿਰਿਹ ਦਾਇਰਾ

ત્યો ગદર બે છ

1. *Introduction*

उद्वेग, येचैनी और उत्कण्ठा, एवं हराजमे हृदयों के कारण नींद न आना ।

**काफिया ३ शक्ति ।**—यदि मानसिक चिन्ता वा उत्तेजना हो अथवा बहुत दिन किसी रोगी की सेवा शुश्रूषा में रात्रि जागरण करने से रोग उत्पन्न हो । बिना किसी कारण के बच्चों को अनिद्रा रोग ।

**जेतसीमीनम ६ शक्ति ।**—साधारण अनिद्रा में दिया जाता है ।

**इन्द्रोशिया ६ शक्ति ।**—काफिया के उपरांत कभी दिया जाता है, विशेषकर उत्तेजना के उपरान्त अक्सर होने पर अथवा नींद की हालत में बहुत येचैना रहने पर । शोक, चिन्ता, उदासा के कारण नींद न आना ।

**नक्तबोमिका ६,३० शक्ति ।**—अत्यन्त मनोनिवृत्ति, मानसिक चिन्ता, रात्रि जागरण के कारण परिष्कृत शक्ति का कम होना, अथवा रात में जागरण पड़ने के कारण रोग होने पर, सुषुप्त के समय नींद आना, रात में ३ बजे तक अच्छी नींद आना, ३ बजे के समय आरु सुलझाना और ५ बजे तक जागृत रहना, फिर नींद आना वष पड़ने केर तक साते रहने पर भी सुप्ति नहीं मादूम पड़ना ।

**पक्षसाटिक्का ६,३० शक्ति ।**—परिष्कृत शक्ति में गडबड दान से अथवा रात्रि में बहुत मोचन करने से । किसी तरह नींद न आना और सान का भी इच्छा न होना ।

**श्रौषध प्रयोग ।**—अनिद्रा रोग होने पर अधिक



हीपर, केलविरिया, काथ, सार्डेलेशिया ६, १२ शक्ति ।—

किन्धी प्रकार के प्रदाह यात्रे रोगके कारण बाल उठ जाता ।

पेसिड फासफोरिक, इमेशिया ६ शक्ति ।—मानसिक

शक्ति, दुःख मधवा बुर विचारोंके कारण ।

हीपर-सल्फर, नाइट्रिक एसिड ६, १२, ३० शक्ति ।—पार वज्रा

व्यवहार करने के कारण बाल उठना ।

पेल्लेडाना, पल्साटिडा ६ शक्ति ।—दूरनाहन के रोग

व्यवहार के कारण ।

कलकटिया-काथ, सल्फर ६ शक्ति ।—प्रसव के

समय बाल उठ जाने पर ।

कलकटिया काथ, माफादेडिस ६ शक्ति ।—मस्तिष्क में अधिक

फोस्फोर के कारण ।

**औषध प्रयोग ।—**एक सप्ताह तक प्रतिदिन

मधवा एक दिन के अंतर से औषध प्रयोग करना चाहिये । उपरान्त कह । इस तक कोर औषधि न खाना चाहिये । इस पर भी यदि कुछ कायदा दिखलाई न पड़े तो दूसरी औषधि खानी चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।—**आत्र बल रहते हैं छियों

के बाल उठकर बाद गड़ी हो जाती है, पहले समयों में यह दवा नहीं होतीया, हमको इसका बड़ा कारण मातृम हाताई कि आत्र बल गिरासिता, अम्ल की पीड़ा आदि अनेक कारणों के सिवाय रूख बाल काटना और आर से दवा देना येही दो कारण प्रबल मातृम दते हैं । रूख कमकर छोटा बाधनसे बाल बिच सिच कर उनकी उई कमउार पड़ जाता हैं और फिर शीघ्रहा बाल गिर जात हैं । इस

टिये चारदार काटना और बड़ी छोटी चीजों का छित नही । यदि चाँद गड़ी हा जावे तो २ मादूम रस (एक प्रकार की शराब) में १ कूट के पिस का मूल भरव मिला कर उस स्थान पर दिन में ३ बार गगामेसे फावदा मादूम होता है ।

## दशम अध्याय ।

### चक्षुरोग समूह (आँखोंकी बीमारी)

#### बध्नु प्रदाह (आपसेलमिषा) ।

मये चक्षु प्रदाह (आँखें दूधना) बड़ा कष्टदायक रोग होता है । इस का प्रधान लक्षण आँख के मोर में जलन होना और लुत्ती आजाता ॥ उजाला आर नही देखा जाता और आँख से पानी गिरा करता है । मयाद जम जाता है, आँख में मला मादूम होता है मानो रेत या और कार चीज गिर पडा है और करकसानी ह । यदि प्रदाह अधिक हो तो रस व साथ सिर रू और ज्वर गादि रोग भी वपन्धित होसकते हैं ।

इस प्रकारक बध्नु प्रदाह में एकोनाइट, रेपिस आर्सेनिक वेल्डोना, और माकुरियस फावदा करत हैं ।

घातके कारण बध्नु प्रदाह ।—बाब रोग अथवा घात के कारण प्राय आँखें दूधन लगती है । आँख मानो रू ली मोर पडा पडती है, छय साथ गलरक्त बी हो जाती है आर बहुत पानी गिरने लगता है । जनर समय आन्तरिक माले और रगों में रुद होन लगता है । घायु परि

यतनसे भी यह रुद बंद नही जाता है ।

इस प्रकार के चक्षु प्रदाह में पकलाइए, प्रायोनिषा पलसादिला, रस्त्वम फायदा करने हैं ।

**गडुमाला दोषके कारण आग्न दुखना ।—**निसका

धातु गण्डमाला । दुपन शक्ती है उसी का इस प्रकार का चक्षुप्रदाह दान हुए दसा जाता है । इस रोग की चिकित्सा में धातुगत दाह दूर करने का चेष्टा करना ही प्रधान उद्देश्य है, पर यद्दा करना चाहिये ।

इस प्रकार के चक्षुप्रदाह की प्रधान औषधि आर्सेनिक, कल्बरिया-काउ माफाइटिस, हापरसल्फर, हाइकोपोटियम, माक्रियस, सल्फर ।

**एक्रेनाइट ३,६ शक्ति ।—**बहुत कीचड़ ( मवाद )

के साथ साथ दुखना, सूखा हुआ गरम शरीर और बहुत तेज नाड़ा और तीव्र रुद के साथ आँखों में गहरी सुर्ती और सूजन, उन्हाला विलगुड असह्य मातुम पडना, बेचैनी ।

**ऐपिस ६,३० शक्ति ।** आँखों के पलक सूजे हुए,

पलकोंका उलट कर बाहर निकल पडना, आँखों में जलन और रुद रुद करना ।

**आर्मेनिक ६,३० शक्ति ।—**आँखों के भीतर मानों

हाला त्रिप हुये छाल गड्ढा अमल जलन, रात्रि के समय पलकों का जुड़ जाना अत्यन्त रुद और बेचैनी, अत्यन्त पिपास ।

**वेनेडो ६,३ शक्ति ।—**गर्भ चक्षुप्रदाह, उन्हाला

आर रुद असह्य मातुम पडना सुर्ती, गरम आँख गिरना

अथवा माँसे चिल्लुन सूया इत, मगानक दद हो उठना और अथवा बड़ होना, एक पौष्टिक, दो पौष्टिक होना, छपन और सिर दद ।

**फेलकेरिया १२,३० शक्ति ।—**गण्डमाला दूधित

धानु व टिपे यह औषध बहुत पायदे मंद है । माँसे के बाल माँसे में सफेद दाग, गले की गाँठ का घुलना और मरनक में पुर्मी ।

**माफाडिंसि ६,३० शक्ति ।—**गण्डमाला दूधित धानु

व टिपे अथवा पुतान बहुतदाह में यह औषधि बहुत उपकारी है । मरनक किरा, काली पुनली में घाव ( सफेद भाग में घाव दाँत पर माफुरिषस ), पलकों व बाल उड़ आना ।

**खाइकेपोडियम ६,३० शक्ति ।—**पुतानी ताँत में

और गण्डमान होव रहने पर कोष्ठपद छोटा बाल पर हो वेद भरा सा मालम होता ।

**माफुरिषस ६,१२ शक्ति ।—**ममद अथवा गण्डमान

दाँत के बाल माँसे पुनली माँसे न दाँत अथवा गण्ड के ममान दद, माँसे अथवा उठल का दाँत न दद मरनक मरनक भाग में पुनले अथवा घाव, माँसे : बापड अथवा और पुनल आना ।

**लेगिड नाइट्रिक ऑय रीज ६ ग्रामिन ।—**

एकौ कपड़े रंग में कपड़े पर व ममानका दाँत के दाँत दाँत दाँत पर व न न दाँत ममान ममान है ।

**पलमेटिका ६ ग्रामिन ।—**मरी माँसे दाँत दाँत



कारण आँख खुलना, प्रमेह छाव बंद होने से आँख खुलना (इस अवस्था में मकुटियस भा फायदा करता है)। आँखों में खुजली चटना और जलन होना, सन्ध्या के समय पड़ना ।

**युक्नेशिया ३ शक्ति ।—**माँखों से अधिक माँख गिरना और आँखों का लाल रक्त रहना ।

**सलफर ३, ३० शक्ति ।—**गण्डमाला होय, माँख और आँखों के पलकों में खुजली चलना और जलन होना ऐसा मनुष्य हो मानों आँखों में रज गिर गया है, काल स्थानोंमें दाग अथवा गाव, मलक के ऊपर और हाथ पैरों में जलन घम रोग ।

**औषधि प्रयाग ।—**नयी हावत में ३ घण्टे के अन्तर से दवा देना चाहिये किन्तु यदि रोग सामान्य होता और पुराना होने लगे तो दिन में २ बार देना पड़ता है ।

**सहकारी उपाय ।—**माँखों को जोर पहुँचाने वाली सब चीजें से परहेज करना चाहिये । रोगी का कुछ अन्धेरे घर में बन्द रहना चाहिये । कभी कभी माँखों को गुन गुने भयवा दूध मिला हुए जल से धोना अच्छा है । आँख खुलने के साथ ही यदि डर आने लगता है पश्य का भार विशेष ध्यान देना आवश्यक है । जब माँखों को बिल्कुल आराम न हो जाय, तबतक धूप, उजाला और गरम घृत मिष्टा भक्षण करना चाहिये । इस प्रकार आँखों की रक्षा के लिये नाल अथवा हर रक्त का चरमा व्यवहार किया जाय ।

पृथक् ।—आप दुपने पर मांस, मच्छी और मोटी चीज बिल्कुल छाट देनी चाहिये ।

**छत्रनी ( गुहेरी )**

( स्टार्ड )

**लक्षण ।—**माँस के पलकों के बिनारों में कुत्सी की मांस होकर उन में बहुत रक्त हाता है । मवाद निकलतेही धाराम मातुम होता है ।

**चिकित्सा ।—**

**पलमाटिका ६,१० शक्ति १—**प्रधान औषधि, विशेषकर ऊपर के पलक में गुहरा होने पर ( नीच के पलक में गुहरी होतो रक्तवत् ) । गुहरी हात ही यदि रक्त औषधि प्रयोग का जाये तो फिर उस में न मवाद पड़ता है और न पचता है । यदि अत्यन्त प्रदाह हातो पलमाटिका के पहिल दो एक माथा पेकोनाइट ही जासकती है ।

**स्टफिसेमिया ६ शक्ति ।—**दानो ही पलकों में गुहरी बिगुन कर ऊपर के पलक में । यदि मांस ही गुहरिवा होता हो और ये सब बिना ही बड़ी पड़जायें । सलफर देनस भी बार बार गुहरा होना संभव हो जाता है ।

**माफाईटिस ६,१२ शक्ति ।—**बार बार गुहरी होना बार पलक के बिनारे में घाय हाता ।

**श्रीरघ प्रयोग ।—**तदन अवस्था में एक घूँस औषध

पाय छटाक पानी में मिला कर तीन घण्टे के अंतर से देनी चाहिये । यदि पुराना हो जाये तो सन्ध्यासमय और रात काल इस प्रकार दिन में दो बार औषध देनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—पहिले गरम पानी से सेवना चाहिये, जब थोड़ी बड़ी होजाये तो पुल्टिस लगनी चाहिये । पकने पर भी यदि न फूटे तो सुर से जरा फुरेद देनी चाहिये । आस पर पट्टी बांध कर उसकी विभ्राम व और चकाचौंध से उसकी रक्षा करे ।

## दृष्टिहीनता ।

### ( एमडिक्लियोपिया )

यह रोग प्रायः हात हुए देखा जाता है । इसका स्पष्ट कोई असला कारण निश्चारित नहीं हो सकता । सप चाँचों का मरुपट दिखलाई पड़ना मानों पाना का भीतर से दाखना है । कभी कभी आँखों के सामने काले काले तिर मित्रे से दिखलाई पड़ना । इस रोग के कारणों में बहुत दिन तक रोगी की सेवा करना, राग जागना, बहुत समय तक तेज रोशनी में रहना बहुत पड़ना विशेष कर दाय के उन्हाले में, मानसिक चिन्ता और उकण्टा, हस्तप्रेषण, अशरिमित स्त्रा सहवास, दशन आयुर्माँका पाडा ( जिन आयु न दिखलाई पड़ता है उन में राम ) आदि का प्रधान कारण है ।

**चिकित्सा ।**—एकोनार्डिट ३,६ शक्ति ।—मिटर पुगना,

धोर अचानक नजर बंद हो जाना, खस धाँसे अस्पष्ट दिख  
लाइ पड़ना ।

**घेलेडाना ६, ३० शक्ति ।**—पढ़ते समय अक्षर  
कापते हुए दिखालाई पड़ना, अस्पष्ट रहि आप की पुतली  
फैली हुई, दौपट व उजाल व धाँसे मोर छाछ रङ का  
मण्डलाकार होना ।

**हायोनायेमस ६, ३० शक्ति ।**—रहि डुपेट, रहि  
बंद होना और विद्युत् दाजाना, घूम रहि, स्थिर रहि  
अर्थात् प्रत्येक पक्षु गुरेरी दिखालाई पड़ना ( स्त्रुमा  
नियम ) ।

**मार्कुरियस ६, ३० शक्ति ।**—आँखों के सामने बुझार  
के समान दिखालाई पड़ना, आँखों का ज्योति न रहना,  
आँखों व परब पड़ना, उजाला मोर अग्नि की मोर दृष्टि  
की मनिष्ठा ।

**पलसाटिला ६ शक्ति ।**—देसा माटूम दो मानो  
पूर मोर बुझार व आंतर से बेच रह हैं अथवा आँख व  
ऊँचेर कुछ पडा है और उस को साह देन का इच्छा  
करना, सगुणा समय पड़ना ।

**प्राप्तेनिषम ६ शक्ति ।**—व्यास धोर बगल पर  
पसीना साध ही अस्पष्ट रहि, वक्ष धाँसे की वर धाँसे  
धोर छाछ रङ की दाख पड़ना, माथ सगुण  
अपना ।

**सत्फा ३० शक्ति ।**—आँखों में जटन आँखों के

पहन के समान दूद, दूद के दुःख से बचना, गिराना, मलिन  
में रक्त की अधिकता।

**मार्कुरियस मल ६ शक्ति ।—**सा सप्ताह के  
सोचन से बार दिन पर १२० स दूद बना कर  
पहन से पास रखें। १०० तक गुप्त जाना, दूद का रक्त  
और दाँतों तक फैल जाना का से प्रभाव निकलता।

**जतमीमीनमई शक्ति ।—**दूद यदि ठहर ठहर  
कर हो।

**पत्तामिठा ६ शक्ति ।—**यदि दूद अमल दाँतों  
और किसी प्रकार आगम नहो तो वह भोजन मनक  
समय आध्यात्मिक कायदा करनी है। यही ज्ञान के  
कारण भयदा यज्ञनक पमीत बन्द होन के कारण यदि  
काँन में दूद हो जाय के भीतर दूध मारने भयदा का  
पहन के समान दूद होना, अमल बेरनी और गुने भी  
न होना।

**कुसामिठा ६ शक्ति ।—**उत्तम दूध है। काँन के  
भीतर सूजन अमल दूद प्रदाह और काँन से अधिक  
प्रभाव गिरता। काँन में यदि गुप्त हो गया होना यह भोजन  
कायदा काँन है। यहाँ के काँन के दूद में दूद विभव  
कायदा काँनो है। उदर गिरा दूद भोजन के द्वारा  
प्रभाव विवर्ण होन के कारण बटख दिना का प्रभाव  
बहुत उदर काँनो है।

**महामाई उपाय ।—**उदर अथवा सूजी के बाँधी  
काँन हो के भयदा काँनो। दुःखित मन के से बहुत

वैन मातुम पड़ता है। कान के भीतर घोंडों को छरे लगा देने चाहिये ताकि टण्डी दूरा भीतर प्रवेश न कर सके। दूद की दूधैनी में कान के भीतर चो जी में माया यहाँ डाल दिया यह बड़े संयाय का बात है। इस में दूद भाराम होना दूर रहा और बढ़ना है। यदि आवश्यकता मातुम दाना पाडा या गुनगुना तल कान के मातर टाल दिया जासकता है।

## कानसे मवाद गिरना ।

### ( आटोरिया )

यह रोग प्रायः बाल्यावस्था में ही होते हुए देखा जाता है। पहले किसी कारण से कान पर कर उम में मवाद पड़ जाता है। पाछ यदि उसका सुचिकित्सा न का जाये और नियम पूरक न रहा जाय तो यह पुराना आकार धारण कर होता है। कभी कभी इस मवाद में इतनी दुग्धि दानी है कि दूधम रंगा का दूध उम के पास वाले को उस से कह मातुम दाना है। बचक बसरा आदि रोगों के उपरान्त प्रायः कान पर कर मवाद पड़ता हुआ देखा गया है। जितना गण्डमाला दुधित धातु दाना है उन्ही का यह रोग अधिक दाना है।

**चिकित्सा ।—** एकोनाईट ३ ग्रामित ।—

अत्यन्त उल्लेख और घाव बना याग मवाद निरन्तर । कान में आधा मातुम दाना बघवा का से दूद दूर पड़ना ।

**वेसटोना द शक्ति ।—** गरम द दूद दूद

वान के भीतर ओर प्रहार के शब्द सुनाई पड़ता।

**कैलकरिया १२,३० शक्ति।—**गडमाला दूधित धातु  
दुग्ध युक्त मयाद, विदार कर दाहिने कान से, शरीर  
का दुग्धायन पट बड़ा, दाता पैर ठण्ड और पमाजे, पट्ट  
कामल और घनघन।

**हीपर मल्कर १२,३० शक्ति।—**दुग्ध युक्त मयाद  
निष्ठाना कान से कम सुनाई पड़ता। पाल अग्न्यहार  
दान के उपरान्त यह मभिष कायदा करती है।

**दाडहोरोडियम १२,३० शक्ति।—**मयाद घाव  
कान घाव, कान से कम सुनाई पड़ता। गडमाला दूधित  
धातु।

**माङ्गुरियस १२,३० शक्ति।—**दुग्ध युक्त घाव  
कान से कम सुनाई पड़ता, कान से दूधित हा  
न। इसी प्रकार सुनाई पड़ता। उपरान्त के विवरण  
कान से कम सुनाई पड़ता।

**माङ्गुरियस १२,३० शक्ति।—**कान से कम सुनाई  
पड़ता, कान से कम सुनाई पड़ता, कान से दूधित हा  
न। इसी प्रकार सुनाई पड़ता। उपरान्त के विवरण  
कान से कम सुनाई पड़ता।

**माङ्गुरियस १२,३० शक्ति।—**कान से कम सुनाई  
पड़ता, कान से कम सुनाई पड़ता, कान से दूधित हा  
न। इसी प्रकार सुनाई पड़ता। उपरान्त के विवरण  
कान से कम सुनाई पड़ता।

**सल्फर ६३० शक्ति ।**—यद्यपि मवाद निवृत्ता, विशेष कर घाव वान स [दाहिने वान स-केलकेरिया-काय] वान क पाठ पु-सी, पुजाने स पुन गिरना ।

**औषध प्रयोग ।**—यदि नया रोग हाता दिन में तीन बार औषध प्रयोग करना हो पड़े है किन्तु रोग पुराना पड़ जाने पर दिन में एक बार समय एक दिन भन्तर एक ही बार औषध प्रयोग करना चाहिये, इस से अधिक नहीं ।

**सहकारी उपाय ।**—वान को सर्वदा साफ रखना चाहिये । वान से मवाद निवृत्त कर वान के बाहर न निहस जाये इसकी भार ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार मवाद लगने से बहुत दूर तक घाव फैलत हुए हुआ जाता है । वान में सावधानी क साथ चिकित्सा देनी चाहिये क्योंकि घाव ठीक तरह से चिकित्सा न लगन व कारण रोग के आराम होने में बाधा पड़ जाती है । १. बाइम्स स्वच्छ जल में एक शाम बार घालिक एसिड और एक शाम ग्लिसरीन मिलाकर चिकित्सा देना चाहिये । रोग पुराना पड़ जाने पर चिकित्सा देना चाहिये । रोग पुराना पड़ जाने पर चिकित्सा देना चाहिये । रोग पुराना पड़ जाने पर चिकित्सा देना चाहिये । रोग पुराना पड़ जाने पर चिकित्सा देना चाहिये ।

**वहगपन ।**

**[ डेफनेस ]**

मांस वान आदि रक्तिया रक्तों कोमल है कि छोटे



ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होनाता है । याव  
काल क रोग में प्रारम्भ ही से यदि चिकित्सा न कानाय  
तो ये पुराने होजाते है और फिर बड़ा कठिनार से उन  
की चिकित्सा होती है ।

बहरापन अनेक कारणों से उत्पन्न होसकता है, यथा  
सर्दी लगने से, खाट लगन से, अनेक प्रकार की पंडा  
के कारण इत्यादि । वृद्धायुष्या में इन कारणों में से एक  
के भी न हाने पर बहरापन होजाता है । प्राय द्ध्या गया है  
कि बहरापन कुलमत रोग होता है अर्थात् यदि  
हो तो एक कुल के बहुत से आरमियों को हाता द्ध्या  
गया है ।

**चिकित्सा ।**—उपलता अथवा किसी क्षायिक  
रोगके कारण होतो फास्फोरस विशेष पर वृद्धमनुष्यों क लिखे  
उपकारा है ।

सर्दी लगन के कारण होतो—एकोनार्ड, वलेडोना,  
माकूरियस, कैलकौरिया या पल्सेटिला ।

ज्वर के उपरान्त होतो—वलसाटिला [ ज्वर के बाद ],  
फास्फोरस [ विकारके उपरान्त ], साल्लिशिया [ मस्तिष्क पाडा  
के उपरान्त ] ममक में खोट लगने के कारण होतो  
आर्निका ।

**वलेडोना की शक्ति ।**—दान के भीतर 'अथ  
भयण आयुर्भो [ जिन नसों से सुनाई पडता ] का पक्षा  
घात ।

**कैलकौरिया का वै १२, ३० भाकि ।**—ज्वर बुनन द्वारा  
यद् द्विज ज्ञान पर बहरापन गण्डमाळा धातु ।

**कैमोमिसा १२ शक्ति।**—जिन बालों का प्राण ही जान दृढ़ करना हो उनको बहुरात्रन नाम में, जान बतला बतला मयाह मिलन पर।

**फॉनियम ६ शक्ति।**—जान के भीतर में वैरा हो बहुरात्रन, मैल निवृत्ति के दा सुमार पटन लगे और मै वैरा हाजार पर तिर सुगह पड़ना पार हो आप।

**जैलमीभीनम १२ शक्ति।**—बोली ही दर; लिये भवानक भवन छक्ति कर लोए होना।

**प्राफाईटिस १२, ३० शक्ति।**—देना मातुन मानों जान में जाना मरा हुआ है आपद हिसान से जानमें मीन पर पर बनता जान के पीछे पाव दा जान।

**हीपर-सल्फर ६, ३० शक्ति।**—नाक द्वारा आर भाष निवृत्ति के समय जान के भीतर बहुत भावात्त हाव बच के भीतर लपकन।

**माइयूरियन ६ ३० शक्ति।**—जान के भीतर हाव और जय जान के भीतर भवक भवक के लगे जान।

**साइलेंसिया ६ ३० शक्ति।**—जान दृढ़ जाना क जाना बहो भावात्त के भाव सुन जाना बच सुगह विनय कर सुगह ही भावात्त, हाव में धीरे धीरे पतन मना।

**मल्लर ६, ३० शक्ति।**—जान के भीतर सुन दृढ़ जान बच सुगह पड़ना सुन जान बच जान।

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होजाता है । मीन  
काल व राग में प्राप्ति ही न यदि चिकित्सा न जात्राय  
तो य पुग्ने हाजावे है और फिर बना कठिनाई ॥ उन  
की चिकित्सा होती है ।

बहरापन मनक कारणों से उत्पन्न होजाता है यथा  
झड़ी लगन में आट लगन से, मनक प्रहार की बाधा  
के कारण इत्यादि । नृदायका में इन कारणों में से एक  
के भी न हान पर बहरापन होजाता है । प्राय दया गया है  
कि बहरापन पुत्रगत राग जाता है अगस्त यदि  
हा ना एक कुल व बहुत से आश्रमियों का हाता दया  
गया है ।

**चिकित्सा ।—**पुत्रता भयना किसी क्षायाधिक  
रागके कारण जाता वास्तविक विज्ञान पर नृपसुखों के जिने  
उपकारी है ।

झड़ी लगन के कारण हाता—दृष्टानाई, घट्टाती,  
मातृदायक केचिक दया या वसुमन्ति ।

उत्तर के हाता न जाता—पुत्रता मित्र [ लयना व बाद ]  
हामन एक विद्वत् एक गुरुमन ] माद/मिया [ मतिनकीदीहा  
व गुरुमन ] ममक में बाट लगन के कारण हाता  
मनेहा ।

**वेष्टे ना ई टाडित ।—**दाय के भयना हाता  
हमक अगमो [ दिन नया व सुनई गइना ] का गम  
वना ।

**वेष्टेगिद कार्वे २२, ३० गति ।—**गम दूतन उरा  
कर १२१ उरा वर दया वर ममनका व दूत ।

**कैमोमिला १२ शक्ति ।**—उत्तम बालकों का मास ही जान दह करना हो उनको बहुरूपन होने में, जान से पतला पतला मशरू मिलन पर ।

**कोनियम ६ शक्ति ।**—जान के भीतर मेल पैदा हो, बहुरूपन, मेल निकलते हो सुनाई पड़न लगे और मेल पैदा हो जान पर फिर सुनाई पड़ना बंद हो जाये ।

**जैलमीमीनम १२ शक्ति ।**—पासी ही देर; के लिये ध्यानका धर्म लुकि का रूप हो जाता ।

**ग्राफ्राईटिस १२, ३० शक्ति**—वेसा मातृम हो मानों जान में पानी भरत हुआ है, आपट दिलान से जानमें भीतर पट पट करना, जान के पाल पाव हो जाता ।

**हीपर-सल्फर ६, ३० शक्ति ।**—नाक द्वारा जोर से भास निकलते समय जान के भीतर बहुत आवाज दाना, जान के भीतर रूपकन ।

**मार्क्यूरियस ६, ३० शक्ति ।**—जान के भीतर टाटाना और पाव, जान के भीतर मनका प्रकार का शब्द होना ।

**साइलेंशिया ६, ३० शक्ति ।**—जान दह जाना, कम जमा पड़ा आवाज के साथ गुन जाना कम सुनाई पड़ना, विशेष कर अनुपम की आवाज, मस्तक में अधिक पसाने जाना ।

**सल्फर ६, ३० शक्ति ।**—जान के भीतर गुन गुन शब्द दाना, कम सुनाई पड़ना, पुराना कम रोग ।

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होता है । अतः  
जान क रोग में प्रारम्भ ही से यदि चिकित्सा न कराया  
तो ये गुणों हाशान है और फिर बड़ा कठिनाई से उन  
का चिकित्सा होती है ।

बहुरासन अनेक कारणों से उत्पन्न होसकता है, यथा  
सर्दी लगन से आठ लगन से अनेक प्रकार की सर्दी  
के कारण इत्यादि । बहुरासना में इन कारणों में से एक  
ज भी न जान कर बहुरासन होसकता है । प्रायः दूखा गया है  
कि बहुरासन पुनः पुनः राग होता है अतः यदि  
होता एक पुनः क बहुत से आश्चर्यों का होता दूखा  
गया है ।

**शिकित्सा ।**—पुनः पुनः अथवा किसी आवधिक  
गतरु कारण होने का कारण से विशेष कर पुनः पुनः के वि  
उपकारी है ।

सर्दी लगन के कारण होने—एकालाइन, बहुरासना,  
मातृशिशु के रोग से या गर्भमरण ।

अन्य के कारण होने—पुनः पुनः [ लक्षण के बाद ]  
द्वारा एक [ निरुद्ध एक कारण ] मातृशिशु [ अतिरिक्त पीड़ा  
के कारण ] अतः से एक लगन के कारण होने  
में होता ।

**पेटेडोना ही टाकिना ।**—जान के अनेक रोग  
अथवा अनेकों [ अनेक रोग ] से पुनः पुनः [ या अनेक  
रोग ]

**केल्लेदिदा क्वारे १०.३-गति ।**—अन्य रोग उपा  
अथवा अनेक रोग अनेक रोग अनेक रोग अनेक रोग

**कैमेमिला १२ आदिन ।**—उस बालको का प्राय  
दा काय दृढ़ बनना हो उनका बहुरात्रन दान में, जान स  
परदा वतला मयाह निमि पर ।

**कानिपम ६ शक्ति ।**—बन के भीतर में पैदा हो,  
बहुरात्रन, मेंड निबलने हो गुनार पदन लगे और मेंड  
पैदा हाकाय पर निर गुनार पदन पर दा जाय ।

**जैलमीमीनम १२ शक्ति ।**—पेदा दा दद; के  
डिबे मयात्र भयम दाकि दा रोद हाकाय ।

**माभाईटिस १२, ३० शक्ति—**दमा मादुन हो  
माभा काय में द नी मया हुआ हो, जवद हाकाय स कायमें मातर  
पर पर दद काय व प द द द दा जाय ।

**दीपर-सम्फर ६ ३० शक्ति ।**—माद हाकाय जव स  
भाय निबलने समय काय क म नर ददुन काकाय हाका,  
काय क म नर लयन ।

**माइपूतियन ६, ३० शक्ति ।**—बन के म नर हाकाय  
पैर पद काय क मातर मयात्र ददर व ददर हाका ।

**साइयेगिया ६ ३० शक्ति ।**—काय दद लया कयी  
कयी दद काय के माद गुन उल दद गुनार दद  
दिल पर ददुन हो मादर ददर में मादर ददर  
काय ।

**मल्लर ६, ३० शक्ति ।**—बन के मा  
दद द । दद दद गुनार ददर गुनार काय

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होजाता है । आश्व कान व रोग में प्राग्म ही से यदि चिकित्सा न काजाय तो ये पुराने होजाते है और फिर बड़ा कठिनाई से उन की चिकित्सा होनी है ।

बहुरापन अनेक कारणों से उत्पन्न होसकता है, यथा सर्दी लगने से, खाट लगाना से, अनेक प्रकार का पंखा के कारण इत्यादि । बुद्धायथा में इन कारणों में से एक के भी न होन पर बहुरापन होजाता है । प्राय द्वा गया है कि बहुरापन कुलगत रोग होता है अर्थात् यदि हो तो एक कुल के बहुत से आरमियों को हाता दधा गया है ।

**चिकित्सा ।**—उपलता अथवा किसी क्षायविक रोगके कारण होना फास्फोरस विशेष पर वृज्यमनुष्यों व लिबे उपकारा है ।

सर्दी लगन के कारण होतो—एकोनाइट, वलेडोना, माकूरियस, कैलकेरिया वा पल्सेग्रिया ।

ज्वर के उपरा न होना—पल्साइटिया [ ज्वर के बाद ], फास्फोरस [ विकार उपरांत ], साइलगिया [ मस्तिष्क पाडा के उपरांत ], अनेक में थोड़ा लगने के कारण होना आनिना ।

**वलेडोना व शक्ति ।**—जान क भीतर उर, अथवा आयुर्वेद [ जिन नसों से सुनाई पडता ] का पक्षा घात ।

**कैलकेरिया कार्व १२, ३० शक्ति ।**—ज्वर बुनन द्वारा बन्द । अथ ज्ञान पर बहुरापन मण्डमाला धातु ।

घेलेडोना ३,६ शक्ति ।—गुण गुण अध्यागो गो  
शब्द ।

घायना ६, ३० शक्ति ।—कमी शब्द बहुत कुछ  
होम होम के समान, (कमी घटे पजने के समान और  
कमी सपीन के समान ।

कार्बो-वेजेटेयिजिस १२, ३० शक्ति ।—अव ज्वर  
में कुमेन के अप-पहार के कारण हो [ इस  
अवस्था में कैलफेरिया-वाले और पल्साटिंग पावदा  
बैरती हैं ] ।

मार्कूरियम ६, ३० शक्ति ।—अव बेचक (दहन) के  
बाद हो और त्वर में अधिक पसिना हो ।

नक्षयोमिका ६, ३० शक्ति ।—अव सही लगकर  
हो और मान काडक समय पड़ता है ।

पल्साटिला ६, ३० शक्ति ।—अव ससरा के बाद  
हो, सग्या के समय बढ़ता ।

रस्टक्स ६, ३० शक्ति ।—अव अत्र में मींगन स,  
मींगन अत्र से घान करने स अथवा और भारी चर्मा  
पड़ाने इत्यादि के कारण हो, दिवाम लग ही अवस्था  
में बढ़ता ।

सल्फा ६, ३० शक्ति ।—अव पुराना घाय गुण आवे  
अथवा बार बार रोग दब जाय और अरु कारण  
स हो ।



**औषध प्रयोग ।**—यही अवस्था में दिन में एक बार अथवा दो बार औषध प्रयोग करना चाहिये । पुराने रोग में दो एक दिन के अन्तर से एक एक मात्रा औषध खिलानी चाहिये । इस से अधिक नहीं ।

**सहकारी उपाय ।**—ज्ञान करने के उपरान्त कान के भीतर पानी रह जाना अच्छा नहीं है । सूखे कपड़ से पोंछ डालना चाहिये । कान को सर्वदा या कपड़ा अथवा तुनका से घुरेडना अच्छा नहीं है । यह अग्न्यास बहुत ही बुरा है । बालकोंके कान पर कभी थप्पड़ अथवा धूसा नहीं मारना चाहिये । धाव्यायना में काँइ भयङ्कर शब्द सुनने से बहुत से बालक घबरे हो जाते हैं ।

## कर्णनाद ।

अधिकांश कर्ण रोगों के साथहा कान के भीतर अनेक प्रकार के शब्द सुनाई दिया करते हैं । यह कर्णनाद इन सब रोगों का एक लक्षण मात्र है । किन्तु प्रायः देखा जाता है कि किसी प्रकार का कर्ण रोग न होने पर भी कान के भीतर अनेक प्रकार शब्द सुनाई दते हैं । ऐसे अवसर पर यह शब्द एक राग गिना जाता है । ऐसी व्यवस्था में निम्नलिखित औषधों में से जिस उचित समर्थ व्यवहार करें ।

**एकोनार्डिट ३, ६ शक्ति ।**—कान के भीतर गों गों शब्द और मस्तक के कान उत्पन्न ।

वेलोडोना ३,६ शक्ति ।—गुन गुन ययग गों गों  
राम् ।

चापना ६, ३० शक्ति ।—कमी शब्द बहुत कुछ  
दास्त दास्त के समान, (कमी घंटे घपने के समान और  
कमी सगान के समान ।

कार्थो वेजेटोवेलिस १२, ३० शक्ति ।—जय जयर  
में कुनेन के अप-यवहार के कारण हो [ इस  
यवस्था में कैठकरिया-बार्म और पलसाटिला फायदा  
करती है ] ।

मार्कूरियम ६, ३० शक्ति ।—जय बेचक (यस-त) के  
बाद हो और शरीर में अधिक पमाया हो ।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति ।—जय सदी लगकर  
हो और प्रातः कालक समय पड़ता हो ।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति ।—जय ससरा के बाद  
हो, सग्या के समय बढ़ना ।

रस्टक्स ६, ३० शक्ति ।—जय अत्र में भीगने से,  
शीतल जल से छान करने से, ययवा बंद मारी चीन  
उठाने इत्यादि के कारण हो विधाम लत की ययग्या  
में बढ़ना ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—जय पुपता घाय दान जाने  
ययवा कोरे यम होत दब रोग और उस पारेण  
से हो ।

**औषध प्रयोग ।**—दिन में २।३ बार औषध देना चाहिये ।

**कर्णमूल प्रदाह ।**

( माम्पूस् )

भीचे घाले जायद के कोन और कान के भीचे के भाग में जो छालानि सारक एक बड़ी गाँठ है उस में प्रदाह होने से उसको कर्णमूल प्रदाह कहते हैं । पहले मालस्य मालूम होना शरीर गिरा पड़ना, हाथ पैरों में दह, भूख कम होना, सर्दी सी लगना, त्वर और सिर दह मालूम होकर २।३ दिन के भीतर एक ओर अथवा दोनों ओर की गाँठें फूट जाती हैं, उन में दह होता है और बड़ी पड़ जाती है । कभी कभी अघातक होता है कि सब गला तक फूट जाता है और दह हाने लगता है । गर्दन हिलान की अथवा कोई वस्तु निगलने की अथवा खाने की शक्ति नहीं रहती ।

इस रोग का एक विशेष लक्षण यह है कि प्रायः ज्ञान परिवर्तन करने से स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के शङ्खछोप पर आक्रमण होता है । यह सब ज्ञान भी खूब जाते हैं, इन में प्रदाह जान लगता है और दह होता है । कर्णमूल प्रदाह प्रायः शीत और बरषा काल में बहुव्यापक रूप से दिखलाई पड़ता है । इस का सन्नामक रोगों में गिनती है । यह प्रायः बच्चों का होता है ।

**चिकित्सा ।**—बेलेडोना ३ शक्ति ।—सब गाँठें उमड़ टाट रखनी मिश्रण कर दाहिने ओर का [काठा छिपे हुए

हाल रहनी और पांखे और की गांठ होने पर रस्टकम ], अचानक फूलना कम होने पर छपकन, सिर दब और प्रहाप बढ़ना आरम्भ होता है, निद्रालुता किन्तु भीद न आना ।

**हायोस्तापेमस ई शक्ति ।**—यदि ज्ञान परिष्कृत करने से रोग मालिन्ध में जाय । प्रहाप, एक कृष्टि, हाथ पैरों फटकना और पटकना आदि प्रायविक लक्षण ।

**मार्कूरिपत ।**—यही इस रोग की प्रधान औषधि है । यद्यपि यही इसकी एक मात्र औषधि होती है । विशेष कर रोग सामान्य प्रकार का होने से अच्छा होजावे । इस औषधि के लक्षण—सर्दी लगन से रोग, गांठ अत्यन्त सख्त और पूरी हुई, जायदा हिलान में और निगलने में अधिक बल, पसना आना किन्तु उस से कुछ आराम न होना, मुँह से बहुत सी खार गिरना और भ्यास रन में तथा निगलने में दुर्गन्ध आना । सब लक्षणों का रात्रि में और सीठ बपा के दिन में बढ़ना ।

**पलसाटिला ।**—यह ज्ञान परिष्कृत करने से रोग मूलको अक्रमण करे [ मण्डकोप आक्रमित होने पर आर्सेनिक मयथा कार्बो-बेजीटोसिलिन ] मण्डकोप प्रदाह और फूलना उस में खरब मारने कासा दब, जीभ मैल न दही हुई । मात काल मुँह का खराब स्वाद और सिर घूमना ।

**रस्टकस ई शक्ति ।**—जब विकार का लक्षण दिख लाए पड़े ।

**श्रीपथ प्रयाग ।**—सामान्य रोग में दिन में ३।४

यार। यदि रोग मानसक स्तन अथवा अण्डकोष आक्रमण कर ना जायदि तान तान घण्ट क अंतर से हनी चाहिये।

महकारी उपाय ।—राजा का इस प्रकार सुला

१५५ क. १७७८ स. १७७८ न. १७७८ । १७७८ इस बात पर छात्र रचना  
 छात्रों के उत्तर के मा. प्रकार से १७७८ १७७८ पाठ्य १७७८ छात्र  
 पर १७७८ १७७८ १७७८ न. १७७८ छात्रों के १७७८  
 प्रशासनिक कार्य १७७८ १७७८ १७७८ १७७८ १७७८ १७७८  
 १७७८ १७७८ १७७८ १७७८ १७७८ १७७८ १७७८ १७७८

प य ।—मायुगता गार्हो तदि हृदय पश्य दत्ता  
 य । पतता पतता पश्य हा न्न मे सुभीता । दहता है  
 क र क उभय न्न मे पुत्र पत्नी नष्ट नहीं होता । मण्डी  
 मान ॥ नारायण इव दत्ता मन्त्रा नहीं है ।

३ । ३ । अथवा ।

न.सा.भा.ग. समूह ।

न क प्रप्ता ( न भ त क ) उ काम या सरेयमा ।

लक्षणम् ।                      ६ । अथ न साधारणं तान् द्वे ।

[illegible]

भाजाना । यदि इस थपसा में भारास न होजावे तो सर्दी गले और छाती तक फैल जाती है और उस से स्वरमूढ़ गले का दूद, सामी, श्वास बंद और ज्वर आदि लक्षण प्रकाशित होने हैं ।

**कारण ।** शरीर में जिस किसी कारणसेभी उत्ताप का रूप होता है उसी से सर्दी लग जाती है, यथा — [१] गीला कपड़ा पहिने रहना । यह स्मरण रखना चाहिये कि जितनी देर तक गीला कपड़ा पहिनकर परिधम 'किपापापगा' उतनी देर तक परिधम के कारण लगातार उत्ताप उत्पन्न होने का कारण सर्दी नहीं खंग सक्ती, किन्तु परिधम के उपरांत भी गीला कपड़ा पहिने रहने से निश्चय ही सर्दी लगने की सम्भावना है । [२] शीतर वायु लगना, [३] बहुत देर तक जल में रहना, [४] अचानक गरमी से सर्दी में भाजाना, [५] मोढ़ने पहिनने के कपड़ों का कमी इत्यादि । यद्ये और कुछ लोगों को प्रथम रोगी और दुबल मनुष्यों को इन सब कारणों से सावधान रहना चाहिये ।

**चिकित्सा ।—** कैम्फर अधरा अर्क कपूर ।—

सर्दी की शुरुआत होनेही दोदो धूद अथ कपूर चीना के साथ मिलाकर साथे साथ थपट के अन्तर म यदि ५७ या चाया आयना तो शुरुत ही सर्दी बन्द होजायेगी । या भारमे में हा म दिया आयना तो कुछ विशेष उपकार दीखेगा ।

**एकोनाईट ३ शक्ति ।—** सर्दी परम् भास और ठ लगन से और और पीडाओंकी प्रगमाथण्या में, विशेष उसने सङ्ग ज्वर अथवा ज्वर सा रहे ता यह बहुत उ



चाहिये, उपरान्त सूखे कपड़े से पैरों को अच्छी तरह से पोछ लिया जावे। दिन में ३४ बार पानी के साथ नमक मिठाकर सूखने से कायदा मान्य पड़ता है। जुकाम की पहली बरफा में सब प्रकार के जलीय पदार्थ खाना बन्द रखने से कायदा होता है।

पृष्ठ । यदि ज्वर हो तो पदों के दलका पृष्ठ और पीछे सेटो। दूध और मिठाई दानिकारक होते हैं। अपनी अपनी धातु प्रकृति को समझ कर खान किया जावे।

पुराना जुकाम (जुकाम विगडना)।

(कानिक कैटर)

नये जुकाम की सुविधिज्ञता न करने से अथवा टापरपाटी करने से बनी बनी जुकाम विगडते हुए देखा जाता है। जिनकी गण्डमाला दूधित धातु होती है याद बगरी को अधिक बड़ पाते हुए देखा गया है। पहिले बड़ पठला रहता है, उपरान्त नाक में बाध होकर गांठे दुग्ध शुद्ध होना निकलता है, फिर बनी बनी उस में रक्त का छिटा भी रहता है। नाक से कुछ भी नहीं गुणा जाता, नाक सूखी हुई रहती है और दानो पाखोंके मध्य बनी खान में दर रहता है। रोग प्रेक्ष केने पुराना होता जाता है नाक के भीतर बड़ा और सूखी हुई पापटी लगने लगजाती है, उनको बड़ी गुंथक से बंदर निहाला जाता है एवम् इन में बड़ा दुग्ध माती है। बनी बनी नाक के बाध के पित्र की और बाध बढने लगता है और वहाँ से गले के भीतर बड़ दुग्ध शुद्ध बड़ गले से हमेशा आ मिथलाया रहता है, गला खराबे की रहता



रहती है, नाक से पेशी दुर्गन्ध बाहर होगी है कि रोगी  
यह उस के पास घाले को भी बुरा मालूम पड़ता है ।

**चिकित्सा ।—कैलकेरिया १२, ३० शक्ति ।—**

नाक के छिद्र में घाव, नाकसे दुर्गन्ध आना, नाक से  
धनुषदार पीप निकलना, गण्डमाला दूषित घातु ।

**काष्ठी वाईक्रमिक ३, ६ शक्ति ।—**नाक की जड़

में दबाव मालूम होना दोनों नयनों के बीच के परदे का  
घाव, गाढ़ा सफेद कफ निकलना यदि कफ निकलता, पम्प  
होजाये तो मयानक सिर दह उपस्थित होना, बड़ा और  
हरा पदार्थ निकलना, नाक से दुर्गन्ध ।

**लैकेसित १२, ३० शक्ति ।—**रक्त और मयाद निक

लना, नाकके भीतर घाव और पापडा पड़जाना, नाक से  
मत्स्यगन्ध और घाव करने वाला पतला स्लेष्मा  
निकलना ।

**माक्यूरियस वाईवस ६, १२ शक्ति ।—**

हरा हरा दुर्गन्ध युक्त मयाद निकलना नाक की हड्डी सूजी  
हुई, नाक में पापडा जम जाना और उनको निकालने में  
खून गिरना । यदि हड्डी में उपद्रव दाब हो तो यह औषध  
बहुत उपकार करता है ।

**साईबेशिया १२, ३० शक्ति ।—**नाकसे सूप करने वाला

और जलन करने वाला मयाद निकलना नाकके भीतर स्लेष्मा  
सूज कर रहजाने से और सूजने की शक्ति बिजुग हान से  
[ कैलकेरिया-बाय और काष्ठी-ग्राहक ] नाक के अप्रमाण  
में खुलना ।

**औषध प्रयोग ।**—दिन में १ घार के हिसाब एक सप्ताह तक औषध देनी चाहिये । उपरांत ६।८ दिन तक औषध न दानाये । पीछे यदि कोई फायदा न होये तो और कोई दवा तनवीज कर पहिले की माति देनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—प्रति दिन ठंडे पानी से स्नान करना चाहिये । मांस, मछली आदि पिठझुल न खाने चाहिये । स्वास्थ्य के नियमों का विधिपूर्वक पालन करना परम आवश्यक है ।

नोसोक्षित ।

( ओजिना )

नाक के भीतर घाव होकर दुर्गन्ध युक्त मयवा एक युक्त मयवा निकलना रहता है, नाक की दड़ी और पास वाली दड़ी [ मालि और उपमालि ] गल कर कभी कभी गिरती हुई देखी जाती है । नाक में ऐसी दुर्गन्ध होजाती है कि रोगी उस से पागल सा हो जाता है । कभी कभी तालू की दड़ी तक भाकात होती हुई देखी जाती है । नाक के भीतर पापड़ी पड़कर देमा खुल जाती हैं और बंद हो जाती हैं कि वे बाहर नहीं निकाली जा सकती । यदि दीप्रदा रोग निवारित न होतो नाक की दड़ी बिगड़ होकर नाक पैठ जाती है और गुरल बहुत ही बुरी होजाती है । ऐसा होने पर रोगी मच्छी तरह नहीं चाल सकता परन्तु गुन गुना कर थोड़ता है ।

**कारण ।**—उपवृक्ष होपड़ी इस रोग का प्रधान

कारणों में सम्मिलित गया है। इस के सिवाय इस रोग के  
 और भी किन्तु द्वा कारण हैं जिनसे पुराना जुकाम, ज्वर,  
 साहस चोट नाक के भाग पर क्लृप्त पदार्थ का रहजना,  
 गण्डमाला दाग इत्यादि।

चिकित्सा ।— आरम २२,३० शक्ति ।—

नाभ के ऊपर के भाग में इह नाभ का उत्थाप और इह, पितास १७५ हुए दस रगत का मधवा पीले रंग का छात्र । मशह निकटना } आधा पतला और आधा सुका । १. दुग्ध युक्त पात्र निकटना ।

कार्त्तानाडक्रम ३,६ शक्ति ।—गाढा छिट बिग

कभी कभी रक्त मिला हुआ छात्र । यह भीषण बहुत दिन  
तक झुलहाव - मा पड़ता है ।

आयान्त्रियम् ६ १२ शक्ति ।—मल्लस्त दुर्गम्,

न ई ह ॥१॥ न ई ह्यगि मे भाव ।

भाङ्गिणम् रत्नआडितम् ६ शक्तिः—रघुक

६३३ ॥ १०० ॥ ११० ॥ १२० ॥ १३० ॥ १४० ॥ १५० ॥ १६० ॥ १७० ॥ १८० ॥ १९० ॥ २०० ॥ २१० ॥ २२० ॥ २३० ॥ २४० ॥ २५० ॥ २६० ॥ २७० ॥ २८० ॥ २९० ॥ ३०० ॥ ३१० ॥ ३२० ॥ ३३० ॥ ३४० ॥ ३५० ॥ ३६० ॥ ३७० ॥ ३८० ॥ ३९० ॥ ४०० ॥ ४१० ॥ ४२० ॥ ४३० ॥ ४४० ॥ ४५० ॥ ४६० ॥ ४७० ॥ ४८० ॥ ४९० ॥ ५०० ॥ ५१० ॥ ५२० ॥ ५३० ॥ ५४० ॥ ५५० ॥ ५६० ॥ ५७० ॥ ५८० ॥ ५९० ॥ ६०० ॥ ६१० ॥ ६२० ॥ ६३० ॥ ६४० ॥ ६५० ॥ ६६० ॥ ६७० ॥ ६८० ॥ ६९० ॥ ७०० ॥ ७१० ॥ ७२० ॥ ७३० ॥ ७४० ॥ ७५० ॥ ७६० ॥ ७७० ॥ ७८० ॥ ७९० ॥ ८०० ॥ ८१० ॥ ८२० ॥ ८३० ॥ ८४० ॥ ८५० ॥ ८६० ॥ ८७० ॥ ८८० ॥ ८९० ॥ ९०० ॥ ९१० ॥ ९२० ॥ ९३० ॥ ९४० ॥ ९५० ॥ ९६० ॥ ९७० ॥ ९८० ॥ ९९० ॥ १००० ॥

नाट्यटक गमिड वाक्ति ।—अप्युक्त क कारण

एतन्मयं यन्त्रं ३ गुणं । कृत्वा न स अधिक मात्रा में धरा  
व्यवहार । इत्यादि ।

रैलकगिया क.न १२ सक्ति।- [ पात्र निकलना, दीप

दुष्ट ३ युक्त गंगा प्रायः शब्द रम्य का ] प्राप्तकारस्य ६ शक्ति-  
[शब्द रम्य का प्रत्यय शब्द स रम्य का द्वारा मवाद् निकलना]  
पञ्चाशत् न - गात्र दुष्ट धयुक्त छात्र] सत्कर

१३० शक्ति ।—[ गदला खड़ा खाव ], सारलेशिया १२, २० शक्ति ।—  
[ छाव बड़ा, गरबा और पीर मिखा हुआ ] ।

औषध प्रयोग ।—दिन में २ बार के दिसाव से औषध  
सेवन करने चाहिये ।

सहकारी उपाय ।— नाक को अच्छी तरह साफ  
रखना चाहिये । कभी कभी नाक में पिचकारी लगाना  
आवश्यक होजाना है । एक ग्ल्यास पानी में थोड़ा नमक  
मिलाकर नाक साफ करने से प्रायः कायदा दीखता है ।

पट्टा ।—मच्छी भास आदि न खाने चाहिये । क्या  
रीति स्वास्थ्य के नियम पाठन करना परम आवश्यक है ।

नाकसे खून गिरना ।

( ऐपिस टैक्सिस )

प्रायः यह एक साधारण रोग होता है, किन्तु साधारण  
रोग होने पर भी यह ध्यान देन और विचार करने की  
बात है कि किस समय इस रोग को औषध द्वारा बन्द  
करना चाहिये और किस समय बन्द नहीं करना चाहिये ।  
जिस समय औषध द्वारा रक्त बन्द करता चाहिये उस  
समय यदि नहीं किया आये तो रोगी की दुबलता बढ़कर  
सङ्कटापन्न उपस्थित होसकता है । और जिस समय इसे  
बन्द करना उचित नहीं है उस समय यदि बन्द कर दिया  
आये तो अज्ञानक रोगी को एक न एक खट्टा रोग पैदा  
होसकता है ।

सामान्य रक्त खाव में कोई सी औषध देना उचित  
नहीं है किन्तु यदि रक्त खाव बार बार और अधिक,

अधिक बेर तक होना रहे और देह कुपल हो तो औषध द्वारा चिकित्सा करने का प्रयोजन होता है ।

कोई पूर्य लक्षण दिखलाई न पड़ने परभी कभी कभी यह एक छात्र अचानक होजाता है । कभी कभी निम्न लिखित पूर्य लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं, यथा — सिर बंद, सिर घुमना, चहरे पर सुखी, गले की घमनियाँ का फड़कना और हाथ पैरों की शीतलता । कभी उज्ज्वल छात्र रंग का और कभी कालासा रंग का एक छात्र होने हुए देखा जाता है ।

**चिकित्सा ।—एकोमाईट ३, ६ शक्ति ।—**एक पूर्य घातु, चहरा लाल और सब घमनियाँ का फड़कना, एक उज्ज्वल लाल रङ्ग का ।

**आर्निका ३, ६ शक्ति ।—**बाहरी माधात क उपराग्य और जब एक छात्र के पहले नाक में चुनसा हो, अधिक भारी वस्तु उठाने से, अधिक परिभ्रम करने से, अधिक धम से एक छात्र होने पर—रस्टक्स] ।

**वेलेंडोना ३, ६ शक्ति ।—**मस्तिष्क में रक्तान्त्रिय, माद्य और चहरा लाल, शरीर अत्यन्त गरम, माद्य के सामान घिनगारीमी चलना, शब्द और प्रकाश से बढ़ना ।

**त्रायेनिया ३, ६ शक्ति ।—**मान काल बिछान से उठने क उत्साह [रात्रि को एक छात्र हानो—रस्टक्स; अतु के बदलन पर नाच से एक छात्र [पल्सेटिला, सीपिया], प्रीप्पराटोमें और देह अत्यन्त गरम हान पर ।

घावना ६,१२ शक्ति ।—बार बार देर तक रहने  
ला रक्तघ्राव, नाक के भीतर मोँ मोँ शब्द, चहारा  
हलुन्व और हाथ देर आदि दण्डे ।

नक्तयोमिका ६,३० शक्ति ।—भर्तृ[विज्ञासीर]का  
कंधा पर हाथ से, कपाल में धरे, जो लोग पुराने  
घ घाने पाठे हैं ।

फातफोरस ६,३० शक्ति ।— बहुत रक्तघ्राव,  
कंधा पर हाथ से, बिछेप कर मल त्याग करने  
समय ।

जिन को बार बार नाक से रक्त घ्राव होता है उन  
को घातुगत रोग दूर करने के लिये कैल्कटियाकाथ  
२ वा ३० घक्ति, सप्ताह में २ । १ बार एक घाँच घाँच में  
रक्त एक घाँचा सलफर ३० देना चाहिये ।

औषध प्रयोग ।—जब अधिक रक्तघ्राव होने लगे  
तब १५। २० मिनट के अन्तर से भाष्य मिठाई आसक्तों  
हैं । अथवा दिन में २, ३ बार औषध देना ही यथेष्ट है ।

सहकारी उपाय ।—यदि किसी प्रकारसे रक्त बन्द नहो  
तो मुँह बन्द कर नाक से श्वास लेना चाहिये । चहारा,  
नाक, मल्लक, गरदन आदि स्थानों में ठण्डा यथेष्ट परत  
का पानी प्रयोग करने से बहुत फायदा दिखलाई  
पड़ता है । दोनों हाथोंको सिर के ऊपर रखन से भी बहुत  
फायदा होता है । हेमामोलिम और पानी समान भाग में  
मिश्रकर नाक के भीतर प्रयोग करने से भी रक्त घ्राव  
बन्द जाता है ।

पट्टप ।—जिन के हमेशा नाक से रक्त गिरा करता है उनको मिताहारी [ बहुत खाना और गुरु पदार्थ आदि हानिकारक भोजन से परहेज रखना ] और परिश्रमी होना चाहिये । सब प्रकार के उत्तेजक पदार्थ छोड़ देने चाहिये और प्रति दिन शीतल जल से स्नान करना चाहिये । मद्य आदि सब प्रकार के उत्तेजक आद्य अथवा पानीय व्यवहार न करने चाहिये एवं अत्यन्त परिश्रम से बचना चाहिये ।

### नासा रोग ।

यह रोग प्रायः देखने में आता है । नाक के भीतर प्याज की कली के समान सूजन होजाती है । बीच बीच में उख होता है । नासा ज्वर के लक्षण और किसी प्रकार के पथर से नहीं मिलते इस लिये इनके देखने ही से नासा ज्वर समझा जासकता है । गरदन के स्थान में दर्द, भस्त्रक, शरीर, हाथ पैरों में दर्द सिर दर्द प्रबल ज्वर, पिपासा, शरीर में जलन आदि इस ज्वर के लक्षण हैं । इन सब कष्टोंको शान्त निवारण करनेके लिये बहुतसे लागू नासा तोड़नेके लिये अभ्यास करते हैं । छुर से नाक के भीतर की प्याज की सी कली को छुट देने से उस का रक्त बूँद बूँद कर निकलजाता है और भस्त्रक और गरदन का कष्ट पथ ज्वर दूर होजाता है । जिनको नासा तोड़ने का अभ्यास होता है उनको नासा ज्वर होने पर नासा न तोड़ने से बड़ा कष्ट होता है । इस लिये पहले ही से इस का अभ्यास करना उचित नहीं ।

नासा ज्वर जैसे अमानक आता है पैस ही अचानक न आता है । किन्तु इस का साधारण समझ कर

जी और एपिप्लोयी करने से जमी जमी पद रोग  
ज और बटिन होना है कि सदन हो हम का माराम  
ना बटिन होना है ।

**चिकित्सा ।—वेलेडोना ३,६ शक्ति ।—** प्रयत्न  
कम निर दद, ममक में एजापिकय, प्रत्येक वरणा  
न और दडवन, दिग्ने पत्र । ५, दान्द और प्रयत्न  
ना न रोग बटना, प्रयत्न उर, हम भावध व विदार  
पण हैं ।

**एकोनार्डिट ३,६ शक्ति ।—**प्रयत्न उर भय न  
जी और लडवना, दडवन, निर दद, प्रयत्न विपाना  
पुमप माटी पूज और नेत्र ।

**फासफोरस ६,३० शक्ति ।—**नाक से सदन  
निकल, नाक व दिग्ने एक हुए मातुम हो और नदी  
ने क बटिन जिस प्रकार माधे वा दान माहम दाना  
हमा प्रयत्न पोल मातुम होना । दह दान धार बटना  
नो पद हवा बहुत फादना करनी है ।

**सीरिया ६, ३० ।—**मूर्ध्ने दुग्ध मूर्ध्ने नाक  
चिकित्सा मगाम अपवा लाने एजापिकय प्रयत्न, नाक  
हो हु और बरकर होना घना । दिग्ने दिग्ने ११ दिग्ने  
कोनी है ।

**मार्डेलेशिया १२ ३० शक्ति ।—**नाक उर  
ना ६ दद और माधे दिग्ने ने दान मातुम दाना  
ना के दिग्ने क दान गुग्गुलु और दान दान दुग्ध  
नाक मगाम के दिग्ने अपवा पूर्वना क निर मगाम





है, क्योंकि हृत्पिण्डकी मज्जन की वजह से जो विकार उत्पन्न होता है उस तक यह दूर नहीं हो सकता है हृत्पिण्ड दूर नहीं होता। जिन्हा के विगडोसे जो हृत्पिण्ड होता है उसकी सहाय में चिकित्सा कीजासकती है। अर्पित्वाह (भोजन न पचना) आदि कारणों से जो हृत्पिण्ड होता है वह क्रियागत रोग का एक दृष्टान्त है।

हृत्पिण्ड और हृत्पिण्डकी मज्जना के भीतर हृत्पिण्डकी जिन्हा का कुछ अनुभव नहीं किया जासकता इसका-कारण यही होता है कि सचता एक इसका माघात भी अनुभव नहीं होता अथवा उसकी घटकरन मादूम नहीं पड़ती। किन्तु पीडा के कारण हृत्पिण्ड की घटकरन इतनी बढ़ जाती है कि छात्रों के भीतर घटकरन होती रहती है, कभी कभी उसकी तेज और छोरसे घटकरन अमानत रूप से सुनाई देने लगती है भार रागी का कम्पा इत्यादि है। आपत्तिरूप रज्जु, अत्यन्त मानसिक चिन्ता या आवेग, पौष्टिक, अश्लील बहुत रसग्राह्य के कारण रुचरना, अत्यन्त शारीरिक परिश्रम, हृत्पिण्डकी पीडा आदि अनेक कारणों से यह पीडा उत्पन्न होजाता है। अधिक व्यायामवा तन्वापु पासनी हृत्पिण्ड होने हुए देखा जाता है। त्रिविधा क्रान्तु सम्यग्धीय गटवही रहनेसे हृत्पिण्ड उत्पन्न होजाता है।

## चिकित्सा ।

१। मानसिक आवेगक कारण हृत्पिण्ड—केमोकार्ड (उत्पन्नता के कारण) कर्निदा (अत्यन्त मानसिक कारण हृत्पिण्ड का भाव समिद्ध) केमोनिंग (आपत्ति का कारण), मोरिदम या विरदम (अपत्ति का कारण)।

२। मत्स्यस्त परिधेम क कारण—आनिता ।

३। रक्ताधिषय व कारण—एकानार्द्र, घेले होना।

४। मपावने कारण—असवोमिहा, पडसाटिटा, लाईडा  
पोडियम ।

५। सायबिक कारण अथवा वायु शक्ति क कारण—माइस, हार्डनिडिया बलेडोता एकागाइड वैकटल, मासैजिक ।

६। शुद्ध सागोंका दुग्धलता के कारण दुग्धत्व-भावे।

एकनाइंट ३, ६ शक्ति ।—युवा वयस्क, रक्तपूर्ण धातु वाले मनुष्यों का हृत्कम्प, बहुतही अधिक बिल पाई बना, साथही ऐसा माहुर हाता माना समस्त शरीर का उठना है। भय लगने क उपरान्त अधिक उपचार करता है (इस अवस्था में काफिया और आपिबमभी कायका दहन है) मन में अत्यन्त भय और चिन्ता, रागी का वसी चिन्ता हाथ माया मृग्य हाता माया हाथर पैदा जाय, सोल्ल सेन में कल माहुर हा।

आर्सेनिक १५,३० ।—आयुष्य प्रयत्न हारम,  
विषय का तात्त्विक का अरु मान पर। इस सद्युक्त में डिग्री  
टैलिस सी कायना कम्पा ३ अथ न सम्बन्ध (कष्ट) अत्यन्त  
धर्मेता और सम्बन्ध अथ ५ २५ अथ न विद्याना, पर  
पर धारणा धर्मा अथ ना ।

प्रेमोदना ३,६ शान्ति ।—हृदय भाग ही नहीं  
 है मविदास नही वहाँ १ टुकड़ा गहरा कर लाना हृदय  
 में क्षणभंगुल जल्दी से सन्तुष्ट होने विधायक समय  
 हृदय भाग १ हृदय भाग २ हृदय भाग ३

रक्त प्रभाव धातु पाष्टा।

**डिजिटैलिस ३,६ शक्ति।**—पात करनेसे, दिलने घटने से वा शून्य करने से हृत्कम्प उपस्थित हो। ऐसा मान्य हो कि दिलने घटनेसही हृत्स्पन्दन बढ़ हो आयेगा, हृत्पिण्ड में तेज धुर चुमोने व समान भयवा सिद्धान्तके समान दर्द (इस लक्षण में रस्टक्स भी दिया जाता है) हृत्पिण्ड के पत्र वा रोग, इस के साथ ही साथ पैरों का फूलना।

**रस्टक्स ६,३० शक्ति।**—अिर भाव स पैठ रहने पर हृत्कम्प मान्य होना, इसलिये उसका उपशम करने के लिये योग्य दिलना चलना, हृत्पिण्ड में धुर चुमान वान दद, इसके साथ ही वायु हाथ में ठण्डाक व साथ ही सफाया भयवा ववसी मान्य पड़ता।

**फासफोरस ६,३० शक्ति।**—पसा मान्य हो माना हाती के चारों ओर जड़डा हुआ है, भयपय सास धेर में बढ़ होना और दुपलता मान्य होना। हृत्कम्प क भोजन व उपरात भयवा मानसिक भावेम के उपरात बडना।

**विराट्टम अलवम ६,१२ शक्ति।**—प्रपा सुस्पष्ट उद्वेग व साथ हृत्कम्प [इस लक्षण में डिजिटैलिस भी दिया जाता है], कपाल में डबडा पसीना, अत्यन्त दुपल कर पाग। अरामय, प्रत्येक बार प्रलस्याम व उपरात दुपलता वा बडना वचणा और मृशुभय [आमनिक]

**लेकेसिस ३० शक्ति।**—गर बार लम्बा सास

लेना, यदि बीच में श्वास रोक होना मानों बन्दर आते हैं, नाड़ी दुबल धाड़ आर सुई चुभोने व समान दवा रोगी को अचानक निडाक उपरान्त श्वासकष्ट, ऐसा मालूम हो मानों दम बढ़कगया है और जाग पड़ना ।

**श्रौषध प्रयोग ।** जब हृन्कम्प प्रयत्न बेगके साथ आरम्भ हो तब २०।३० मिनट के अन्तर से एक एक मात्र श्रौषध देनी चाहिये, और और समय में दिन में दो एक मात्राही यथष्ट है ।

**सहकारी उपाय ।**—सर्व प्रकारका मानसिक उत्तेजना, सर्व प्रकार उत्तेजक खाद्य, चाय या काफी पीना, न पचने वाला पदार्थ खाना इत्यादि वर्जनीय हैं । अचूक हवाका सवन, शीतल जलसे स्नान, गुली हुई हवा में यथाचित व्यायाम सहज में पचन वाला तथा पुष्टिकारक पदार्थ भाजन करना हृदय का अशांति और चिंताशून्य रहना इत्यादि महा इस रोग व प्रबल सहकारी उपाय हैं ।

### हृत्पिण्डकी वात ।

**लक्षण ।**—वात की पीड़ा का समय हा अथवा और कोई समय हो, रोगी को यायी और एक प्रकारका थोका सा दीप्त पड़ना है । कभी कभी उस स्थान में मत्स्य तेज दह भी मालूम होता है । यायी धार रोगी करवट लेकर सभी नहा सकना उमास निवाञ्जन में कष्ट होता है । चहटा देखने में कष्ट और बेगैना मालूम होती है । हृत्पिण्ड की अनियमित क्रिया अनि प्रयत्न ज्वर, और कभी

जमी बहुतही ज्यादा पसाने आता, नाड़ी कम चलना क्षीण और सुखडी हुर मादूम पड़ना, नाडीकी अवस्था ! हृत्पिण्ड के पड़वने की क्रिया के साथ समकालिक अर्थात् [ एकही समय में दोनों का साथ घड़वना ] और समभाषापन्न [ अर्थात् एकही तरह घड़वना ] रहो । यह रोग अत्यन्त ही घटित है । प्रायः इस में रोगी के जीवन का लक्ष्य दाजाता है । यदि इस से अचानक मृत्यु भी न हो तथापि यह ऐसा पुराना भाकार धारण करता है कि जिस से रोगी जीव मृत सा होनाका है । यह पुराना इतराग कष्टसाध्य होता है ।

### चिकित्सा ।—एकोनाईस ३, ६ शक्ति ।—

प्रबल ज्वर, उस के साथही प्रबल दिल घड़वना, हृत्पिण्ड और नाडी की घड़वन के साथ विसा प्रकार का मेल न रहना । छाती में सुई चुमोन के समान बंद होना, उसके कारण उसीम होने में बाधा पड़ना, अत्यन्त उद्वेग और मृदुभय, पेशाब बंद ।

आर्सेनिक १२, ३० शक्ति ।—हृत्पिण्ड का अत्यन्त घड़वना, विदाय कर रात्रि को और निश्च हाकर सोने पर, अत्यन्त शक्त्य और सुखरता, अत्यन्त पथेता और मृदुभय बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—छाती पर भारापन मादूम पड़ना उस के कारण श्वास बंद होना, बहुत छाती घड़वना, साथही हृत्पिण्डका अनियमित रूप से सकाचन, बंद जितनी जल्द आरंभ हो उनना ही जल्द चला जाय, लय

धन, सिर दह के साथ घट्टे की छाल रगत, उठनी हो  
चकर आना, सब शरीर में ठंडे पसाने आना ।

**मिमिसीफुगा ३, ६ शक्ति ।**—छाती में  
और उदरे में मालूम होना यावे क ३ में दह, इस दह  
बाय हाथ तक फैलना उस के साथही ऐसा मालूम हो  
मानो यह हाथ इस ओर बघा रहा है ।

**लैकेमिस १२, ३० शक्ति ।**—हृत्पिण्ड में बायठके  
दह, उससे छाता घट्टकना, हरवार हिलान से विशेष कर  
हाथ हिलान से श्वासकष्ट मालूम होना श्वास रुकने के भयसे  
न सकना गले में किसी वस्तु का स्पष्ट स्पर्श न होना, निद्राक  
हो रोगी की चक्कण की वृद्धि ।

**रस्टम्स ३, ६ शक्ति ।**—हृत्पिण्ड का दुर्बलता  
उसका फटकना स्थिर हाथर बैठनसे अत्यन्त जमी घडक  
हृत्पिण्ड में घुर चुभान के समान दह बाय हाथक  
के साथ हाथ साजना और सुन्न पड़जाय उध्मक से  
दह का घटना घन पडन के लिय बार बार जगह बदलन

**औषध प्रयाग ।**—राग की तीव्रताक अनुसार  
प्रत्येक घण्टे वा दो घण्टे के अंतर से दवा दनी चाहिये  
आराम होने पर ३४ घण्टे के अंतर से दवा द  
चाहिये ।

**पथ्य ।**—पहले वाली साबूदाना आदि दूध का पा  
देना चाहिये उपरान्त दूध आदि पुष्टिकर पशाय दिये  
सकत हैं । प्यास बुझान के लिय ठण्डा पाना पान  
दना चाहिये ।

## चतुर्दश अध्याय ।

### श्वासपत्र सम्बन्धीय पीडा ।

#### वक्ष परीक्षा ( छाती की परीक्षा ) ।

मन्दरीन [ देखना ], स्पृश [ स्पर्शना ] माप [ मापना ], श्राव [ सुना ] मीषान [ छानना ], आदि रीतियों से छाती के भीतर के पत्र आदि की स्वाभाविक मर्यादा की परीक्षा की जाती है ।

मन्दरीन [स्पेक्शन]—इस के द्वारा छाती का आकार व्यवस्था, श्वास प्रवास और छाती पूरने की व्यवस्था समझी जाती है । सुस्थ मनुष्य का छाती देखने से यह अच्छी तरह जाना जाता है कि छाती का पार्श्व और दाहिने और बाएँ आकार और श्वास प्रवास की गति प्रायः समानमात्र में चलता है अर्थात् श्वास एक समय दोनो ओर समान मात्र में उठती है और श्वास निकालने समय समान से बैठती है । सुस्थ और अस्थि मनुष्य का छाती का श्वास प्रति मिनट १६ से २० बार तक होता है । पण्डित के प्रवाद आदि रोग में इस श्वास प्रवास की गति भङ्ग होती है । पण्डित यदि ५० अवस्था ६० बार तक हो जाता है । देखने से श्वासस्थ रोग बयान वक्ष ( कृन्त क मन्त छाती ) और दाहिने दाहिने छाती आदि मालूम हो जाती है । यह दाहिने आकारों दाहिने दाहिने रोग की सूचना देने वाले हैं ।

स्पृश [स्पेक्शन]—इस से दाहिने दाहिने छाती परीक्षा करने का नाम स्पृश है । छाती के मानने और पीछे की पार्श्व दाहिने दाहिने श्वास प्रवास की गति देखने परीक्षा है । जो कुछ परीक्षा करने से का रोग है





से 'अथवा कैंफडा घनीभूत [ फडा ] होने से यह शब्द पाया जाता है ।

[ २ ] उल्टास अथवा पूर्णगमता ।—बड़िया यंत्र के उपर ठोक्ने से यह शब्द उत्पन्न होता है । कैंफडे में प्रदाह होने वाले रोग में यह शब्द पाया जाता है ।

[ ३ ] टिन्पोनिक अथवा आध्मानिक ।—सुष्ण वायु में कैंफड के उपर ठोक्ने से यह शब्द पाया जाता है । कैंफड में वायु विद्यमान रहने पर यह शब्द उत्पन्न होता है ।

[ ४ ] क्रैक पाट [Crack pot sound] किसी धातु के घने हुए दूरे घर्षण का ठोक्ने से जो शब्द आता है वह भी ठाक उसी प्रकार है । कैंफडे में कैविटी या गहर उत्पन्न होने से यह शब्द सुनाई पड़ता है ।

आकर्षण वा श्रवण (आस्कल्टेशन) —रोगी की छाती में हाथ लगाकर सुनने से उस पंगुला को आकर्षण कहते हैं । कभी कभी इस परीक्षा में अनुमाना होता है इस स्थेथोस्कोप (Stethoscope) नामक यंत्र द्वारा परीक्षा का जाती है । इस यंत्र की अच्छी तरह परीक्षा कर किसी अच्छे दुकानदार के महाशयराहना चादिये । स्थेथोस्कोप बनेक प्रकार के होते हैं, किंतु उन सबकी सरासरी लकड़ी अथवा धातु के घने हुए मध्यम अच्छा होते हैं । रण्डरी मर्डी वाल स्थेथोस्कोप आर्यों की परामर्श के लिए प्रयुक्त रहता रहा के लिए विशेष उपयोगी होते हैं । इस परीक्षाके अनुभव का बड़ा माधुर्यका है । छाती की परीक्षा करते समय बड़े ध्यानसे रुक रुक प्रकार के

शब्दों पर दृष्टि देना भावश्यक है । स्टेप्मस्कोपका अ  
अस छाती के ऊपर घेड़ाया जाता है उसका दोनों ओर  
की हड्डियों के बीच में इस प्रकार से रखना चाहिये  
कि किसी ओर उठाना न रहे । छाती पर दृष्टि  
को दायकर रखना उचित नहीं है । श्वास उत समय  
सब छाती की वायुवाय परीक्षा करना चाहिये । साधा  
रणत निम्नलिखित स्थानों में श्वासको रखकर मातरके शब्द सुनना  
पड़ता है । कण्ठ की हड्डी के नीचे की ओर, गल की  
हड्डियों के बीच में, हृत्पिण्ड के ऊपर नीचे और बायीं ओर,  
गुँज की हड्डी के बीच के स्थान में, पाँचुन की हड्डी के सामने  
और पीछे की ओर इत्यादि ।

स्टेप्मस्कोप द्वारा छाती की परीक्षा करने समय निम्न विहित  
शब्द सुनाई पड़ते हैं —

सनारस् रड्कास् वा लन् धन् शब्द ।—ब्राड्कार्गि  
राग में श्वास प्रश्वास के समय यह सुनाई पड़ता है ।  
प्रायः बड़ा श्वास उलास यह उत्पन्न होता है ।

सायलण्ट रड्कास् वा सनसनाहट [ सप श्वास यह ]  
के समान अथवा साठा धन के समान शब्द ।—  
मौकाइडिस, पाष्पाशमा आदि रोगों में श्वास उत के  
समय यह शब्द सुनाई पड़ता है । सद्गुचित छाती श्वास  
मला या घन श्वासा के मातर होकर वायु प्रवेश करने से  
यह उत्पन्न होता है ।

म्यूकास रास्स श्लेष्मिक वा उड विस्फोक्त के  
शब्द ।—ब्राड्कार्गि और हिम्प्रीसिस् राग में यथा  
श्वास नगी में रक्त रदन से यह शब्द सुनाई पड़ता है ।  
यसमा ओर फेफड़े के प्रदाह का आरोग्यावस्था में यह शब्द

हुँछ हुँछ सुनाई पड़ता है ।

हालो धाँपिङ्ग रङ्गास या बिम्बस्फोटनके समान शब्द ।—यहमा रोग में फेंफड़े में गम्हर होने पर या श्वास नली का फैलाव होने पर श्वास छेने और निफालन के समय यह शब्द सुना जाता है ।

फ्रीपीटेशन या केच मदनबद्ध शब्द ।—फेंफड़े के प्रदाह आदि रोगों में श्वास छेने के समय यह सुनाई पड़ता है । प्रदाह विषिष्ट वायु बाँप व आर से फैलने के कारण इस प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है । फेंफड़ के प्रदाह आदि रोग जिस समय आराम होनेको हों उस समय श्वास प्रश्वास इन स जो थोड़ा थोड़ा मुशायम सा शब्द होता है उस का सेवेण्डरी बिपीटिटिङ्ग रङ्गास शब्द कहते हैं ।

स्वरभङ्गता ।

(होसनेस् )

स्वरभङ्गता प्रायः मर्दी यासी व साथ उपस्थित होनी हुई देखा जाता है । इस क निचाय और और मनेक राग यथा चेचक, हुँहर यासा ( घूघरा यासी ) प्राङ्गारटिस, आदि का एक लक्षणस्वरूप यह देखा जाता है । स्वरभङ्गता क कारण वात अस्पष्ट निकलती है और समझ नहीं पड़ता । मरु क मातर खुशखी खुगला वा सुर सुरादद मादूम पड़ता है । बमा बमा मल में दद भा होना है और यासी सी कभी कम आर कभी ज्यादा मादूम हासी है ।

चिकित्सा ।—

१ । सामान्य स्वरभङ्गता—फाइटलेफा, हायर-सल्वर, फासफोरस, कार्बो-वज्र ।

२ । सर्दी खासी के साथ स्वरमद्धता—रेकोनाइट, कास्टिकम, मायूरियस, प्रायोनिषा, स्पञ्जिया, फासफोरस, डक्नामारा ।

३ । अधिक चिल्लाना स यदि रोग हो—गायक और घम प्रचारक आदि का स्वरमद्धता—फाईटलैका, कास्टिकम, धैराटाकात्र ।

कार्य-वेज १२, ३० शक्ति ।—दीर्घश्वासी स्वरमद्धता, प्रातःकाल और सन्ध्या समय, घात कहनस बन्ना, खेचक उपरांत खासी और स्वरमद्धता ( कैमोमिला, पलमाटिला ) ।

कास्टिकम १२, ३० शक्ति ।—स्वरमद्धता, गलक भातर बकश मातुम पडना, विशेष कर प्रातःकाल के समय, कठिन स आराम्य हाने का दाखन में, जब गल और छाता के भीतर दह हा ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—सर्दी के कारण स्वर मद्धता, गलक भीतर दग्धता, विशेष कर पर्थों के, रागी अत्यंत चिडाचरा ।

मायूरियस ६, ३० शक्ति ।—स्वरमद्ध एवम् बकश और गल के भीतर ज्वन और सुइसुइहाइट मातुम होना, पसीन माना किन्तु कुछ आराम न पडना ।

नक्सवोमिका ६ शक्ति ।—सर्दी के कारण स्वर मद्धता, काष्ठपद ।

पलमाटिला ६, ३० शक्ति ।—स्वरमद्धता, रसा

कारण से शिवावर घात न सह सकता [ फामफोरम  
सर्दी, सापही गीबी खासी, कफ पीठ रड्ड का, हरा, दुग्न्ध,  
प्रवृत्ति मृदु ( मुलायम ), नम्र और सहन हा में खाँसा में अल  
भर जाने की प्रवृत्ति ।

**फामफोरम ६,६० शक्ति ।**—स्वमद्वता व सर  
विद्वत्, पुराता स्वमद्वता [ वायेश्वर ], छाती के चारों ओर  
ऊँह जाने के समान मादुम होत और सूखी खासी ।

**सत्तफर ३० शक्ति ।**—मांस छुटने व साथ हा माया  
घट होना, रूचने और बिड़की मोल देने की इच्छा, गलेके  
नीचे तुरतुराहट मादुम पड़ना, मस्तक के ऊपर गरमी  
मादुम पड़ना, शीघ्र देह के लोग जो मस्तक नीचा कर  
चलते हैं ।

**श्रीपथ प्रयोग ।**—तदन अवस्था में प्रति ३४  
घण्टे के अन्तर से श्रीपथ देना चाहिये । राग पुराना  
होने पर मात काल धार सख्या समय एक एक माया  
श्रीपथ देनी चाहिये ।

**हृषिद्र खासी ।**

**हृषिद्र कफ ।**

गूगल खासी के समान यह भी प्रायः पाज्यापण्या का  
हा रोग है । भावने समय 'हृष' शब्द व समान एक प्रकार  
का शब्द दाना है इसी से इस का यह नाम पड़ा है ।  
टहर टहर कर खासी का भावमण गुरू दाना है । तब  
खासी उठता है तब उपरहा ऊपर वायुमिक खासा आती  
है । अतः में या ता चैप के समान कफ निकलता है और

या एक प्रकार के गांठे चुपकने पड़ाव का उत्पन्न होती है ।

यसरे के समान यह कभी कभी बहुआयस्क रूप में फैलती हुई देखी जाती है । मीन उन्म क सम्बन्धी होता है । इस धरण का उन्म क उपरान्त प्राय नहीं होता । यह रोग बड़ा कष्टकर होता है क्योंकि आसन आसने इस अटक जाने क समान होनाता है और मुँह लाल रंगका हो उठता है । यह रोग ३।३ सप्ताह मग्न कर वय की प्रकृति क अनुसार का महान नक रह सकता है । एक बार होजाने के उपरान्त फिर यह रोग प्राय नहीं होता ।

**लक्षणा ।**—पहले साधारण सर्षी के लक्षण यथा खासी बुखार सा रहना आदि के साथ उपस्थित होता है । एक सप्ताह के उपरान्त इस के विशेष आनुषंगिक लक्ष्मी के लक्षण मातुम पड़ने लगते हैं । गण क भीतर सुइ सुइ हट क साथ आना उठना है आना आन क पहल हा बर्षों का मातुम जातना है और यह कुछ मग्न हो जाता है पान का काह आन का राव अना है आसने समय आन और मुँह गण अथवा नाख रण क हावाने है आसों ऐसा मातुम पड़ना है आसों बाहर निकल पड़ेगा और आसों में पाना निकलता है । इस समय वय की भुवन दन्ते म वाक्मव में मय हाता है, ऐसा मातुम हाता है आसों इस अटक कर आन निकल जावेंग । आसों बन्द होने पर ऐसा मातुम हाता है आसों वय को किसी प्रकार का रोग ही नहीं है । कभी कभी उन्म हाती है । बार बार उत्पन्न होना म और आसों क कष्ट म वाक्म बहुत है । दुबल और कम आन हातना है । धुंसी आसों

॥ सांघानिक होने है यह वेला नदी दाता, किन्तु  
 गुरु बन उमर और वय बार यथो का मर्दी के  
 नों में यह भासी दाने स पास्य में आगुदा का  
 पय है ।

### चिकित्सा ।—

- १। प्रथम श्वर आदि में—पेवानाइट, बेल्हाना, बाही  
 इषोड, इत्यादि सही की सय भीषे हीनामी है ।
- २। रागी की बड़ी दुरि हालत में—डोमेरा आयोमिया,  
 रोमिला, इपीवा, नवसचामिदा, पेंटिमटाट ।
- ३। घेद में यदि दाव रहे तो—इपावा परसाडिला,  
 टिमटाट ।
- ४। यदि बापट जाते हो तो—कृष्ण, बेलेदोना, मिना,  
 विषम ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—रोग के प्रारम्भ में  
 र श्वर, गुरु भासी गले का दह धरि हो, बल्ल  
 लक कासी क समय ही गले को दाव से दवाना हो,  
 जो बर्त रहें होगा है अत्यन्त घबराहट, बड़ेसी और  
 कलंक ।

प्रासेनिक ६, ३० शक्ति ।—प्रारम्भ दुर्लभ  
 तीर रसा और रज्जुगुद अत्यन्त घात कर कर दादा  
 रसा रसा रसा हो अत्यन्त घात में अगुदा रहता है  
 जो को शिथिल कर आर्धरात्रि के कर बनता ।

बेलेदोना ३, ६ शक्ति ।—कर कर कासी रसा,  
 ( १६ )



रात को पड़ना, प्रत्यक्ष चार खासों के समय बालक ■  
 चंदरा लाल रंग का हो उठता हो [ नीले रंग का होना  
 इषीका के लक्षण हैं ], दोनों आँखें सूजी हुए और ठाल,  
 नाक से रून निकलना ।

**ब्रायोनिया ३, ६ शक्ति ।—**खासी का आक्रमण  
 प्रधानतः संध्या के समय या रात्रि में अथवा खाने पान  
 के उपरान्त दल्टा होने के साथ ही आरम्भ हो, कफ  
 उठता हो, खासने से छाती में दर्द मालूम हो, मूत्र कड़ा  
 अथवा कृष्ण, अत्यंत चिड़चिड़ापन, होठ सूजे और  
 पटे हुए ।

**कैमोमिला १२ शक्ति ।—**सूखी खासी, थय का  
 बहुत ही दृढ़ता आता हो सज्जा गोदा में लेकर किता  
 पड़ता हो हवा और पनपन मात्र सड़ी हुए बंदू बंधाव  
 में गरम पमाना ।

**सिना ६, ३० शक्ति ।—**खासते खासते अचानक  
 बालक कड़ा हावाव खासन के उपरान्त ही गले से लहर  
 पेट तक गडगडाहट का शब्द दौड़ा से पान कहने  
 से और हमन से खासी का बढ़ता चंदरे की रंग  
 बदला हुए और मनों के धागों और काली रंगत,  
 छुनि के लक्षण यथा नाक गुरगुरना वान किड़किड़ाना  
 इत्यादि ।

**इषीका ३, ६ शक्ति ।—**जमा नामी निमसे दम  
 बढ़त आता हो बालक कड़ा और चंदरा नीले रंगका

ने उठे, ऐसा मालूम हो मानो छाती में कफ जम रहा है किन्तु  
 सासने से नहीं निकलता, (पैटिम टाट) । सासनेसे सूखी  
 उलटी हो, डबकार याचें और श्लेष्मा की उलटी हो ।

**मार्कुरियस ६ शक्ति ।**—खासी केवल रात्रि में  
 प्रथमा । दिन में हो, दोबार आक्रमण हो, एक बार आक्रमण  
 होने के उपरान्त क्षीप्रही फिर आक्रमण हो किन्तु दोनों  
 क्षीप्रों में कुछ समय अवसर रहता हो, उलटी होने के  
 समय नाक और मुहसे रक्त पाहर हो, रात्रि को बहुत  
 पछाने माना ।

**नस्तवेमिका ६, ६० शक्ति ।**—सूखी खासी,  
 प्रातःकाल के समय में बढ़ना, सासने समय बढ़ता नीली  
 दण्डा होना, नाक और मुहसे रक्त निकलना, सूखी उलटी,  
 उलटी होना और कफ, खासी उठने समय नाभिसे  
 हथान में दर्द होना मानो पट्टर टुकड़े टुकड़े होनायेंगे ।  
 पेटापैथि भोजन सेवन करने के बाद भी यह औषध  
 विषय उपकार दिखलाती है ।

**पल्लसाटिला ६ शक्ति ।**—प्रारम्भ से ही  
 खासी के साथ अधिक कफ निकलना बार बार श्लेष्मा  
 अथवा चाये हुए पदार्थ की उलटी होना उदरामय, विषेय  
 कर रात्रि में, गला मजान के भीतर सही सी लगना,  
 महति श्रु और शांति ।

**ऐन्टिम टार्ट ३, ६ शक्ति ।**—खाना से यदि ही  
 बालक या उठे, अपना सान पाने के बाद ही खासी प्रपाम्यत

हो, गले में और छाती में एक धड़धड़ाना, ऐसा मातुम हा माना सब में इल्म मरा है किन्तु सासने से नहीं निकलना (इपीसा), जी मिचलाना और उल्टी, उस के साथही कपाल में ठण्डा पसीनों, निद्रालुता ।

**औषध प्रयोग ।**—भारम्भ में दिन में ३।४ बार औषध देनाही यथेष्ट है । यदि आग्नेयिक खाती दिक्लार्ह पड़े और बड़ो लग तो २।२ घण्टे मंतर से भी औषध हा जासक्ता है । भारोग्य होने के समय दिन में २।३ बार औषध दी जासक्ती है ।

**सहकारी उपाय ।**—बालक को बोधित न करना अथवा धमकाना नहीं चाहिये । क्योंकि अनेक समय प्रयत्न भावेण यथा दुःख मोष आदि के कारण सासा बार बार उठती है । बालक का सदा मायधानी के साथ यत्न रहना चाहिये क्योंकि पानी उठते क साथ हा गादा में लेकर सावधानी के साथ बैठाना चाहिये । यदि ज्वर नहो तो मकानके अंदर दरवाज मिडका सब बन्दकर बालकों की छाती और पीठमें गरम सरसों क तलकी मालिश करनी चाहिये । सही खाना निषिद्ध है । थोडा बालक बहुत कमभार न हो गया हो और सासा पुराना पड़गयी होतो धाड गरम पानी से स्नान कराना सुरा नहीं है । गरम पानी में फ्लानेट भिगोकर छाती और पाठका सक करना अच्छा है ।

**पथ्य ।**—बार बार थोडा खिगना अच्छा है किन्तु पर साथ अधिक पिछा देना अन्याय है । सहज में पचने

घाले पदार्थ के सिवाय और कुछ भी नहीं देना चाहिये । यदि बालक दूध पीता होतो माता को भी बड़ी सावधानी से रहना चाहिये ।

## सर्दी खासी ।

### ( पालमोनरी कैटर )

सर्दी ऊपर और सर्दी खामी ये इतने साधारण रोग हैं कि इनका विवरण लिखना निम्नपात्रन मालूम पड़ता है । छींक आना, नाकसे पानीके समान निकलना आँखसे जल गिरना, घाढ़ा घोंडा सिरदर्द, खर्की सी लगना और ऊपर इत्यादि इसके प्राथमिक लक्षण हैं । जैसे जैसे रोग बढ़ता जाता है वैसे ही गलेका भीतर जलन और सुरसुराहट मालूम होता है । पहले खासी मूत्री रहता है फिर बक निकलने लगता है । पहले बक सफ़ेद रहता है पीछे गाढ़ा और पीले रंगका हो जाता है । सब शरीर में दर्द और थालस्य मालूम होगा है । जो खासी साधारण रहती है वह ज़मरा बढ़ती जाती है, छाती में दर्द मालूम होता है, खासते समय दर्द आधा मालूम होता है, सांस लेते समय बह मालूम होता है, बक और भी अधिक निकलने लगता है और रङ्ग कुछ हरा गंधवा कुछ पीला होता है । कभी कभी यह दुग्ध मुख भी होता है, जीम मैला, मुहका घुरा स्वाद, भूख की कमी आदि सब लक्षण दिखलाई देते हैं ।

कभी कभी सर्दी खासी भी बहुज्यायक अथवा एपी डेमिक रूप में होते हुए दिखलाई पड़ती है । उस समय

उपर्युक्त सब लक्षण और भी प्रबल होजाते हैं। इसी रोगी डेमिक सही ज्वर को इफ्लूएन्जा कहते हैं।

**चिकित्सा ।—ऐकोनाइट ३-६ शक्ति ।—**

सही की प्रयत्नायना में कायदा करना है। विशेष कर यदि गुष्क और ठंडी हवा लगने के कारण सही हो। सूखा और गरम शरीर, बंधवा कम्प और उत्साह, इस के साथ ही अत्यन्त ध्यास, गले के भीतर छुड छुड और बहू बहू शब्द के समान आसी, छाती में सुर गुमान के समान दह, उस से सांस लेने में कष्ट होना [ प्रायोनिवा ], मय, घबराहट और अत्यन्त बड़ेनी।

**बेलेहोना ३, ६ शक्ति ।—**लपचन के साथ मिर दह, छात्र चहदा, गले में दह, गले के भीतर सुधी और गुप्तन सूधी और बायडे वाली आसी साथ ही गन्ध और छाती के भीतर छुड छुड मायूम होना [ प्रायोनिवा ], आसत में दह मायूम होना इसी से रोगी आसी को दाबने की कायिष्ठ कर, सामने के उपरान्त चालक रोगी हो सन्ध्या समय बनना।

**प्रायोनिवा ३, ६ शक्ति ।—**सूधी मयवा तर आसी और छाती में सुर गुमान के समान दह, सांस लेने और सांसने समय छाती में सुर गुमान के समान दह [ देहो नाए बेहोना ], साथ में इनक छात्र से दह होना हो कि प्रायो प्रमनक कर जना है, दिग्ग में बहना ( बह होना ), के ठुबहता, रोगी बहुत ही विह्वल हो जाये ( देमादिष्टा, बसबेमिष्टा ), अन्तर्गत के समय रहता।

**डट्कामारा ३ शक्ति ।—**भीगने से अथवा गीले

स्थान में रहने से यदि रोग हो, शरमद्रता और गीखा  
खासी, ठंडी दवा लगनेही से अथवा धरसाती दवा से पड़ना,  
सर्दी लगने से उदसमय ।

**हीपर सलफर ६, १२ शक्ति ।—**बेसा मानुस हो

कि गड में बारा छि गया है, शरमद्र के साथ खासी,  
बरा पतला और बहुत, मानो भ्रास रोघ करता है,  
देखा कोई भय उड होने से ही खासी होना  
(पट्टम) ।

**इपीका ३, ६ शक्ति ।—**नाक बन्द होना, सुपने

की उधि मित्रुम (पल्लवित्ता), साँस रोहने वाली खासी,  
साँस लेने और निकालने से गल के भीतर घड घड  
करना बालों को घांसने व समय मानो हम मट्ट  
जाता है और मुद की लाल रगत होजायी है। खानी पर  
बेसा मानुस हो मानो बरा उम रहा है किन्तु घांसने से  
नहीं निकलना (वेष्टिम टाट) जो निकलना और रोप्पा की  
उल्टी होना ।

**मार्कुरियस वाईषम ६ शक्ति ।—**वेपांडेमिक सर्दी

गहर, नाक से उन्न वेदा जाने वाली खानी के समान  
निकलना गले में दर, निगलने में बड सुखी खासी,  
बेसा मानुस हो मानो खानी के भीतर गुरदी होकर है,  
साथ ही छांसे और कमर में दर, खानी का रात्रि में  
और बरा छाबड में सोन में रहना सर्दी और खानी  
दिहो हुं मानुस होना, अधिक पसीना आना मित्रु उध

से कुछ भारम मातृम न होना, सहज ही सरी रूप जाना [ हीपरसल्फर ] ।

**नक्सबोमिका ६, ३० शक्ति ।**—ज्वर माना और

सरी सी खगना कपाल में दृढ़, दिन में नाक बहना कि तु रात्रि का बन्ध हाथाना सूखी खासी और सिर दर्द, ऐसा मातृम हाता मानो माया फट जायेगा, गिरन से, बात कहन से मयथा चिन्ता करने से खासी बढ़ना, कान, मूत्र कटिन और कट से निचलना मत्स्य चिह्नित और मजल रहन का इच्छा, मान काल व समय सरी लक्षणों का बहना ।

**पलसादिला ६, ३० शक्ति ।**—माये की सरी,

किसी चात्र का खार न माना और किसी की गंध न माना, साध हा इन व सरी ऐसी सुदरी मातृम हो माना गल व भीतर न खाल उथल गई, साध ही इस व स्वरमहना (मकगत्रामिका), पतली खासा इत निचलना खान व उपरान्न रात्रि में सूना खासी, उन्हर धैर जाने से भागम मातृम बहना, छाती जकड़ी सी मातृम होना, गरम प्रदान में मा सरी सी लगना, सग्या समय इन सब लक्षणों का बहना । शान्त प्रकृति व मनुष्य जो सामान्य कारण से ही रोग मयथा कुछ प्रकाशित करे कर्म लिये बह और विरोध करकारी दे ।

**सल्फर ६, ३० शक्ति** —नदी और नादम मा

कानो निचलना हा खार और मृपरेका शक्ति बिटकुन हो व हा , बन्ध कमीतर बन्ध मन्त्रगरी चिह्निताना, खासी

मान बाल के समय अधिक हो, सहज ही में सर्दी लग जाये । दुष्यन् पतले शरीर क मनुष्य जा माया नीचा कर चलते हैं उनका लिये यह औषध अत्यन्त उपकारी है ।

**गोपय प्रयोग ।**—जब तक आराम न हो ३४ घण्टे के अन्तर से औषध देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—यदि छाता में कफ जम जाने के कारण कष्ट हो तो छाती में सरसों का तेल गरम कर उससे मालिश करनेसे और उपरांत गरम पाना से मेकने से कफ कुछ मुलायम हो जाता है और उससे कष्ट का कमा एवम् आराम मानुस पड़ता है । यदि ज्वर और छाताका कोई रोग न हो तो खान कान से मायस दी होता है कुछ नुस्खान नहीं होता ।

**पृष्ठप ।**—यदि ज्वरसा मानुस हो तो सायूराना और माली उपरान्त मूत्रा का रोटी । सर्दी खासी में दूध और मीठा मिलाकर कम पाया जायेगा उतना ही अच्छा है ।

## खासी या उरकाश ।

### ( कफ )

फैफड़े से भाषाण क साथ और आर स वायु निकलन का नामही खासा है । खासीको एक ही रोग नहीं कह सकते यह बिना रासका एक उत्पन्न मात्र है । खासी दो प्रकार होता है ।

( १ ) तण्ड अथवा सरस खासी जिसमें कफ ज्वरता हो ।

( २ ) सूखी खासा अथवा जिसमें कफ न निश्चलता हो ।

किसी पीडा क कारण फैफड़े और ग्रास नली में रुग्मा





१२। जज्जान के साथ खासी—नकमपोदिहा, हीपर सलपर ।

१३। उन्टीबे साथ खासी—इपीका, पेंटिम टाई, दौभरा, धरुलटिंग ।

१४। लून मोरे साथ खासी—इपीका, आनिंका, पेरम, सलपर ।

१५। मरमट्ट के साथ खासी—जेलसीमिनम, लुझिवा, पामपात्म, बाब-भेज, बासिहम, हीपर-सलपर ।

**एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।**—बड़ी तेज लूणी खासी बरत बा बला में लुहलुहाइट हाजेब कारण उठती हो, धार वह खासी जो कामोपाने स तमात् पीन र मोर रात्रि में बड़ती हो वेमे मनुष्य बा खासा जिसका धातु रक्त प्रधान हो, पश्चिम की टर्डी हवा लगवमे खासा ।

**जामेनिक ६, ३० शक्ति ।**—लूणी खासी, गन्धक के धूरेटे बाण्ड उल्लस हुा हो, इससे समझा लुन्हा हो खासी हो किन्तु वह बहुत बलमोर कष्टक साथ निरालता हो खासी हो उसमें लुन्हा होहा रहगारो, स्वाम वह मनुष्य हाजरा बिदेपहर सीडा बदनमें, पहराइट धरेता ।

**बेलेजोता ३, ६ शक्ति ।**—लूणी खासी बाणी रंग में लर दिने लुन्हा र लुन्हा होना में लुन्हा र लुन्हा लुन्हा में होना हो खासी मनुष्य होटे रंग में लुन्हा लुन्हा हो लर रर र लुन्हा में लुन्हा लुन्हा लुन्हा हो - र हाजरा कामर की लुन्हा हो, बरग हास लुन्हा लुन्हा लुन्हा लुन्हा ।

नापोनिया ३, ६ शक्ति ।—सूनी खाँसा और  
उलटी, रात्रि के समय बिछोने में छटने का खाँसा, खाँसा  
के कारण रोग का उठ कर बैटना वह खाँसा में मगर  
गहरा व्यास इन में अथवा निजाज में छाती में हवा  
नुमाने कासा वह खाँसा भ ऐसा मालूम हो मानो मरने  
और छाती पर जायगी सूखा कठिन मल, अत्यन्त विद  
विहायन और पाड़ा की बात में जायिन ॥ उडना ।

कैतवेणिया १२, ३० शक्ति।—एन्ही खाया बिठा  
का मज्जा व भस्म और माधारात के बाद प्रातः का  
खाया उन समय पालंग का एक निश्चला सोई से  
ऊपर बैठन में हाथ उठता इसी कारण से यह जाना कि  
पैर टड और गात्र।

३।५-योज १५ ३० शक्ति ।—गुणा न्यायी, वा  
 या १८१। मयवा इव १ प्रव/ न्याया उम ५५ वीडे  
 मग या मया १ नवज्जना प्रमवा १ व ममयडा पुगरी  
 गुणा न्यायी ।

काम्पिकम् १२ ३० शक्ति ।—सधरा गज मे  
 एतद्गुहादृष्ट हाकर मूत्र आसा मध्या व ममय मणी  
 एत मक वदुन टहा प्रत्य व न म कम हुना मग  
 कामन वन मूत्र मज मूत्र निवज मना ममममना विज  
 का मज मज व ममय ।

त्रैलोक्यप्रिया द्वि, १३ श्रुति ।—शृङ्गी सः पुण्डरी  
 कः पद्मस्य तटस्थो देवदेवः सर्वभूतहिते रतः ॥

हालत में भी, निरोप कर-घड़ी को, एक कपटी छाल,  
दूसरी कपटी एकदूष, रागी मत्स्यत बिडीबिडा हो,  
दिशाचार के साथ लोगों की बात का जबाब न देसकता  
हो बच्चों को धुन ही कलार, सर्वदा गोदी में घट  
कर घूमना चाहें ।

सतीना ६, ३० शक्ति ।—जिन बच्चोंके पैरमें काड़े  
हैं उनको सूखी भाचेरिफ खाँसी, बालक कम उठनाहो,  
ऐसा हो मानो कम भटक जानाहो, भासना हो और उपकार  
लेता हो मानो गलेके भीतर कुछ भटक रहाहो, नाक पुर  
चना और खुजाना, पेशाब को घाटा देर रख दनस दुपरे  
समान रुकव होना ।

हीपर-सलफर १२, ३० शक्ति ।—पुन पुनः के  
समान खाँसी और वायु नलेके भीतर भड़भड़ शब्द होना,  
भड़भड़ शब्द के साथ भास रुक करने वाली खाँसी,  
रात्रि को आधीरात के उतराठ बढ़ना, सूखा, स्वप्न  
के साथ खाँसी आतकाल के समय बढ़ना, शरीर  
उपादनेकी इच्छा न करना, शरीर में सामान्य सर्दी  
लगन दाम खाँसी बढ़ना ।

हायोसापेमस ३, ६ शक्ति ।—बुज भासविफ  
खाँसी बिना कर रात्रिमें और सोकर उठ बैठने में आराम  
माहून दाना खदरका रुद्ध नाहो नाली, सप पट्टों का  
फडफडा आरककदना, हिस्टारिया रागग्रस्त खी और पालकों  
निषे यह मत्स्यत उपकारी है ।



हो भाषा पट जायेगा किन्ना पाकाउय में दर्द,  
बोछपट्ट, मड घुटत, बटिन और पट के साथ निकले ।

**फासफोरस ६, ३० शक्ति ।**—उद्यस्वर से पढ़ने  
से, बोलने में दस्तन से, जयवा जल आदि पीने से गले  
और छाती के भीतर सुडसुडाहट के साथ सूखी खासी  
वा उद्वेग होना, होनी अकड़ी । दुर्लभ और सम्झा के  
समय सूखी, सुडसुडाहट के साथ खासी (पलसाटिला और  
सम्बर), मल लगना, पतला, बटिन और पट के साथ  
निकलना हो । यह औषध लम्बे पल्ले और परमा दूषित  
मनुष्यों के लिये अधिक उपयोगी है ।

**पलसाटिला ६ शक्ति ।**—रात्रि के समय सूखी  
खासी, दिहाने पर उठ कर बैठ जान ल आराम मान्नुम हो  
(दायाबायमम), सख खासी, बोला हवा जयवा बटवा  
कच मददही में निकलता हो, प्राण बाग के समय खासी,  
उस समय पीला, नमबीन, बटवा और बिचले उपवत्र  
करने वाला कच निकलता हो, खासी बसा बटरी भा  
होआठी हो, सम्झा जयवा लामदे पररसमी मय लक्षण  
पडत हो ।

**सलफर ६, ३० शक्ति ।**—सूखी खासी और गले  
के भीतर सुडसी और स्वरमम मरग खासी, हवा हवा  
और मीड मीड खाद वा देगा उगा कफ निकलनाहो,  
जना के भीतर अनिमय रूप्या पड पड करनाहो प्राण  
बाग के समय खासी का बटना जगिर पर न टिलक  
के लमान मय दुर्लभ खाद उधगती हो और मनेद प्रकार  
के चम रग । दुर्लभ पल्ले मन्त्रियों के शिव या मन्त्र

नीचा कर के चलत है ।

**एंटिमार्ट ३,६ शक्ति ।**—सरल सामा किन्तु

श्रीमन्म कर्क म निकलताहा घड़ घड़ शब्द के साथ मन्ना गहरा शोमी, रात्रिका बलना भार इसक भाव दम भरभर क समात मादूम हावा दमा मातुम होनि गहरा भार क मररहा है किन्तु निकलना नहा [ रणीका क समात ], उथकाद भाता भार माधव परिणाममें सुधमा की उठनी हाता रात १६म व्यास ।

**पेसडनाईट्रिक ६ शक्ति ।**—पुष्पनी बांसी, मायल

मीर दुलना उम्माद भीर उद्यमदीन, काण्डर राती दुबडा हाताम बून म रह माहार क उतराग्न पूना मादूम हा वाकाशयते २६ दिन में बांसी मधिय ।

**तन्तुमिना २२ शक्ति ।**—जाग लहर भात म

बांसा ग२ने २६ भार २६ का कडा हाताता ।

**कारियम ६ शक्ति ।**—कमा कमा गुहा बांसी

सामा क हाता ग२क जीवर मुजुही भाताम हाताम भेर हाथन म भाता कना कन गावक बांसा ।

**टुपम ३,२२ शक्ति ।**—क मन क उतराग्न राती

कनिगावक हाता ग२ लेन से बांसा दम उर्न । बांदो-क कर्म दया दमक मन्म बांसा दम । ६ ।

**टोमेना ३,२२ शक्ति ।**—उपहार मयरा उर्न

क भात मन्मदक मन्मदक कर्म वावका दृष्टि दने कने मन्मा दम मी रणादे, कक कक कक बांसा दम

पिट [हौडा] मधवा आनमण आवे, सोनेसे और रात्रिमें अत्यन्त  
जुड़ि हो केचक के उपरांत भावेपिच खासी में रह  
मोषध उत्तम है । उल्टीक साथ सूखी खासी में यह  
मोषध अत्यन्त उपकारी है ।

**स्टानम १२,३० शक्ति ।**—पुरानी सरल खासी  
अधिक और दरा, मीठ स्वादवाला मवाद व सगान  
मुग्धा निकलता हो, रात्रि के समय पसीमा आवे ।

**जाइकोपोडियम १२,३० शक्ति ।**—पुरानी खासी,  
मानकाल सूखी खासा, दिन में कफ निकल रात्रि में कष्ट  
हो, कफ नमकीन हो, गाढ़ा, पाला और मज्जा व समान  
मपला, ठंडी चीज खाने से खासी हो, सामान्य आहार से  
ही घट भरा मालूम हो, घेठ में वायु, तीसरे पहर ४ घने  
से ८ घने तक खासी अधिक ।

**कालीबाईक्रामिक ६ शक्ति ।**—सारे सारे शब्द,  
व्यवहार, ऐसा रहस्यार कफ निकले कि जिसको खाने  
से रस्ती के समान पैर तक रुग्णा होजाये । घासनेसे  
छाती से पीठ तक दर्द मातुम हो ।

**औषध प्रयोग ।**—यदि खासी प्रचल होतो २ । ३  
घट के मंतर स एक एक मात्रा औषध दनी चाहिये ।  
यदि रोग पहले की अग्रा कम प्रचल हो मधवा आराम  
हो साथ तो दिन व नीचर २ । ३ मात्रा औषध पयेष्ट है ।  
पुरानी खासी में दिन में द्वा बार औषध दनी  
चाहिय ।



महेश्वरी उपाय — 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |      |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|
| 1   | 2   | 3   | 4   | 5   | 6   | 7   | 8   | 9   | 10   |
| 11  | 12  | 13  | 14  | 15  | 16  | 17  | 18  | 19  | 20   |
| 21  | 22  | 23  | 24  | 25  | 26  | 27  | 28  | 29  | 30   |
| 31  | 32  | 33  | 34  | 35  | 36  | 37  | 38  | 39  | 40   |
| 41  | 42  | 43  | 44  | 45  | 46  | 47  | 48  | 49  | 50   |
| 51  | 52  | 53  | 54  | 55  | 56  | 57  | 58  | 59  | 60   |
| 61  | 62  | 63  | 64  | 65  | 66  | 67  | 68  | 69  | 70   |
| 71  | 72  | 73  | 74  | 75  | 76  | 77  | 78  | 79  | 80   |
| 81  | 82  | 83  | 84  | 85  | 86  | 87  | 88  | 89  | 90   |
| 91  | 92  | 93  | 94  | 95  | 96  | 97  | 98  | 99  | 100  |
| 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 | 109 | 110  |
| 111 | 112 | 113 | 114 | 115 | 116 | 117 | 118 | 119 | 120  |
| 121 | 122 | 123 | 124 | 125 | 126 | 127 | 128 | 129 | 130  |
| 131 | 132 | 133 | 134 | 135 | 136 | 137 | 138 | 139 | 140  |
| 141 | 142 | 143 | 144 | 145 | 146 | 147 | 148 | 149 | 150  |
| 151 | 152 | 153 | 154 | 155 | 156 | 157 | 158 | 159 | 160  |
| 161 | 162 | 163 | 164 | 165 | 166 | 167 | 168 | 169 | 170  |
| 171 | 172 | 173 | 174 | 175 | 176 | 177 | 178 | 179 | 180  |
| 181 | 182 | 183 | 184 | 185 | 186 | 187 | 188 | 189 | 190  |
| 191 | 192 | 193 | 194 | 195 | 196 | 197 | 198 | 199 | 200  |
| 201 | 202 | 203 | 204 | 205 | 206 | 207 | 208 | 209 | 210  |
| 211 | 212 | 213 | 214 | 215 | 216 | 217 | 218 | 219 | 220  |
| 221 | 222 | 223 | 224 | 225 | 226 | 227 | 228 | 229 | 230  |
| 231 | 232 | 233 | 234 | 235 | 236 | 237 | 238 | 239 | 240  |
| 241 | 242 | 243 | 244 | 245 | 246 | 247 | 248 | 249 | 250  |
| 251 | 252 | 253 | 254 | 255 | 256 | 257 | 258 | 259 | 260  |
| 261 | 262 | 263 | 264 | 265 | 266 | 267 | 268 | 269 | 270  |
| 271 | 272 | 273 | 274 | 275 | 276 | 277 | 278 | 279 | 280  |
| 281 | 282 | 283 | 284 | 285 | 286 | 287 | 288 | 289 | 290  |
| 291 | 292 | 293 | 294 | 295 | 296 | 297 | 298 | 299 | 300  |
| 301 | 302 | 303 | 304 | 305 | 306 | 307 | 308 | 309 | 310  |
| 311 | 312 | 313 | 314 | 315 | 316 | 317 | 318 | 319 | 320  |
| 321 | 322 | 323 | 324 | 325 | 326 | 327 | 328 | 329 | 330  |
| 331 | 332 | 333 | 334 | 335 | 336 | 337 | 338 | 339 | 340  |
| 341 | 342 | 343 | 344 | 345 | 346 | 347 | 348 | 349 | 350  |
| 351 | 352 | 353 | 354 | 355 | 356 | 357 | 358 | 359 | 360  |
| 361 | 362 | 363 | 364 | 365 | 366 | 367 | 368 | 369 | 370  |
| 371 | 372 | 373 | 374 | 375 | 376 | 377 | 378 | 379 | 380  |
| 381 | 382 | 383 | 384 | 385 | 386 | 387 | 388 | 389 | 390  |
| 391 | 392 | 393 | 394 | 395 | 396 | 397 | 398 | 399 | 400  |
| 401 | 402 | 403 | 404 | 405 | 406 | 407 | 408 | 409 | 410  |
| 411 | 412 | 413 | 414 | 415 | 416 | 417 | 418 | 419 | 420  |
| 421 | 422 | 423 | 424 | 425 | 426 | 427 | 428 | 429 | 430  |
| 431 | 432 | 433 | 434 | 435 | 436 | 437 | 438 | 439 | 440  |
| 441 | 442 | 443 | 444 | 445 | 446 | 447 | 448 | 449 | 450  |
| 451 | 452 | 453 | 454 | 455 | 456 | 457 | 458 | 459 | 460  |
| 461 | 462 | 463 | 464 | 465 | 466 | 467 | 468 | 469 | 470  |
| 471 | 472 | 473 | 474 | 475 | 476 | 477 | 478 | 479 | 480  |
| 481 | 482 | 483 | 484 | 485 | 486 | 487 | 488 | 489 | 490  |
| 491 | 492 | 493 | 494 | 495 | 496 | 497 | 498 | 499 | 500  |
| 501 | 502 | 503 | 504 | 505 | 506 | 507 | 508 | 509 | 510  |
| 511 | 512 | 513 | 514 | 515 | 516 | 517 | 518 | 519 | 520  |
| 521 | 522 | 523 | 524 | 525 | 526 | 527 | 528 | 529 | 530  |
| 531 | 532 | 533 | 534 | 535 | 536 | 537 | 538 | 539 | 540  |
| 541 | 542 | 543 | 544 | 545 | 546 | 547 | 548 | 549 | 550  |
| 551 | 552 | 553 | 554 | 555 | 556 | 557 | 558 | 559 | 560  |
| 561 | 562 | 563 | 564 | 565 | 566 | 567 | 568 | 569 | 570  |
| 571 | 572 | 573 | 574 | 575 | 576 | 577 | 578 | 579 | 580  |
| 581 | 582 | 583 | 584 | 585 | 586 | 587 | 588 | 589 | 590  |
| 591 | 592 | 593 | 594 | 595 | 596 | 597 | 598 | 599 | 600  |
| 601 | 602 | 603 | 604 | 605 | 606 | 607 | 608 | 609 | 610  |
| 611 | 612 | 613 | 614 | 615 | 616 | 617 | 618 | 619 | 620  |
| 621 | 622 | 623 | 624 | 625 | 626 | 627 | 628 | 629 | 630  |
| 631 | 632 | 633 | 634 | 635 | 636 | 637 | 638 | 639 | 640  |
| 641 | 642 | 643 | 644 | 645 | 646 | 647 | 648 | 649 | 650  |
| 651 | 652 | 653 | 654 | 655 | 656 | 657 | 658 | 659 | 660  |
| 661 | 662 | 663 | 664 | 665 | 666 | 667 | 668 | 669 | 670  |
| 671 | 672 | 673 | 674 | 675 | 676 | 677 | 678 | 679 | 680  |
| 681 | 682 | 683 | 684 | 685 | 686 | 687 | 688 | 689 | 690  |
| 691 | 692 | 693 | 694 | 695 | 696 | 697 | 698 | 699 | 700  |
| 701 | 702 | 703 | 704 | 705 | 706 | 707 | 708 | 709 | 710  |
| 711 | 712 | 713 | 714 | 715 | 716 | 717 | 718 | 719 | 720  |
| 721 | 722 | 723 | 724 | 725 | 726 | 727 | 728 | 729 | 730  |
| 731 | 732 | 733 | 734 | 735 | 736 | 737 | 738 | 739 | 740  |
| 741 | 742 | 743 | 744 | 745 | 746 | 747 | 748 | 749 | 750  |
| 751 | 752 | 753 | 754 | 755 | 756 | 757 | 758 | 759 | 760  |
| 761 | 762 | 763 | 764 | 765 | 766 | 767 | 768 | 769 | 770  |
| 771 | 772 | 773 | 774 | 775 | 776 | 777 | 778 | 779 | 780  |
| 781 | 782 | 783 | 784 | 785 | 786 | 787 | 788 | 789 | 790  |
| 791 | 792 | 793 | 794 | 795 | 796 | 797 | 798 | 799 | 800  |
| 801 | 802 | 803 | 804 | 805 | 806 | 807 | 808 | 809 | 810  |
| 811 | 812 | 813 | 814 | 815 | 816 | 817 | 818 | 819 | 820  |
| 821 | 822 | 823 | 824 | 825 | 826 | 827 | 828 | 829 | 830  |
| 831 | 832 | 833 | 834 | 835 | 836 | 837 | 838 | 839 | 840  |
| 841 | 842 | 843 | 844 | 845 | 846 | 847 | 848 | 849 | 850  |
| 851 | 852 | 853 | 854 | 855 | 856 | 857 | 858 | 859 | 860  |
| 861 | 862 | 863 | 864 | 865 | 866 | 867 | 868 | 869 | 870  |
| 871 | 872 | 873 | 874 | 875 | 876 | 877 | 878 | 879 | 880  |
| 881 | 882 | 883 | 884 | 885 | 886 | 887 | 888 | 889 | 890  |
| 891 | 892 | 893 | 894 | 895 | 896 | 897 | 898 | 899 | 900  |
| 901 | 902 | 903 | 904 | 905 | 906 | 907 | 908 | 909 | 910  |
| 911 | 912 | 913 | 914 | 915 | 916 | 917 | 918 | 919 | 920  |
| 921 | 922 | 923 | 924 | 925 | 926 | 927 | 928 | 929 | 930  |
| 931 | 932 | 933 | 934 | 935 | 936 | 937 | 938 | 939 | 940  |
| 941 | 942 | 943 | 944 | 945 | 946 | 947 | 948 | 949 | 950  |
| 951 | 952 | 953 | 954 | 955 | 956 | 957 | 958 | 959 | 960  |
| 961 | 962 | 963 | 964 | 965 | 966 | 967 | 968 | 969 | 970  |
| 971 | 972 | 973 | 974 | 975 | 976 | 977 | 978 | 979 | 980  |
| 981 | 982 | 983 | 984 | 985 | 986 | 987 | 988 | 989 | 990  |
| 991 | 992 | 993 | 994 | 995 | 996 | 997 | 998 | 999 | 1000 |

से रक्त गिरता है तब छासी के साथ रून का छँटा दिचला पड़ता है। यह रून दमी उज्जल छाल रंग का होता है और कमी काबा सा दमी पतला और कमी उमा हुआ होता है। इस प्रकार सामान्य रून गिरने को रक्त निष्ठीपन कहते हैं यह सहजही औषध देन से शापम होजाता है। किन्तु अब यहाँ धमनी टूट जाती है तब नाक और मुँह से रून निकलने लगता है और बहुत ही थोड़ा समय में पहरा पाटने व समान बहुत सा रक्त निश्चलता है जिससे देल वर मयभीत और चमकित होना पड़ता है। इसीको फेंगहा से रक्तछाव कहते हैं। इस प्रकार रक्तछाव मति साधातिव होता है।

परमाकाश बहुतही साधातिव रोग होता है, निष्ठीपन और फेंगहा का रक्तछाव अधिकतर इसी प्राणनाशक रोग के साथ हुआ करताहै। फेंगहास रून निश्चलता देख कर पहलही यहमा छासी की धान मनमें उदय होती है।

**कारण ।**—यहमा सासा व निषाध औषधी अनेक कारणोंसे फेंगहास रक्त छाव हो सकना है यथा अत्यन्त शरीरिक परिधन बहुत भारा चीन्हा उठाना परासीर या खापाक अनु आग्नि य ( हानसे शर के साथ फूट कर सामरा पत्राने व और रूव जायक साथ) बात करने व इत्यादि।

**चिकित्सा ।**—एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

रामाधमप व पहल छाती में पूष और अल्प व माध दद

मालूम होना, दिल घटकना, घबराहट और घेंघेनी, अत्यन्त भय और मानसिक यन्त्रणा ।

**आर्निका ६,३० शक्ति ।**—गिर पड़ना अथवा और किसी कारणसे छाता और पीठ में थोड़ा लगनके कारण, कालेसे रक्तका और जमा हुआ गटेदार रक्त गिरना, छाता के मातर बाज में सुडसुडाहट और दह, पुचल जान से जैसा होता है मानव समस्त टीका इसी प्रकारका कष्ट जाना, रोगी जिस विस्तरपर सात्वा इसका बहुत ही बड़ा मालूम पड़ता ।

**बेलेहोना ३,६ शक्ति ।**—छाती और माथेमें गूँघ भाग, छाती में सुरे घुमोने के समान दह मालूम जाना हिलानसे बढ़ना माथा हिलानेसे अथवा हिलानेके उपरांत उठनेसे सिर घुमना चलके मातर अत्यन्त सुडसुडाहटके साथ सार्सी और गूँघ मिटा हुआ स्वेदना निकलना ।

**घायना ६,३० शक्ति ।**—अत्यन्त रक्तस्राव होने से जान के भीतर जो जो गन्द जाना और घट्टर से भागना ठाक पकड़। समस्त पर रक्तस्राव है हर नामर दिन यन्त्रा, कमजोर करने वाला रक्तका पमाना । अधिक रक्त स्राव होनेके उपरांत नाश। दुरा माया के साथ अथकार पड़ना, शरीर ठण्डा रहना आदि लक्षण यदि उपस्थित हों तो यह औषध फायदा करना है ।

**फेरम ६,३० शक्ति ।**—गूँघ छाथ और छाता के अनेक स्थानों में घाटा दूर टहरनेवाला दह धारे और पैदल चलनेमें भारीम [मनि सामान्य हिटन भुटने से बढ़ना इपाका]

दोनों बगलों के बीच में हृद और रक्त छाव, छप्पड़ बगले  
छाल रक्त का गुन मिटना, दिल घटवना और श्वास बन्द,  
अति लामा-य पोरधम या मासिक भाषण सहो घटता  
छाव हा उठता ।

**हायोसायमस ३,६ शक्ति ।**—एक प्रायः पहिल

गुला चाखी, बिनापहर रात्रि के समय, उससे रोगी को उठकर  
बैठना पड़, सोत मोते पार बाग भवावर निद्रा मद्ध  
हाता, बहुत छाल, दोमा चाखी म टपटपी बाधकर  
दधना नष्ट रहित पड़ता स्थान पर अमजाना, सब चीजों  
बहुत पडा राधना, बारबार मरन हाथ की ओर दधना  
बयों कि हाथ बहुत पडा दिखलाई देता है ।

**फागफोरस ३०,२०० शक्ति ।**—जमी जग

मादुम हा और गुला चाखी, बहुत बग दोहाय और  
उमर बरत में गुदन गुन निदलता (रक्त मधना के  
कामेनेक कावे भिया, और पलमादिना मा उपकारा है )  
बामादायमन धानु ।

**गुलमादिना ।**—बहमाय धाली छाव हा

और गुला ( उक्त मध रक्त—बामादा, हस्तमा  
उमर ) लता चाखी गरम मरन में बरी मध  
हाता का निदलता और पादाम म नर में बा  
मादुम रक्त बगल टपटी हाता का रक्त बगल म  
मरन का अंतर मधम रक्त रक्तमाय बग रक्त  
कटा कर देता ।

**रक्तम ६,३० शक्ति ।**—गुली ३ बी, मादुम

मानों सामनेसे छाती के भीतर कुछ दृढ़ जायेगा, उबले छाल रक्त रक्त श्लेष्म (पल्माटिला), छाती के भीतर सुडसुडाहट दानेस खासी उठना, जोरसे कोढ़ मारा चाड़ उठान में, काह पड़न ऊंची वस्तु लनेके लिये दानो हाथ पुर ऊंचे करने के कारण रक्तस्राव हो तो यह औषध देनी चाहिये ।

**औषध प्रयोग ।—**यदि रोग प्रकट हो तो जब तक रक्तस्राव बन्द न हो अथवा कम न हो तब तक १५/२० मिनिट के अन्तर से एक एक मात्रा औषधि देनी चाहिये । राग कम होने पर २।३ घंटे के अन्तर से ।

**सहकारी उपाय ।—**रोग के लिये सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक विश्राम परम आवश्यक है । इस बात पर विशेष दृष्टि रखना चाहिये कि रागा का किसी प्रकार से मानसिक विकार काष्ठ अथवा दुःख न हो । यदि प्यास दाना ठंडा अथवा पान के लिये दना चाहिये । खाने पाने का सब वस्तु ठंडा करके दना चाहिये ।

**पथ्य ।—**हल्का और पुष्कर मात्रा दना चाहिये । माकूदाना, वाली थोड़ा हूय सब न खरूना पथ्य है । मछली मांस और अन्न में पके हुए गरम वसाध निषिद्ध हैं । सब साग मानी घा में या हुए दना अच्छे हैं ।

**दुग्धमा ।**

( एजमा ।

यह राग दूधने में निजना मयानक और रागा का

कष्ट देन पाला है उसका रोगी के प्राणों के विषे सशय जाय नग नहीं है । भ्यास कष्ट—भ्यास निकलन की अपेक्षा लेने में अधिक कष्ट—छाती, गले में साँद साँद शब्द हाँगा, छाती तथा हृदय की माधुर्य होना, मुँह की रगत दिगड़ी हुई, सब दरीदर पसीलों से तर, गीली भ्यास लेने के लिये बने। इस रोग का कष्ट विशेष समय नहीं है किन्तु प्रायः विह्वली रात में ही होता है । उस समय रोगी बिछोने पर से उठ बैठता है—होंठों वध और गदन ऊँची होजाती है, माँसे निकली हुई, नाभ फूटी हुई, भ्यास लेने के लिये रोगी हावता रहे, इस प्रकार की कष्टकर अवस्था घाटी दर रहे बिम्बा पड़न दर, फिर धार धीरे वध निकलने लग जावे । श्रम्या निकल जान के उपरान्त रोगी का पड़न कुछ माधुर्य माधुर्य होता है और सानाता है । इस के साथ उर नही रहता । इस रोग का निम्न प्रकार समय की कुछ निम्न नहीं है उन्ही प्रकार रोग की भी निम्न नहीं है । आ मनुष्य जिस स्थान में मरता रहता है उस का उसी स्थान में देख कर रहना चाहिये ।

**कारण ।**—प्रायः यह रोग कुल्लम दात हुए वया गया है अथवा यदि माता पिता का कौनसा रोग दातो पुत्र कया जानी हाजाता है । इसी कारण बिना सिता परिवर्तन यह रोग अधिक दया जाता है । अथवा यह रोग पैतृक दोष है कारण होता है इसी का कारण से माधुर्य होता है । यदि बिना कारण में कोई दमेका रोग उपर्य हाता निम्नलिखित रोग

धोमे आरोग्य होते हुए मयया पटुन कुछ फायदा होने हुए दिया जाता है । दमेका रोग प्रत्यग्न दुर्ध्विरम्य रोग है । अर्थात् इसकी चिकित्सा बड़ी ही कठिनता से होती है ।

फार कोइ यह कहने हैं कि देहके भीतर कोइ पुराना विष रहने से दमेका रोग हाता है । कभी कभी चम रोग यथा साज दाह, माभ्यात इत्यादि का यादिक भाषति द्वारा पैठा देनेसे दमा हाते हुए हमन दखा है । इस बात को बड़ी शक जान सके हैं जिहान धारचित्त से पराक्षा कीहै कि चमरोग की चिकित्सा करने में ऊपरी लेप लगाकर बीमारी को दया देनेसे मनुष्यक स्वास्थ के लिये कितनी साधारण बुराईयां पैदा ॥ जाती हैं ।

दमेक उत्तेजक कारणों में स तेज गन्धक, धूल, उत्तजक दूधित भाव गन्धक का धूआ वायु परिवर्तन, मज्जाण मयया पट का दोष आदि प्रधान है ।

### चिकित्सा ।—

१। पेट कुलन के कारण दमा—काय बन्ध, घायना, सखर, नक्सयामिका ।

२। मज्जा प्रधान दमा—आमैनिक्, कृत्रम, पलसाटिछा, हटानम, पेटिम टाट रपीका, नक्सयामिका ।

३। वायु प्रधान दमा—कैकटस, कृत्रम, रपीका, लेहमिस, लेयेक्षिया, नक्सयामिका, प्लटा-भारिय टाबिस, माम्बूकस, सलरर ।

४। श्लुनु दाहके साथ दमा—पलसाटिछा, कृत्रम सिोपया ।

५। दमेक आक्रमण क समय—मककपूर सुधाना, रपीका,

नक्षत्रयोगिका, आर्मेनिक, माध्यामिका, एन्टा, साम्बुसम ।

६। हमे का हाथ दूर करने के लिए—रेडरिया, सल्फर, नक्षत्रयोगिका, आर्मेनिक रेक्सिभ, छात्रा पोडियम ।

७। नहीं एन्टा से हमारा—रेडरिया, माध्यामिका इन्फिमा, इपीका, आर्मेनिक ।

८। नहीं बैठ जान से हमारा—आर्मेनिक, इपीका, नक्षत्र योगिका पन्नाटिका पेटिमटाट ।

९। हमें राम लक्ष्मी उद्भूत है जाने से हमारा—रेडरिया, एन्टाटिका, आर्मेनिक, सल्फर, काव-येन ।

ऐफोनाईट ३,६ टार्कि ।—भ्यास लूय जाना और जाना हो विषय कर मात समय, भ्यासकट गहरा भ्यास नहीं किया जा सक, आर्मेनिक रासी अत्यन्त मय और आका घबराहट मृगु मय ( आर्मेनिक ), रोगी यह कहता है कि अगुन दिन मरा मृगु होगी ।

आर्मेनिक ६३० शक्ति ।—भ्यास का बहुत जाना जाना उन में भ्यास वृद्धता दद और लक्ष्मी, विषय कर उच्चा पर चढ़ा में, हम भटक जाने के समान आश्रमण हो, विषय कर राशि व समय, सल्फा व समय और सोन पर। आका बहुत ध्वेना और घबराहट और लक्ष्मी हम व साथ ही मृगु मय अत्यन्त व्यास, बार बार छोडा छोडा जानी जाना, हम अटक आगे व मय म सो न मक्का, ऐसा मनुष्य जिस के शरीर में एक कम है [ अधिक एक बार मनुष्य का चेलेडोना ] ।





अत्यन्त भ्वास बहू और हम बन्द होनेकी जाणना, रात्रि को घटना, अचानक सास घटना, १ से तीन घण्टा तक रहना, फिर प्रचानक चला जाना, साँसोंमें घड़घड़ आदि अनेक प्रशारने शब्द के साथ बहूकर सास आना जाना । ऋतु के समय रुद्धि । पालक, हिस्टोरिया रोगी को एक भय और सर्दी के उपरांत और ऋतु के पहले उपकारी है ।

**लोबेक्षिया इन्फ्लेटा मदर, ३शक्ति ।**—सास बढ़ने के पहले समस्त शरीर, बढ़ो तक कि हाथ की मगुली से लेकर पैर का मगुली तक बूढ़ बूढ़ हो, भ्वास प्रश्वस उद्देगधुत, लम्बा सास लेने की इच्छा, सर्दी लगने से और गरम भोजन खाने से बढ़ना, दम के आक्रमण के समय यह औषध बार बार सेवन करने से बड़ा फायदा होता है ।

**नक्सगोमिका ६, ३० शक्ति ।**—शरीर की दुर्बलता, रात्रि ४ घण्टी पूता मातुसहोता, दरार खाने से दम माहूम होना, शत बाल बार भोजन के उपरांत भ्वास बहू माहूम होना, रात्रि के समय भ्वास छुट्टी का आक्रमण विशेष कर आधी रात्रि के उपरांत, खासी का अधिकता और अति बहू के साथ बहू निवर्तन ।

**साम्बूकस १x, ३x, शक्ति ।**—रात्रि के समय हमें का आक्रमण उपस्थित हो और रोगी अत्यन्त तटपटाप, भ्वास रात्रि खाता, प्रायः आधी रात्रि के समय बिद्वेन पर सोन मरना भाया नाश करने का स रुद्धि ।

**सल्फर ६, ३० शक्ति ।**—पुराना दमा, निद्रिय

इस में अथवा मर्षा के समय दमे का आक्रमण उत्पन्न हो छाती के चारों ओर जकड़ा हुआ भा मादूम होगा तथा ऐसा मालूम होगा मानो श्वास के रस्ते में घूट भर रहा है, स्वरमद्धता के साथ सूखी खाँसी, अथवा छाती में दह और दवाव मादूम हान के साथ साथ खाँसी, रोगी बार बार कुब्ज होकर मरसत्र हाँपाये भा के ऊपर सजदा गरमा मालूम हो ।

**ऐटिम टाई ३, ६ शक्ति ।**—उद्वग के साथ श्वास के और बहुत श्वास माना जाना इस स्थिति सीधा हाथ पैठ रहने की इच्छा है। रोगी जब श्वासता है तब मालूम शक्ति छाती के भीतर अग्नि भरता है किन्तु तामन से बिगुल नहीं निकलता [ श्वाका का तरह ] ।

**विशदूम तल्लम ६, १२ शक्ति ।**—श्वसता समेत निक और श्वाका के उद्वगन साथ यह दिता जाता है। बहुत ही अथवा आक्रमण उद्वगन जाना नाक कान और होठों पर ठंड दवाव में अग्नि समाना । गरम समाना-विमोमिच्छा ) और अत्यन्त वज्रपथ दुरुज करने वाला उद्वगमव ।

**औषध प्रयोग ।**—श्वस के प्रथम हान के लक्षण जय तब कम तथा तब तब अनेक प्रकार के अन्तर में दवा करना चाहिये कम हान पर फिर टकर टकर कर श्वाका दवा चाहिये ।

**सहस्रगी उपाय ।**—दमा श्वास का प्रसार का

होना है, एक इलेक्त्रा प्रधान और एक वायु प्रधान । इलेक्त्रा प्रधान दन में सर्दो, छान, ओस आदि असह्य बात है, वायु प्रधान दनेमें एकसमय छान, बड़ा तरु बि कमा बभी दोनों समय भी छान करना सद्य होता है ।

**निवारण का उपाय ।**—रागी का प्रति दिन दह लक्ष स छान करना एवम् रात्रि ही पच आध इस प्रकार का भोजन करना चाहिये । ओस, दवा और ठंडा दवा से दूर रहनी चाहिये । कट ( दीप ) के समय धूर का स्पर्शनिषेध के पक्ष का धुन्ट बना कर पाना चाहिये, गरम पानी की माप गरम में खनी चाहिये । शार में स्पाटिंग बेयर मिला कर उस को छुना एव क उपरांत पला कर उस का धूना एना भा अच्छा है । यदि छाता में दह होतो छाती और पीठ में क्लानल से गरम पानी का सव दना अच्छा है । मात्रमण के समर्थ छाता और मददक में असमर्थ मारनों के तेल में कपूर मिला कर मालिस करने में फायदा होता है । मात्रमण के समय इषीरा आधे आधे घट में दना चाहिये, यदि इस ने विशेष फायदा न दाल तो आर्सेनिक देना चाहिये ।

हमा साधानिक रोग न होने पर भी यह बभी बभी सन्नाचार और अनियम के कारण यक्ष्मा अथवा और किसी साधानिक रोग में परिणत होजाता है । मादुहाटम आदि फेफ्ट का दाब रहने पर छान, आस और दह लगना शुरु है ।

**पट्य ।**—मानन का जोर बढी साधानों रखना

चाहिये इस विषय में गड़ बड़ी करना बहुत ही पुर्न का बात है। पट में दोष रहने के कारण प्राय रोग का बारम्बार आक्रमण हात हुए देखा गया है। पच्य द्रव्य और पुष्टिकारक होना चाहिये। जिनको दूध पच जाता है व खूर दूध पीनकता है। दूध कमी ठंडा नहीं पाना चाहिये । दमक रागी का शरीर दुबल होने पर खीसइयास बिल्कुल नहीं करना चाहिये।

## वायुनली प्रदाह ।

### ( ब्रोङ्काइटिस ) ।

वायु नलियों की इलैम्बिक झिल्लियों के प्रदाह का नाम ब्रोङ्काइटिस है। ब्रोङ्काइटिस दो प्रकार का होता है, एक नया और एक पुराना।

( १ ) नय ब्रोङ्काइटिस के लक्षण ।—पहले सर्दी मालूम होना ऊपर स्वरमद्धता, भ्यास नली के भीतर गुड़गुहाह, भ्यास लन और निकालने में कष्ट मालूम होना, बारम्बार कष्ट कर खासी पहल सूखी खासी हा मपदा धाड़ा थोड़ा हागदार पतला कफ निकल किन्तु पीछे बहुतसा कफ निकलता रह कमा कमी उस में खून का छौंटा भी रहते हुए देखा गया है। राग जैसे जैसे बढ़ता जाता है घस दा कष्टकर लक्षण दिखलाई पड़ते जाते है । भ्यास अने और निकालने का कष्ट और पत्रणा घटती है, छाती एक प्रकार जवड़ा हुए के समान मालूम पड़ती है अथवा उस में सुकड़न मातुम पड़ता है और खासते समय छाती के ऊपर का भार बढ़ मालूम होता है। छाती के ऊपर कान लगा कर सुनने से सारे सारे और घड़ घड़ शब्द सुनाई

पड़ता है मानो समस्त वायुपुण्ड्र दलेष्वा से भर रहा है  
मथका धिर रहा है। यदि इसी अवस्था से रोग बढ़  
नहीं तो श्वासपुण्ड्र और भी बढ़ जाता है, पहरा चुना  
हुआ और रक्तपुण्ड्र, देह दृष्टा पसीने से भीगा हुआ और  
रोगी चाहे कमजारी के कारण हा चाहे अवसन्नता या  
श्वास पण्ड होने के कारण मृत्यु का प्राप्त बन जाता है।

यह रोग बच्चोंकोही अधिक होने लगे देखा जाता है। पहले  
साधारण भर्त्सक ममान मादूम होकर पहराव आरम्भ होता है  
यथा पहरा हाता, दपासका जकरी जकरी चलना, सुधी स्वर  
भट्टक साथ लायी, भाद भाद चन्द्र, पड़ेनी इत्यादि। श्वास  
गर्दीमें दर्द होनेका कारण अतिना हा मजा हो पाहक छांभी  
का राह रखनेकी चेष्टा करता है और प्रत्यक्षपार पासनक उप  
राग्न रोता है। दूध पीन घाला यथा पड़े कष्टम माया दूध  
पीता है पहरने रुज मृद में रोता है किन्तु उनी समय जर्दीमें  
छेद रोता है, माया हटा लेता है और इस प्रकार बिना कर रोता है  
मानो उसको पहा पहा या यत्रभा हाता है। राग  
बढ़ने पर श्वास क रने सब श्रद्धा में अछड़ी तरह में  
नर जाने हैं यहाँ में हनी शक्ति नहीं हाता कि ज्ञान में  
रम श्रद्धा का निहाल कर श्वास क रने का साथ दर्द  
भक्त में श्वास बह हाकर बालक का प्राण नाश हो जाता  
है। महा बाहुल्यिष्य आरुहो क लिये एक बहिनही साथ  
निक रोग होता है। श्वाँव का हात पर यह रोग विचार  
की अवस्था चरण करना है। रोगी का मृदुर्मा हाटनी  
है भार पकन लयना है अंगि मुख आना है अंग में  
में एक अंगी है, माया छोप और नष्ट रह में मृदु पमीने,  
यस के मात्र पहा पहा चन्द्र श्रद्धा निवृत्त हाटन हो

शक्ति न रहना, आदि लक्षणों के उपरान्त मृत्यु सब का दूर करदेती है।

( २ ) पुराना ग्रोकाइटिस—यह रोग प्रायः देखा जाता है। यह रोग या तो नये रोग की भाँति अथवा क्रमशः धीरे धीरे बेमात्रुम उत्पन्न होकर मौजूद होजाता है। जब नव ग्रोकाइटिस के परवर्ती उपसर्गों की श्रृंखला में यह उपसर्ग होता है तो पहला रोग के बहुत से लक्षण रह जाते हैं अथवा आन्ता खरभङ्ग लसदार बुलबुला कफ निश्चयना, धाड़ पारधम में श्वास कष्ट सामान्य कारण से सही लग जाना, साधारण दुपलता आदि। जब यह पुरानी ग्रोकाइटिस बहुत दिन तक ठहर जाती है तब खरभग और सूखा खासी, गहरी और कष्टकर खासी चिरसाया होजाती है।

कारण ।—बहुत देर तक सर्दी अथवा आस लगान से अचानक गरमी से सर्दी में आने से, धूल अथवा किसी तीव्र पदार्थ की गंध लगने से शरीर का कपड़ आदि से ठीक तरह पर न ढक रहने से, बहुत थोले से, बन्दूता देने अथवा गान के उपरान्त गले और गदन में ठंड लगने से इत्यादि।

चिकित्सा ।—१। तदन ग्रोकाइटिस—एकानाइट, बेलेगना, ग्रायानिया फासफोरस मक्कूरियस नक्सबोमिका, पलसाटिला वैटिमटाट।

२। पुराना ग्रोकाइटिस ।—काय चेन आर्सेनिक, कैल कैरिया, लैकेसिस लाइकापाटियम फ्लानम सल्फर।

३। यालकों को रोग—एकानाइट, बलडोना, इपीका, कैमोमिशा।

४। वृद्ध मनुष्यों को राग—बाध-चेष्ट, हायोसायेमस, ऐकसिस फासफारुज, रस्टफस, सडपर ।

**एकोनईट ३, ६ शक्ति ।**—रोग की प्रथमावस्था में यह औषधि अधिक व्यवहार की जाती है । शीत, श्वर शरीर गरम और अत्यन्त बचैनी, बहुत ज्यादा सूखा गाला और पायु नला में सुइसुइसट अत्यन्त भय और मानसिक उद्भग, सूखा किन्तु ठंडी हवा के लगने से रोग होने पर ।

**आसेनिक ६, ३० शक्ति ।**—सूखी खासा और रस के साथ ही खाना में एसी खाया पानी हो मानो घाव हो रहे हैं । सरल खासी किन्तु कफ निकालते में कष्ट । भ्यामकण, उस के कारण उठ कर बैठे रहना पड़ । अत्यन्त प्रचल व्यास किन्तु घाड़ा घाड़ा पानी पीना बचैनी कमजोरी और मृयुमय ।

**वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।**—बहुरा और दोनों भाई बाल, मस्तक के भीतर अत्यन्त पूजना मातुम दाता, भयना दद दाना माना कफ जाता ह शरीर गरम किन्तु पसीना मान वाला सा मातुम हा, मासुविद राना उस से स्वास देने का उपाय न रहे, प्रत्यक्ष खासा क नाशमण के उपरान्त ही बालक धिछा कर रा उठे, नई ही मानी हो किन्तु रोगा सा न सक, भाते ममय अमय उठ और उठल उठ ।

**ब्रायोनिया ६, १२ शक्ति ।**—पटुन मास और ग्राम कष्ट उसक कारण खासा होकर बैठ रहना पड़ सुखी खासी और छातीमें सुइ सुमोन खासा दद, मात कटने समय प्रचल मानी, [४३]



छामते समय मातृम होवि मानो माया और छात्री फर  
उड़ जायगी रोगी सम्पूर्ण खिर भावसे रहने की इच्छा  
न करता हो ।

**कार्ब रेज १२,३० शक्ति ।—**स्वरमद्र विशेषक

संध्या के समय [ प्रातः ११ व समय स्वरमद्र-कास्टिकम, फास  
फोरस ] छातामें ऐसा जलन मानो आग जलता है, अत्यंत  
प्रबल आस। पाला राधक समान बहुत कफ निकले । रोगी  
कण्ठों व पाचमें सुइ चुभाने व समान रुद, रोगी ऐसा  
चाहता है। हरवत् पछा करने को कहता हो ।

**कास्टिकम ६,१२ शक्ति ।—**स्वरमद्र और गलेक

भातर परफराहट मालूम होना विशेषकर प्रातः काल व  
समय बहुत है। गुस्तराजी आसी और गलेक भीतर  
पाप से मालूम हाना सामान समय छाता व ऊपर  
रुद और घेमातृम पेशाव निकड जाता स्वरमद्र विशेषकर  
प्रातः काल व समय ।

**कैमोमिला ६ २१ शक्ति ।—**वायुनख में घटपडा

दृष्टे साथ आस। और स्वरमद्र जिस स्थानमें रेगुमा उगता  
है वहा सीधा आस। मालूम होना मन्द मानर सु  
सुडाहट के साथ मुख्या आस। रात्रिक समय बढ़ता, वहा  
तक कि निद्रितायन्मा में आ मुखी आसी एक कनपटी छाल  
और एक कनपटी रखव रागा बहुत व घबरेन और चिड  
चिडा है और कार बात पूछनेसे धिज उठे ।

**हीपरसलफर ६,१२ शक्ति ।—**स्वरमद्र के साथ

शामी गले में घटपडाहट व साथ आस दाह करनेवाली

छासी, बापीरात्रके उपरांत घटना, भ्वास प्रभ्वास कष्ट दायक और साह साहसाह के साथ, सोनेसे भ्वास बढ़ होन कासा मालूम हो ।

**डुपीका ३,६ शक्ति ।**—वायु गला में ऋग्ना घट घट शब्द करता हो, भ्वास रावन धागे ग्रासी, भ्वास प्रभ्वास कष्ट साथ, छाटी के मातर ऐसा मालूम हो कि कफ मर रहा है किन्तु आसनसे नहीं निकलता (पेटिम-शब्द क लग्नों की तरह), बहुत जी मिचलाना और कफ का उबड़ती होना ।

**काली चाईक्रम ३,६ शक्ति ।**—वायु गला के भीतर जलन के साथ दह, छासी, समशार चुपचना कफ निकलता हो और छींचने रस्सीके समान पैर तक लग्ना जाना ।

**लैकेसित १२,३० शक्ति ।**—स्वर्मह, धर खीण और गले में चुकड़न मातुम पड़े, सूखी गुसराही छासी कष्ट के साथ पाछा कफ निकले, गले को छूने से दह मालूम हो, दावने से छासी उठन लगे, नाँद के उपरांत और सप्ताह व समय बीमारी का घटना ।

**मार्कुरियन ६,३० शक्ति ।**—स्वर्मह और गले में दह, समस्त ऋग्भिन्न विन्यायों का सर्वा प्रसन्न धन गली आसा विन्याय रात्र के समय, ग्रामने समय मानो होता और माया कष्ट जात्रा [मायाविद्या का तरह], दादिना और मान में बापी का घटना ( यात्रा और मान से फामफारस ) पसान आने किन्तु न स कुछ भाराम मातुम न पड़ ।

**नकुमयोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—**आधा रात्र

से आन का १२ मूला गामी चामी और सर दह, मा  
माथा पट नागना आयागया महुँरियम ), नाक बर किनु  
जग दिग्न चान ५ १ १ मही लगना रात्रि का ५ १२ ५  
उपरा त गेग यडा ५२ भाविक कोष्ठरज धानु ।

**फामफाम्स ६ १२, ३० शक्ति ।—**समूज सरपद

[ काटेकम का तह ] गज क मानर इनता दह कि वन  
१ कहा नामर टना क तारों जार अकडा हुआ सा  
मात्रम पड चामा आ कफ निरग यह भागदार हो  
अथवा कुछ सुनी सा लिये हुए हो, बहुत आर की मोर  
थका बने पाडा चामी रागी चामा का मय करता हा  
मोर उहा तक हासक खासी का दाय कर रयन का बर  
करता हा ।

**पलगाटिला ६ शक्ति ।—**रात्रि के समय सुनी

चामा उल्लोत पर उठ कर बैठने से खासा उठ । हागे  
सापेमस का तह ), सरग वा तरल चामा बहुत सा  
पीला और हग कफ निकरता, गरम घर में भी मरी  
माहुम दना गरम थीर सूना शरीर किनु चाम  
सामाय अथवा बिलकुल हा न हो, गरम प्रकृति क  
मनुष्य ।

**रष्टकम ६ शक्ति ।—**हमने ११ वा त्रिद्वान ॥

चामी उटना शरीर में वात दाव की तरह दह, लटन क  
समय अधिक गन्ध हो, [ उठने के समय उपवास मान्य  
हाना हाना आयागिया ] रात्रि में बिना क चामा रात्र क  
याद श्राव ।

**स्पजिया ।—**भ्रामाली में अत्यन्त सुस्फी, साथ ही स्वरभग, गहरी साह साह शब्द के साथ घाम्नी, सञ्घा व समय धृद्धि, यारी म, छकड़ी धीरने के समान भ्वास व माने जाने का शब्द, पात कहते कहते मधया जार स पड़ते पड़ते स्वर एक एक बार विभुत हो जाये ।

**सल्फर ३० शक्ति ।—**छरमद्र और स्वरविभुत, व्यास नहीं के भीतर बेसा सुरसुराहट मालुम हाकि कोर चीज रेंगती है सरल साधी, मादा रूप निकलना और छाती के भीतर दद मातुम हागा, छाती में सुर चुमोने व समान दद, यह दद पाठ तक फैला हुआ, रोगी बार बार मय सन होना, छाती के भीतर सपका घड घड शब्द दुबला पनखा मनुष्य जा मस्तक नाश करक चलता है, पुरानी बामारा में अधिक पायदा करना है

**ऐटिम टार्ट ६ शक्ति ।—**छाती व भीतर अत्यन्त हल्का सघय और भ्वास श्वास कहदायक, जिस समय रोगी पास बेसा मातुम होकि न मालुम कितना कफ निकलेगा किन्तु बिल्कुल ही न निकले [ र्पीका का तरद ] उबका और हल्का का चलती, छाती व भीतर दद मातुम होना और अत्यन्त भ्वासकष्ट ।

**औषध प्रयोग ।—**नये रोगमें ३ घटके अन्तर स एक एक मात्र औषध देने चाहिये । पुराने रोग में प्रातः काल और सञ्घा काल दोही बार दनी चाहिये ।

• **सहकारी उपाय ।** छाती में सरसों व नख की मालिश करना चाहिये, पुलटिस या फ़ानेट से सेंक करना ।

**त्रयोनिषा ६, १२ शक्ति।**—सामी, कर वि  
धिया और सुनीं लिये हुए, अत्यन्त श्वासकष्ट, हाता भर  
थगल में चक्कर मारने अथवा सुर सुमाने व समान रा  
श्वास लने निकालने और सामान्य दिलने से दई बन्ध  
विशुद्ध स्थिर भाव से भी रहना चाह कोष्ठक, गुण  
और कठिन मल, प्रलाप, अत्यन्त ध्वास, स्वभाव में वि  
चिह्नान।

**कारि रेज १२, ३० शक्ति।**—राम का देश मरणा  
में नय नाडी अत्यन्त क्षीण, जीवनी शक्ति का ह्रास, अत्यन्त  
थलथल और दुबलता दिखलाई पड़ हाथ पैर भादि ठा  
टठा दया चाह और बराबर पक्षा करने को बई, शरीर  
के मध्य स्थायी (मग मूत्र कक, आदि) में दुग्ध।

**मर्तुरियम ६, १२ शक्ति।**—चित्त का दास मनुष्य  
कैकट का प्रदाह पाकाशय और निली व स्थान पर दहन  
स अत्यन्त दई उधर हान पर भा पमाना भाव विशुद्ध  
स कुछ आगम न हा।

**फामफोगम ६, १२ शक्ति।**—इस रोग की वा  
एक प्रयत्न मोचय है। कवच कामफारम और प्रादुर्भा  
य दा मभव हा प्रयाग करने स हमन बहुत म रागिनी  
को मागम दिया है। छाती व चारों ओर उच्छ्रित  
व समान मग्न हाता, गुनी छाती कक से रक्त व  
कवच कवच जब कैकट व प्रविष्टी लक्ष मराम र  
और अत्यन्त श्वासकष्टता हा लव भाद दुग्ध मनुष्य  
का मध्य कक्षा और मुखा में कम निरल।

**रस्टक्स ई शक्ति ।**—जब सब विचार दीर्घ दिवस लाइ पड़े । रोगी कभी नींद सामें घुप होनाये और कभी एकने लगे, अत्यन्त खासी, खासते समय एना मालुम हो मानों छाया के भातर कुछ दूट जायगा, विधाम करने में बड़ना, इस लिये रोगी बरपर तटपता रहे ।

**एंटिम-टार्ट ई शक्ति ।**—सरब खासी, ऐसा मातुम होकि बहुत सा श्वासा निकलेगा और छाती क भीतर एसा हा घड घड छाई हो किन्तु बिल्कुल बर १ निक्ला, मयल श्वासकण, यदा तक कि कम धटक जाने के समान मालुम हो, केंचड के दशागत की भांयका जी मिचलाना आर उरफार । जब सूया गासी बली जाय और तरार सारी हा लयही यह औषध देनी चाहिये ।

**विराटूम त्रिफिड १ शक्ति ।**—प्रथमायसामें हा जब आडे क माथ ज्वर हो, गाडा बटिन, पुण और तेज, छाती में कुछ मालुम हो और रोगी बकतारह तब एवानाईटया अपेक्षा यह औषध अधिक उपकारी है ।

**श्रौषध प्रयोग ।**—कटिन रोगमें जब अत्यन्त तेज रह हो तब २३ घटके अंतर से यह औषध देनी चाहिये ।

**सहजारी उपाय ।**—रोगी जिस मकान में हो उसमें एव भला ऊर में दया आना जाना रहनी चाहिये । अधिक स्पष्ट वायु परम आवश्यक है । छातीपर चारों ओर पुल्डिम लगानसे रद महनहा कम होगा ह और खासा सरल हो ।

है । रोगी के कमरेमें बहुत से मनुष्योंका एकत्रित होकर गडबड करना अनुचित है क्योंकि उससे शीघ्रही कमरे की वायु दूषित होजाती है । रोगी के पास २।३ मनुष्य ही रहें तो ठीक है ।

फेंफड़ का प्रदाह आराम हो जानपर एक वर्ष तक रोगी का आंग सर्दी, आरजलस सावधान रहना चाहिए क्योंकि थोड़ा अनियम होनेपर सम्भव है कि यह रोग फिर होजाय अथवा रोग पुराना आकार धारण कर रोगी को बहुत दिन तक द । अनियम करनेसे इस रोगस पुराना बीसी और वक्का आदि अनेक कष्टदायक रोग उत्पन्न होतेहुए रह गये हैं । फेंफड़ के प्रदाह के उपरान्त इसका कारण मही आंग सावधान रहना चाहिये । जल वायु परिषतत, उष्ण शुद्ध व्यायाम द्वारा शरीर को सुख और सबल रखना, प्रतिदिन स्पष्ट वायु लेवन करना, आंग सर्दी और जलस चरार को यथाचित रूपसे बचना परम आवश्यक कीय है ।

पटप ।—साबूदाना, चाई आदि इत्यादि पच डीक है । आरोग्य होने वाला रोगी थोड़ा दूध दूधिया आदि दुधिकारक मात्रन क्रमशः दिया जा सकता है ।

## प्लुरिसी ।

आंत छेने और निष्काशनेका प्रयत्न यद्यपि फेंफड़ा । छाना के भीतर एक महगाईमें रहता है । फेंफड़ा एक सम्भन पदार्थ जाल सिन्हा में रखा रहता है । इसा किता का पत्र पत्रा है और इसी पत्रा के प्रकाश के पत्रा के पत्रा है ।

पहले नीति और बम्प के साथ ज्वर आता है । अति शीघ्र हा छानो में सुर चुमाने के समान दृढ़ मालूम होता रहता है । यह दृढ़ शासनपे, भ्रात जने निष्कलनम दिलने चलने में अधिक मालूम होता है । वहीं बड़ा अत्यन्त बड़ बापक खाता रहनी है, और दमो कमी तामा गिरा हुल नहीं रहनी है । फूरिरी का दृढ़ माय ही लन क निश्चय छाती के एक ओर बघरर हाते हुए दसा जाता है ।

सामान्य फूरिरी में मय का बोर कारण नहीं रहता किन्तु रोगी की दुर्बलता, रोग के कारण छाती के दोनों ओर भावमण, बमश मयल ज्वर, फूरर के भीतर अधिक जड़ मयल्य आदि मगुम लक्षण हैं ।

**चिकित्सा ।—ऐकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—**

शीत होकर ज्वर, पून और तेज नाडी, सूना और गरम शरीर, तजलीव से तडफडाना, अत्यन्त व्यास, बहरा साह, तेज भ्रात भाना जाना, छाती में सुर चुमाने के समान दृढ़, साथही सूना धाखी, दाहिमा करबट छेहर सो न सजना ।

**मायोनिया ६, १२ शक्ति ।—**सुर चुमाने के समान

दृढ़, भ्रात छेने और अति सामान्य दिलने चलने से बडना, मिर दृढ़ व्यास, बहुत देर बाद बहुतसा कछ पीना कठिन और सूखा मग, स्वभाव में ऐसा चिड़ चिड़ापन कि घोड़ासी बात में क्रोधित हो उठे ।

**मर्कुरियस ६ शक्ति ।—**छाती में दृढ़ और ज्यादा



प्राप्ता व दाहिना आर सुर सुमोन के समान दर, कामा  
का साथ में आर बाई आर भुवट लहर मोने से वरु  
आर वरु वरु वरु उस से वरु आर वरु, रात्रि में  
मय वरु वरु वरु ।

**१८८८८ दि शक्ति ।—**यदि वरु रोग के कारण  
मय वरु वरु मय वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु

**मलकर ३ २ शक्ति ।—**यदि वरु रोग के कारण  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु

**१८८८८ दि २, ३० शक्ति ।—**यदि वरु रोग के कारण  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु

**१८८८८ दि ३० शक्ति ।—**यदि वरु रोग के कारण  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु  
वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु

**आयोडियम ६'शक्ति ।**—गडमाला दूषित घातु  
र अधिक समय तक टहरने वाला रोग, जब प्लूरा के  
तर शल सञ्चय हो तब स्फुट्टा दूषित घातु बाटे  
गों के लिये आयोडियम, एकोनाइट या आयोडिया के  
पयायकम से व्यवहार किये जाते हैं ।

**एंटिम-टार्ट ६ शक्ति ।**—खासी, गले का घड़े घट  
रता, भ्राम बह, बहुत कफ निकलना और दम अटपने  
समान मालूम होना ।

**फास्फोरस ६ शक्ति ।**—प्लूरिती और कॅफडे का  
शह साध हो, मत्स्यत दुर्पचना, सुर्भी लिये हुए कफ छाती  
बड़ी सी मालूम हो, दुबला मनुष्य, रोधन करने वाला दद  
साध याद और हो ।

**औषध प्रयोग ।**—नया अवस्था में घटे घट में  
औषध दीनासक्ती है, फिर कायदा दीजने पर और भी दद  
से दना चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—रोगी के लिये सम्पूर्ण विधाम  
आवश्यक है । खूब लेम्बी चौड़ा पुलटिस बार बार गरम  
गरम लगानी चाहिये । गरम सेक दन से कायदा होना है ।  
फलाहेन अथवा नमक का बड़ी पोछला से सञ्चने से कायदा  
होना है । दन्ती के भारों और फलाहेन बाधने से आराम  
मातुम होता है ।

**पथ्य ।**—ज्वर और कॅफडे के शह के मनु  
मार ।



के हिलने से दह बढ़ना, जिस ओर बढ़े दो उस करघट न से सकना, जो लोग अभिताचारी हैं और निज की धातु अशरीर से दूषित है उन के लिये यह विशेष उपकारी है ।

**पलमाटिका ६ शक्ति ।** सोते समय शरीर के एक ओर (कमर और बगल के बीच में) दह, विशेषकर रात्रिवा, दह एक स्थान से दूसरे स्थान में चरता फिरता रहे, सज्जा होन के समय और बाद करघट सोने से बढ़ना । यह औषधि स्त्री और मुलायम प्रकृति के मनुष्यों के लिये उपयोगी है ।

**सज्जर ६, ३० शक्ति ।**—सुद शुभोने के समान दह छाती में लेकर पीठ तक होना दो, सोने से और हाथ उठाने से बढ़ना ।

**सिमिसीफ्यूगा ३ शक्ति ।**—आयुध पार्थ वेदना (अपात नसों का दह और उसी से शरीर के एक ओर दह) ।

**रैनानकूलस ३ शक्ति ।**—अरायु दोष क माय दही पसलियेमें भीतर भीतर कमर और बगल के बीचमें दह होना । जो रोगी शुबला पतला हो उस के लिये अधिक उपकारी है ।

**औषध प्रयोग ।**—पहले दो दो घंटे के अंतर से दवा खानी चाहिये । उपरान्त दिन में ३।४ बार ।

**सहकारी उपाय ।**—दह के स्थान में सेबने से

रुद कम होता है। मसली सरसों के तेल की मासिड करा  
ले भी फायदा होता है।

## पद्महवा अध्याय ।

### मुह के भीतर के रोग ।

#### मुह का बुरा स्वाद ।

मुह का बुरा स्वाद रहना यह केवल एक लक्षण मात्र है। बहुत से रोगों में यह लक्षण स्पष्ट दिखलाई पड़ता है और इस लक्षण को देख कर प्रायः मसली रोग का निर्णय किया जासकता है जैसे कड़वा स्वाद रहे तो भिगर की खराबी ममभक्तता आदिये मुह का बुरा स्वाद, गले आदि के भीतर के स्थानात् रोग, तमरान और सण हुआ सा स्वाद हातो यक्ष्मा दाह लह्ना स्वाद होता पाश शय का दोष समझा जाता है। और यदि किसी प्रकार का स्वाद न होतो यात्रिक आयुर्विक रोग समझा जाता है।

#### चिकित्सा ।—

१। प्रातः काल के समय कड़वा स्वाद ।—प्रायोनिषा, केड केरिया काव, मकूरियस ।

२। मीठा स्वाद ।—धलडोना, प्रायोनिषा, चायना, माकूरियस, परसाटिडा ।

३। खट्टा स्वाद ।—केडकेरिया-काव, चायना, नक्सयोमिका एसिड-फास्फरिक संस्कर ।

—४। तमकी स्वाद — मासेनिक, पाव-वेग, तक्सयोमिया ।

१। मडा दुमा स्वाद ।—कयोमिया, मरूरिया, पलसा टिला ।

२। फाफा स्वाद ।—मयोमिया, चायना, पलसाटिला, स्टफिसेमिया सल्फर ।

३। दिलकुल स्वाद ७ रहना ।—वेलेडोना, दीपर लाइ कोपोडियम, पासफोरस, विराटूम ।

४। मय वही चारें वडवो मालूम देतो हों ।—मयोमिया, वाटोसिघ, दीपर, सल्फर ।

५। घाने और पीने की लय चीने वडवा लागती हों ।—मयोमिया, चायना, पलसाटिला ।

। १०। लय लघु पदार्थों में लघु स्वाद माना हो ।—छाकापोडियम-तक्सयोमिया ।

११। लय लघु पदार्थों में तमकीन स्वाद माना हो ।—मासेनिक, वेलेडोना, चायना, सल्फर ।

## मुह में दुर्गन्ध ।

मुह में दुर्गन्ध माना बहुत हा गुरा माना होता है । कमा कमी अथवा भयन को और पास बैठने वाल मनुष्य को भी भयान हो उठता है । अनेक कारणों से मुह में दुर्गन्ध माने लाती है उन में से दान-नष्ट होना, मस्तिष्क का रोग, दातों में गैल लक्ष्य होना, पाकाय का दोष, तम्याक और चराय पीना, और यद्येचित्त का से दातुन गुल न करना आदि प्रधान कारण हैं ।

— चिकित्सा ।—उपर जा लय कारण लिख गये हैं

दर कम होता है। मसली सरसों के तेल की माफिष्ठ कले  
से भी फायदा होता है।

## पद्महा अध्याय ।

### मुह के भीतर के रोग ।

#### मुत्र का बुरा स्वाद ।

मुत्र का बुरा स्वाद रहना यह बहुत बुरा लक्षण माना  
है। बहुत ज रागों में यह लक्षण कष्ट दिखता है वगैरह  
और इस लक्षण को देख कर प्रायः मसली रोगों का  
निश्चय किया जाना जाता है जैसे कटुवा स्वाद रहे तो  
त्रिगर की मसली मसक्ती आदि। मुत्र का बुरा स्वाद  
मसली के भागद के व्यापार रोग, मसली और मसली  
हुआ तो स्वाद हानो यथा दाह कष्ट स्वाद हाना कम  
दाह का दाह मसली जाता है। मसली यदि किसी प्रकार  
का स्वाद न हानो वाग्विह्र वाग्विह्र रोग लगता  
जाता है।

#### चिकित्सा ।—

१। प्रातःकाल के समय कटुवा स्वाद ।—प्रातःकाल के  
दोपहर के समय ।

२। मसली स्वाद ।—वेरुवा, कटुवा, कटुवा, कटुवा  
स्वाद ।

३। कटु स्वाद ।—वेरुवा-कटु वाग्विह्र, कटुवा-कटु  
वाग्विह्र ।

—४। मञ्जीन स्वाद — आर्सेनिक, फाव-येन, मकसशामिवा ।

१। मडा हुआ स्वाद।—कैमाभिला, मजूरियस, पलसा  
दिला ।

६। फफा स्वाद।—प्रायोनिया, चायना, पलसादिला,  
स्टफिसेप्रिया सल्फर ।

७। गिलकु स्वाद । रहना।—बेलेडोना, हीपर लाइ  
पोपोडियम, वासफोरस, गिराटम ।

८। मय कड़ी चाँने मडवी मालूम वेनी हों।—प्रायोनिया,  
वाटोसिध, हीपर, सल्फर ।

९। छात और पीने की सब चीँने मडवी लगती हों।—  
प्रायोनिया, चायना, पलसादिला ।

१०। सब खाद्य पदार्थों में लवड़ा स्वाद आता हो।—  
छाएकापोडियम मकसशामिवा ।

११। सब खाद्य पदार्थों में ममकीन स्वाद आता हो।—  
आर्सेनिक, बेडडाना, चायना सल्फर ।

## मुह में दुर्गन्ध ।

मुह में दुर्गन्ध आना बहुत ही बुरा मानुम होता है ।  
कमी कमी क्यबम अपने को और पान बैठने वाल मनुष्य  
को भी मरुछ हो उठता है । अनेक कारणों से मुह में  
दुर्गन्ध आने लगती है उन में से दान, मट हागाना,  
मएँ का रोग, दाँतों में मैस सचय होजाना, पाशानय  
का रोग, मम्बाह और शराब पीना, और यद्योचित  
रूप से दातुन गुल न करना आदि प्रधान कारण हैं ।

— चिकित्सा ।—उपर आ सब कारण लिख गये हैं



इस रोग की चिकित्सा में उन्हीं सब कारणों को दूर करने का विचार और कुछ उपाय नहीं है। यदि दाँतों में छेद होगया हो मधुश और किमा प्रकार से दाँत लड़ होगया हो और इसी कारण से मुँह में दुर्गन्ध आती हो तो किसी दाँत का डाक्टर से इस की चिकित्सा करनी चाहिये। यदि मसूढ़ में फाटा मधुश दाँत के ऊपर में मधुश पड़ आने आदि कारणों से मुँह में दुर्गन्ध आती होना उस की उचित औषधि सेवन करनी चाहिये। दाँतों पर मैल आने का कारण यदि मुँह में दुर्गन्ध होना लायवाना तो उस मैल का छुड़ा देना चाहिये। दाँत जितने स्वच्छ रहे आमतौर पर ही अच्छा है, इस विषय प्रति दिन दाँतों को मसूढ़ करना चाहिये। भोजन के उपरान्त प्रत्येक घण्टे दाँतों का अच्छी तरह धोना चाहिये। जो लोग मसूढ़ पीत हैं उनके मुँहकी गन्ध किसी प्रकार दूर होन की उम्मेद नहीं है। यदि दावादाव का दाँत से मुँह में दुर्गन्ध आता उचित औषधि सेवन करनी चाहिये।

कबल प्रातःकाल के समय मुँह में दुर्गन्ध आना—नवमो मित्रा, साहस्रिका ।

देवद्व प्रातःकाल और रात्रि के समय—वृद्धमात्रिका ।

भोजन के उपरान्त—देवमित्रिका मसूढ़ ।

घाँसे के अथवा दाँतों के कारण से—बावयेव, ईना देवमित्र मसूढ़ ।

## मुख दाँत ।

( म्योमेटाटिस—मुख में घाव या छाने )

मर के दाँत का छेद होना कदाचित्त दाँत का दूर

अथान्निविह है। भूख कम लगना, मज्जीन, ज्वर यदि से मुद में पाद या छाते होजाते हैं। मगूने अथान्निविह गरम और शाल दाजत है उनमें हृद हृद जगता है और मूत्र बढ़ने हैं, मगूने हैं, दाजों के भीतर भी भार, गात्र में, गात्र में, जाम में छोटे छोटे होजाते हैं। मुद से वरधू निजगती है और वरधुसार बहुतसी रार निजगता रहती है। वार के साथ बन्दा २ गुन भी गिरता है। दान दिखते हैं और बन्दा बन्दी गिरती जान है। गले का सब गले फूट रहती है और मरती है। रोगी बहुत दुर्बल होजाता है और अथान्निविह उबर रहता है अथान्निविह अथान्निविह मरती रहता है।

**चिकित्सा १—आसोनिक ६, ३० शक्ति।—**मुद में वार और भीत रग भी, अथान्निविह, अथान्निविह, बहुतसी चिकित्सी वरधुसार मूत्र निजगी दुर्बल मार निजगती है, सब जाते भी अथान्निविह रहता है और मगूने बन्धेसा रग के होजाते हैं।

**फायो घेज १२, ३० शक्ति।—**यदि शाल अथान्निविह होने से अथान्निविह अथान्निविह मगूने मुद मोजन करने में दान दाज होयगुदे दानो व शाल से मुद रहता हो और मरती हो मूत्र गिरता हो।

**हृदयामा ३, ६ शक्ति।—**यदि शरीर मरने से हो और वरधू की रग गले मूत्र जाते और वरधू हो जाते रार गिरता, मगूने वरधू व वरधू और वरधू हो में मूत्र निजग अथान्निविह शरीर मरने से हो रहता है।

**महुरिदस ६ शक्ति।—**मगूने में मूत्रगती वरधू,



पट्य ।—रोग के बढ़ने के, समय दूध सावधानता और माली अच्छा पट्य है। इस के उपरान्त और और छाने के पदार्थ दिये जासकते हैं। मांस, मन्दी और छटाई विषकुल पार्जित है।

## मुखौप ।

मैलेरिया, मूत्राशय रोग (निहरी और निगर के रोग) पुराना उरर, मैलेरिया दूधित उरर आदि इस रोग के प्रधान कारण हैं। यह घाय प्राय ही बढ़ते होट के मातर की और, माल में और कभी कभी जाम के ऊपर दिखलाई पड़ते हैं। घायों में अत्यन्त जलन होती है और रूढ़ होता है विशेषकर स्पर्श करने से घाय प्रतिदिन शीघ्र ही बढ़न बढ़ जाता है, अत्यन्त दुर्गन्ध निगलन आती है, और गढ़ने वाले घाय के कारण शीघ्र ही माल में फैल होजाता है। कुछ भाग टपक, पड़ता है, मुद्द पिगड़ जाता है और लगातार बढ़द्वारा छार टपकता रहती है। यदि शीघ्र ही इस की आराम न होतो रोगी दुर्बलता और कष्ट से मृत्यु के मुद्द में चला जाता है।

## चिकित्सा ।—आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—

इस रोग की एक प्रधान औषध है। रोगी शय्या में पड़ा रहता है, पुराना मुष्कार, तिहा और निगर का पड़ना, दाप पैरों में सूजन, घायों में दुर्गन्ध और जलन।

कार्ब वेज १२, ३० शक्ति ।—जिा में जीवाणु शक्ति नहीं है, अत्यन्त दुर्गन्ध, अत्यन्त कमजोरा।

लैकेनिस १२,३० शक्ति ।—अत्यन्त जलने, कण्टार उतर, अत्यन्त व्याध, मुद और शरीर एवा इत पाय का स्थान बरफ के समान ठंडा, पाय नील से ल का भयथा काला सा ।

मर्कुरियम ६ शक्ति ।—होट, गाढ़, और मसुरी के गले हुए पाय गले की सब गाँठें सूजी हुई, इनमें जल गरम भयथा ठंडी चीज उगाने का बर्त बढ़ना ।

सलफर ३० शक्ति ।—गहने वाले पायों में कमी यह भौवध लगाने में उपकार दीजना है ।

चायना ६,३० शक्ति ।—बारम्बार अत्यन्त ल निरुद्धता हाथ पैर भयथा सब शरीर ठंडा, बाण रुद्धग्राह्य ।

सदकारी उपाय । पायों व ऊपर विनमय का नाइडन उड्डन देने का वायदा दीजना है । पायों व रुद्धता का जडा नच हासक साफ लगना चाहिये । बरतू दूर बाण व द्विध पाटाच क्लारट का हासन मण्डा दे ।

पथ्य । मरुत में वचन बाण और हलका मोजा पहना चाहिये । मान मण्डी इत्यादि निरुद्धता बर्धित है । दूध दिय जामजना है ।

मसुरों से गून गिरना ।

मसुरा का गून निरुद्धता में दिनी राज का रर उतर का रुद्धता है बसा मुद के बच निरुद्धता

पुराना बुखार, तिही और ज़िगर के कारण पुराना ज्वर  
इत्यादि १ दांत उखाड़ने के उपरान्त बहुत रक्त आव  
होता है।

**चिकित्सा ।** इस रोग की प्रधान औषध—बैल्वे  
रिया-कावे, कावे-वेम, 'बैकोसिन, मर्कुरियस, मेडूम-मिपू  
रियादिज, फास्फोरस, फास्फोरिक ऐसिड, सार्लेथिया,  
और सल्वर ।

जिस कारण से रक्त गिरता हो इसको ठीक समझ पर  
औषधि लगानी चाहिए। यदि पुराने ज़िगर या तिही  
के बिछार ज्वर आदि होने से रक्त आव होतो बाव यत्र  
माडूरियस, मेडूम-भ्युरेटिक, चायना, परम, और सल्वर  
उपचार करता है।

सदिरामज्वर चिकित्सा में देखो।

दांत उखाड़ने के कारण यदि रक्तस्राव हो तो एचानार्ड,  
बार्निंग या फास्फोरस प्रधान औषध हैं। प्रायेण घटा  
मयदा भावे घण्टे के उपरान्त औषध प्रयोग करना चाहिए।  
यदि दांत की औषधों से रक्त बन्द न हो तो सल्वर  
आफ फास्फोरस ऐसिड, सुगर भाव डेड का मिथेनोब्राट ऊपर  
लगावे जानते हैं। इनमें से किसी एक औषध का थोड़ा  
से दाँती में मिलाकर एक डुब्बा सिन्ड मयदा कपड में  
तर तर के दाँतों को मसुद के भीतर रख दें व तब  
दिलना बन्द हो जाता है।

**मसूदेमें फोड़ा ।**

मसूदे में फोड़ा होने से बड़ा ही कष्टदायक होता है। कद  
काहा मसूदे का फोड़कर मयदा कमी कमी बन्दगी

को काटकर भी बाहर निकलना है । यदि मरग  
रह जाता है, उपरान्त पत्थर पर मरग पड़ना है। यो  
मरग काटा जाय तो मरग नहीं हो जाये ता निराम  
रह पड़जाती है और दाँत मरग होन का भय रहता है।

**चिरिम्मा १—बलडोरा ३, ६ शक्ति —**गोमाल

रुद्र का बन्ना था उसमें रुद्र होता था, कभी जलन क माग हो  
होता था कभी लपका था और कभी उसमें बरस  
हानी था ।

**दीवर ६, १२ शक्ति ।—**यह मरग निराम मरग  
हो जाय कि हम में मरग पड़जायगा । मरगमाग दूरी  
घानु भीन गार क मरगवन्ना के उपरान्त ।

**मार्गुगियन ६, १२ शक्ति ।—**वा. ७ ही की  
प्रमाण कर । १५५ जाय ना मा । काना पद नहीं मरग  
रुद्र वरग ना क मरग

**मार्गुगियन ११ १२, ३ शक्ति ।—**मरग में रुद्र को  
जलन प्रव मरग । १५५ हागवा हा और प्रव मरग रुद्र  
का पदना क पदीया मरग । १५६ पद प्रव मरग  
रुद्र मरग मरग ना हागवा हा ।

**मार्गुगियन प्रमाण ।—**तीन तीन घन में मरग मरग ।  
रुद्र वरग मरग पद प्रव मरग मरग पद प्रव की  
दिन में रुद्र वरग ।

**मार्गुगियन १५, ५ ।—**रुद्र के मा मरग रुद्र वरग  
में मरग पद मरग मरग मरग मरग नहीं । १५६ पद  
मरग मरग मरग रुद्र वरग रुद्र वरग रुद्र वरग मरग  
मरग मरग

दन्त शूल ।

( द्रुप एक ) ।

दन्त शूल अथवा दाह व दई क समान कष्टदायक होते और दई है कि नहीं इस में संदेह है । मनुष्यों की अनेक प्रकार का पीड़ा, दन्त क्षय, पाकशय वा दोष, अमानस नहीं लग जाने आदि कारणों से दाहों में दई होने लगता है । दन्त क्षय । जिसको साधारणत दाहों में कड़ा लग जाना कहते हैं । इस कारण दाह पाछे होता है और उन के भीतर की सब पामल द्राघु और मज्जा बाहर निकल पड़ता है । इस व उपरान्त खाया हुआ पदार्थ उस गू में भर कर द्राघु और मज्जा का उत्तेजित कर देता है । इसा से अत्यन्त कष्टदायक दन्त शूल उपस्थित हो जाता है ।

इस लिये यह परमावश्यक है कि दाहों की पल पूरक रक्षा करना चाहिये और स्वच्छ रखने चाहिये । पल गूषक दाहों का स्वच्छ न रखने से केवल यही दाह नहीं है कि पत्रवा दायक दर उपस्थित हो जाता है किन्तु कभी कभी दाह भा गिर जाते हैं और मनुष्य के स्वास्थ्य और सुख स्वच्छता में भारी विघ्न पड़ जाता है । सब पाये हुए पदार्थों के परिणाम का प्रज्ञान उपाय दाह है । यदि उपयुक्त रीति से पाये हुए पदार्थ न चखाये जायें तो उन का मलो भाति पारपाक नहीं हो सकता ।

चिकित्सा ।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

दई के दृष्ट से रोगी पामल की तरह दा जाता है । उप





**कैलकरिया कावे १२, ३० शक्ति ।**—हवा जगने से गरम वा ठंडा पाना पाए स दद बढ़ना । दात नष्ट होना न पर बढ़ उपवारी है ।

**कावे चेज १२, ३० शक्ति ।**—मसूदा दातम गिर जाय रक्त गिरता हो और घाय, दात हिलता हा और छुमा न जाता हा, नमकीन पदार्थ खाने से दर्द लोट जाये और बढ़ जाये ।

**कैमौमिला ६, १२ शक्ति ।**—असह्य दर्द, विशेष कर रात्रि के समय, दद से चिल्ला चिल्ला कर रोता हो, कनपटी गरम और सूजी हुए मसूदा लाल और घना हुआ, खुली हुए हवा में और रात्रि के समय दद बढ़ना, अत्यन्त बेचैनी, सामान्य कारण से ही बिड़ उठना ।

**घायना ६, ३० शक्ति ।**—किसी निर्दिष्ट समय पर दद उपस्थित होता हो थोड़ासा भी छुने से अथवा तम्बाकू पाने से शर्द, दात से दात को दाय रखने से आराम ।

**डल्कामारा ३, ६ शक्ति ।**—पाना में भागने में भणवा सदी लगन से दात-र और उस के साथ ही उदरामय हो । ठंडा हुआ लगन से बढ़ना ।

**मकूरियस ६, १२ शक्ति ।**—एक साथ कई दातों में दर्द, एक बार के दातों में एक साथ दर्द, दद जान

सक फैला हुआ, दूध का रात्रि के समय पड़ना, रात में टाटनी, काट दिया। पत्तों से कुछ उपकार न हुआ सुई से घट्टाया गया गिना।

**नरुणयोगदा ई १० शक्ति।**—इस काम मन्त्र और छत्र की लाल लकड़ों का हुआ, जायदे के नाथे का नाम रखा हुआ है। इस मन्त्र में मानसिक परिश्रम से और मन्त्र मन्त्रों से रहने से पड़ना, सुनी हुई इस में रहने से आराम का लाभ केवल बैठे हा रहते और किसी प्रकार का शारीरिक परिश्रम नहीं करने पड़ा। पीला है और मन्त्रों के दार की में पड़े हुए शक्ति पदाथ जाते हैं उन के लिये यह अधिक उपयोगी है।

**गलमाटिळा ई शक्ति।**—मुलायम तक्षित का लोण छत्रा चाय से आराम गरम चाय से पड़ना गरम मकाफ में भा खरदा का लगना कन्तु खादा हो मयका धिलकुल दा पद हागवा हा।

**रस्टकस ई शक्ति।**—दांत दिला हा और लला मादूर होता हा, मगुदा खुना हुआ और जैसा सुजनी घाय में चलती है वैसी हा सुजला चलता और काग जठना, कटन सी होती हा चयक मारत हो और भन भनाइट के समान दहें हा, विधाम के समय और गाली हवा में चलता बाह्य गरमी के प्रयाग से आराम। रस्टकस और कैमामिना के प्रयाग से बहुत से यंत्रणा दापक हाग सगों को भागम दिया है

**सीपिया १२, ३० शक्ति ।**—गमावस्था में दन्त एत, दद पद्वे कान, पीछ समस्त हाथ में, ऊपर से मगुली तप कैले, बिगटे हुए रङ्ग का मुख मण्डल और चहरे पर स्नाहा केसे दाग, बदबूदार घट्टनसा भ्रेत मदर ।

**स्टोफिसेप्रिया ६ शक्ति ।**— दन्तघष, दात काळे होकर सहज ही टूट जावें, मसूदा दद करता हो, पाप होगये हों और घृणन मानयी हो, बिनष्ट दातों में और मच्छ दातों व मसूदों में दद, घट्टन सुषह और कोइ ठोड़ी चाऊ पीने से बढ़ना, चहरे पर ठंडा पभीला, दातों हाथ ठडे ।

**सलफर ६, ३० शक्ति ।**—बिम्बो उच्चम तजवीन की हुई औषधिसे भी यदि कायदा न दायें तो सलफर दने के उपरान्त उस औषधि क दने से कायदा दीखना है सग्या के समय मयथा रात्रि में बिछीन पर सोने से मयथा टड जलसे बढ़ना, मलक के ऊपर जलम और गरमी मानूम पड़ना, हाथ पैर ठड, घोडा और काला रजझाव ।

**औषधि प्रयोग** —दर के समय १, २, ३, घट क मन्तर से । माराम होने पर ठहर ठहर कर देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—दातों की रक्षा करने का प्रधान उपाय यह है कि उनका मच्छ रखना चाहिये, अत एव भोजन करने का अभ्यास बहुत ही मच्छा है । बरफ की पाना और बहुत गरम चाय अथवा बहुत खटाई नहीं खानी चाहिये क्योंकि इससे दात मष्ट होनाते हैं । भोजन करने क उपरान्त प्रत्येक बार दान मच्छा ठहर साफ़ करने



**कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।**—यह यहाँ क छिये

हो बहुत उपकारो है । यदि बालक बहुत रोगा हो और चिह्नचिह्न रुमाव का दोतो यह दवा दनी चाहिये ।

**लैकेसिस १२, ३० शक्ति ।**—गल का दद, छाटे से किता खान में दद मालूम हो, यमा मादुम हो कि गल के मातर कोर पाटला भयषा पिडसा मटका रहा है, गले व भीतर छलन भार खरमट्ट, गले में किमा खीज का सस्पश सहा न होना हो, साने के उपरांत ही पटना ।

**मकूरियस ६, १२ शक्ति ।**—सर्दी के कारण, गले

का दद, निगलन में सुह । शुभाने के समान दद होना, दद कात और गरदन का गाठ तक फैला हुआ । ( कैमा-मिला की तरह ) हाथ पैरों में भटजन हो और रोगा का सर्दी मालुम दाती हा, आराम न होना और पनीने जाना, समल रात्रि और सद दवा में पटना ।

**वैराईटा कार्व ६, १२ शक्ति ।**—यदि बछेहोना और मकूरियस से कुछ फायदा न हो और प्रधानत दासिल गाठों में प्रदाद हो ।

**फाइटोजैफा ३ शक्ति ।**—पान, से और पाहरी व्यवहार से (कुछ करने से) उपकार करता है ।

**औषध प्रयोग ।**—जब तक फायदा न हो ३ घंटे के अंतर से दना चाहिये, उपरान्त कुछ विलम्ब से ।



**काली-त्राईकामिकम ३,६ शक्ति ।**—बाग, जीमक ऊपर की ओर अक्षिल की गाठ और मुद के ऊपर की ओर घाय, तालू में छोटे छोटे राउ रंग के दाग, ऐसा मालुम हावे इन के भी घाय हो जायेंग, मार से पद्यू दार घाय भिड़लमा ।

**लैकेसित ६, १२ शक्ति ।**—गले के भीतर और दाखिल गाठ में प्रहाह करने वाले घाय, एफ् दहू पर के बप भिजालना, विशेषकर संध्या के समय एसा मालुम होमा कि एव घायवा, आज बिदीय होगया है गले के भीतर मल्लत खुदपी ।

**मर्कुरियस ६, १२ शक्ति ।**—गले के भीतर और दाखिल गाठ में घाय, निगलने में तेज-काटा जुमने व समान दद, गले के भीतर दद, अलग-अलग सुदर माटुम होमा, निगलने में गले के पाछे सुर जुमोन के समान दद ।

**नाईट्रिक ऐसिड ३,६ शक्ति ।** गले के भीतर घाय, विशेषकर घाटे के अपध्यवहार क उपरान्त मुद से खड़ी हुई गंध निकलना (मर्कुरियस का तरह) ।

**औषध प्रयोग ।** प्रतिदिन-मात-वाल और संध्या के समय दो बार ।

**सहकारी उपाय ।** मुद की पद्यू दूर करने क लिये एक माउस पानी में १० मुद फाटोलका मिला कर  
[४७]





**हीपर सजफरे १२,३० शक्ति ।**—अत्यन्त साधुधारी रक्खने पर भी महज ही पेट का दाघ उत्पन्न हो, महा हुआ स्वाद और सघ घाने की चीजों का घृणा। पारा और कुनेन के अन्वयदार के उपरांत अशुद्धा उत्पन्न होने पर विशय उपकार करता है।

**मर्कुरियस ६,१२ शक्ति ।**—महा हुआ स्वाद विशेषकर प्रातः का समय (पलसटिला भी कायदा करता है), विशुद्ध भूत न जगा, बैठ रहा से देखा मादुम होता कि पेट के भीतर साह हृद यस्तु परधर के समान बैठ रही है।

**नक्षत्रोमिका ६,३०,२०० शक्ति ।**—बहुधा स्वाद बहुधा उकार, बहुधा उन्नत (पलसटिला भी कायदा करता है), सघ प्रकारके खाद्य वे स्वाद मादुम होता, खाद्य पदार्थसे अनिच्छा, विशेषकर रोटी और तम्बाकू से अनिच्छा, प्रांडी तराव भोग अद्विवा मिट्टी खानकी रक्षा, कोष्ट यज्ञता यज्ञ कष्ट न निश्चयता। जो लोग विशुद्ध बैठे रहते हैं और कुछ परिभन नहीं करने और जो। अमिताहारी मयात मायदवक से अधिक घाने वाले हैं उनको इस मौरय से अधिक उपकार होता है।

**पलसटिला ६,३० शक्ति ।** सदा हुआ, बहुधा स्वाद विशेष कर खाने पान के यस्तुओं को निगलने के उपरांत, अर्धो मयवा सेवकी चीजों से, मांस रोटा और दूध से अनिच्छा, मायन के समय उकार जो चीज अमृत में खाई है उसका स्वाद और गंध आता [इस व्यवस्था में



गर्भापक्षा से दिव्यीरिया रोग में, और बर्तन किसी कठिन रोग से अच्छे होने में समय अव्यवहारिक सुधा होने हुए देखी जाती है। रोगी की मूत्र बिनी प्रसार नहीं सुझनी—सबदा हा कुछ न कुछ घाम का रूखा होना है।

१ चिकित्सा ।—चायना ६, ३० शक्ति ।—

न हुसने वाली भूष, बिनाकर रात्रि में, छद्म बल जाने और उराव पोनर्षा इच्छा, माठ और उरम वदाध जाने की इच्छा, मत्स्य प्यास किन्तु थोड़ा थोड़ा पानी पीना (मासैनिह) ।

तीना ६, ३०, ००० शक्ति ।—हर्मि रोग रहने पर, अव्यवहारिक प्रचल सुधा वेद मर कर जाने पर भी फिर भूष [ इस अवस्था में, मर्त्यपिण और रटाफिमप्रिया भी कापदा करन हैं ], पेशाब सुहा रहन से थोड़ा दर में ही दूध के समान सफेद हो जाये ।

साईलेशिया १२, ३० शक्ति ।—मत्स्य सुधा किन्तु मरुचि, कीटवद, मल थोड़ा, मल बाहर निकल कर फिर बाहर खला जाये ।

स्टाफिसेप्रिया ३, ६ शक्ति ।—वेद मर रहने पर भी राक्षसी सुधा, उराव और तम्बाकू-के प्रति इच्छा [ मरुचिप्रिया के समान ]

औषध प्रयोग ।—दिन में २३ बार ।

सहकारी उपाय ।—किसी कठिन रोग से अच्छे होने पर मधवा बहुत दिनों तक किसी रोग को भुगत कर अच्छे

खायना, और नक्समोमिका भी कायदा करनी है } अथवा  
पीने के कारण अशुधा । जो लोग नरम प्रकृति कहें और  
उनको गदगदही में बाध निषल आते हों उनका त्वि न  
अधिक उपकारी है ।

अजीर्ण रोग, यकृत के रोग आदि देखो ।

**औषध प्रयोग ।—**रुपातार तीन दिन तक भोजन  
करने से एक घंटा पहले औषधि एक बार सेवन करना चाहिये,  
उपरान्त २४ दिन औषधि बन्द रखनी चाहिये । हमसे बार  
कायदा नहो तो और कोई औषधि उस नियमों से स्वीकृत  
करन को दी जाये ।

**सहकारी उपाय ।—**प्रतिदिन, प्रातःकाल स्नान  
और सुली हुई हवा में घूमना और व्यायाम करना विशेष  
उपकारी है । पीन की खाजों में रुच्छ पानी और दूध का  
सिंघाव और कुछ नहीं पीना चाहिये । हवादार मकान में  
सोना चाहिये और प्रातःकाल उठना चाहिये । सब प्रकार  
की नशीला वस्तुओं का निषेध है ।

**पथ्य ।—**अशुधा में पथ्य के प्रति दृष्टि रखना ही  
प्रधान है । एकही पथ्य सब लोगों को एकसा सह नहीं  
हाना इस लिये पथ्यक विषयमें कोई एक नियम नहीं  
दिया जा सकता । निम्नो जो पथ्य सह्य हो और सह्य में  
पथ्य जाय उसके लिये यही अच्छा है ।

अस्वाभाविक भुधा ।

(गारविड टेपीटाइंट) ।

यह भी, अजीर्ण का एक लक्षण है । बाइ रहन पर

गर्भापेक्षा से, हिस्टीरिया रोग में, और कभी किसी दृढिन रोग से। अच्छे होने के समय अस्वाभाविक भुषा रोग हुए देखी जाता है। रोगी को मूल किसी प्रकार गर्हो पुष्टता—सबदा हा शुद्ध न शुद्ध खान को रच्छा होता है ।

**चिकित्सा ।—चापना ६, ३० शक्ति ।—**

न कुसने वाली भूत, निशपकर रात्रि में, यह फल खाने और शराब पीनेकी रच्छा, मोंड और उत्तम वशाप खाने की रच्छा, अत्यन्त प्यास किन्तु थोड़ा थोड़ा पानी पीना ( मासैनिह ) ।

**सीना ६, ३०, ००० शक्ति ।—**हमि रोप रहने पर, अस्वाभाविक प्रसव सुषा पेट भर कर खाने पर भी फिर भूष [ इस अक्षय में महीरियम और रटाफिसाप्रवा भी फापदा करन हैं ], पेशाब खुला रहने से थोड़ा दर में ही रूप के समान सफेद हो आवे ।

**साईलेथिया १२, ३० शक्ति ।—**अत्यन्त सुषा किन्तु मद्यधि, कोष्ठमद, मल थोड़ा, मल बाहर निकल कर फिर मन्दर बरता आवे ।

**स्टाफिसेमिया ३, ६ शक्ति ।—**पेट मेरा रहने पर भी रातसी सुषा, शराब और तम्बाकू के प्रति रच्छा [ ममपेमिका व समान ] ।

**औषध प्रयोग ।—**दिन में २३ बार ।

**सहकारी उपाय ।—**किसा दृढिन रोग से अच्छे होने पर अपना बहुत दिव तक किसी रोग को भुगत कर अच्छे



दृढ़ और भारीपन मादृश होना, मोचन करने पर उपरान्त पेट में  
कृमिमाना होना और भारीपन, मुँह में पा नी मर जाना विनायक  
द्वारा दियोंके मल अत्यन्त कठिन—दस्त जानपा हमेशा हाजत  
हो, किन्तु कोष्ठ साफ नहो। आलोग द्वारा पेट में हैं,  
अपरिमित मोचन करते हैं और बहुत बैठ बैठ, काम करने हैं  
उनके लिये विशेष उपयोगी है ।

पल्लमाटिला ६, ३०, शक्ति ।—बर्षा और तेल में  
पके हुए पदार्थों के साथ से भोजन, जिन पर सफाई और  
पील रहना मेल, प्रातः काल के समय मुँह का स्वाद विगड्डा  
होना, भोजन करनेके उपरान्त उठना, मुँह में जल मर जाना  
पेट में कठिन, पतला दस्त, विशेषकर रात्रि में । रक्त प्रवृत्ति का  
छिपे के लिये यह भोजन अच्छा है ।

मायोनिया ६, १२ शक्ति ।—बदन गरमी लगाने  
उपरांत ठण्डा पाना पीनेसे यदि रोग हो, भोजनका अनिष्ट  
प्राप्त कि उसकी गंध भी असह्य मानुम है, भोजन करनेके  
उपरांत पाच्यत्वमें दृढ़ और भारीपन, सब चीजोंका ही  
कड़वा स्वाद मानुम हो, अत्यन्त सिरदर्द, कोष्ठकृता, मल सूखा  
और कठिन ।

जाईकोपोडियम १२, ३० शक्ति ।—दुर्बल  
रागियों को मज्जीन, रेर से भोजन करना, भोजन के उप  
रांत निद्रावृत्ति, पेट धक्कना, दस्त साफ न होना । पेट  
फुलने और बाष्पकृता में जाईकोपोडियम और पेट फुलने  
और उदरामय में बायोसोडियम उपकारी है ।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—एक और पट्टा  
[४८]









कुछ आराम न हो, सब ही प्रकार के आथ पदार्थों से प्रतिष्ठा, दवाय मधवा चट्टी चोच की रज्जा, कम जोरी, प्रत्येक बार भोजन करने के उपरांत सोने की रज्जा दाना ।

विधि १२ अंति ।—प्रतिष्ठा रज्जा । अथवा

कमजाये, उड़ो या पट्टा उड़ा, चट्टा या रज्जा का, गज पर बाल दा, मल चट्टि और गडे ।

औप्य प्रयोग ।—प्रतिष्ठा दो बार ।

सहकारी ठपाय और पथ ।—इस रोग की चिकित्सा करने समय निम्नलिखित नियमों का प्रति रज्जा कर मोचन उपहार करनी चाहिये ।

१—मछली तरह चरा कर धीरे धीरे भोजन करना चाहिये, खाई हुए पन्थु जब तक दानों का मछली नहीं मिल नहीं जाती तब तक का माथ मिल नहीं आती, पकती नहीं है । निम्न प्रकार उठो करन से कोई कष्ट मछली तरह सम्यक् नहीं होता उसी तरह जबही उसी माथन करना परेषाक क्रिया का प्रयास विम्वर काय है ।

२—भोजन करते समय इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि हम कितना खात हैं । प्रति दिन नियमित समय पर भिन्ना रूप का उर्सा के अनुसार उचित भोजन करना चाहिये ।

३—पट भर कर खाता अनुचित है । इस से वातावरण के रज्जा का नियमन और चाये हुए पदार्थ का माथ



और व्यायाम [ कमरत करना ], प्रकुलना और सामाद में शरीर को खस्य रखने के प्रधान उपकरण हैं।

छातीपर जलन होना ।

### ( पाईरोसिस )

छातीपर जलन होना भगाने का एक प्रधान लक्षण है। रूमस पैरेमे लेकर छाती तक जलन मालुम होना है और काली बाली उल्टा होना है। सदा भयानक जलन पैदा करने वाली इबारतानी है भयानक भयानक मुहमें एक एक गुल्लक पानी भर जाता है।

चिकित्सा ।— कार्व वेज १२, ३० शक्ति ।—

मुह में पानी भराना विशेष कर रात्रि के समय, पाका छप में जलन के साथ सदा इबार शराय पान आदि और रात्रि जागरण के उपरांत ।

चायना ६, १२ शक्ति ।— प्रत्येक बार मोचन करने के उपरांत छाती पर जलन, मुहमें पानी भरमाना, खाला इबार उठना और पाकाशय में इबार मालुम पडना प्रत्येक भाजनके उपरांत ही ऐसा मादुम होना मानो पेट अत्यन्त भर रहा है।

नक्मवोमिका ६, ३० शक्ति ।— रात्रिके समय कदवा भयानक सदा घोडासा पानी मुहमें भरमाये, प्रत्येक बार मोचन करनेके उपरांत उल्टा, पाकाशय के स्थानको दबाने से छद्य न होना, शरायियों के मुहमें पानी भरमाना, कोष्टद ।

પલ્લ્યાદિલા ૬ શક્તિ ।- જો કુલ જાણા જો

उसीकी गंध और स्वाद मिली हुई दवा उठना मूत्र जाने के समान पेटमें कुछ मात्तुम होना, कड़वा पानी मुँहमें आना, शूल और अभ्रमण्डल प्रकृति अपना देना प्रमुख लक्षण प्रकृति का हाँ और जिसको उदरी दवा माजाली हो।

सीनिया ६,३० शक्ति ।— जाने धीन क उताप

सुदो वानी सर भाता पाकाश मे जन्म ( इस छव मे  
 मानने आर पानकारन भी दिया जाता है। समर्प  
 आर क इण विरा उव गी है ( नवमपात्रका )।

कामपेसा ह शक्ति ।-छात्री पर जलन बाता

समयः मध्याह्न १२ बजे। अरुणोदय ५.३०। उदयः ६.३०।  
 पूर्यः ७.३०। अस्तः ५.३०। रात्रिः ५.३०। [समयः ५.३०।]  
 अस्तः ५.३०। रात्रिः ५.३०। अस्तः ५.३०।

केलकविता काव्य ६, १२ शाब्दित ।—पुष्पक मठ

॥॥ हे उत्तम ॥

सप्तक ६, ३० अंति - तुलना दानेश्वर व र श्वर

और जो क सारा पे नव नये रस रस वा मज्जा रस  
मज्जा है । वह मज्जा रस क सारा रस रस रस रस  
रस रस है ।

महा नृप १-के हरेण्वरुण केन शिला वाचनम् ॥ १ ॥  
 धर्मपुत्रम् ॥ २ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रौतप्रयोग १—दिन २१ मात्रा ।

सहकारी उपाय श्रौर पथ्य १—अजीर्ण का विषय  
देखो ।

वमन ।

[ चोमिटि ]

उल्टी होना बहुत स रोगों का लक्षण है । पाक  
शय, पचन, [ अंगर ] पृथक्, तिष्ठा, अपच, मात  
और अस्तिष्क रोगों से प्राय ही उपस्थित रहते  
हुए दृष्टा जाता है । हमारे सिवाय अधिक भोजन,  
कीड़ोंका उपद्रव, गमसञ्चार, गारही अथवा मोक्षार्थे बैठना,  
विरक्ति या घृणा पैदा करने वाली वस्तु देखना आदि कारणों  
से उल्टी होती है ।

चिकित्सा १—ऐंठिंग कूड ६, १२ शक्ति ।—

अधिक भोजन करने के कारण जो मिचलाना और उल्टी ।  
हम अरसा में इयाक, २२२-सेमिका, अथवा पल्लेडिला  
भी दिए जा सकते हैं । अथवा अथवा उल्टी, किसी प्रकार  
बन्द न जाती है [ वैडिम दाट भा पावदा करती है ] ।  
जान में दृष्टक समान सफाई मैत्र ।

ग्रोनिन ६, २० शक्ति ।—उल्टा होना विनेद

कर देने पीन के उपरान्त, अथवा पीन के उपरान्त,  
हवासा भर पाजसा रुग्णा और पित्त, अथवा पाचन  
रग का पदार्थ उल्टी निकलना, अथवा अथवा कमजोरी ।

त्रापोनिया २६ शक्ति ।—पीने अथवा पीने के



याद उलटा कडवा पित्तका उलटी, उलटी होना के समय या  
भार सुर चुमोने व समान दद । , ,

**कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—** याद दुर यात्र की उगी  
होना यह भी खटा या कडवा कडवी पित्त की उछगी, यात्रों के  
लिय ही विशय फायदा करन वाला है ।

**फाकूजम ३, ६ शक्ति ।—** गाड़ी में सपया नीका में  
पैठने व किन्ना किन्ना प्रकार सुनने से जी मिचलाना और  
उछली समुद्र यात्राके समय उछटा ।

**कोनियम ३, ६ शक्ति ।—** काफी के कोरक समय  
पदाय का उलटा में निचलना, गमयता लियों की उछी  
इपाका और नकमयाभिका भी फायदा करता है ।

**इपीका ३, ६ शक्ति ।—** जी मिचलाना और उछी  
जाने पर यह उत्तम औषधि है । सपदा और लगातार जी  
मिचलाना याद दुर चीज किन्ना कडवा पित्त किन्ना इत  
थिदथिना पदाय उछटी में निचलना, यात्रायात्र में सपदा  
दद, नक्याक यात्र और लंबकी भादि में घने दुर यात्रा  
करने व पट का बोध ।

**नकमयोमिका ६, १२ शक्ति ।—** मोत्रन व  
उत्तरगत जी मिचलाना शराबियों का लगी उछटाद गटी वरी  
और गट्ट स्वाद मित्र दुर खेप्या की उछी और गिरदा  
उछल यात्र का बाजे रग व रग की उछी, यात्रा  
विषय ।

**पञ्माटिला ६ शक्ति ।—** पाचयय की उछ

हो और तेजी बहुत ही छोटा भोजन कर सके। दो प्रत्येक बार भोजन करनेके उपरान्त बलही, चीमें पने हुए आदि पदार्थ भोजन करनेसे बलही, खियों के लिए विशेष उपयोगी है।

**विराट्टम ऐल्वम ६, १२ शक्ति ।—**प्रथम चरण और लगातार जो मिचलाना, बहुत पैसी कमजोरी कि विद्योने पर पड़े रहने की दृष्टि रदनी हो [आर्सेनिक की तरह], चाप हुए पदार्थ की उल्टा, कड़वा, सड़ा, हागदार, सफर या बीजे हरे से रंग का शल्मा, काली कड़वी और रस की उल्टा, दिलने भुनाने से या पाने सेहा उल्टा हागना चाप पाने न उल्टा पमाना, अचानक कमजोरी और नाई। पुनः [आर्सेनिक] ।

**औषध प्रयोग ।—**वर्द्धन अवस्था में प्रत्येक मास अवस्था एक घंटे के अन्तर से अब नव मास तक न हो। इनकी कुछ वर्द्धन न होना ३५ घंटे के अन्तर से एक मास ।

**महकरी उपाय ।—**अधिक भोजन अवस्था पुनः (वर्द्धन न पचने वाले) पदार्थ जान में यदि उल्टा होना होना न हो अगुनी हाग कर अवस्था लगा उन या कर उल्टा कर हागना ही बलही है । रंग बार उल्टा होना अवस्था जो मिचलाना आदि हाग दाग मुह में पचने न पचने दिखाने चहना है । उम्र नववर्ष तक रहना आदि उल्टा पचने उचित है । कभी कभी उल्टा बार कान के लिए सोडावाटर और आहार के लिए

दूध में सौंठागाटर मिला कर दो-से उपकार दीप्तता है।

रक्तवमन ( लोहू की उलटी ) ।

( हिमैटीमिसिस ) ।

उलटी होने से पहले पाकाशय के स्थान पर एक प्रकार का घातक पूषना बढ़ और वह मालूम होता है, मुख का नमकान स्वाद, जो मिचलाना, चहर आना और कमजारी रहनी है तथा सिर घुमा करता है। उलटी में जो रक्त निकलता है उस का परिमाण थोड़ा से बहुत अधिक भी हो सकता है। कभी यह रक्त उजल लाल रंग का और कभी और कभी काल रंग का और जमा हुआ।

पाकाशय में का शिरा ( तम ) टूट जाने से इस प्रकार रक्त का उलटा आना है। अत्यन्त शराय पाना, अति तीव्र शीतल सधन करना बाहरी चोट लगना, भय (उत्साह) का रक्तनाश अथवा कष्ट दहाना और अचानक हाथ का झुनसु बढ़ दना आदि रक्त की डलती होने के उत्तम कारणों में प्रधान गिने गये हैं।

चिकित्सा ।—एफोनाईट ३, ६, शक्ति ।—

जब रक्तपूषण और युवा मनुष्यों को रक्त का उलटा आना, रक्त उजले लाल रंग का हो अत्यन्त मृदुभय और मन का उद्वेग।

आर्निफा ३, ६ शक्ति ।—यदि बाहरी चोट लगने

मे गुा या उल्टी हो गून वाला भार उठा हुआ पादा  
एव में दह मादुन होना ।

**आर्सेनिक ६, १२, ३० शक्ति ।**—पादा-

नय में गरमा और दह, दाख म रग व पित्त और  
रन का उल्टा, मयानय अत्यन्त कमजारी, अत्यन्त  
पेचैगी ।

**चायना ६, ३० शक्ति ।**—हुयरा पतल और कम

आर दह जाके मनुष्य के लिये, रक्तपात्र के कारण अत्यन्त  
दुखाना ।

**इपीका ६ शक्ति ।**—अचानक उल्टी रक्त काग

आर गद्दा, चहुरा बिगुल्ल पास रग का और चहुरा न ता  
मर्बेरा और लगानार जी मिचराना, पाशय में बहुत हा  
उपादा दह ।

**फासफोरस ६ शक्ति ।**—उबल ताप रग का

उल्टा चहुरा ताप मरुट और जीम रक्तपात्र को फुट  
दिया जाय य पद में पहुच कर मरुट होत न हा उल्टा  
हाजारे अत्यन्त पिडाउता, विनेर-मोन्न के  
उपमान ।

**मिनेरती ३, ६ शक्ति ।**—हुयरा पतली दह पा

मनुष्य रागा आदमा का रक्त का उल्टा यान का  
मह हुयरा का उल्टा, शोरी निार हावर ओ रद रद  
रद न हा, हिनु अत्यन्त दुख रक्त पर मुगार रक्तगु  
धोए दह उर मय । न गदाया हुआ ।



अथिहत्सातत्त्व ।

मध्याह्नक भोजन पिला दन भ भन्द होजाती है  
स बन्द न दाता २। १ मात्रा मध्याह्निक ६,  
मध्याह्न है।

विद्युत्-चुम्बक प्रयोग—  
विद्युत्-चुम्बक प्रयोग—

बड़ा लह पाना के बाद—महमबोमिका । गरम  
 व बाद—दिराटम-यस्त्रम । बसों वा—इमशिवा वा  
 नियम ।

सप्तदश अध्याय ।

**पेट के रोग ।**

शूल वेदना [ काक्षिक ] ।

एल्बाना जलाने अथवा और कड़ाकर रोग है  
 पर हर कमी बनी बिलकुल हा नहीं रहता। फिर मर  
 नक जलाने हाजाना है। हर नाभि अथवा बड़ा बर्तन  
 क पस हाता है। हर कमी कमी इनका अधिक हाता है  
 । हर हाता नकली के मार अथवा में लग्न लग आता  
 है बिजली हा और हर क हाथ बने हाजाना है।  
 दिया दिया का हा बिजली हा हाजाना और  
 हाता अथवा हाता है। घर पर हा हाता हाता है  
 और सुरे हाता म हाता हाता है बिजली हाता हाता  
 हाता है। हाता हर हाता हाता है और हाता नी नही

**औषध प्रयोग ।**—यदि प्रबल रक्तसाय होतो एव घटे या माघ घटे के अन्तर से औषध नहीं चाहिये । उपरांत जैसी माघदयवृत्ता हो ३ । ४ घट के अन्तर से ।

**सहकारी उपाय ।** ठंड पानी में कपड़ा भिगो कर घट के ऊपर रखने से विशेष उपकार दीक्षता है ।

**पथ्य ।** उलटी होने क कर एव घट के उपरांत आहार देना चाहिये । दूध, बाली, साबूदाना, आदि इत्यादि पथ्य दा ठीक है । जो कुछ खाने को दिया जाय ठंडा कर क देना चाहिये । गरम गरम कुछ भी नहीं देना चाहिये ।

## द्विचकी ।

### [ द्विकफ ]

द्विचकी मुख्यतः में एव बहुत से रोगों का उद्गम बरणा में भी दिखलाइ रहना है । देजे के रोग में द्विचकी एव कष्टदायक बरणा है । पुराने रोग की आरम्भ दशा में द्विचका आने से रोग बहुत ही कष्टदायक और पु शाय्य होजाता है ।

**चिकित्सा ।** जब जिस रोग क साथ द्विचका उद्गमिन् हो तब उसी रोग क लक्षणों क अनुसार चिकित्सा करना उचित है । सामान्य कारण से साधारण दशा में भयका रोगों का द्विचका आने से ठंडा पानी







**सहकारी उपाय :-** गरम फटाकन का ५० घंटा

गणम ज्ञाना वा दिग्धारा देनम उन्मासुज आराम मान्दम  
दहना हे । दाया व धर्म्या आर विज्ञान दहि द्योति  
वादिप ।

**यकृत प्रदाह ।**

[ द्विपाटाङ्गित्सु ]

बहुत प्रदाह प्रायः क्षान्त्युप नदी देखा जाता । तथा में  
बहुत ( शिखर ) एक प्रधान बग्न है जिसपर एक पवित्र विषय  
में इनका एक अध्याय मिलती किया प्रधान है । बहुत  
प्रदाह प्रधान लक्षण — प्रकाशित रहित। बाद दर कभी  
कभी यह दर ३११ तक फैला हुआ, दाग लम्बी ही दृष्टि  
है किन्तु भी यह मालूम है, यह दर जीवन में जीवन  
तक निरन्तर में फैला रहित। कष्टत जीवन में भिन्न मालूम है।  
बहुत व प्रधान दर दृष्टि में लक्षण है व यह प्रधान बहुत लक्षण  
कैर कभी कभी गूना हुआ लक्षण प्रधान में यह दृष्टि  
बहुत प्रधान लक्षण। परमे दर और कष्टत लक्षण दृष्टि  
लक्षण लक्षण की भी लक्षण और व — इनके लक्षण दृष्टि है।

कृष्ण महादेव ! यदि मन्त्रम नृणां न भवेत् । तन्निष्ठा  
 मन्त्रक नृही भवेत्ता । यदि महादेव मन्त्र मन्त्रम न भवेत् ।  
 तर्ही तन्मन्त्रक नृही भवेत् । तन्निष्ठा मन्त्रक नृही भवेत् ।  
 तन्निष्ठा मन्त्रक नृही भवेत् । तन्निष्ठा मन्त्रक नृही भवेत् ।

[illegible]

प्रिणिमा ।— एधेनाइ ३ : ५५ ।—



हाथन न दद सिर दद, स्वाभाविक वस्त्र की आदत रातमें ३ घन के उपरान में ३ न आना ( रातमें ३ घन के पहले नौद न आना—मकुरिषम । जो राग रागे पाने में बहिसाधन करत हैं और आ बेगल बैठे बैठे काम करते हैं ।

**पीढोफाईलम ३ शक्ति ।**—घटत के स्थान में दद, जो मिचलाना और गिचका उलटी, घटत के स्थानका मयदा हिलाउ और रगड़े, मुहका बडवा स्याद, बिना दर्दका प्रात कालका उदरामय ।

**औषध प्रयोग ।**—कटिग अवस्था में ० । ३ घटक मात्र न । आराम माहूम पडनेपर दहर ठहरकर अवस्था ३ । ४ घटक मात्रगै ।

**पथ्य ।**—तेज घामें पकहुए खाद्य मास मच्छी, शराब और दूध बिल्कुल वर्जित हैं । साबुदाना घाली आदि हल्का भाजन करना चाहिये । दद और ज्वर दूर होनात पर अग्निका पथ्य और सज्जा तरकारी तथा अच्छे पके हुए पर दिये जासकते ह ।

**पुराना यकृतप्रदाह ।**

**( यकृतका दोष )**

भाजकल यकृतका दाप एक साधारण रोग होगयाहै । इस दाप का प्रधान कारण श्मने पीनता अतिथम और अत्याचारही है । पहले समयमें हिन्दु लोग आन पीन के विषयमें बहुत सतक रहतथ और नियम पूरक सब काम करतेथ इसा कारणस पुर्गने जमानमें यकृत दोष बहुतही



**कैलकेरिया काव १२, ३० शक्ति ।—**मूल पाद,  
बसरमें धोती बसकर न बाध सरना, कदा, बिना पगडुमा  
मल, रंग मिट्टा के समान, गण्डमाखा दोर ।

**घायना ६, १२ शक्ति ।—**परिपाक शक्ति की कम  
चोरा और मूल न जगना, कड़वा डबा उठाना, बहुत  
बड़ा हुनस दद बिशेषकर हुनस के अपव्यवहारके उपरान्त,  
बिना दद, बिना पगडुमा मल ।

**मर्कुरियस ६ शक्ति ।—**मुदमें पाव और दुगंध  
आमपर पाव रूखा मैथ कड़वा खटा, मडादुमा मयवा  
माडा क्याद पहनकर क्यामपर दद, पगब लाल रंगवा,  
गाना हर रंगवा, भागदार मल और पदमें दद ।

**नकमयोमिका ६, १२ शक्ति ।—**मिर गूमना, मातः  
बाग मुदका मडादुमा मयवा कड़वा क्याद रहना जिनरके  
ब्याम में जवबत भावन करनेक उपरान्त पाकानपमें  
मज्जत पूजना मादूम दाता बगरमें घाना मल न दाती  
हो, क्याभाबिक बरतकी भादन मल बडा और कडा ।  
आ नेम मयदा घोंमें पकेहुय पदाथ मादि ब्याज है और  
नगानी घाई धबदार करनेहें उनदा के त्रिध पद औरध  
विशेष गुणकारी है ।

**वाहोपाईलम ३ शक्ति ।—**आन कल क समय  
मिर दल जीव मयल पहन क क्याम में पूजा और  
दद मादूम दाता, मयेद धादवाक समान बागदार मल और  
मज्जत दुगंध ।

सत्त्वफल ६,३० शक्ति ।—उदाम चित्त, ५५५

मरणा न लगना हा । रोमकी इच्छा हा, कपाल में मा  
पत मातृम हाता, माथक ऊपर मदा गरभी, जिमि सदा  
समभाग लाज ।

सीपिया ६,१२ भाक्ति ।—पुराने वस्तु रागरी वर

एक प्रधान और ३ > ।

लेकेमिम १० ३०शक्ति ।-यद्युक्तं तेन वर व

बद वाक्याशय तक फलानुभा । गालान शराईः हैं यह भी  
उमक यकन क राग म अरिह कायदाकनभा है ।

चत्तीहानियम ३ शक्ति ।— वदत वा पुता

गन्दाशिवन ( जिगम्बी, पुगना, मूतनी, उवाचनी ) बाहिन ५४  
 का हनुः क जीन मयरा हर, जीन पीछी ५४  
 बहना ।

**औषध प्रयोग ।—** मानस्यजनानाम् एह एह ॥

दिनांक ३१ अक्टूबर ।

पदार्थ ।—कदाचन मरुच्छीं मान्ति यीमे नहं ई

वचनान्नामनादि विग्रहणं वक्ष्यते । एतेषां भाषायां भाषा  
मार्गः । अथ च वचनं वचनं वचनं भाषायां वचनं । अथ  
च वचनं वचनं वचनं वचनं वचनं वचनं वचनं वचनं

**सहकारी उपाय ।**—यह रोग में घृण खगता अच्छा नहीं है । अच्छा तरह व्यायाम (कसरत) करने की पूरी आवश्यकता है । औषध से उतना उपकार नहीं होता जितना कि प्रतिदिन नियमित रूपसे व्यायाम करनेसे होता है । प्रतिदिन प्रातःकाल के समय उठकर और स्नान करने के उपरान्त चिरायता आदि कड़वा चीन खाना पित्ताधिक्य के लिये उपकारी है । यह रोग के ऊपर प्रतिदिन ३ । ४ घार से करने से विशेष उपकार होता है ।

**पीलिया ।**

**(जानहिम ।)**

पीलिया स्वयम् कोई प्रधान रोग नहीं है । यह यहन विकार का एक लक्षण मात्र है । इस रोग में शरीर और आँख पीले रंग के हो जाने हैं । मल मिट्टा के समान काले से रंग का होता है, बेशक भी काले से रंगका होता है । शरीर का पालापन कभी कभी इतना गहरा होता है कि काले से रंगका दीखने लगता है । शरीर में छुमकी खजती है और पर सफेद मैल जमा रहता है, भूल कम मुहवा कड़वा स्वाद, उल्टा होने की इच्छा अथवा कड़वी उल्टी हो बहुत में दर्द रहना । घोटा बहुत स्वर भी रहते हुये देखा जाता है ।

क्रोध आदि अति प्रबल मानसिक आघेग, ज्वर में कुना इन आभेनिक इत्यादि औषधों का अपव्ययहार, मद्यपान और यहन की पीडा इत्यादि इस रोग के कारण हैं ।

**चिकित्सा ।**— एमोनाईट ३, ६ शक्ति ।—



प्रयत्न स्वर, शरीर पीला, थोड़ा लाल रङ्ग का पेशाब, मग  
सिक्क उद्वेग । घबराहट । और मृत्युसमय ।

**ब्रायोनिआ ३, ६ शक्ति ।**—दायाँ हाथ में हा  
थुमोन्तर समान दृढ़ हाता जाँघ पाल मैलमे हकी १५,  
कड़यी पिल मिलाहुँ उलटा, काएबद्धता, मल कठिन और  
धुआ हुआ ।

**फैमोमिला ६, १२ शक्ति ।**—मय वा काथ व  
कारण व रकी क त्रिव विशय उपकारी है । मल रंग  
और पनटा, पत्रमें दृढ़, वाक्कता बहुत दलाई आता है  
कयत् गादा में पैडकर धूतका कहना हा ।

**बायना ३, ६ शक्ति ।**—शरीर पात्र रङ्गका, सिर पर  
बहुतका बद्धमाना कात्रन हाताता और दायाँ हाथ  
गत्र मालिका कय्या लाद पाहुँत लाया नाय परी कता  
मात्रुम हा १२ माना मराहा और वग्न जाता है  
पात्र रंगका पनटा मल दृढ़ १६म ४ मग्नर हा रंग  
बहुता ।

**मर्कुरियस ६ शक्ति ।**—मल शरीर व १२ रंगका  
बहुतमें दृढ़ मल सक्क दम जान समय और उताप  
बहुत हात्रन मुख्य कय्य बात्रनकी मकिरुता उताप  
वा मग्नरुय जो मिक्कता और उताप नीम गाद मैल  
दर्या दृढ़ ।

**नक्सोमिहा ६, १२ शक्ति ।**—वजन बड़ा और मल  
गदा व मल दृढ़ता लाद मत्रनम मकिरुता बहुर म  
रहे कय्यदम कय वग्न हात्रन हा विग्न मग्न व

होना हो, रात्रिमें ३ घनके वपरांत फिर नींद न आना, प्रातःकाल के समय बहना— जो लोग परिधमः नहीं करते और जो लोग अमिताहार हैं अर्थात् खाने पीनेके नियम पालन नहीं करते ।

**पाठोपाईलम ३, ६ शक्ति ।—** पित्त निष्कृष्टता बन्ध होनेसे पालेवाका रोग, अत्यन्त आमिषखाने के साथ विज्ञात [ जिसमें पित्त रहता है ] के पास दर्द होना, घृत में टनटनाहट, बहुत बड़ी हुर, मल मिट्टी के समान काला ।

**वेलीडोनियम ३ शक्ति ।—** शरीर और आन्त्र पाँछे रगरीं घृत और दाहने कपड़ेमें दब, कड़वा स्वाद, मल सकेद बहुत बड़ी और उसमें दद ।

**आयोडियम ६ शक्ति ।—** पुष्पता रोग, विषयकर पात अपत्यवहार के वपरांत ।

**क्रोडिलस ६ शक्ति ।—** यदि रोग शिला प्रकाट भण्डा न होताही और सांघातिक आकार धारण करे ।

**सल्फर ६, ३० शक्ति ।—** घृत में दर्द, मुहवा चट्टा या कड़वा स्वाद, पेट फूट जावे, मांसे के ऊपर गरमी रात्रि के समय शरीर में खुजली, दिनमें, तिद्रा, रात्रिमें नींद न आना, श्लेष्मद अथवा प्रातःकाल समय उदरामय ।

**औषध प्रयोग ।—** प्रति दिन चार पाँच बार औषध का सेवन करना आह्वय । यदि पुष्पता रोग दाती



और और अनेक रोगोंका लक्षणस्वरूप उदरामय उपस्थित होता है, जैसे यक्ष्मा, ज्वरातिसार, माति सारिक विकार ज्वर आदि रोगोंमें उदरामय होता है ।

**चिकित्सा ।**—कठिन ने पचने वाले आद्य, घानेसे उदरामय—पलसाटिहा, पैटिमहुड, र्पाका किम्बा नफस-घोमिका ।

प्राग्मकाष्ठका उदरामय—घायना [ सामाय ], विरादम पद्वम [ बायडे मात होंगे ], आरुसि [ विश यमन और सिर हई ], आसैनिक ( अत्यन्त कमजोरी ) ।

नया उदरामय और अचानक अत्यन्त कमजोरी—आसैनिक, काय पेज, सिबेही, विघटन ।

पुराना उदरामय—आसैनिक नैशकेरिया, घायना, केरम हीपर, हाइकोपोडियम, फासफोरस, फासफोरिक एसिड, पाइोफारलम, सलपर ।

उदरामय के साथ पयायनमस कोटवद—पैटिमहुड, प्रायानिया, नफसघोमिका ।

ठंडा उठ पीनेसे—आसैनिक, काय पेज, पलसाटिहा, ।  
सर्दी लगनेसे—कैमोमिला, घायना, इदकामारा, मकूरियस, पलसाटिहा ।

ठंड, घी आदिमें पकी हुई चीजें खानसे—पलसेटिहा, काय पेज ।

हर आनस—एकोनाइंग, ओपियम ।

पल खानेसे—आसैनिक, घायना, पलसाटिहा ।

शोथ पानस—बाहासिथ अतसामीनम ।

अचानक आनंद के कारण—कापिया, ओपियम ।

सुतिनायका [ सोयड ] में—वेडिमटार्ड, इरुकाभारा ए  
सायेमस ।

दूध पीने से—कैलकरिया, सलकर ।

गर्मी लगनसे—एकानाईट, पाडोकारुम ।

बिना दर्द उदगमय—एगिम आसेनिक, चायना, केर,  
फासफोरिक-एमिड पाडोकारुम ।

गमावस्थाम—एग्मगा उरुकाभारा लाएओशोमि  
फासफोरम ।

वाताम भीमान—एकानाईट रम्बस ।

एकानाईट १, ३ शक्ति ।—अथानज वेग्ने कपड  
दर के भाय उदगमय मथत दर, तपडगना, उपर, धान  
और मृगमुनय उडकर घेडमान से मिर भूमता हो मथता  
अकर भात हो मथानज एतीन चन्द दानन मथता हो  
दवा एगतेम गान गानकर ।

आमानक ६ १२ ३० शक्ति ।—मल गल है

शक्ता आम मथता दान गानकर ममान मथानज मथता  
कमभारा उडता १० गान उडर अथ कपड है दान  
अथम गान से न न न गाना गाना मल गाना रंग  
वा भातम उडट काई चाने मल गान म उड  
(काई चाने मल गानम ममान—गामक २५) ।

येडेहोपा ३ शक्ति ।—गम्मे महाददा २१ रं

जिनरी मथता का उडती उडती कपड भाव मिदग  
मिदग गान म ममान भाव भाव मथानज मथता वा  
ये उडक वड मथता क ३ मथ ओर मिदग दान  
कपडा ।

**कैलकेरिया काँव १२, ३० शक्ति ।**—गहमाखा के रोगी को उदरामय, पेट सर्वदा फूल रहे पतखा नरीर किणु मुस बच्छी, मल सफदा डिये हुए यवधा पानी समान, पुराना उदरामय, मल बिही के समान, सोठे समय कपाल में पसीना, दोनो पैर ठण्डे और गीले ।

**काँव वेल १२, ३० शक्ति ।**—देमातूम हल निकल जाना, अत्यन्त दुग्ध, अग्निम अवस्थामें जब जीवनी शक्ति कम होता है और प्राय नाही नहीं पाइ जाती, अत्यन्त पाणुनिसरण, पेट फूलनेके साथ उदरामय ।

**कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।**—मल हरा, पानीसा, पेटमें अत्यन्त दह, गरम पठला मल, सड़े हुए अण्ड के समान मल में दुग्ध अत्यन्त असहिष्णु [ सहन न करने वाला ], कुछ बात पूछनेपर मलमनसात और मुठामीवतसे उत्तर न देसका हो, बाखर पड़न ही देने वाले हों और कबल गोदी में फिरनेकी रहे, रात्रि में बढ़ना ।

**घायना ६, १२ शक्ति ।**—मल गालासा, पानी के समान, सफेद या बालासा, द्रव महा, अजीर्ण, पदबुद्धार मल, पेट पड़नही फूला हुआ, बहुत कमजोर और पसीने आते हों बहुत बदनबुद्धार प्राणु निकलता हो रात्रिमें भागनके उपरांत और एक दिनके मन्तर से बढ़ना ।

**सीना ६, ३० शक्ति ।**—सफेद थोड़ा मल नाक सुरचना सफेद, सुखा हुआ अण्ड आते समय देवैती,



उदरामय, माना-काल के समय बढ़ना, मल विनाशका हुआ, पानीसा और कममें सावुरागव से दुबड़, कमना: उगार दुबड़ हो ( यदि दुबड़ न होतो—वेसिड पामपारिक ), कोइ छात्र पीनसे पेटमें जाकर गरम होतेही निचल जावे, दिन में विशाकर मंदार व उपरान्त निशानुना ।

**फासफोरिक एसिड ६,१२ शक्ति ।—**विना दूध के उदरामय, मल मपरमा, पानी के समान या पीलासा, मस्यत दुगमय, पेटमें बहुत गदगडाहट होताहो, मस्यत ताबिष्ठलता भाव ( लापरवाहीसी तथा शरीरका गिरा पटना ), बिस्ती घस्तुका रुच्छा महा, बिभीक अनुरोधस कुछ महा, बाउम्यार पानीसा विना रगता बहुतसा पचाव करने से बहुतमा पसीना, दुबड़ता बड़ी ।

**पाडोफाईलम ६ शक्ति ।—**विना दूधक उदरामय, बहुत सा पाभावे समान मल, और पीले रगका भाग मिला हुआ मल, दस्त जाने से पहले पेसा रुग् होता माँ। पानी पेटमें गदगडाता है, दस्त जाते समय बाँध तिक्ल भाग, सूधी उलटी, पैर, पादरी और जाघ के पास पावड, माना-काल के समय और गरमी में बढ़ना ।

**पलसाटिला ६ शक्ति ।—**मल दरासा, पालासा और पित्त के समान, मन सवदा परिवर्तनशील [ बदल न पाया मघात कभी मनमें कुछ हो और कभी कुछ ], रात्रिके समय उदरामय बढ़ना, पठ धयया बरपकी कुछपी पानसे उदरामय, ठंडी रुच्छ हवा चाहना, गरम मकान क भातर बढ़ना [ गरम घर भीतर आराम —



आर्सेनिक ] गरम मकान में रहने परभी खरईसा छपने, जोम सफेद मैबल ढकी हुई, मुँहका घुरा स्वाद, प्यास नहीं ।

**मेक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।**—बार बार घोटा

घोटा मल, कभी कभी दस्त जाना किन्तु दस्त न हल, दस्त जानेसे पहले हाजत, दस्त जानेके उपरान्त कुछ आराम, शराब पान और रात जागने आदि कार्यों से रोग, शराब गरम किन्तु शरीर ठण्डाने की इच्छा होता । पचावकमसे कब्ज और उपरामय अर्थात् पर बार कब्ज मातुम हो और दूसरी बार बदरामय ।

**सलफर ३० शक्ति ।**—प्रातः काल उपरामय दस्त

जानेसे पहले बहुत हाजत और पेटमें दर्द, मस्तक में खवड़ा गरमी मातुम पड़ना अर्थात् बा कब्ज की इच्छा, शराब्यार दुयलता के कारण एक प्रकारकी शिथिलता, शरीरमें गान आदि बैठकान के कारण रागकी उत्पत्ति ।

**विराट्टम-एल्यम ६, १२ शक्ति ।**—मल घुरा,

और पानाक समान, जालसा हरेसे रंगका, दस्त का समय और दस्त जानसे पहले बहुत हाजत और दर्द, दस्त जानके उपरान्त बहुत कमजोरी, गलेमें और कपाक पर ठंडा पमाना निकलना, बहुत ज्यादा उल्टी, ठंड पानीपी बहुत प्यास, अत्यन्त कमजोरी ।

**रुविनिस सिप्ट कैफर ।**—अपानक रूवेद समान

दर्द और कब्ज की अर्थात् कब्ज, पाकाशय और पेटमें मति

• १२, हाथ पैर ठंडे । इस अवस्थामें ६ घूट चर्बिते

साथ मिलाकर १५।२० मिनिटके अन्तरसे देना चाहिये ।

**औषध प्रयोग ।**—रोग की प्रकृति के अनुसार औषध देनी होती है । जब दस्त १।२ वा ३ घंटेके अन्तर से हो तब प्रत्येक उसके उपरान्त एक एक मात्रा औषध देना पुरा नहीं है । इस प्रकार औषध देनेके उपरान्त यदि भारीम भालुम होतो उदर उदरकर औषध होजाय या बिल्कुलही बन्द कर्दी जाय । पुराने उदरामय में प्रति दिन दोबार औषध देनाही यथ्य है ।

**सहकारी उपाय और पथ्य ।**—उदरामय में पथ्य की हीन व्यवस्था ही प्रधान औषध है । नई हात्तमें साबूदाना, भांगरोट वा चार्ली पथ्य है । कमजूरनेक पानी के साथ दूध दिया जासकता है । पुरानी अवस्थामें पुराना चावल अच्छा हाता है । अनेक समय जल वायु परिवर्तन करना आवश्यक- होजाता है । नये उदरामय में दूध कुपथ्य है ।

**रक्तमाशय ।**

( डिसेट्री )

**लक्षण ।**—भामरस वा भामाग्नय अयाज रोग होता है । इस रोगका प्रधान लक्षण आँनों में प्रदाह और घाय बार बार दस्त जाना और आम और रूग् मित्रादृशा, दस्त जाँके समय बासना और ओर देना तथा अरुभामें ज्वरभी रहता है । साधारण रोगमें कबल आम निर्वर्त्तता रहता है किन्तु यदि रोग कठिन होता आम क साथ रूग् भी निर्वर्त्तता है कबल रक्त, मर्त्त घाय हुए अत्र क समान, और कमा मडा हुआ पुनःधमय दस्त हाता है ।

रोग घटने का हालतमें बहुत जल्दी जल्दी दमन होना है। रोगी भी उठनेकी शक्ति से वञ्चित होजाता है ।। कर्ण बजना, दिग्बका, ठंडा पसना, गिर दिलाना आदि मुख्य लक्षण दिखलाई पड़ते हैं।

नई हालत से रोग पुनरा आकार धारण करता है। पुनरा रोग होनेपर उसकी उत्तम सेनी तो नहीं रहती किन्तु रोग पुनः आरम्भ होजाता है।

**चिकित्सा ।**—नियमित समय पर रोग का उद्धार भाना भधाना जब पन्ना रोग हुआ हो उन्ही समय रोग का लौटकर हाता—चायना।

अल्प न प्रयत्न और बहुदायक पटकाद—कालोमिन्य।  
सही लगने वा पाना में भीगना रोग—उत्तमात्मा।  
रोगकी नाशना उत्साह होनेपर—सल्लार।

भीतर भीतर उबर रात्रि व समय समान्तर मल निकालना  
रक्तम ।

गाद व समान कथन हला भग्न सफ़ेद भाग—कालोमिन्य।  
सकम ।

प्रत्येक दम के साथ साथ बाहिर निकल मना—कालोमिन्य।  
लम ।

**एफेड्राइट ३,६ शक्ति ।**—रात्रि व समय समान  
में विशेषकर यदि उसका साथ उबर हाता दम पर कथन  
सकम दम बाह्य, समान मना होता है । यदि दम  
नाश व बाह्य न जाना केमामिन्य मना, मना  
वा पटकादना दम बाह्य ।

**कालोमिन्य ३,६ शक्ति ।**—यह उष मना  
समान दम साथ व्यवहार किया जाता है । दम है

साथ रख मिला हुआ आम, नाभिसे थोड़ा मोर वधैर करत घाला हृद और पेटमें, पेट गुंला हुआ और पेटमें हृद—हाथ न लगाते देना, अथवा हृद के कारण रोमी पट्ट पड़ा रह और पेटमें तबिया लगाकर उसमें दाबकर रख । यह मर्कुरियसके साथ पर्यायक्रम से भी दिया जाता है ।

**मर्कुरियस कर ३,६ शक्ति ।**—रक्त मिना हुआ आमाशय हानो सपने मच्छा देना है । दन्त के उपरान्त मल्यन्त घेग और पेशाब बन्द होना ।

**नक्सयोमिका ६,३० शक्ति ।**—बार बार थोड़ा दन्त, पतंग रक्त मिना हुआ दस्त के उपरान्त आराम माहूम होना ।

**इरीका ६,३० शक्ति ।**—बी विषगना, या उबटो, अत्यन्त लाजना पेटमें दर्द, मल पदल आम पीछे रख मिना हुआ आम ।

**सलफर ३० शक्ति ।**—अत्यन्त साधारणिक मलम्य में या और औषधों से कुछ फायदा न होकर पड़े ता यह औषध दी जाती है । पेटमें अत्यन्त हृद प्रधानक कि हाथ भी न रखा जाये । राग पुराना हाजाय ना चीन बीघ में सलफर और नक्सयोमिका इनमें फायदा माहूम होना है । दस्त जान के उपरान्त भी बहुत देरतक दस्त की आज्ञा होना ।

**ररटक्स ६ शक्ति ।**—मल ठीक थोर दूर मल लिपोंके घाना के समान, रात्रिको बढना ।

**फासफोरस ६,३० शक्ति ।**—जिना हृद के आम और



विशेष रुचि रखनी उचित है । सहज में - पचनाव - इस प्रकार का हल्का और पुष्टिकारक पथ्य देना चाहिये । प्रयत्न अवस्था में मरारोट ही अच्छा पथ्य है । महन होनेपर दूध अच्छा थल सिपाकर उसका पानी देनेसे आहार और औषधि दोनों देने हैं । पेटका रुद्ध नियारण करनेके लिये पुलटिस, या फ्रिक्शन का एक गरम पानी से करना अच्छा है । रागी का ठंडा जल और आने पान का चाँजे ठंडी करके देना चाहिये । पुराने आमाशय में कच्चा घल भूनकर देना अच्छा पथ्य है ।

## कीड़ोंका उपद्रव ।

कीड़ोंका उपद्रव हमारे देशमें सबदाहा दखन में आता है, विशेषकर बालक तो बड़ाचिंत बाध है ऐसा होगा जिसको याज्यायस्या में कीड़ोंका उपद्रव आ हुआ हो । कीड़ोंके विषय में अनेक प्रकार के सन्तुह और व्यथ का चर्चा प्रचलित है । कीड़ोंका चिकित्सा अत्यन्त दुःसाध्य हापरन्ती होमियोपैथिक आरप्य रुमिधानु नष्ट करने के लिये प्रधान सहाय है । आतों का बैक्टीरियल स्थितियोंके विकारके कारण कीड़ पैदा हुआत है । किसी नाम औषध द्वारा कीड़ोंका निकाल डालनेसहा रागबी चिकित्सा नहीं होता, किन्तु रुमि-चिकित्सा का यही उद्देश्य होता चाहिये जिस से फिर कीड़ उत्पन्न न हों और आतों का बैक्टीरियल भित्तिका काट उपश्र करने वाला विकार दूर हो । यह राग कीड़ों का नहीं है किन्तु आतों की वृषित भयस्पाही राग है जिस से काट उत्पन्न होत है ।

कीड़े ३ प्रकारके हातहैं, एक बहुत पतले सूतके समान व



**चिकित्सा ।**—जब बीड़ोंका उत्पात शीघ्रही निया  
रप करना आवश्यक होजाय तब गोठ बीड़ोंके लिये  
स्थापितकर २५चूण दो दो मन के हिसाब से तीन तीन  
घंटे के अंतरसे देना चाहिये । पाठकों के लिये सीनाही  
उपकारी है । बनारस जड़ की छाल सिंभाकर, मिछानेसे  
बीड़ निकल आने दें । छोट बीड़की उत्पात में तमक और  
पानी का विचकारी लगाना अच्छा है । प्रतिदिन मसली  
सिरमों का तेरे गुच्छारमें उगलीसे लगाने से छोट बीड़ें नष्ट हो  
जाते हैं ।

**एकोनाईठ ३,६ शक्ति ।**—ग्वर, नामि के चापों  
और पड़ावन और समस्त पट फूटाहुमा, बार बार दस्त  
की हाजन दिनु दस्त न होना अथवा सामान्य आम  
पड़ना गुच्छार में गुनली रात्रि क समय अधिक गुच्छा,  
अत्यन्त मय, बारूक बिछाने पर माने में डरता हो ।

**बेलहोना ३,६ शक्ति ।**—चहरा और साध बाल  
निद्राके समय अथवा कृपम अमक और उछल पड़े  
बेमादूम दस्त और पड़ाव निकल आता सोने समय दान  
विहादिजाना, करारना या गुनगुन करना और एसा  
मालुम होना मानो कष्ट दाता है ।

**केलकैरिया-काँव १२,३० शक्ति ।**—हमि घानु  
हूर करनेकी यह प्रथा वैश्य है । मिर इदं, माथों क  
चापों भार बाले रदक दाग पट फूटा रहना, चहरामें  
पूचा हुमा और रदकम्य मानि क चापों भार इदं,



मुठठार में खुदबी, विशेषकर मज्जा के समय, अच्छे  
रूखे पातु।

**चायना ६ शक्ति।**—उदरामय प्राण सदाही का  
निचयना, नाक खुलना और पेट फूला रहना, विराहा  
के मज्जीले मर।

**सीना ६,३०,२०० शक्ति।**—लगानार नक सु  
चना, पयन निडा, मूर्खी आमा, विशरकर रात्रिहा न  
कडा और फूटा हुआ, मामि के पास प्राण सदाही १६  
पचास पाटी दर रखनेस हा दूध के समान १  
साध।

**छाटफोपोडियम १२,३० शक्ति।**—पटम वातुम  
कर फूटा रह माटूम हो माना पटक मीनर हुठ पटक  
दे मोर १८८८ दे, मून क कमान काड, मसठार में  
मय न मज्जी काय।

**माहृंगियम ६ शक्ति।**—गात्र का मून क मयन  
काय मसठार में कून मज्जी, कीड बाहर निचयकर म  
यचना रह कगार मूक और जान की इच्छा निगु कर  
पर मा दूधना और कमजोर मुर्मै युगमय, मयमे भाव रहना।

**मरफर १२,३०,२०० शक्ति।**—पद मानमया  
क काडो क मय मज्जी है। मुठठार माहि मयानों में  
मुठठार मा कउन दिमका ११ कत्रक मयम मयान मुठ  
निचय मयम कगार दुवचना क साथ मयसचना, ठार  
क क मय

आनोंकी एक प्रकारकी दुषित अवस्थाके कारण वही पदुतसा आमके समान लसदार पदार्थ पैदा होजाता है । सब बीड़े उसीको खाकर जीवित रहते हैं । होमियोपैथिक औषध सेवन करनेसे आनोंकी यह दुषितावस्था दूर होतीहै, बीड़ोंकी लुटाफ आम पैदा होना बन्द होजाताहै, अतएव सब बीड़ मरकर बाहर निकल प्यतहैं और फिर वभा पैदा नहीं होते ।

**औषध प्रयोग ।**—साधारणतः दिनमें दोवार त्रि-तु वभा कभी जब जब मादि उपद्रव हों तो तान चार घटेक अन्तरमें एक एक मात्रा देनी चाहिये । लोट बीड़ोंका न्याय होना नमक के पानीका विचारा उत्तम है ।

**पथ्य ।**—बीड़ोंके उपद्रव में पथ्यन ऊपर निम्न दृष्टि रखनी चाहिये । जल, राख, दाल, राखी तरपारा, दूध या मरुत परदुष पत्र, मादि खातेमें कुछ हज नहीं है । सब प्रकारका भाड़ा या मिठाई, चन्दा या चटन पका हुआ पत्र दूध, नड़ा हुआ या घासी किमा प्रकारका साध बिज्जुल निषिद्ध है ।

**कोष्ठवृद्ध ।**

( कास्टीपेशन )

स्वामाधिक शानसे कोष्ठ स्थल न होने तथा दम्भ जाने समय दद और बह दानेका नामका काष्ठवृद्ध है । कोष्ठवृद्ध प्रायः एक लक्षण विशेष होता है आर इससे मातृम दानाहै । यह शरीरका बाह्य न कोई यत्र विगड गया है । अतएव केवल काष्ठवृद्धता एक रोग समझना मूढ है ।



में घटने का एक कारण है कि जो लोग  
 दाता मागे मर दाता मरने की भावना  
 जाता है मन दाक और दुख में पड़ता है  
 इसमें एक न पड़ना चाहिए।

**लौकिकोपायस्य ६, १२ शक्ति।**—इस  
 दा कि तु इस नाम विनायक नाम का नाम  
 मय्यत कहित बहुत दादा और बड़ा मुनिमान  
 दा इस नाम उपमान दा दातुम दा बहुत  
 कहगवा है मर और दाता से नाम उरना दा  
 महमदाता।

**नक्षत्रनामिका १२, ३०, २०० शक्ति।**—म  
 कात भाव कएच माय विनायका दा पायक दहनही  
 दा मातुग दा माता मर दा दा दागवा दा  
 बहुत बकदा दा। दादा दा दादा उरना उरना, दा  
 से पायकनामा दादा मातुग दाता ममदा पायका  
 नाम बुद्ध पश्चिम मरी कान और कल पड़ दाता  
 दा मरना दा मरना मरि मरि मरि मरि मरि मरि  
 दा पदाय मर है मर मर मर मर मर मर  
 दा ६ दाकातय पद उरनाही दा।

**ओपियम ३, ६ शक्ति।**—पुनर उरतामयसे  
 बहुतता दादायक दा माता मर मर मर मर दाता  
 है कि माताका दा मरदा पाय विनायक दा दा दादा  
 दा दा माताका दा दा दा दा दा दा दा दा दा दा  
 दा भाव दादा दादा मर दा मर दा दा दा दा दा  
 दा माताका दादा पायका।



में बैठनेसे साष्टयज्ञता, दस्त जानेके बाद पन्ना मातुम हाना मानो मल द्वारसे सरल आत की ओर छुरा लगाइ जाता है, मन शाक और दुध से पूण, पन्ना पन्नासार जिसमें रक्त न पड़ना हो ।

**लार्डिकोपोडियम ६, १२ शक्ति ।**—दस्तकी हाजत हा कि मु दस्त नहा विज्ञपकर सन्ध्या के समय, मल अत्यन्त कठिन, बहुत थोडा और बही मुद्रिकटसे निकलता हा, दस्त जानेके उपरान्त पन्ना मातुम हा बहुतसा मल रहगया है मग्न और छाता में आग अग्ना, पट बहुत गडगडाना ।

**नवगन्धामिका १२, ३०, २०० शक्ति ।**—मल पटा कागज और कपक साथ गिन्लता हा, बारबार दस्तकी हाजत, पन्ना मातुम हो माना मल छार कर हागया ह अथवा बहुत सफडा है । पटा वा कटथा उकार उठता, वाकाक्षय में परपरकाभा द्वाप मातुम हाता गमयना जाया, जा गग कुछ परिधम मरी करन और कपल बैठ रहनहु, जो जग मयदा हा गिन्व गागे मिछे हुए कग्निनामे पचने मात्र पदाये गते हैं और ग पाग्यार जुहार की दवा पान ह उक्त शिव यह उक्तायी है ।

**ओपियम ३, ६ शक्ति ।**—पुरान उदरामयसे वा बहुतसा दन्ताधर दवा खास अन्त में पेसा रखवा दानी है कि सातोका जग अथवा काथ बिन्दू ३ ३ रहना, एक एक मत्ताह नक दस्त नहीं हाता, मल छोटा छग पटा और वाला बाग गुप्त दस्त, अथक पारण बाष्ट पञ्च नानोटा पन्नाधान ।













में बैठनेसे पाएषद्धता, दस्त जानेके बाद पमा मातुम हाना मानो मल द्वारमें सरल आत की ओर घुसा लगाई जाना है, मल शोक और दुःख से पून, पमा परासीर जिसमें रक्त १ पटना हो।

**लार्डिकोपोडियम ६, १२ शक्ति।—**दस्तकी दायत

हा कि तु दस्त नहा विनायकर सन्धा के समय, मल मस्यते कठिन, बहुत थोड़ा और यही मुद्दिरसे निकलता हा दस्त आक उपमान पमा मातुम हा बहुतसा मल रहगया है, मल और छाता में माग उठना, पट बहुत गडगडाना।

**नक्कनामिका १२, ३०, २०० शक्ति।—**मल पटा,

कठिन और कपक माग निम्नता हा पायार दस्तकी दायत दस्त मातुम हो माना मल छान पर हागया है मधवा बहुत मकहा है। छहा या कभी उठान उठना, वाकाशय में परपरवाता दवार मातुम हाना नमयना लिखा जा गाग कुछ परिश्रम नगी करन और कान पैठ रहनह, जो छाग मरदा या मित्र गागि मित्र हुए पडिनगाम पचने गाले पदाय गाने है और न पायार जुबार की दया खात ह उनह लिख यह उपरागी है।

**थ्रोपियम ३, ६ शक्ति।—**पुरान उदरामयसे वा

बहुनसा दस्ताधर दवा खानस अत में पेता नयमा होनी है कि मातोंका वग मधवा काय बिन्दु नही रहना, एक एक मसाह तक दस्त नही हाना मल छाता उग कडा और बाला बाला गुडर दान मयक फाग काए मर, मातोंका प तथान।



अत्यन्त दृढ़—एकोनाईट । ज्वरन और जुजला—कैपसीकम, ऑर्सेनिक । रक्त गिरना, रक्त न पड़ना—मर्कुरियस, रक्त उलस, पलसाटिला । बवासीर पचानेपर—मर्कुरियस ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—यदि अत्यन्त दृढ़ और ज्वरन हो और छाल रक्त रक्तसाध होतो यह श्लेष्म की जाता है । मस्सोमें यदि खँखन या टन टनाहट होतो यह दवा फायदा करती है ।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—अत्यन्त दृढ़, असाध्य ज्वरन और जुवड़ता । सायब रीजपाछोंका बवासीर ।

कल्लिन्मोर्गिया ।—पुराना बवासाद, सायबो अत्यन्त कोष्ठबद्धता । अधिक रात्रिरे समय पड़ना, प्रातः काल क समय बर्मा ।

हैमोमेलिस ३ शक्ति ।—दृढ़ और रक्तसाध में यह उपकारी है । घाटा रक्तसाध और जुवड़ता अधिक ।

हाईड्रामटिम १ शक्ति ।—जर कोष्ठबद्ध की प्रधान उपसग हो उठ ।

नक्सवोमिका ३० शक्ति ।—यह लग बेजल बैठे रहनेहैं और अति पुष्टिकारक पदार्थ माने हैं । यह उपकारी है आगध पाने आन का इच्छा काय ।

सल्फर ३०

अत्यन्त गुणकारी है ।

होता है ।



## काच बाहर नियलना ।

( श्रेलेणस् येनी )

उदरामय का रनामोदय बहुत दिन तक रहनेपर ओर  
कलन रगत काँच बाहर बागी पड़ती है। इसका मति  
रिक्त कोरपट्ट, मरुत कादि रानोंमें भी काँच बाहर निकल  
जाता है ।

**चिरिस्ता। —** कैप्लेरेरिया काँच १२, ३० शक्ति ।—

गण्डमय दूधित धातु चिन्मात्रकों का माया बड़ा होता है  
भार धातु (गण्डमय) में ३० ग्रह दृढ़ पैदा रफि दाता शरीर दुबधा  
किन्तु पट बड़ा भार माटा तथा उत्तम धुधा उदरामय  
काचइका समाप्त मरुत मरुतारों मरुतगत सुरसुराहट और  
सुजला ।

**माक्यूरियम ई दाक्ति ।—** उदरामय अथवा रना

मादाय रागव अथवा यगव साथ काच निकल जाता ।

**नक्तपोमिका ई, १२, ३० शक्ति ।—** स्वाभाविक

काचधन धातु मरुत सवन, बड़ा भार राहण हा बाहर न  
निकलता हो, या गगन परिधम नहीं करते और जाने पीने  
के सम्बन्ध में मरुतगार करन ह दृढ़ साथ बपासीर,  
सय रभणों का मात राख न समय बढता ।

**पाडोफाडुतम ३, ६ शक्ति ।—** विना दृढ़ मरुतीण

मरुत मरुत स्वाग न समय और उपरागत काँच बाहर  
निकलता ।



**नक्षत्रोमिका श्वोर सज्जफर ।**—यह मशरान की सभ्य मद्दीपक हैं । एक बून्द सज्जफर शतकाल और एक बून्द नक्षत्रोमिका रात्रिको सोते समय एक सप्ताह तक व्यवहार करनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—भास और सय प्रकारक गन्ध मसाल मिच लाल व काला मादि गरम चीजें लागू निषिद्ध है । प्रतिदिन ठंड पाना का व्यवहार, यथानियम परिभ्रम नहीं बचनेवाल पदार्थों का परित्याग आवश्यक है । ऐसे भोजन करना उचित है जिससे काष्ठ गरम रहे, इसलिये यक्ष्मीर के रोगा को भोजनके समय एक मूल अधिक लागू चाहिये । यक्ष्मीर के रोगा का प्रतिदिन सांने स पहर गन्ध जानका नियम रखना बहुत अच्छा है । एत रोगा का स्नान और भोजन पर विशेष हाष्ट रखना चाहिये ।

जिस ग्रहमें रक्तछाय न हो, उस में यदि जखन और मल्य त द्द दाता गरम पानी का मक्ष करन से भाराम मातुल दाता है । गरम पानी में एकनास्ट या भारिण मिलाकर [ एक माउ म पानामें दस बूंद शीतध ] उसमें लवडा भिगाकर रत्ननभभा कायदा दाता है । यदि गरम रक्तसे दीप्त पड़े ता उनमें पुलटिम लगाना अच्छा ॥ यदि मक्षामें मल्यन गुप्तकी मादूम दातो दाता वारसिक रसिडमें यमात्ता मिलाकर मलम स्थावर लगानम उमी समय गुप्तका मिट जाता है । इसप्रकार मिला नशक लेये बहुतदा उपकारा है ।



सक्षम १२,३०,२०० शक्ति।—

पिकाणा, मरवाह और गरम मात (सरणाव) में  
जंग और हथका, गरमाला दुधिनधानु और  
धमरेग हो।

**औद्योगिक प्रयोग :-** दिनों २।३ कार्य।

**साहकारी उपाग 1-दस्त हान ने उपरा**

तत्तद् भाव्यं त्विह दो हाथ व मझार स वि  
मन्त्र मन्त्रा आ दय । दस्त भाव होता है कि मन्त्र  
विशय यह रत्ना आन्वि मन्त्रर या पान की  
के विषयों भा मन्त्र मन्त्रा की आवश्यकता है ।  
समय बहुत । त मन्त्र मन्त्रा आन्वि ।

सप्तदश अध्यायः ।

७१ दन्त्र गम्बन्धीय पैडा ।

उपपत्ति ।— १. निम्न, प्राप्त, अर्थः ।

१००० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

पीना आदि से भी यह रोग लग सकता है। उपर्युक्त कारणों से  
घायल और रानी या नौकर व हाथ से यदि थकावट का अनुभव  
होए तो बराबर जाकर ता उस स्थान पर जाकर रोग  
होना संभव है।

[illegible]



पातपाट्टा नहीं है। नाभ मुहके भीतर गला लातु भाँज  
भाँज आँनोंमें धाव होनात है, अनेक प्रकारके चमत्कार नाभ  
भीर ताट्ट का हड्डी का गलजाना, दान, पुताना उपर भाँज  
उपरदा रोगसे जो बुद्धिभी बचनग हैं व भव वयन नहीं  
बिच जातवता ।

**चिकित्सा ।—प्रथमायका में—मूर्तिवम-तर** (उपरदा  
के घाव), ऐतिह नादिक (गले हुए घाव अथवा यदि बहुत  
पात व्यवहार किया गया हो), मूर्तिवम-तर (प्रमद और  
उपरदा दोनों एक साथ) घूना (मरसे की तरह विषयन) वेल्डोना  
[महादिन और दर व भाव दर], भाँजनिच-भाषाड [दर  
के लाग दर और बचने की भाँजनी] पाट्टालका पाडा  
पाट्टम वा सलवर [उपरदाके घाव और कम रोग दाना  
एक साथ]। उपरा प्रयोग व विष भाँजनीय ।

**द्वितीयायका में—ऐतिह नादिक, मूर्तिवम, बाला-कालम्,**  
[गल और मुह में घाव] मूर्तिवम-तर, बाली हाँडा  
[भाँजोंमें रोग], भाँज, बर्दाहजिया सारता [दान अथवा  
हड्डियों की रोगों]

**तृतीयायका में—बाली हाँडे, भाँज, पातवारस,**  
ऐतिह पातपीरिच पाट्टालिया, मूर्तिवम, पातपीरिच  
(हड्डियों का अनेक प्रकारका पीडा दवा पूरना,  
घाव दर हुए अथवा भाँज ) भाँजनिच भाँजनिच-  
भाषाड [हृदिन घाव] अरम बाला-कालम्, वेल्डोना  
बाव बाली होर [भाँजनी पीडा और घाव] अरम, पादना  
पातपीरिच काँवे-वेड भाँजनिच [उपरदा हृदिन घाव] ।

**चतुर्थ अष्टक—मूर्तिवम ऐतिह नादिक, पाट्टालका,**  
पादना, भाँजनिच-भाषाड, सलवर ।



द्वितीय और तृतीयावस्था ॥ :—

**मार्कुरियस ६, ३० शक्ति ।—**स्पर्शमात्रात्मक दाना

घले व घाव, बात का रूढ़, विधाम और दान्या का गरमा का पड़ना, शरीरमें अनेक प्रकार के उद्भेद, गरम वम गहर घाव, आँखोंमें जलन, टांसिल गाँठ आदिवा सूजन अल्प करना और हममें घाव पैदा होगा, भीतरी अरु और देह का क्षयता [ दुष्प्रत्यय ] ।

**फालीहाइड्रो ३, ६ शक्ति ।—**इसरी और तीसरी अवस्थामें विष दूर करने का त्रय विषयकर इनके लिये निम्न अधिक पारस्परिक विषा हा यह एक उत्तम औषध है । प्यास शान्तमें पूरा उठना, अमरण टांसिल गाँठों में घाव, दृष्टियों का दहन वाली छिद्रियों में प्रदाह नाक मुँहके भीतर का गठे के भीतर घाव, उनमेंसे घाव पैदा करने यात्रा और जलन करने वाला आर, सर्दी ।

**अरम १२, ३० शक्ति ।—**नाकस बंदबंदार घाव नाक तालू आदि स्थानों की दृष्टि सहजाना नाक तालू आदि स्थानों में घाव, उनमें दुर्ग धनुष घाव मल्लक की दृष्टि का पूरना, उपद्रव के दोष से घात आत्महत्या करने की इच्छा, उपद्रव बार बार के विषम जल शरीर अमरित दाना है तब यह औषध उपकार करती है ।

**गार्ड्रिक्स ऐमिड ६, ३० शक्ति ।—**मुहमें घाव और हाँसे केने पट हुए । पहले अधिक पारे का स्पर्शदायक किया गया हा ता यह अधिकतर उपकार है ।

**फाली-वाइक्रम ३, ६ शक्ति ।—**टांसिल गाँठ का घाव





पद ।

(न्युचो)

**द्वितीयः ।—**अमर वा उपरदा (गम्भी का राग) व दान  
 व बारण राग की लय गीहों में मदाद दाने लगता है  
 हनी का बर बदन है । लय गीहों का पूरणात्मा दद दाना  
 लाठ दन, लया गरम बीर बडा हाथाना म्माद हसक  
 म्दण । नमदा उमों म्माद पडजाता बीर व पकजाती है ।  
 हन लमव म्मिगिन दह लमकर उबर होजाता है । बर बाप  
 पकजाता है ।

शिकाया १-वेपेहोना ३, ६ शक्ति १-प्रथम/बन्ध  
ने अधाशु जय धत्यत ३६ और दनदवाहद मन्त्र रण,  
महाद भारि द।।

मर्कुरिषा आषोढ ३, ६ शुक्ल (चित्रम्) ।—

ਅੰਕ ੨੨ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ੨੩ ਅੰਕ ੨੩

होमर-मलफर ६, ११ मुक्ति ।—२६ वष ३ न पद  
मोह न र वा २१४ इन्द्रिय २८४ २८५ :

प्रागेतिह व्यापार ३, ६ शक्ति (दसृण) ।-

[illegible]

॥ वं-प्रेमोपेक्षित १२ ३० इति । - १ : ४ इति  
॥ १२ ३० इति ॥ १२ ३० इति ॥ १२ ३० इति ॥

दिये जाते हैं। सर पट्टा कल दम दिगपाद पडता म  
अधिया १२ शक्ति विभव उपकारी है।

**सङ्कागी उपाय ।—**बद हानेही पूरी तरदम विभव

करना परत भाव-वर्गीय है, इन दुसमें पाडा वृत्त  
पुमना किम्मा बहुत पुस्तान करत पाडा ह । बरी ल  
कमला बल्लन लग ता लतागार गरम पुस्तिस लता  
बादिय । बद माय पन उडनादे, घडनी मरी । वडा  
बडनर लताका भाववर्गीयता हानीदे । जवनव ताव लता  
तरदम न गून्व नाव लवनन विवरल बभी मरी लता  
बादिय । बावका भाडा पावा अराम हातडा कम  
किम्मा लताम बरदिया जावे ता सर पडनानीदे । ल  
पडनन रोग बहुत पुनाय और बडनवक हाताला है।

**प्रमेह ।**

**[ मनेरिया ] ।**

इस नामक रोग न गून्व ल है — लता वा पुस्तनका लता  
दिनाम प्रमाण और उमनेय मयन निवर्तना । बद लता  
मद [ पुस्तन लता वला ] रोग न ल है और मयन लता  
मद लता मयन लता १ लता १ वन लता मयन लता  
वीर लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता  
लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता  
लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता

लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता  
लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता लता

यह होना पर दोनो अष्टांग प्रदाहिन, यह होना है  
 तथा सुख जात है । पुराने श्मेद में कमा कभी भूषणता  
 यह होना है, इससे रोगा पराय हो कर सकता ।  
 श्मेद व उपरान्त श्वाय दुःखता, घान धादि रोग भी  
 होने हुए दृग् जात है । पुष्पेन्द्रिय और कसपा यमहा  
 सुख जात है और कमा कमा शुद्धा नामका कष्टदायक  
 नाम उपरान्त होना है । कमा पुष्पादिव कहीं हा  
 लाता है या दहा पदनाता है, मात नमय प्रायः यह उपरान्त  
 उपस्थित होता ।

विकास ।—एफोनार्डिट ३,६ शक्ति ।—

प्रधानाचार्य महाराज महोदयों में, पदाब्धि शुभ हो  
वृद्ध हान्तर पर दया दा जागोदे ।

पैनेवित सैटाहिम ३ शक्ति ।—५३ ४२ २२

साहस्य, मूय ताने सुप्रन दर सग्या मय प्रम  
मौर पसाय करनमे कर।

बेन्धेरिण १,६ शक्ति ।—

ପଠା ପୁରସ୍ତାବିତ୍ର ସା ବାଦା ହାକା ବାଦା ବାଦା ବାଦା  
ପଠା ବାଦା ବାଦା ବାଦା ବାଦା ବାଦା ବାଦା ବାଦା ବାଦା

● असद व वाद-मुद्रा-मुद्रा व असाद असाद असाद  
मुद्रा आता है असाद असाद असाद असाद असाद  
वादी वा मुद्रा असाद असाद असाद असाद असाद  
असाद असाद असाद असाद असाद असाद असाद  
मुद्रा असाद असाद असाद असाद असाद असाद  
"मुद्रा" असाद असाद असाद असाद असाद असाद

**मङ्कुरिपम साल द शक्ति ।—**गदल मचाइ वन

और पालक समान पीछे जाय और पाप रोगका भय  
रण मुक्त । पुण्येन्द्रिय यह पुण्यमिन्द्रियकी जाल मुक्त  
मुक्त दाशनेपर यह भावस्थ मुक्त विकारनाहे ।

हीर सल्लफर द्वि, १२ शक्ति ।—महात्म्यम्

शान्त यह दा जानाई । मन्त्र मन्त्र ओर अन्त  
हानेष्ट यह दा जानाई ।

पल्लगाटिका द्वि शक्ति ।—सुख मन्त्र वन्दन ॥

[illegible]

**पैदसीकम ३,६ शक्ति ।—**नादा नाद एतन्ना मया

ପ୍ରମାଣ ନିମ୍ନ ଲିଖିତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପାଦନ କରାଯାଇ ଉପର ଉଲ୍ଲେଖିତ ନାମ  
ମାଧୁରୀ ପାଣି

आचार्य प्रमाण १—१५/ अगस्त १९५५

ਸ਼ਾਬਾਦ : ੧੮੧੦ ॥ ਸਮੁੱਚੇ ਵਿਸ਼ਵੋਂ ॥ ੧੫੫ ॥

मनुकांगे उपान्त ।—सन् प्रह्लाद वल्लभ वरि

[illegible]

## प्रमेहके सत्र परवर्तीउपमर्ग ।

प्रथम, पुराना प्रमेह ।

प्रमेह प्रायः पुराना व्याकार धारण करताहै विशेषकर याह उसका व्यष्टा चिकित्सा नहा, पुराना प्रमेह प्रायः अमाप्य हाजानाहै । नाच कुछ एक आपसे लखतें ।

**चिकित्सा ।—**

सं पिया ३०, तदम मुलात्कम ३०, सरपत्र ३० नारंगीय  
देमिड ३० सूना ३० पदार्थलयम ३०, अति उत्तमहै ।

दिनाय पुरुषेन्द्रियका कटापन और टटापन ।

प्रमेह के उपरान्त पुरुषेन्द्रिय नाचको भार अधया यगन्का  
भार धुक जाताह । इस समय पुरुषाद्रय कतिन सूना हुए  
भार उसमें दर मातूम हाता है ।

**चिकित्सा ।—**पुरुषेन्द्रियक ऊपर दिखर आयाज्ञान  
घाहस पानामें मिखाकर लगास प्रायः कापदा मातूम  
पडताहै ।

गाइ, पीलणक मवादक साथ यदि टटापन हातो कैपसी  
कम ३, उक्त खचनके साथ पेशाबमें जलाहो अधया रक्त  
प्रसार हातो कयेरिस ३, अचाक बन्द होतानेपर  
पलसाटिका ३०, उपकारी ।

दुनीप, रक्तप्रधाय ।

**चिकित्सा ।—** एकोनाईट ३ शक्ति ।—

अत्यन्त प्रदाह ज्वर, प्यास, पुरुषेन्द्रियका कटापन और  
अत्यन्त गर्मी मातूम होना ।

**अजैटम-नाईट्रिकम ई शक्ति ।**—उत्तम भोजन है । पशाच करनेमें कुछ और मवाद निकलना और रक्तप्रवाह मध्या रक्त मिला हुआ पशाच होता केम्पसि ई शक्ति का कारी है । यदि अम्लकाय प्रदाह होता पल्मायिजा ई शक्ति ।

अनुग मुद्रा ।

**लक्षण ।**—पुत्रवाग्निगक अम्रमागकी शान था गूजाहुर और प्रदाहन हा तथा बन्ध हाताय इसमें प्राय पूर्णगह न निकल सकताहा और पुदगान्द्रवकी काट खाली न जाय ।

**निश्चिन्ता ।**—अम्रमागकी लम्बा ( काय ) का मूलन फूटना, मायवा जलन बटन खाल रंग आह, ११११ तथा पट जानवर महारायस ई गान । लम्बा और अम्रमाग न अम्रमाग मूलन जाना रक्तकम ई वा प्रायस ई मल्लग भी नि रागवा मान उत्तम भाववह ।

पशु भोजन प्रमाण का दलना चाहिये । यदि मायम कुछ उपकार न दान पड़ना मूलन रक्तका उपरान्द्रवना उत्पन्न है ।

पशुम, अम्लकाय पुत्रमा ।

**निश्चिन्ता ।**—पल्मायिजा ई वा ३०, मधुरादम । माय ३० क्रिमेटिस ई यदि उत्तम बोधधिया है । नि प्रेक्षाका अम्रमाग रक्त अन्दि बोधका माय ३० निम अम्रमाग मूलन न पड़े ।

अम्लकाय उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम उत्तम प्रमाण

मौजद—शिवमंडिर २, पलसाटिया, ३०, सारसा ६ मृगा २०,  
सद्वर ३० ।

**स्वप्नदोष ।**

संजमें मध्या और जमा समय मनेच्छाम पायपाल  
 कार इनक साथ पुष्पाग्रयका पुष्पाभावा हम साधारण  
 नाम मज्जदायका कहेंगे दावह । मज्जदायक समान पुष्प  
 कर्मभावा दह मार मनका वहुमान और पुष्पन करने  
 बावा मज्जदायक पुष्प मज्जदायका दावु नायक और  
 दाह राग मज्जदा । यह मज्जदा कहनायक मज्जदा ।

[illegible]



मा है मयका नहीं ।

पर बाद यौवनक प्रारम्भमें अग्नय बड़ा कमर होता है  
तोमें प्रथमिन होता है । दागा नदोवका इस वग  
में प्रथमिन करता है । बालक नहीं जानता कि इस वागवा  
न क्या दागा । बिना माता माँ सरसुकीका कमा  
न बालकोंपर मयका मात्र होति रने उनका दुममगी  
थी उमर दागों क माग एकात्ममें नहा बड़े दगा  
थ । बाद किधामें कउव पहमा जाव मो उगण  
। दागा धममय क द्वारा तका मुगामयन क माग  
। पर उनका निगुन करना मागव

इ बाग मयका हा जान रना मागव । न पर दग  
वागवम में पहमक उपराम उम थ । पर दुमम  
मदुमन कागन है । इस श्रव वागव ही न पर दु  
। न न पहम वाग मा मयका है इस श्रव में दा  
न दाग दागा है ।

म दुममयम का मुगमन मदुम दिन नक मुग नगा  
नका । दागा मुगला श्रवमयगीन मागों क बा  
कादिमा मिगदु होति क। कमत्राग निगुमना का  
उमदुव मदान मयन धूमन। कमी मागवा मुग  
। प्रना मयमनाग माग कदिमा दाग उगामाव  
। मय रहना मयम मय मदुमन । न मयन मयम  
मय म इ मयम मागन मयमम दाग है ।

मिथिमा । — इस मयन क बागन मागक  
। न म मयम दागन क। मयन मिथिमा मदुम । न  
मयमम मय दगा मयम मुग है उमका मुगम

विलुप्त छोड़ देना चाहिये । सब काम करने-बना कर  
 घाली चिन्ता, विभाव पढ़ा, चित्राणिकोंका देखा और  
 निमित्त पुनश्च उत्तेजित होनाड़े, एमी सब बातें  
 विस्तृत छोड़ देना चाहिये । प्रतिदिन स्नान नियमित  
 स्नानाभ्यास, यथोचित व्यायाम, मत्काय और सदा  
 लाय, कठिन शय्या तथा चटार पर सोना प्रातःकाल  
 उठना आदि नियमोंपर विनिय रक्षित रहना चाहिये । सब  
 उत्तम पदार्थ तथा गरम भोजन, मांस प्यास आदि बिड़  
 धूर छोड़ देना चाहिये ।

**कैतकेरिया—द्वार्व १२, ३० शक्ति ।—**रोगी  
 मर्तुं दुःख और उन्माद रहना हो रोग की दृष्टि कैसा  
 भी दुःखदा स भय सान सान्य यम दुःख नारदार बाध निकल  
 जाना, दानों पैर ठण्ड गार गार ।

**आर्या ६, ३० शक्ति ।—**रिभी प्रकारक नी वरि  
 धन में नी न ज्यना, हस्तमैथुन व वाग्ज मलय न दुःख  
 करन गाला स्वप्नदाय परिपाद नाक दुःख गौर मूत्र न  
 लगना, रात्रिक समय बहुतमा दुःख कर । गाला पम ना ।

**नक्षत्रयोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—**रोगी का  
 बाध बहुत माना है, मारत का प्रस्तुत हुआ है, शौच  
 क्षमाय और एकांत में रहना का दृष्टि करना है, व्यामा  
 दिक काष्ठयज्ञ, मक्ष बहुत पडा गार कठिन, आ पाते पी  
 ती बहुत यमिजविल रहत है थार । अ होने सनाद्यों की  
 बहुत भावर्षे मारें हैं उनक लिय यह औषध पुनकारा है ।

**फासफोरिक—ऐमिड ६, १२ शक्ति ।—**

वित्तपुर लावरगाही, बात करने का यहाँ तक कि ३३ का उत्तरदा का भी जी न साहसा हा, बारबार विन इच्छा का शुकवान और वा बहुत दुःखन करन वरन (वशानकर आधुविधाम (नर्म) आत्राभन प्राग काल क समय बहुतसा पभीना ।

**स्टाफिरोप्रिया ६ शक्ति ।—**बहुत ही उदासीनता मिनात दीज नहीं कवलराग की विमता करना और रागना इच्छा गलकों + विचार प्रदाह नाकत की बनी क ही हावक समक भाग व्यग्रहीन ।

**जेठगीरीराम ३, ६ शक्ति ।—**निमित्तता क कात व्यग्रदाग पुनर्निक का उलाहल न हाकर बमालुम बीवत मयनता मे मननताइर व्यग्रदाग भार कामात्रावक मउ उदासा नकरा इतन्तु य आर्ये मानर की भार पुन पुन ।

**टिर्जाटेन्डिग ६, १२ शक्ति ।—**निमित्तता क कात बात क मात्र नक व्यग्र भार पुनर्निक मे रने क तत व्यग्रदाग पु न मय की नृवतता सामान्य स्थित बनेन हना नईचन मरिधन क स्थित निराशा भार मय ।

**हायोस्कोगिया ६ शक्ति ।—**वर व्यग्रदाग क रक मयन है ।

जेठगीरीराम ३, ३०

नृवतता मयन है मयनता व्यग्र

कामन कर्त । १००

निमित्तता क

५

न हाना भै र भाडाभा रम निरन्तराना ।

कोनियम १,६ शक्ति ।—एवमभूद मण्डकोप  
मृगवर ह्य दाचार्य भाडा उममोदी बुलावा, मय्यान गति  
विद्यादा ह्यम । ३

लार्डराशोडियम १२,३० शक्ति ।—एकमेव पुनः  
पश्चिम्य छाया भौत शिथिल, पुनश्चिद्वय उत्पन्नित नदा भवता  
वर्तते कमदा कमल नति भौत पश्चिम्य शक्ति दुष्य,  
भक्त्य भक्ति भक्त्या ।

मेलनियम १२,३० शक्ति ।—बहुतही शक्ति दीव  
 कथलन आर बहुत भाडा पुष्पां कथलो इनकना गुण बहुत  
 बनला मनमें काम बिम्बा बिम्बु पदकमण पदन मान  
 पालन वा दहन जाने समथ पाहोसा रसनिबधना ।  
 अन्दाय कामादीन—हाथामादमम मकुरियम नकनयो  
 मिना नानादमम काम निवम ।

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥ ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥ ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

**औरध प्रयोग ।—**दिने २ । ३ बार ।

[illegible]



१ होता और थोड़ासा रस निकलजाना ।

**कोनियम ३,६ शक्ति ।**—एकपत्रम् मण्डकोप

मूलपर छाने दोनारें, थोड़ा उमरमेंही पुटाया, अत्यन्त रति  
दियाजा दुःख । •

**लार्डिकापोडियम १२,३० शक्ति ।**—एकपत्रम्, पुष्प

पत्रिपुष्प छाना और शिथिल, पुष्पपत्रिपुष्प उत्तेजित महा मधुमा  
बहुतही कमहो, स्मरण शक्ति और पत्रिपुष्प शक्ति दुबल,  
अत्यन्त अधिक सप्रदाय ।

**मेलनियम १२,३० शक्ति ।**—बहुतही शीघ्र वायु

स्मरण और बहुत थोड़ी पुष्पपत्रिपुष्प उत्तेजना, पुष्प बहुतही  
पतला मनमें काम बिना किन्तु एकपत्रम् पठत सात  
वादन या नृत्य जाते समय थोड़ासा रसतिष्ठना ।

अत्यन्त कामादायक—दायासायेमस सकृदियस, नक्षत्रो  
मिषा कामकोरस, कृदासायेमस ।

अत्यन्त हृन्मैथुन प्रवृत्ति—कैलकैरिया नक्षत्र, मूलपर ।

एकपत्रम्—एकपत्रम् पैराटायाय, कैलकैरिया, जानियम  
दायासायेमस ।

**औषध प्रयोग ।**—दिनमें २।३ बार ।

**महकारी उपाय ।**—सबसे पहले रोगका कारण  
दूर करना चाहिये । प्रतिदिन रात्रिमें साते समय हृन्मैथुन  
नाम करने चाहिये । सातसे पहले मगधस्मरण और  
प्रार्थना भक्षण करनी चाहिये, उमरे उपरान्त शयन  
करना चाहिये ।

पक्ष ।—आहार पुष्टिकर और हल्का दाना उचित है । घागे पीतकी चीजोंमें किमा प्रसारण उत्तम समुचित होनी चाहिये । मांस गिर्यकुन्नी निषिद्ध है । साँझ समय भाजन बहुत हलका दाना चाहिये ॥

## अष्टादश अध्याय ।

मूत्रपित्त सम्बन्धीय रोग ।

वृक्क प्रदाह । ( नेफ्राइटिस )

कमरके पाल में दर्द होने वाला और दो मूत्रपित्त [ पाठ ] हैं उनको वृक्क कहते हैं । इस वृक्क गाँड़ोंमें रहने से मूत्र उत्पन्न होता है । पहले सदा लगाकर उर हल्का आर लक अथवा दोनों वृक्कोंमें लक दद होता है आर सोर गालूम होता है बराबर पेशाब करनेका हाजन होता है किन्तु थोड़े करते और तकलीफसे बहुत थोड़ा पेशाब होता है । यदि वृक्कोंमें दाता जिस आर दर्द उस कारण होता है जो जाता, साथ सट होनेसे अत्यन्त दर्द होता है । यदि कमी मूत्रमलाके हाकर मूत्राधार और पुच्छाद्विष मिला कमी दुकनली से अन्दरोंमें माटूम होता है । रोगका लक्षण ८ । ९ दिनोंसे साँझ बहुत रहती किन्तु उर सोर पुराना नष्ट होता है तो गर्दीने यन्त लक कि थपेकान्त कष्ट देता रहता है । अलमें सीमा बाँट लकन पुरान पेशाब उत्पन्न करने वालों सोर औषध सेवन

करना गिरा, या चोखलमना अधिक भाग धरतु उठाया  
इत्यादि इस रोगके कारण है ।

**त्रिकत्मा ।— एफानाइट ३,६ शक्ति ।—**

प्रधानस्थानों में— उग्र ताप तेज आर बहुत व्यास पशाय  
६६ मृदु ३५ अस घूमना इत्यादि ।

**वेलडाना ३,६ शक्ति ।—** यह द्रव्य म लहर

मूत्राघार पथ पर धवक मारकर उठवाहा अथानक जैसे  
द्व ३६वाहा वसा प्रसार चला जाय पनाय गाडा उजल  
गाय या चौर रगना, लहर गाहा पदार्थ नाथ जम आय  
एसा मालुम हा माना पाठ दृष्ट पनेगी इसलिये  
हितचल न सकता ।

**केन्थेरिम ३,६ शक्ति ।—** अगर गरम, व्यास और

घनगाह दृक्क भादि स्थानों में धवक मारना, कात्नक  
मगान यह मद्यन पनाय करनेकी इच्छा दाघात दृद  
पशाय दगी हा मिला हुआ मूत्राघार में अथन  
कात्नके मगान दृद पेनाय कराहा दाघन हा । एतु  
विषदुलही पशाय नही उग्रा उषवाह आर पटमें  
बहुत दृद ।

**टार्डिकोपोडपम ३,१२,३० शक्ति ।—** द्रव्य दल

मूत्राघात लकर मूत्राघातक दृद, विशेषकर दगहिना आर  
मालुमदा, पनायमें लाल रंग, पातुके समान पशाय नाचे  
जम आय, प्रत्यक्षार पेशाय करनेसे पहले पाटमें मयानक  
दृद, जैसे पशाय आरम्भ हा वैमदो दृदमें आराम  
मालुम पद ।



**हीपर-सालफर ६,१२ शक्ति ।—**ब्रह्म मय ५२

गर्हदा मध्या मध्या पदनकी आशङ्क। मातुम पड। ५२  
प्रदेशमें लपकन, एकबार शीत और एक बार कप भई  
गरमी मातुमहो उपरांत बहुत पसीना ।

**मर्कुरियम ६ शक्ति ।—**नव हीपरके समान म

लक्षणहो किन्तु हीपरसे कुछ फायदा मातुम न पड। पना  
थोडा, लाठरड और बहुत गंध जाताहा। समान गुण  
आवे किन्तु उससे कुछ आराम मातुम न पड।

**नक्सोमिका ६,१२ ३० शक्ति ।—**ना नाग विना

प्रकारका परिश्रम नहीं करत मयिताहारी है मध्या बात  
पीने ठाक नियमोका प्रतिपादन नहीं करत मर उस  
मशका रक्तछात्र बन्द होकर राग उत्पन्न हा बमल  
मल्लभ दद पेशाव करनेका हासन किन्तु एक एक रू  
करके सामान्य पेशाव हो मल्लभ कष्ट और नान  
कोषवद ।

**पलमाटिला ३,६ शक्ति ।—**स्त्रावा नितका अतु

बमहो मध्या नहीं, बार बार पेशाव करानेकी हासन किन्तु  
पेशाव नहोकर कयल कष्ट सवेद पानीक समान पना  
उसमें गाढा पेशाव नीच उम जाय, गरम घरमें सरिना  
लगना, प्रातःकाल मुहका बुरा स्वाद, घैटकर उत्पन्न  
तिर धूमना ।

**मोरिया ६,१२ शक्ति ।—**चट्टका पाला ए

पाकायक काली मातुम हाग, पलायक समय बहुत ठ

अग्नि और दद, बहुत बढ़ाकर पचाय, उसमें कीचड़क समा ।  
पदा । अमजाना और बिम्बा पत्रा में रखनस उसमें छिड़स जागा,  
मसहार में बहुत भार माटुम होना, दस्त हाजाने परभा बस में  
बुद्ध माराम माटुम ॥ हाना ।

**टरीविन्ध्य ३,६ शक्ति ।**—घुला हुआ, गाढ़ा, रक्त  
मिला हुआ पक्षाघात अधिक रक्तप्रवाह, सर्दी लगनेस शूलक में  
प्रदाह शोधक रक्षण ।

**आर्सेनिक २० शक्ति ।**—पुराना रोग उदरा शाय  
रक्तवि छलन बदन पर ।

**सलफर १२,३० शक्ति ।**—पुराने रोग में ज्वर  
आर मारघोंस पूरा माराम न दीन अधिक बढ़ाकर  
पक्षाघात, बमरके स्थान में अग्नि और संचन समान दद ।

पुराने रोग में कालराक्त, चलाहानियम, गुग्गुलुम आदि  
उपकारी है ।

**औषध प्रयोग ।**—नर धातुओं में २ । ३ घटक मारस  
जब तक पायदा न हो दवा देनी चाहिये । पायदा दीक्षापर  
३ । ४ घटक मारस ।

**महकारी उपाय ।**—तम्बाकू में पमान होकर  
शरीरका मंत्र दूर हो यह दम्बना उचित है । साधारण  
बिम्बी प्रवारका उदर दवा शरीर में न लगनी चाहिये इस  
त्रिये सदा पलायन आदि गरम कपड पहने रहना उचित है ।  
पहनी अवस्था में शूलक के स्थान पर मजनेम माराम माटुम  
होता है । पुरानी अवस्था में बहुतसा बमरक्त और मरुत



मूर्ति । हृत्, एक जाय और मांस बढ़ाये उसमें टनटनाहट और दह ।

इन के सिवाय प्राफाइटिम मफूरियम एन्टिमोड उपकारी हैं ।

**सहकारी उपाय ।—**अंगुली में अत्यन्त अल्प और टनटनाहट होतो गरम पाना से सजने छ सहअहा में दह मिट जाता है । निहृषास नाखूनका बोना बहुत सावधानीसे काट दाखना आदि । फराहोराहका लोगन या चूण बाहरी प्रयोग करमम यह कष्टदायक रोग बहुतही शीघ्र भाराग्य होजाना है ।

## विमर्ग ।

( विहदलो )

**लक्षणा ।—**यह अत्यन्त कष्टदायक रोग है । उगलीक भागके भागमें प्रदाह दावर मवाद उत्पन्न होजाता है । उपाय असह्य वेदना लपकन लाल रंग इत्यादि इसका लक्षण है । अंगुली से लेकर समग्र हाथ दह करने लगता है ।

**चिकित्सा ।—**चाट लगानम—लीडम । मवाद उत्पन्न होनेसे पहल—हीपर—रुमिस पाह—साइबेरिया सेलफर ।

**साईलेसिया १२,३० शक्ति ।—**विस्तारकी यह एक उत्तम औषध है । रोगका मुख्यान हानही यह औषध



अष्टमूलम नष्ट होनाही है । केवलरिया-सायक सेवन से उसका पुनः पाना पद दानाह ।

**महसारी उपाय ।**— शीत वायुम हाहा अगुनी का बार बार गरमपानसे उपायना बार हाथ नीचे न रखकर ऊँचा रखना बहुत फायदे मंद है । दूध दूर करने के लिए गरम पुत्रिस बाधनी चाहिये । आयुष्कना दाता चारा शृगालिका जाना है किन्तु खोरा लगाने समय साथ जाना रखना चाहिये जिससे अगुलाकी क्षति नसे न बट जायें । घाव हा जान पर बैकट्टला लगाने से भीना चाहिये ।



**मस्मे ।**

**वार्तिम् ।**

मस्मे बहुरूप नडा हात है किन्तु कभी कभी बहने में धुरे मादम हात है । बहने पर लगाने चर्मा की खुशबूना को प्रियाहने हैं । यदि बहने मस्मे नसे नसे तो औषध द्वारा उसका निराकरण करना उचित है ।

**चिकित्सा ।**—धूना मस्मों का एक बहुत उपाय औषधि है । मस्मके उपर धूना का गूँठ सेक [चिमा चिमा प्रकार से मस्म] दिन में २।३ बार लगाना प्रत्येक दिन १० दिन तक लगाने से मस्म नसे नसे । यदि मस्म नसे नसे तो १० दिन तक लगाने से मस्म नसे नसे । यदि मस्म नसे नसे तो १० दिन तक लगाने से मस्म नसे नसे ।

जगदान करना चाहिये । पायदा न हो तो रस्सबम का (५) प्रहार श्राना और लगाना चाहिये ।

**एन्टिम-क्रूड दीशक्ति ।—** जब मरमा का ए और सहज हो दृग्जाय ।

**फेल्फेगिया ६, १२ शक्ति ।—** जब मगुलीचे व मर ।

यदि बहुत से मरस होने लगे तो मन्तर ३० छाल एक दिन मन्तर से एक बार क दिवाय स १ या १ सप्ताह तक मयम करत स विशेष फल दीक्षमता है । मरमे का मरस यदि दान स दावाजाय अथवा गिलाया जाय तो मरस मन्त्राणा है । मरस नाह हात्त म बहुत रक्त गिरता है ।

— ० —

ठेक ।

( काल )

दान या घबरा म अमना माना कहा जाकर दूध मरने के रसका पाय तक कहना है । टक पाय पर में भार के का मगुली में निम मन्त्र मही वा पूर क मय मरस अगमा है वही ह ना है । एक क पाय में एक मन्त्र १० ६ मरस मय दूध पचविन ना जाना है ।

**चिकित्सा ।—** अगाम दन्ति क उप निमन्त्रि वन चिकित्सा मन्त्राणा है । ( १ ) कुछ मिनट तक रक्ता मरस पाय में निम रसना अन्त्रि और एक मय पाय दही मरस म बहुत मरस म मरस काट हात्त म व १५ उर म म निम मरस ( जब मरस व मरस २० दूध म मरस )







इससे मधुमा शीघ्र बालिकाओं को प्रथम जन्तु हुआ है । परिधमी और हरिद्र बालिकाओंका अपेक्षा विलासपरामर्श और मलस ग्रहण की बालिकाओं को प्रथम रजोद्वार पहिले होता है । कार रोग न हो तो मासि २८ दिन के अंतर में रक्तस्राव होता है ।

श्रुतकाल साधारणतः मान दिन तक रहता है । अनेक-कारणों से यह २ दिनसे लेकर ७ दिनतक रहने हुए देखा जाता है । प्रायः बार ४ भोंस से लेकर ६ भोंस तक रक्त स्राव होता है । यह रक्त शिथिल रक्त के समान कालासा और पतला होता है ।

अवस्था बढ़ने पर यह रक्तस्राव विलकुल बंद हो जाता है । श्रुत इस अवस्थाका कुछ नियम नहीं है । ५० वर्षके कुछ पहिले या पास श्रुत बंद होने लगे प्रायः देखा जाता है । श्रुत विलकुल बंद होने के समय मासिक धर्मक व्यवस्थाने अनक प्रकार के अनियम दिखाने रहने हैं ।

यह रक्त और २ स्वाभाविक स्रावों की भांति जियोका रक्त स्रावभी एक स्वाभाविक स्राव है । इस स्वाभाविक स्रावों किसी प्रकारकी गड़बड़ के न से अनक प्रकार के रोग उपस्थित हो जाते हैं । मनपय स्त्रियाँ और पुरुषों का साधधाना से इस रक्त स्राव पर हृष्टि रचना आदिप ।

— ० —

## प्रथम रजोद्वारन में विलम्ब ।

प्रथम रजोद्वारन में विलम्ब होने पर भी यदि स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि मधुमा रिक्त न हो तो चिन्ता करने की कुछ बात नहीं है । यदि यौवनावस्था में ज्ञान प्राप्त

सागर व सब प्रकार के त्रिकार देखे जाने पर भी त  
दशन में दूर हो, प्रतिमान कमरमें दह जाय और लक्षण  
स्थानों में दह जाय और और लक्षण दिखलाई देता उस म  
-सुचिकि-साधारण प्रकृति की सहायता करना हा उता है

१. त्रिकिमा १- एफोनाईट ३,६ शक्ति ।-

रक्त प्रधान धानुषा यानिका, जो कुछ परिधम नहीं बा  
ह, केवल बैठ रहती हैं मस्तकमें रक्त माना, मन्त्र  
के बाद मिर घूमना ।

आसेनिक ६, ३० शक्ति ।-प्रातः काल सा

उठने व समय चढ़ा फीका और सूना हुआ तथा र  
पैरों में सूना शरीर में गरमा मालूम होना भार कमजो  
मुचलता ।

बेलोडोना ३,६ शक्ति ।-नाक स बार व

रक्तछाव (रक्त ग्लान में प्रायोनिषा कायदा करता है)  
दोनों मांसे लाज उनाला और शब्द ममता नत वधो  
प्रत्यक्ष वेदना व समान दह [रक्त लक्षण में सापिषा में  
कायदा करता है] दार्दिन डिम्बाशयमें प्रदाह ।

प्रायोनिषा ३,६ शक्ति ।-अनुत्त समय क

न होकर नाक स बार बार रक्तछाव कायदा कर्त्ति सू  
हुमा मल, पिडाचिडा और काधी मन्त्र व मुचल  
बैठ रक्त की दृष्टा ।

काकुलम ३,६ शक्ति ।-यस मय ज्ञायोवद रक्त

बनमान हो, तन्नेत्र में दर्द सायही रवासकए और बगहना,  
गाही में पैदनस मिगमें दूद हा और बन्डा हो ।

फास्फोरस ६, १२, ३० शक्ति ।—इसाका सुदरी  
और ममप्रविण गहन वाली पालिका, छाती की गहन मच्छी  
न हो यस्माही स डकुा, ककक माध पाहा पाहा रून  
मिबलमाहो ।

पल्सेटिला ६, ३० शक्ति ।—बदरा काका,  
गलम मकन में रहने पर भी मरी मी लगता पन और  
पाठ में दूद, दिक्टीरिया व लग्न पकवार हमना और  
एकवार राना उदासगता और नैराग्य ममप्रविण मयानु  
दाँद रान पाका और मरम मच्छी व धानु परिधम वन  
मय और पुका दूद दवा में रहन न भटका रहना । मध्या  
होम व समय साधारणन बहना ।

सीरिया १२, ३० शक्ति ।—बुधन धानु, माध  
आर गल व ऊपर मुहीन व लगन पीला रगका  
हाग, हाथ पैर ठह आर ममक पर बरवार मारी  
मात्रम हाता, मयमन कदाभीनता और बारवार राना  
। इन लक्ष्यों में वलमाहनामा कायदा करता है ।

सल्फर ३०, १०० शक्ति ।—मरन व ऊपर  
लगता गरमो माद्रूम हाता भूक म लगता भोजन व उव  
रान न मिबलमा, इसाका आम वला मयुम हा ममा  
क्याक्य राहा हागका हे सामान्य बाट लगन न मयदा  
चरजान व वलमें मयदा पैदा हाहर पकनता मरुमाह  
हविन धानु ।

**श्रीपथ प्रयोग ।**—दिनमें एक मात्रा क रिसाये  
एक साप्ताह तक श्रीपथ देनी चाहिये । इसका उपाय  
४।५ दिन श्रीपथ बन्द रखनी चाहिये । यदि कुछ कथा  
नीति तो औरभी कुछ दिन सज्जन करना चाहिये । यदि  
कामना न हो और ऐसा मायुस हो कि काम करना है काम  
नहीं होता तो और कोई श्रीपथ निपाद्यन कर उपाय  
निपाद्यों पर सज्जन करना चाहिये ।

**सहकारी उपाय ।**—शारीरिक परिश्रम बहुत कम  
करनीय है । निपाद्यिना और साधकवत्ता इस काम का पूरा  
कारण है इस लिये कुछ काम जननी को निकाशों को  
दुमा करना है । यदि दिन काम काल बनाने करना हो  
करा है

**पथ ।**—सकल से सज्जन बाधा और दुष्टदर माय  
दना चाहिये सज्जन का काम और इलज्ज का  
निपाद्य है काम नीति भी निपाद्य है ।

सुभाषित ।

( कथागामिम् ) ।

कह राम साधनात्मक से अनु सज्जनभाव सज्जन से  
करिजायें का न दुमा करना है । अनु सज्जन का  
साधनात्मक से इस अनुसंधान और न का मूल से दुष्ट  
मूल न सज्जन सज्जन सज्जन से सज्जन सज्जन से

बागल आदि खानका राशि, बाएबद्धमल मज्जापत्र, दाहीर रक्तगन्ध,  
होट और आंखे रक्तपूय और फीकी, आंखों व चारों ओर  
मोन्हासा मण्डलाकार दाग, सिरदर्द, सिर घूमना, दिल धड़कना,  
कानों में दाग घुनाह पड़ना, अत्यन्त दुबलता आदि इस  
रोगके प्रधान लक्षण हैं। यदि शत्रु विलकुलही पन्ध्र न हो  
जाय तो प्राय बहुत थोड़ा होना है, और फीके रक्तका पानीय  
समान होना है।

**चिकित्सा ।—एन्टिमकूड ६, १२ शक्ति ।—**

जीमपर मैला दूधके समान मज्जेद मोग्न रूप, पावशय का दाग  
साथसा भूज न लगना और मुह में हवा के साथ पाना  
गर माना ।

**ऑलेनिक ६, १० शक्ति ।—**बहरे का फाका रंग

और आंखों के पलक खुले हुए अत्यन्त व्यास, बारबार थोड़ा  
छाड़ा पानी पाना, बम्पन, बारबार चक्कर जाना, बहुत कम  
जोरो, गरम मकान में रहने की इच्छा ।

**केलकेरिया कार्वे १२, ३० शक्ति ।—**बदास चित्त,

रक्त की इच्छा बहरे का फीका रंग, आंखों व चारों ओर काळा  
मण्डलाकार दाग, सिर घूमना विशेषकर सीढ़ापर चढ़न का,  
मौन छान न धूना, खर्हा बीज और कठिना से पकने  
वाले पदार्थ पचा पाय छदिया मिहीं आदि जाने की इच्छा,  
भोजन व उपरांत पेट फूट उठना और दिल धड़कना,  
सबदा होना, ठण्डे हवा में रोग बढ़ना, मण्डमाला दूषित  
भानु ।

**चायना ६, ३० शक्ति ।—**बिस्ती प्रसार के परि







## स्वल्परजः ।

## ( एमेनोरिया )

मासिक क्रतु विलकुल ही बन्द हो भयंका कुछ समय के  
 छिये य द होतो उसको रज बोध या स्वल्परज कहत हैं । रोग  
 होने से अनेक प्रकार के कष्टदायक लक्षण उपस्थित होत हैं  
 यथा—पेट और पाकशय में बलियों के साथ द, ज़ा मिक  
 लाना या डबकारे, सिरदर्द, चहुरा लाल, बायठ बडग,  
 हिस्टारिया, बिज धडकना और श्वासकष्ट इत्यादि । कम  
 रज राध होन से भयंका यह सब कष्टदायक लक्षण  
 उपस्थित न हाकर कमश रागा दुर्बल, अलस और  
 फँक रगका हाता है, इसके बावहा उत्साह नहीं रहता  
 और भूखबन्ध हो जाता है, देहमें से चहुर पर रानीय  
 और उदासीमता मातुम होती है स्वाभाविक लक्षण उन  
 दिल घडकना, श्वासकष्टना आदि उपस्थित हात है मर  
 जिनका राजयश्माकी आशङ्क होना है उनपर यह रोग हा  
 प्रकाशित हाजाता है । भयानक सर्दी लगना, शोक दुःख  
 आदि भयानक प्रबन्ध मानसिक आवेग, छाता, घटन या  
 और किसी यन्त्र आदि के रोग के कारण यह रोग प्राय उपभित  
 होना है ।

चिकित्सा— एकेनार्डिट ३, ६ शक्ति ।—

यदि सर्दी लगने के कारण अतु बन्धना, मस्तकमें या ठन  
 में रक्त जमा मस्तक में खूब मारता और बडना, मिर  
 घुमना यौवनके आरम्भमें रक्त प्रपात वाधा । रक्तों ।

शार्मेनिक ६, ३० शक्ति ।—यह रक्त का वाहक





समाप्त पाले रह व दाग, अनापविक पुष्पलता और महुज  
ही में पसीन आता ।

**केलकेरिया कार्य १२, ३० शक्ति ।—**गण्डमाला

दूधिन धानु, पुराता अजीण और उदरामय, दूधके समाप्त  
सफ़द महर द्याव, गल की सब गिलाहिया सूजा दूर, सिर  
धूमता, पुराता १ मर दूध पाय फिर माहि ठण्डे, छासी आदि  
लक्षणों में यह दिया जाता है ।

**सिमीसिफ्युगा ३, ६ शक्ति ।—**दिस्यारिया, सिर

दूध, पाँच स्नायु नीच और साधारणत पाह पसरामें दूध,  
पातका दूध अत्यंत धानु प्रधान धानु ।

**फेरम ६, ३० शक्ति ।—**कमजारी, उदासागता दित

घटका मज्जाण बना कमा महरद्याय चहरा दया, पीका  
और सुनासा, रताह्यता के और भार सब लक्षण ।

**नयसयोमिका ६, ३० शक्ति ।—**प्रात काय सिरमें

दूध काएवछ पारवार मज्जाण और उदरामय, पाँचटे आदि  
लक्षण ।

**सेनेसिओ ३, ६ शक्ति ।—**अस्तु व बीच के समय

में यह औषध दन से अत्यंत धमवार फल दील  
पड़ता है ।

**सलफर ३०, २०० शक्ति ।—**सिर में कटन

मस्तक में रतागम और माथे क भीतर मों मों शब्द, माथ  
क ऊपर सबदा उच्चाप मानुम होना, चहरा दया और पीका,



मस्तकमें रक्षागम और दृष्टिमें गडबड, भयाङ्क दृश्य दीखना और चिन्ताना, काटा और फाड़ने की चाहना, चहरेका समासा रहना और लुपती, प्रसवके दर्द के समान अत्यन्त दर्द मानो गुमझारसे सबही निबल पड़गा । दर्द जितनी जल्दी २ हा उतनीही जल्दी कम होजाय, साथ उजळे हाल रगडा, कभी जमा हुआ और पड़बूदार ।

**फेनकेरिया कार १२, ३० शक्ति ।**—जानते पहिले लन फूलना और तराना, फिर दर्द पेटमें दर्द, कम्प और प्रदर प्रसाध, प्रभु के समक्ष पेटने में तर काटने के समान दर्द, दृष्ट दाल, पैरों प्रसव के दर्द के समान दर्द और नती का फूलना दोनों पैर टूटे, गडबडाला जानु ।

**कैमामिता ६, १२ शक्ति ।**—प्रसवके दर्द के समान जरायुमें दाब मालूम पड़ना, साथ काटना जमा हुआ और दोनों जंघों में दाब समान दर्द, बार बार पशाव करनवा दृष्टा मस्तक पर गरम पड़ना दर्द बिछडुड सहा न होना बिना जानवा मलमलसात के साथ जबाब न होसकना ।

**सिमीसीफयूगा ३, ६ शक्ति ।**—छोटा या बहुत जमा हुआ दृष्टाव कीटों बहुत तेज दर रस दर्दका साथ और कजर तक मुच जाना प्रसवके दर्द के समान दर्द ( कैमामिता के समान ) दिष्टिरिया के बाँध और मल पेटमें टमटमाहट मालूम होना, (जल बढ़ास) ।

**कोनियम ६ शक्ति ।**—साथ छोटा और घूरे रहना

श्रुतु से पहिले दोनों स्तन कुल उठना, कडे होजाना और हा  
होना (बेलबेरियाक समान) हृत्पिण्ड में कर्मके समय  
द्वंद और साने में अथवा कचोट बदलते में मि  
धुमना ।

**नक्षत्रोमिका ६, ३० शक्ति ।—**श्रुतु अन्त  
होना, स्नाय गाढा और जमा हुआ पटमें मग्न  
समान अथवा दृढ़ जामिचलगना अथवा पाठ कमर म  
हूँ हट जानक अथवा दृढ़ बार बार पेशाव करना  
हाजिर कोणवद्ध बार बार दृश्य जानका हाजिर किन्तु रस  
न जाना, मल कठिन और कष्टम निकलताहा ।

**पक्षसाटिजा ६ शक्ति ।—**श्रुतु दरस हा, रक्त गा  
और काला ठहर ठहर कर रक्तछात्र तलपट में मानों पापसा  
द्वय रहाहै दृढ़ इनका नेत्र कि रागा तडफना हा,  
चिरलानाहो और राताहो [ मिर्मीसाक्युगाक समान ], उठनम  
तिर धुमना, मुलायम, सहजही व। उठे एसी स्ना गरम सकान  
में बदना ।

**सीपिया १२, ३० शक्ति ।—**श्रुतु बहुत पहल हा और  
धनुत पोहा हो, पेटमें दृढ़ और कराइनक समान इतनी तलपट  
कि बालनी पावनी मारकर बैठनाहो श्रुतुने पहल प्रारंभ  
इस साथसे सब स्थान में कफाले पड़जाय, पावाय  
में कष्टदायक स्वादीपत्र प्राप्त कालके समय वदनी का  
जा मिचलाना, कठिन, गुठलेदार मल और मलद्वार में बाध  
माहम जाना ।

**सलकर ३०, २०० शक्ति ।—**स्नाय गाढा, काला और







दर, पेटमें दद, बग, पेशाब के समय पेटमें काटनेके समान दर्द, दाँतोंमें दर्द आर कराहना, भुज्जस मिर धुमगा; उठनेसे बा माटा घटनेसे बटना, दोनों पैर रनेसे ठंडे और गीले गानों पैरमें भोगा हुआ माया पहिना है, सामान्य ठंडी हवाभी सह न दाना ।

**कैमोमिला ई. १२ शक्ति ।**—बहुतसा बाला और जमा हुआ रक्तश्राव, उदर २ बर पेसाही रक्तश्राव होना अर्राधुमें प्रसव पड़ना के समान अत्यन्त दर्द और पैरों की उर्बों में टूट जाने के समान दर्द अत्यन्त मसता और सहन नही पाइ पान पूजनम मलमनमान के साथ उभर न दे सकना पार पार बहुतसा बिना रक्तश्राव ।

**तिमीसीफ्यूगा ३, ६ शक्ति ।**—श्रुत बहुत पहिले हा और ज्यादा हा श्राव दाग आर जमा हुआ [ इस लक्षण में कैमोमिला आर माकन वापदा करता है ] पाठ में आर श्राव न कर परक नाच तक दर्द, नितम्बों में बटन के समान दर्द, और अर्राधु में दाब मातुम दाग अत्यन्त वायु प्रधान धान और सब लक्षण निम्नारिया के बावड, मक्कन आर भाग के गर्तों में अत्यन्त दर्द अति छाम व हिलन स बटना ।

**क्रोकस ई शक्ति ।**—ठाक समय पर श्रुत होना किन्तु बहुत ज्यादा और दर्द तक उदर में बाला भाव वाला और जमा हुआ रक्तश्राव के समान कहा पड़त सामान्य हिज्जस साथ बटना चदर पर पोलापन और मिट्टी के समान [ सापिपाका तरह ] पमा मातुम हा माने पेट के

मीनर कुछ दिग्गता है [ मेघार्जना की तरह ], अथवा कुछ और मीनो चट्टन में दिल् घड़कना ।

**नक्षत्रभूमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—**अनु बहुत और बहुत ज्यादा हो, छाव कागमा रहना गुन का पदछे रहकर चन्द हाजाय और फिर हान लग ( सप्ताह समान ) कमर, पाय और निमग्नोंमें रह, पिता कागमा जोरित हो उडना, [ वैद्यमिन्त्राकी तरह ], स्वाभाविक रूप पर धानु पार पार दस्त आनही हासन ।

**फामफोरम १२, ३० शक्ति ।—**अनु बहुत और बहुत ज्यादा और अधिक दिन उडरन वाला, उमर मर पट और कममें रह बहुत कमजारा, दानों पैर उड पर कमजारी और कागमा मातुम हाता मासन क उमर कायुका बहुत उबार जाना मासन क पाद नादमी बन, मर कटा और बहुत कम हाता शरी और हवाही ।

**सेवाइना ३, ६ शक्ति ।—**बहुतही जाडा और दुबका वाला रज-छाव कागमा की क गम रग और कुछ नगा हुआ गुन प्रसव बदना क समान रह रान तक पगहा, गामन रुकर हो जननप्रिय तक मानाहा समान वायु प्रथान धानु और दिग्गताया क मर सपण [ समर्पिताया क समान ], गमर क की मानका ।

**मिहेंद्री ६ शक्ति ।—**बहुत ज्यादा और दान दिन मर रुकने वाला अनु कागमा दमना रह दिग्गता समान म रना [ नाकमक समान ] अनुद रति

सबही रागोंका बढना, दुबला पनखी त्रिपोंक लिय यह पाबदा करता है ।

**सांपिपा १२, ३० शक्ति ।**—बहुत पहिले और बहुत

ज्यादा श्रुत, श्रुतके पहिले पेटमें अत्यन्त दह, पाबायपके भीतर बहुत बह देगे थाला खालापन मानुम दमा, बहबूदार पेशाय, खहर पर विशेषकर नाकपर मुहासे क समान पाले रङ्ग के दाग, चगातु, हट जाना एसा मानुम होना मानों सगरी जननद्रिय ठान बाहर निकल पडगा [ बढडागा क समान ] ।

**सलफा ३० शक्ति ।**—श्रुत बहुत जित ठहर एसा

मानुम हा कि मध मरुजा होगया ह बिन्तु पारपार लीन माना, जलन पैदा करनेवाला छाथ, दानों जाघोंमें दह उपन्न कर और उनमें पड़ा बहबू (बहबू—बलडागा) पतिन अजानक गरमा मानुम दाना और उम क उपरान्त हा कमजारा और मधसन्नता, मस्तक क ऊपर सघदा गरमा मानुम दाना, हाथ परो में जलन सूना बजासीर ।

**औषध प्रयोग ।**—जब बहुत ज्यादा रक्तप्राय होता

रहे तब आराम न होत तक २०। ३० मिनट क अंतरम औषध देना चाहिय । राग यदि सामान्य दाना २। ३ घण्टक अंतरम औषध प्रयोग करनाहा यथष्ट है ।

**सहकारी उपाय ।**—सग प्रकारकी मानामक चि ता

और उद्देग, परिश्रम और सज्जमा फिरना बिलकुल निषेध है । रक्तप्राय नियारण करनेके लिय पाठक नाच

तकिया लगा कर पैर ऊंच और मस्तक नीचा कर  
 को चित्त सुला देना चाहिये और दिलना मुठना न च  
 मत्पत्त रक्छात्र होतो ठण्डा चल पिलाना, सब शरीर  
 रन्ना पैरो में पीठ में, और तलपेट में ठण्डा उष्ण  
 करना विशेष उपकार दिखलाना है । किमा प्रकार  
 गरम वस्तु व्यग्रहार करना निषिद्ध है । जिनको बहुत  
 रज आव होता है उनको कुछ समय तक स्नाना सह  
 यद् रचना आवश्यक है । ऋतु के समय स्नाना सह  
 करनेक दाप स भाप यद् रज हाता है ।

## रजोलोप ।

( क्लाइमैक टेरिक ) ।

शुक्राश्रमों रज आव क्रमश कम हाकर अन्तमें वि  
 कुल यद् हाजाना है । साधारणत ४२ से २० क मात्र  
 रजालोप हाताहै कि तु किताका कुछ पदल किताका  
 पाछगा हा सकना है । जितनाहा रजोलोप हातका सम  
 निषट धने लगता है उननाही क्रमिक समय और र  
 माण में मनक प्रकारकी गडबड दिखलाई पडती है  
 रज कमा बहुत चाहा या कमा बहुत ज्यादा हाता है  
 कभी आव अस्वस्थ में अस्थानक दिखलाई पडताहै कभी  
 समय रहता है भार तिर अस्थानक यद् हाजाना है  
 की । अतु रज न धारे २ और क्रमश उत हाता है ।  
 किमा प्रकारक उपसर्ग हात दुय गहा दाख पन्न कि

प्रायः रजोलापके कुछ पहिछ स तिर घुमना, तिर दर्द, ठहर २ कर भ्रमनक गर्मी मातुम पहना ज्ञायविक सब क्षण, कमजारी मश, जननाद्रियमें खुजली और बहुत से कष्टदायक उपसर्ग दिखकार देकर बड़ा कष्ट दत है ।

**चिकित्सा ।** त्रायोनिषा ६ शक्ति । मस्तक

में एक भ्रमक कारण निरुद्ध एसा मातुम हा मार्गो कपाल पत्रकर पिशाण हाजायना और नाकस तून पिरना, हिलने चलन स सब लक्षणोंका बढ़ना, कोष्ठरुद्ध, कठिन सुखा मल मल्यन्त चिह्नचिह्ना स्वभाव ।

**काकूलस ६ शक्ति ।**—पशाव के बहख प्रवर्धनाय

विछाने पर ठठकर बैठनस बढ़ना इतनी दुषलता कि पान न कहा जाय, तिर घुमना [ त्रायोनिषा क समान ], स्नायुनिधान [ गर्मों क समूहवा दग ] की उत्तजनशालता ।

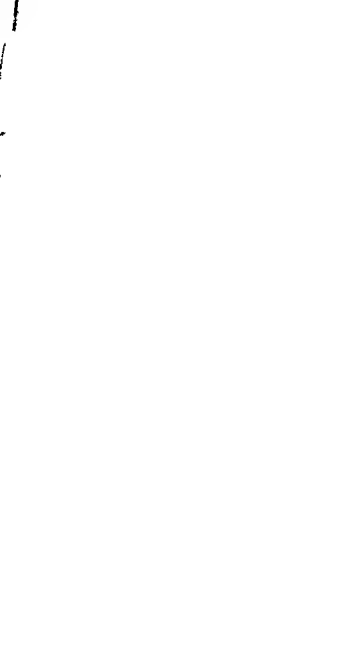
**इग्नेशिया ६ शक्ति ।**—हृदय में गुप्त दुःख भरा

हुमा, एसा मातुम हो मार्गो मस्तक के बगलमें कील फूटी निकलता है, । रज सख्य, काला, जमा हुमा और परपूषार ।

**लैकेसिस ३०, २०० शक्ति ।**—रजोलाप क समय

त्रियोंके द्विय विषय उपकारी है [ पञ्चाटिलामा ] बार बार जरायुमें रुद्धस्त्राय मस्तक में मार मातुम होना और मस्तक के ऊपर जलन और खरकन मातुम होना, जरायुमें सख्यन्त सामान्य दाव वा स्पशभा सख न होना, यावो









घाय और जल दैदा करने वाला स्नान, सब स्थानों का तराना, स्नान गाढ़ा, पीछे रगड़ा, धड़हाते ही किन्ना घाय नि सरन होनेसे दूर पड़ना, रात्रिने समय मत्स्यन्त घरराहट, पम्पना और घबैनी गुच्छली पतली स्त्रियोंके छिने ।

**कैलकेरिया १२,३०,२०० शक्ति ।**—दूधके समान सफेद

स्नाय, पक्षान करते समय मयरा ठहर ठहर कर हो, धनु धनुत पदने और धनुन ज्यादा, साधारणतः धनुत दुबल, पदल चलने में मत्स्यन्त परिधम और चबना, टडा दूपा पदल सदा न होना दो-पे पर टड और गाल गण्डमाला दुषित धानु ।

**चायना १२,३०,२०० शक्ति ।**—दुबले शरीरकी स्त्री जिसकी अधिक रक्तप्राप होगयाहै धनुके पदल प्रदर, स्नायही रान और गुहाशरमें बदबनाय बाध मादूम पड़ना, रक्त स्नाय प्रदर, धीमे १ में काला जमा हुआ मयवा धनुत धनुद्वार पीपके समान स्नाय होना जतनेन्द्रियके भीतर धनुत कष्टदायक गुच्छली और गुच्छन ।

**काकूलन ६,३० शक्ति ।**—धाइ अनियमित धनु, धनु के बीच के समय प्रदर स्नाय का हागा [ धनुत उपरान्त-गलसामिला ] धानीक समान स्नाय स्नायही पार क स्नान पनला पदध मित्रा हुआ धनुने में वा पदनमें स्नाय छुटकर बाहर निकल जना धनु बायक रक्त उसके उपरान्त पयाना पेट सू ॥ हुआ ।

**कोनेयम ६,३० शक्ति ।**—कमरमें कमजारी और



उठने से सिर घूमना और सही सी लगना, मुलायम प्रकृति, शाम होने वाली हो ।

**सीबिया १२,३०,२०० शक्ति ।**—इलायत में रजो लोप होनेक समय, गमावधामें वा यौवनावधामें रोग (लेचमिस), प्रदरप्राय, माघ ही जसयु प्रांग में सुई चुभोने के समान दर्द और जननेन्द्रिय में गुठली पीलासा, जल के समान, दूध के समान, वा स्तेप्मा के समान स्वाद, चदरे पर, विशेष कर नाकके ऊपर मुदासे के समान पोले रंग के दाग पेशाब में मलमल दुर्गन्ध, इस में जीब के समान पदार्थ नीचे जमना ।

**मार्कुरियस ६,३० शक्ति ।**—छात्र पालन रगका उसमें मपाद हो, तरावे और गुठला हा, बहुत रज छाव, पनडा और देखनेमें रगमाविज के समान तही बुधरना, शीतलता, चहुरा जीक रहना इत्यादि ।

**सल्फर ३०,२०० शक्ति ।**—प्रदरप्राय, पलन और उसमें दर्द, जननेन्द्रिय नराना, छाव पवला पीलेले रहना छावने पहले जननेन्द्रियमें छेचन के समान दर्द, जननेन्द्रिय में जलन, दिनमें बार बार कमचोरी और मषसन्नता मानुस होता, महनरके ऊपर सयरा गरमी, हाथ पैरोंके तटुष्में जलन, दाघ पैर दिठोने के प्रदर न रग सके ।

**वाह्य प्रयोग ।**—शरडाम्बित वा केल्-इका मूख चिना मिछा दुभा भरव १० बुद १ ओंस पाना में मिलाकर पिचकारी उगान से बहुत फायदा होना है ।

**प्रापध प्रयोग ।**—प्रातः काल और संध्याक समय







माता को पूज्य शक्ति हो तो पाठक मोटा ताजा होता है।  
 माना का मानसिक भाव प्रसन्न, पवित्र और पापपरायण  
 हो तो मधिष्यन् सन्तान के हृदय में भा इन सब सद्गुणों का  
 बीज आरोपित होजाता है। मसख बात यह है कि  
 माता का शारीरिक मानसिक और नैतिक भाव में बिल्कुल गड़  
 बड़ न होना साथ यह ध्यान देने का बात है।

यदि माता पिता अपनी सन्तान को निरोगी पवित्र चरित्र  
 और उन्नत हृदय देसना चाहें तो उनके सबसे पहल स्वयं इनगुणों  
 का अधिपारी होना चाहिये। गर्भावस्था के समय माताको इन  
 सब विषयों पर सावधानी में चलना चाहिये। पहल  
 व्याहार सद्गुणों पचने वाला और पुष्टिकर भोज्योत्तरह पट भरके  
 खाना चाहिये। लाभ के वर्णभूत होकर मखाद्य भोजन  
 बिल्कुल वर्जित है। गभसधारक पहल दुःख महीन जा  
 मद्वि हो उस पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। बहुत  
 सदा लालीमरच, मही और और स्वास्थ्य का बिगाड़ने  
 वाली बातोंसे गभवनी स्त्रीका दूर रहना परम आवश्यक है।

दुमरे, बिदार। गभसधार हुआ है यह जानतेही स्वामी सह  
 बात बिल्कुल बन्द करदेना चाहिये। घरक लागानो  
 उचित है कि इस समय न लेकर प्रसन्न कालनक हवाके  
 रहत सहन पर दृष्टि रखें और ऐसा प्रयत्न करें जिससे  
 उसके हृदय में चिंता बिल्कुल न रहे मन धम्म विषयमें  
 लगा रहे, मामें बुरे विचार न उगझें और सन्तान  
 के साथ किमी काममें लगी रह। इस समय में मनमें  
 किसी प्रकार की बुरा चिन्ता, शोक भय और दुःख,  
 बिल्कुल न होना चाहिये। नित्य नियमित खाग आहार  
 और निद्रा मत्तत आवश्यक है। गभावस्थामें सवारी









**चिकित्सा १—त्रायोनिया ३, ६ शक्ति १—**

भातो की किया गहोने के कारण कोष्ठबद्ध विरह  
कर गरमीय दिनोंमें सायही मलकर्म रुक सञ्चार, कोष्ठ  
सञ्चार इत्यादि ।

**कोसिनसोनिया ३ शक्ति १—**बवासीर और कोष्ठ-  
बद्ध, विरहरर माय ही जरायु रोग हो ।

**होईदूस्टिस १× शक्ति १—**साधारण कोष्ठबद्ध ।

**नकमवामिका ६, १२, ३० शक्ति १—**मराह, बार  
बार दम का हाजत शिष्ट रुज भाफ न होना, पट कुलना,  
बवासीर । पुराना कोष्ठबद्ध धानु होने पर इसके भाय सलफर  
पर्यायमय स व्ययदार किया जाना है । भात काल सलफर  
मीर रात्रि क समय नकम दना चाहिये ।

**सलफर ३० शक्ति १—**पुराना रोग ।

और २ सब स्थण बाष्ठबद्ध का चिकित्सा में दस्तो ।

**सहकारी उपाय १—**इस रोग का 'ध' प्रमाण  
कारण उचित परिश्रम न करना और अत्यन्त माय से बैठे  
रहना है । इसलिये उचित परिश्रम करना अत्यन्त आवश्यक  
है । प्रातः काल उठत ही ठण्डा जल पीना उपकार करता है ।  
प्रतिदिन ठण्डे पानी से स्नान करना अच्छा है । किसी  
प्रकार का जुगल लेना या दस्तावर रखा जाना बिल्कुल  
निषिद्ध है । यदि कैर दिन तक लगातार दम न होने स दृष्ट  
हो तो पाट गरम पानी में साबुन घालकर उसकी पिचकारी  
धगाई जासकना है । पिचकारी इन समय नभि लिख





**पाडोफाईलम ६ शक्ति ।**—विना रई वसने मय, बहुतसा पानी के समान दस्त भयंकर पीले रंग का भाम मिष्टा हुआ मल, दस्त आने के बहुत पानी के डब्ब के समान गड़गड़ाहट के उपरान्त दस्त हो, प्रातः काल दस्त हो इस के सिवाय रात्रि में और गरमी के दिनों में बहुत ।

**औषध प्रयोग ।**—आयुर्वेदकृतानुसार १।१।४ घण्टे के अन्तर से औषध देनी चाहिये । आहार पर विशेष रक्षित रहनी चाहिये । ध्यान रखना चाहिये कि रोग अतीत हो आराम होना ।



## मिर्द्वं और तिर घूमना ।

**चिकित्सा ।**—टेकोनार्डेट ३,९ शक्ति ।—बात और दस्त मयान पानु जाने मनुष्य के शिर, माथा, गाल भयंकर सुखाने समय मिर्द्वं घूमना, अर्थात् घे घूमना और घूमना ।

**वैलेडाना ३, ६ शक्ति ।**—तिर घूमना और कार्य । समय प्रातः दिक्कत होकर अत्यन्त के साथ मिर्द्वं घूमना हा मयान से दस्त आना बहुत और घूमना ।

**वैकम्पामिक ६, ३० शक्ति ।**—बात में जो भी अत्यन्त घूमना और मिर्द्वं घूमना बहुत दस्त आना मिर्द्वं काटने का दस्त घूमना ।

**वैकम्पामिक ६ शक्ति ।**—मिर्द्वं घूमना ।

एक ओर, वायुशय बाधोप विक्षयकर बैठ वा घों में पड़े हुये पदार्थ जाने से, श्वासा के समय बढ़ना ।

**सीपिया १२, ३० शक्ति ।**—कवल घुली हुई हवा में स्रमण करने से सिर घूमना, श्वासाके समय माथे की हड्डी में व्यत्यस्त दह, वायुशय वाली माटुम दोगा, जोष्ठपद ।

इसके सिवाय माययानिया, सिमीर्सीक्यूणा जैहसी मौनम, एगनेसिया, आरिथ, ईहृवस आदि भावद्वय हो सकते हैं ।

**श्रापध प्रयोग ।**—साधारणतः प्रातःकाल और श्वासा के समय । एतन् यदि अधिक पयस हानो २ । ३ सप्ते के अनन्तर एक एक माथा ।

-----o-----

### गर्भावस्थामें दन्तशूल ।

गर्भावस्थामें किसी २ स्त्राव गर्भमें दन्त दातादे । यह ज्ञायु पुत्र के समान कभी कुछ दह रहता है, पाण्डु बन्ध दातर तिर दात लगता है ।

**चिकित्सा ।**—इस रोगकी प्रधान औषध एवनाहट, बलेहोना, कैल्कुरिया, कैमागिडा, मधुरियस, नक्षत्रपामिजा, पलसेदिला, सीपिया, और स्ट्राकसेत्रिया हैं ।

-----o-----

### पेटावरकी हानिसे न रोक सकना ।

गर्भसंचारके साथ २ दिनी २ स्त्रावा यह रोग



उत्पन्न होता है । कभी पेशाब बराबर एक २ घूँट हाज़ारे कभी बेमातुम पेशाब निकल जाता है । मूत्राधार के ऊपर गर्भ के घाटन का बोझ पड़नेसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

**चिकित्सा ।—** एकोनाईट ३ शक्ति ।—रुग्ण साध पेशाब, पेशाबकी दाअत किन्तु मत्पन्न यन्त्रणा न गौर घयताहट ।

**वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—**सधदा एक २ घूँट पेशाब हो पेशाबकी दाअत न रोक सकना ।

**कास्टिकम १२, ३० शक्ति ।—**रात्रिके समय बेमातुम पेशाब निकल जाता ।

**पलमाटिला ६ शक्ति ।—**बैठ रहकर समय बधवा घुमनेके समय बेमातुम पेशाब निकल जाता, बार बार पेशाब करने की दाअत ।

**सलफर ३० शक्ति ।—**बार बार पेशाब करना, बिछौने पर पेशाब करना गभायस्या में पेशाब होने में बट ।

**श्रौपध प्रयोग ।—**एक सप्ताह तक प्रातः काठ और सन्ध्या के समय एक एक मात्रा ।

## पैर फूलना ।

गर्भ का पूर्ण अवस्था में छिर्योंके पैर जांघ आर यहा तक कि जननद्रिय तक फूल जाता है । जरायु में थालक

के दोष के नीचे के रोगों में यथोचित रस सञ्चालन में बाधा पड़ता ही इस का प्रधान कारण है ।

**चिकित्सा ।—आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।—**

पैर ठंढे, घूल्ने के साथ अत्यन्त कमजोरी, नाड़ी दुबल ।

**एपिस ६ शक्ति ।—**अन्तरी २ बहुत ज्यादा घना,

वेनाय का बन्ध ।

**चायना ६ शक्ति ।—**उदरामय, आमाशय आदि

कारण से दुबलता होने पर ।

**सयफर ६,३० शक्ति ।—**बढ़े-बढ़े पर रोग गर्मा

दफा के समय हाथ हो जाने पर यह अधिक उपकारी है ।

**सहकारी उपाय ।—**बैठ रहने के समय पैर उंचे

रखने चाहिये । घूमा ही नासा पड़ रहने में दोष है । रात्रि के समय सोने के उपरान्त सूजन बहुत कम होनावे ।

## गर्भस्त्राव

### ( पराशत )

गर्भ दफा के रोगों में यही रोग सब से अधिक सामानिक रोग है । इस में केवल बालक ही का जीवन नष्ट नहीं होता किन्तु स्त्री की का रज वश भी सञ्चय में पड़ जाता है । एक बार गन्धपाव होने पर फिर दोबारा ऐसा समय इस विपन्न की सम्भवा रहता है । शायद तीसरे महीने में प्रसव कभी इस से बचने का पीछे सम्भव होने हुये देखा जाता है ।







और जब ओपेयिक [ पाँचठे ] वा मरोहके समान दहं हो तब इस ओपेय से गर्भेच्छाए बन्द होता है ।

**औषध प्रयोग ।**—गर्भेच्छाएकी आशङ्का को अवरुद्ध के अनुसार २० : ३० मिनट या एक घन्टे के अन्तर से औषध देनी चाहिये । आशङ्का कम होनेपर २ : ३ घन्टे के अन्तरसे ।

**सहकारी उपाय ।**—गर्भेच्छाएकी आशङ्का उपशान्त होतेहा रोगीको स्थिर होकर सो रहना चाहिये और जब तक आशङ्का दूर न हो तबतक इसी अवस्थामें रहना चाहिये । बेचल पैरोंको स्थिर रखनका उद्देश नहीं है, सब छतोरका पूर्ण विधाम आवश्यक है । गर्भापेक्षा में रोगीको सहवास, मानसिक चिन्ता, उद्वेग या भय, अशुचि कठिन परिश्रम, व्याख्य विषय आश्रय वर्जित हैं ।

**निवारणका उपाय ।**—जिनका एक बार गर्भेच्छाए हुआ है उनको फिर नम सप्ताह टानपर विज्ञापकर ठीक उस समय जबकि पहिल गर्भेच्छाए हुआथा अशुचि नाशवान रहना चाहिये । जिनका बार बार गर्भेच्छाए हुआ है उनका गर्भेच्छाए होतेही नाश लिखा हुआ दवाइयों में से लक्षण अनुसार दवा तत्तचीज कर २३ मदान तक दिवसे एक वा दो बार बराबर सवन करानी चाहिये—वाओपारहम, सिमीसाफूला, दलारीदल पलमाटिन्हा, मवाहना वा सिचला । जब साधारण व्याख्य वा आनुमें राखेहा तब नाच लिखा हुआ दवाइयोंमें से वा एक वा दो परिचर्मेक दवा देनी चाहिये ।

**फेलेकेरिया १२, ३० शक्तिन ।**—गदमाटा दूधिमातु ।







घरमें एक अच्छा मकान सोपडक लिये होना ज़रूर आवश्यक है । घर स्वच्छ और दर्यान बिना होना चाहिये । घरमें यथोचित वायु संचार जाननीय ज़रूरी बात है । जहा नयी सोपड बनाने की आवश्यकता हो वहा यह सबसे पहल देखना चाहिये कि घर सूख और साफ है या नहीं । प्रसवसे बहुत दिन पहिल मल का निश्चय करलेना चाहिये जिससे मकान मली न हो सूख जाये । जर्मन यदि गाली होतो धूम वा रस निछाकर तब चटाई बिछानी चाहिये । बाइकरी गुा हवा न लगे इस बातपर अच्छी तरह ध्यान देकर गुा दो सामने सामने के जगल कभीकभी घोल देने चाहिये । सग रचनाही बालकका जीवन है । हमारे देशमें तो यही बुरी प्रथा है कि सोपडमें भाग जलाकर सब घर धूपसे भर डालत हैं । सहजहा समझनेकी बात है । उस धूपमें भरे हुए घरमें जब हम पलभर भी नहीं जा सकत १० । १२ दिनमें बालकका वहा दशा होता हाता । यदि सापड में भाग रखनेकीही आवश्यकता होगी कोयलक सियाव और किसी प्रकारकी भाग न रचना चाहिये । सापडमें बिथड और कुडा न रहना चाहिये जिससे बच्चे पैदा हो ।

### प्रसववेदना ।

जिसका रहन मज्जम जिनका सीधी सादी होनादे उरवा गगारिक जियामा उननीनी मज्जम भर क्यासाधिक हाती है । वनमें रहन बाग्य भर समझ्यमानिया प्रसवका ५९

इह धातुदा नर्गै समर्थनी,—उनके मैदान में रत्नमें अथवा  
बामेंही समताम उत्पन्न होजाती है । धनी और पितासी  
सागोंके लिये प्रसन्न एक बड़ा बड़ा धान होगी है, यदा  
तदा कि बम्बी बम्बी उनके प्राणों तक पर आधारता है ।  
यदि विद्याय कष्टदायक लक्षण उपायेयन नहीं ता यदि  
आयस देनेका आवश्यकता नहीं है ।

**चिकित्सा १— कैमोमिसा ६, १२ शक्ति १—**

धातुदा रई हो समता मान्दुय हा, कष्टके साथ दद और  
निराशा, लक्षणा, दद बायडों क साथ और कष्टदायक, रोगी  
बहुत हो वषेन, बिछी प्रसन्न का उत्तर दत्त समय बिह बटे ।

**काफिया ३ शक्ति १—** दद बहुत हो ज्यादा हो,

मयकर चिकित्सा भार राता, प्रसन्न द्वार यदि ब्यामों का  
तराना दाधन लगाने दना राति क समय मनिश ।

**इमेदिया ६ शक्ति १—** दिस्तीरिया राग वाली

रवा, घाकागुर री, वाकागुर में नृम्यता और कमजोरी,  
आहार बल पर भी भाराम मान्दुय हा हाता, बिनी भग में  
बोवट बम्बी, रागी दाकागुर सवदा रम्बी सांख हाता ।

**नक्षत्रोमिका ६, ३० शक्ति १—**मनिशमिन रई,

दद होन परभी प्रसन्न बिधा अन्दी न हा दमन मान्दुय हा कि  
पीठ और आय बिछी जानी है प्रसन्न बार दद दाके क  
साथ दमन का पान्थ की हाता । ब्यामादिद बारदद  
बहु बिहविहता प्रमाय ।

**पक्षसाटिळा ६, ३० शक्ति १—** दद बल कय

और बहुत द्रव्य है ॥ प्रमत्त कम हाता नाथ, उपाय का। प्रया हाता क वाग्ग दद दिल धडकना वा दम धुन, यज्ञ ॥ न क समान अस्वा उत्पन्न करता है, हाता स्त्र ॥ २२ ॥ २३ का इच्छा करना है, गरम प्रकाश क क माग्म हाता कामल प्रगति की शान रास वा ॥ २४ ॥

**जलगीर्मानम् दी शक्ति ।—** अरायु का मु

कना हागया हाता दमन नरम हाता है दद ऊपर पाउ क हाता का भार जाय ।

**सिकेली ३, ६ शक्ति ।—** कुचल ला बहुत द

दर ॥ २५ ॥ उदर २ कर हाता क समान माग्म हाता ।

**वतडाना ३, ६ शक्ति ।—** दर अधिक और

हाता ॥ २६ ॥ कतु अरायु का मूह कडा हा बिना तद न गतना ॥ चहरा लाल, सिर दद हाथों में सेंबर

॥ २७ ॥ २८ अस्वातक जाय, उजाला शम्भू माग्म ३ हाता

**आवध प्रयोग ।—** आवश्यक्तक मनुमार १५।२०

॥ २१ ॥ मितक क न नरम ।

**सहफागी उपाय ।—** कम समक हाता क हाथ

प्रमत्त ३ ४ कना नहा कराना चाहिये । प्राय मूख हाता ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

































4















२६ और यचना उजाला और शम्भू न सद् मद्रता ।

**ब्रायोनिपा ६ शक्ति** —पेटमें सुद गुमातक सदा

२६ खाद्य पद और चिर दई, सुद गुमा हुआ, पेट  
उठकर पेटनेसे जमिचलाना और चक्रण माना, जो  
मानव रक्तमा खादे, सामान्य दिग्ने चक्रणमेदा का  
मानुष हो ।

**वक्त्रोमिका ६, १० शक्ति** । —प्रसव-वक्त्र में

२६ भीतर धारा और जठन मानुष हाता, जो  
बाह्य मध्यमा बहुमनी उपादा, साधरी कममें मध्यमा ही  
बाह्यम बाह्यकार दस्तकी हातन हाता बिनु २११ न  
माना मान बाह्यक समय बढ़ता ।

**रक्तकम ६ शक्ति** । —प्रसव न उपादा हातु

उपादा । जो माय रह न सज्जा बहुमनी हाता जो  
बाह्य वक्त्रमा भीयका मद्रु वेवम येर गिला न मज्जा  
म ने गुमा २६ मज्जामा काल, विचारन मज्जा, साधक  
मज्जा । जो वक्त्रमा वक्त्रा विशेषकर माधीरान्ते उपादा

**मिष्टता ६ शक्ति** । —सर रह । की मान दता

२६ भी २ टाट मिष्टी हुए, प्रसवमिष्टमे हाता काला ही  
हारा धारा मिष्टता बिना हृ के उपादाय और हृ  
मज्जामा गुमा २६ मज्जा मज्जा मज्जा मज्जा मज्जा

**लेकोमिम ३० शक्ति** । —मिष्टता २६ धारा

मज्जा गुमा वक्त्र वक्त्र, वक्त्रमा मज्जा, वक्त्रमा

**ओषध प्रयोग** । —प्रसवमज्जा न अनुमान मज्जा

या २ घण्टेक अनंतरसे एक २ माथा ।

**सहकारी उपाय ।**—गरम पानीमें फुलायेन भिणो  
हर बार बार सेकनेसे बहुत फायदा दीखताहै । रोगीको  
भिर रखना चाहिये और मजानमें सज्ज धातु आती रहनी  
चाहिये । सांझाना या रातकी समान पतला लुधु पदाध रानेको  
दिया जाय ।

## २२ नां अध्याय ।

### शिशु चिकित्सा ।

#### शिशु शुभ्रूपा ।

शिशुसंग चिकित्साका वर्णन करनेसे पहिल हालक  
पेशा हुए बालकका किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिये  
यहा विवृत हैं । यह विषय बहुतही सामान्य होने परमी  
हमारे इसमें सबका लागण्याही क साथ एक और पद  
रहने और इसमें अनक प्रकार क शग उपपन्न होने हुए  
विचित्रा रहें ।

### मायोजात शिशु ।

( हालका पैदाहुआ बालक ) ।

समयक उपरांत शिशु-चुसुग एक प्रभारा जाय है ।  
महत्य मरनाक समय सधका ध्यान मथल छीर्नी और

एते नीच वचना ज्ञानाला और शत्रु न सन् सन्तः ।

**भाग्योक्तिः ६ शक्तिः** — येनैव तुर्लुगुनमन सन्तः

एव शत्रु वदन् और शत्रु वदे, तुर्लुगुन वदन्, शत्रु  
उदन्, शत्रु वदन् शत्रु वदन् और शत्रु वदन्, शत्रु  
शत्रु वदन् शत्रु वदन् शत्रु वदन् शत्रु वदन् शत्रु वदन्  
शत्रु वदन् शत्रु वदन् शत्रु वदन् शत्रु वदन् शत्रु वदन्

**भाग्योक्तिः ६, ३० शक्तिः** — अन्तः सन्तः शत्रु

शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु  
शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु  
शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु  
शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु

**रुद्रकवि ६ शक्तिः** — अन्तः सन्तः शत्रु

शत्रु, शत्रु शत्रु शत्रु न सन्तः शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु  
शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु  
शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु  
शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु

या २ घटके अन्तरसे एक २ मात्रा ।

**सहकारी उपाय ।**—गरम पानीमें फुलायेन भिगो कर बार बार स्नेहनेसे बहुत फायदा बीसठाहै । रोगीको पिर रखना चाहिये और मक्काममें स्पष्ट घासु धानी रहनी चाहिये । साबुदाना या चारलीके समान पतला लुथु पत्राध पानेका दिया जाय ।

## २२ नां अध्याय ।

शिशु चिकित्सा ।

शिशु भुभूया ।

शिशुनाम चिकित्साका वर्णन करनेसे पहिले हालका पैदा हुए बालकका किस प्रकार चिकित्सा करना चाहिये धर्मी सिद्धत है । यह विषय बहुतही सामान्य ज्ञान परभी हमारे देशमें सबका लापरवाही के साथ एक ओर पड़ रहनहै और हमारा जनक प्रकार के गान उन्मत्त ज्ञान हुए निवृत्त देतहै ।

साधोजात शिशु ।

( हालका पैदाहुआ बालक ) ।

प्रसव उपरान्त शिशु-भुभूया एक प्रधात जाय है । प्रसव यन्त्राके समय सबका ध्यान कष्ट लेनी



मरा हुआ निश्चय करके समय नष्ट नहीं करना चाहिये । इस समय दीप्त यक्षपान होनेसे बुद्धि और कौशलके प्रभाव द्वारा बालक भनायासही चतुर् आता है ।



## नाभि छेदन ।

बालकका भ्रूण भट्ठी तरह माने जाने लग और नाभि रज्जुका पट्टकना पिल्लुल पन्द दाआय उस समय नाभि की गलावा काटना चाहिये । २३ अंगुल घम्बा छाड़कर माटे और बड़े खुन से या कपड़ेकी ओरसे नाभिरज्जूके दोनों ओर दो बड़े नाठ देकर बीचमें सावधानीसे काटना चाहिये । इसको बाटनक उपरान्त तब तक बालक को स्नान न कराया जाय जब तक उसके शरीर पराग कपड़ से ढका रहना चाहिये ।



## बालकको स्नान कराना ।

नाठ काट देनेक उपरान्त बालकके सब शरीरोंमें पित्त भर पगल, रान आदि जाइके स्थानोंमें नारीपलका मेल भट्ठी तरह सावधानी से मलहर धाद गरम पान्द्रुल स्नान कराना चाहिये । मल मज्जमत बाळकक नारीपका मिला बहुतही मददमें उठ जाता है । स्नान करानेके पूर्व कपड़ से सब शरीर भट्ठी तरह ढाँठ देना चाहिये और सब शरीर टक्कर होमल और क्यकल दीयाकर सुखा देना चाहिये । बाळकका स्नान कराने समय बिन्नी हर शीतकान्ते कपडा पहिच समय पगल गरम



प्रतिदिन कमसे कम एक बार नाभिसे कण्ठके पदल बना चाहिये। दोषकके ऊपर उगनी गरम कर नाभि सिकने का हमारा यहाँ एक बहुतदा पुरा रिवाज है। उसका सब ना आना ह "सादा दाना है परन्तु कापल लयकर नाभि मैला लूय हा जाता है। ऐसा करनेसे आग्रीही नाभि एक उठना है और बालकका बहुत बुरा होता है। पहलेता यह जाननेकी आज एषकता है कि नाभिक भकनका कोई आवश्यकता नहीं है। तल्का बगदा लगात लगात नाभि सुखकर अपन आपही ठाक होनाता है। नाभि उच्छ्र जानेपर गरम मारियलक सलके मिवाय और बिभी प्रकारक सेककी आवश्यकता नहीं है। दूसरे, यदि सेकनेकीही आवश्यकता हो इस प्रकार सजना चाहिये जिनसे कागल आदिसे नाभि मैली न हो सक।

## पहला दस्त।

बालक पैदा होनेपर घोड़ी देर बाद दायमही दस्त आता है। दस्तका रंग गाढ़ा हरा वा काळा, कइसवारसा होता है। यह केवल पित्त मिछा हुआ माँगीका नैश्या होता है। पैदा होनेके उपरान्त दस्त होनेमें कमी कमी कुछ देरभी होनाती है और इससे पेटमें दर्द अनिद्रा आदि कष्ट होता है। माताके स्तनका पहला दूध घालकके लिये दस्तापर होता है, इसलिय जिनमी जन्दी होसके बाबकी माताका दूध पिलाना चाहिये। इस प्रकार दूध पिलाने परयी यदि घालकको दस्त न होतो नषसयोमिका ६





चाहिये । आहारकी अपेक्षा मालुम होताहै बालकके बिबे-  
मित्रा अधिक आवश्यकताय है । जाननेके उपरान्त जयतक  
माता के स्तन में दूध उत्पन्न नहो मायका दूध नम  
कर पिछाना चाहिये ।

बालकके तिस माताका दूध विशेषकर पहल कुछ महीनों  
तक प्रधान माहार है । आवश्यकता होकर गौका दूध दिया  
जासकता है । सोने गौका दूध दिया जाय ता बहुत हा सामान्य  
बातोंपर ध्याय देना होता है । पहले, एकही गौका दूध देना  
चाहिये । दो तीस मायोंका दूध मिखाकर अथवा एक दिन एक  
गौका और दूसरे दिन दूसरी गौका दूध पिलाना उचित नहीं  
है । दूसरे, थोड़ेही दिनकी व्याया दूर गौका दूध मच्छा  
होता है क्योंकि उस समय दूध पनला रहता है । यदि  
दूध गाढा होना हममें आधा पानी मिलाकर पिछाना  
चाहिये । वमनः जब बालक बड़ा होन लगे तो दूधमें  
पानी मिलानकी आवश्यकता नहीं । तासरे प्रत्येक बार तात्री  
दूध यदि पिलाया जासकता मच्छा है ।

बालक के आहार का समय और परिमाण एकसा रहना  
चाहिये । ध्यान रहे कि बालक सर्वदा मुखसे नहीं रोना  
इसलिये बालकको थोड़ेही दूध का नम दान करना सम्याय है ।  
उपर का दूध हो चाहे माताका दूध हा हीन समय पार्हो  
पिछाना चाहिये । आहारके दोषके बालकको बहुरामय हो  
जाता है और दूध छट्ट पड़ना है । अमोलेकी सौकर  
केवल बिलोम का रवान रहना चाहिये ।

## उपरी पाधा ।

इमार दूधमें सोखडमें बाककना "इरवा दूध" ।



यह राग यदि पूरी तरहसे और प्रबल हो उठे तो इसका भारीम हाजा अत्यन्त है, किन्तु यदि रोगसे भारम्भमेंही मातुम होजाये और उपयुक्त औषध का जाये तो बर्मी बर्मी अच्छाई होजाताहै । चलेहोना, सिफ्टा, मधुसूदिषा ओषधिम, हायोमायमम आदि औषधें रक्षणीके अनुसार पराक्षा कर देखनी चाहिये ।

## चक्षुमदाह ।

( आंख दुखना ) ।

एन्ड्रॉका पाय बंजे दुखने लगती है । मोयडमेंमी प्रायः यह रोग होते हुए बीस्य पड़ता है । सायडमें पुमा बरता इस रोगका प्रधान कारण है । यह आंखके पलकमें रोग आरम्भ होताहै और धीरे धीरे आंखपर आताहै । यह देखना जाता है कि मान बाल ब नमय आंखके पलक खुदख जातहै आंख बाहरम रण्ड होजाती है और पुनः पड़ती है । एन्ड्रॉका छोटाकर रखन से भीतर लुब्धी मातुम दानीहै और मचाह पड़ता दुखनी नीक पड़ता है । बालक उठाएकी आर दन मदी सफता, बजाटा बीस्यही जारम जाके बन्ध करलेगा है । जिस जैसे रोग बजाताहै बिसही जैसे आंख और उपद्रव होने लगते हैं यथा—भूख न लगना और न जाना रान रदना बर्मी और दुखरागन । यदि इस रोगका टीका विधिमा न होतो जाके नए र सखनी हैं ।

विशिष्टमा ।— तद्योनाईष्ट ३,६ अति ।—

तय उठेगा अथवा दई । दया रणन । यदि रण रणन



भौंवा चर्म रोग हो उनके लिये यह औषध उपकारी है ।

**यूफ्रेशिया ६ शक्ति ।**—यह नसा और जलन पैदा करने वाले मांस निकलना, गाढ़ा पाल रस का मवाद निष्पन्ना, उससे पलक आवे स्थानोंमें घाव होगा ।

**पलसाटिला ६ शक्ति ।**—घाव बहुतसा किन्तु चिसा प्रकारके घाव न होगा ।

**औषध प्रयोग ।**—दिनमें ३।४ मात्रा । यदि एक मात्रा २।३ दिनतक कायदा न होता बदल दनी चाहिये ।

**बाह्य प्रयोग ।**—गरम दूधमें पाना मिलाकर जालों का दिनमें बार बार धा देना चाहिये । सर्जियोंमें और कान औषध न लगायाना चाहिये । सदा साफ रखना चाहिये ।

## नाक रुक जाना ।

बालकोंको एक प्रकारकी सर्जि हो जाती है उससे नाक बन्द होकर माताका दूध पीनेमें कष्ट होता है और हो नहीं आ जाना है । सात समयकी बालकका बहुत कष्ट होता है क्योंकि नाकसे श्वास न निकलना एक प्रकारका दुःख होता है, और बालकका बार बार हमसा पुडपर जग पड़ता है । जिस किस्मकी सर्जि और और लक्ष्मणी दिखलाई पड़ते हैं और नाकसे श्वासी निकलता है ।

**चिकित्सा ।**—कैमोमिसा ६ शक्ति ।—जब नाकसे जल बगवा खेपना गिरता हो, सर्जि स्पन्दसर्जि



साधना से औषध देकर चिकित्सा करनी चाहिये ।

**चिकित्सा ।—** एकोनार्द्ध ३, ६ शक्ति ।—

बलरुका शरीर गरम, बेचैनी, अनिद्रा, बध्द इत्यादि ।

**केमोमिला ६ शक्ति ।—** सदी रगनेसे रोग हो,

ज्वरा और साँसे पीली, सफेद और बध्दर मल,  
दान घटा बालक ।

**घायना ६, १२ शक्ति ।—** सब शरीर पीला, पेट

पूजाना, पहतके आगोंमें हवानसे बूद, मल सफेद, अजीर्ण  
और बूद न हो ।

**मर्कुरियस ६ शक्ति ।—** पूरा पीलिया, मल मध्यम

पीला, सफेदसा मल, मध्यम वेग और काँसना, बहुत  
और तज बध्द वाला पेशाब ।

**नकमवोमिका ६, १० शक्ति ।—** बहुतका आन

ऊँचा और बड़ा, जोड़बड़ा, बार बार दस्त आनेकी हाजत,  
बालक मध्यम रोग वाला हो और पेटमें बूद हो ।

**औषध प्रयोग ।—** ३।४ घण्टेके अन्तरसे एक एक

मात्रा ।

**मुखक्षत ।**

(छाले) ।

पहले लाल आल कुम्हियां विशेषकर होठ, गाल मसूँड  
और मुँह और और आगोंमें दिखलाई पड़तीहै । पीछडी पे  
सफेद सफेद होजाताहै ठाक दूध जमानेके समान दिखलाई











पान करने वाले बालकों को छुबयना होजानी दे । बालकों को सुबाष कमी न देना चाहिये ।

**चिकित्सा ।—** वायोनिया ६ शक्ति ।—

बालक के होट सुखे हुए, दूध पीते ही उल्ट देना, सूना, कड़ा, काला मज ।

**कैलकेरिया-कार्ब १२, ३० शक्ति ।—** कड़ा, बिना

पचाहुमा, सफइसा मज, दोनों पैर सर्वदा ठंडे और नीले रहें, शरीर में रक्त कम और ढील शरीर । माटे बालकों को विशेष कायदा करना है ।

**लार्डकोपोडियम १२, ३० शक्ति ।—** मल मस्यगत

कठिन, थोड़ा और मस्यगत कहसे निश्चयताहो, पटक भीतर तारसे गड़ गड़ गों-गों शब्द ।

**नक्सनेमिका ६, ३० शक्ति ।—** मल पड़ा, कड़ा

और कहसे निश्चयताहो, बार बार दस्त आनेकी दामन पटमें दू देवैनी, माताजे धी मसाला मिसे हुए चाय पाने आदिस यदि बालकको कोष्ठपद का रोग हानो पद विशय उपचागा है ।

**ओपियम ६ शक्ति ।—** उपरामयक उपराम

पदवा सुलाय दनक उपरामत कोष्ठपद, मल बाला टांग पड़ा गुच्छेदार ।

**मेगनेशियम फ्युगेटिक ३, ६ शक्ति ।—** मल गुच्छेदार,

उपरक पान आनेकी दूर पद बाग्वाट दस्तकी दामन ।

**सुफ्रम १२, ३० शक्ति ।—** वरगोछा मैगता न

































क्यों उसमें शरीर में चोटी आदि तो नहीं काठनी मध्या  
वाह चोटी उसमें शरीर में चुमनी तो नहीं है ।

**चिकित्सा ।—पेकोनाईट ३,६ शक्ति ।—**

गार, मूला और गरम चालक अत्यन्त तटपता हो, तो  
ममता हो और बहुत दिनपता हो ।

**पेतेडोना ३,६ शक्ति ।—**चालक बहुत देर तक

रोना रा, यमा मातुम ११ निर्माद भारी है किन्तु सा  
ममते, ममानक मीद न चमक उठ और मयदूर चित्ता  
हृदक ।

**कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—**चालक राना हा और

भाष न रघो हा, ज्ञान करन वाज्य परावर गारी में  
लहरदग्गता यह उरमा मातुम हा नान विरक्त व  
ममव यह नीच ३ बहुत पायदा करता है ।

**पापिया ३,६ शक्ति ।—**चालक एक पाप हमे

भर एक बाहराव विरक्तु हा न भोगा हा चित्ता व कृत  
ममव न निगाह है ।

**नवगोमिरा ६,३० शक्ति ।—**चालक और

एक कृतमे कलाप ११ में २६, मीन नममा भार बेयेमी  
चालक प्रति २१ रान का ३४ चमक व ममव ११ भार  
वरा ममव गारा में बैदना चाल, जिस चालको ही गाना ही  
ममाना मदि क वचनान न रा है ।

**जीवध मनी १ ।—**प्रति १ चाला ममव के ममव

न एक गारा ।



हानक बहुत अधिक होता है ।

“शिशोदु” चिकित्सा देखो ।

कान के पीछे पकना ।

माद नात्र चात्र्योक्त शरीरमें कमा कमी कानक पीछे एक प्रकारसे पड़ जाना है अथवा घाव होजाते हैं । कानके पीछे हानसे उत्पन्न कानलगना कहते हैं यदि शरीरके किम्बा और स्थान में हाना 'छात्र्य' कहते हैं । इन सब धार्योंका जलसे ग धोकर सूखा रखनाही अच्छा है । कन्तु साफ रसक लिय कमी कमी गरम पानासे भी छात्र्य आहिय । धोकर सूख कपड़ेस पोछ डालना चाहिय । एम धार्योंमें साधन लगाया भूछा नहीं ।

चिकित्सा ।—डैल्फरिया १२३० घावाइन्स १५३० का मछपर २० इनमेंसे कोई दोषध लक्षण अनुसार सुरह और गानकी दान उत्ता माराम करनीहै ।

छाननकी चिकि सा द्यो ।

इठना ।

( कन्तुल्लान )

वास्तविकमें सब स्नायुविधान इतना उत्तेजनशील रहता है कि सामान्य कारणसही वास्तविकी कोपठ [ कम्ब



प्रबल उदर, सूखा भरम शरीर बचनो और सम्भ्रणा, हाँन निश्चयेन यथया कर्मिण्योक्त उपद्रव क कारण इष्ट जाना, दात किङ्किडाना, भार निश्चया लता ।

**आनिका ६,३० शक्ति ।**—आट लगनक कारण यथा मस्तकमें आट, गिरन वा घट्टा लगनस राग ।

**घेलेडाना ३,६ शक्ति ।**—मस्तक अधिक गरम, चहुरा छाल, गैनों भाँले लाल भाँलोंका पुनली फग हुइ, तात समय कमक उठना और उछल पडना, तन्द्रा हाना किन्तु मा न सकना, चहुरा भाँदि बिगडा हुमा, हाँन पामना भार मुहमे हाँन निकलना बायठोंक उपरात तन्द्रा । जा शालक बाडा भयम्भामेही अधिक बुद्धिमान मालुम होने हैं और अधिक सगुन आनाक बीज पडते हैं उनक इष्ट जान पर घनहाना अधिक उपयोग है ।

**कैमोमिळा ६,१२ शक्ति ।**— हाथ पैरोंका चिचना जीम और भाँखोनामा भाक्षय सात समय उठलना और पडलना, चहुरा छाल, मधया एक कमपदी लाल और दूसरी पाली, बावकक शमाय में अन्योन्य चिहचिहायन और दलाइ, हाँन करनक लिय मयना गादगि लकर उडलाना पद, कपाल और मस्तक पर गरम पसीना, सयदा कराहट और पाणी पीन का इच्छा ।

**सीना ६,३०,२०० शक्ति ।**—छाना का बायठ, उपरान्त दा हाथ पैर आदि सब शरीर का कटा पडजाना,





अदि उद्भूत बैठ जाय पर मयदा निकलन में मिल्य हाते स राग ।

हात निबलना कारण हाता—बलजाग, एकनाइट केमागिला ।

मानसिक उद्भय कारण हा तो एकनाइट [ मयसे ], केमागिला [ काधन ], मोपयम [ मयस ] ।

मज्जीन कारण हा तो इपाका ( उद्भया हों ना ) सकमरा मिदा ( काधन हा ता ), पलसादेना [ साहारना दाव हा ना ] ।

मोमिक राग यदि कारण हा ता एकनाइट बलड ना पलसीमिनन ।

यदि सकमरा बैठ जाय के कारण राग हा ना मायानिया बलडाता । काहा कारण हा तो माना इमेगिया ।

**श्रीरध प्रयोग ।**—बायडोंके समय ३ : ४ छाटा गली १० : २० मिनटक अनरस जय तब सारास न हो जाय पर रखनी चाहिय । उपरान्त रोगक लौट मानका भागका उपरक रहे २ : ३ घंटेके अंतरसे एक एक मात्रा मोपय रना चाहिय ।

**सहकारी उपाय ।**—राग उत्पन्न होनेही शरीर और कपडोंका सल हालता चाहिय मस्तक उचाकर मस्तकपर, मुखपर, घहरपर, माथोंपर छातीपर ठंड पानाक छोट लगान चाहिये । बहुतमे माथी इबट्ट हाकर हवाका चर न करे । माज्जाक दावस हागे उन्नी करना चाहिये और काधवज हागे मस्तक पार्श्व और सावनकी विचगारा रगाना भच्छा दे ।



सथ मिलाकर १६। १६ के दिमागमें कुछ ३२ होते हैं ।

यदि दान निकलने में विघ्न हो भयवा यात्रक दुर्घट  
गरार का हो तो दान निकलने के समय भयक प्रकार के  
रोग उत्पन्न होते हैं । मसूदा लाल, सूजा हुआ और बंदे,  
बालक को जो खाज मसू उभोका पात हा काटने लगे  
और अपना मुँहासा मुँह के मानर दकर काटना रहे, मुँह से गर  
गिरती रहे, ज्वर हो, बालक रोय और टनक अचको  
गरह मोह न आवे आसी हो, विशेषकर रात्र में निद्राक  
समय उदरामय दिखलाई पड़े । बसा बसा शायद हाने  
हुए भी देख जाते हैं ।

**चिकित्सा ।— एकोनार्डिट ३,६ शक्ति ।—**

सबरा यज्ञेनी किमी अथर्वामें रहमपरमा शान गहा  
बाधक सपना राता रहे, ठिनकता रहे और किसी प्रकार  
दाग्न नहो, दारोय भुजा और गरम निद्रामें व्याघान  
भाधा गरम प्रयत्न व्यास दुरा पानीभा उदरामय, भयवा  
कापयक ।

**एपिस ६ ३० शक्ति ।—** नींदस विनाकर और

रोकर जग उठ बशाव घोडा दुरा पीलासा उदरामयका  
मल प्रातःकाल अधिक अधिक अमदार ल भौत भद्रुय  
मादुम हा ।

**बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—** बालक बगदता हा मय

पाकर नींदसे जाग बडे, टक्की लपाकर दलना गे बाग  
समय थमक उठे और बछल पडे चहरा और दानों भाँज  
घाल, मलक गरम बायड दपगम नदरा मोह भयने गुन  
हुए और जन्म ।



**हायोमायेमस दी शक्ति ।**—बालक मुदमें

एग्यो दे, मसूँसे दावना रहे मानो कुछ खवाता दे, दापड, चहरचे पडोका विशेषकर भाखोंक बायठ, गदरी निदा भरपट्ट खना मोर बिछाने खेचना, बेमात्रुम पीले रङ्गना पानीक समान मख ।

**इमेशिया दी शक्ति ।**—बिजाकर रोता हुआ

मौइ स उठे और सब धरार छापता रहे, किसी एक स्थान भयवा भगवा भावगिक फटवता, बालककर मखलत कपडा, इसीस रावे और छम्बो साम से मलमें रक्त और मामहा काय बाहर निकल भाव ।

**इपीका दी शक्ति ।**—लगानार आ मिचलाना और

उलगी, उदगमय मळ घामक समान हर वा नालस रगका उबला या भागदार जोसी, मानो दम भजवा जातादे, छातीक नीठर रूपमा घटघट करता हा ।

**मैगनेशिया कार्य दी शक्ति ।**—हरा और खट्टी

मख बाला उदगमय—दीर्घस्थाया भयान् बहुत दिन उदरने बाला हो बारम्बार खट्टी बरसूकी डलटा जाना ।

**मार्कुरियस दी शक्ति ।**—बहुत हार गिरना मख

लाल, रमा कर्ना होठ बार मुदमें छाल उदगमय, भयिक घेगके साथ हरा माम गिला हुआ बयवा रण गिला हुआ मख पीला और नील मखवा पछाय, रात्रिक समय यटना ।

**नकम्योमिका ६, १२, ३० शक्ति ।**—पालक



दान निकलने के समय बालकों को साधारणतः जो रोग हात हैं उनका विवरण नीचे देते हैं—

१-आणवद ।

**चिकित्सा ।—**त्रापोनिया ६ शक्ति ।—

मल सूखा हुआ पड़ा और कड़ा, दस्त आने में कष्ट, साधारण करत ही बहटों ।

**नक्सत्रोमिका ६, १० शक्ति ।—**बार बार दस्त कबिये जाता हा चिन्तु दस्त न होता हो, मातों का क्रिया का हास, उनको हाजम न होना, मूत्र न लगना बालक दिन दिन करता हो ।

**ओपियम ३ शक्ति ।—**अचानक अत्यन्त काष्ठ बर मातों की क्रिया बन्द और बिलगुल बगदाय ।

२-बावडे और भूच्छा ।

बालकों क दस्त आने का प्रकरण देखा ।

३-उदरामय ।

**चिकित्सा ।—**कैमोमिस्ता १२ शक्ति ।—

उत्तम औषध है । पतला हरे रंगका बरबूरा मल बालक अत्यन्त रोता ही सूखी कासी आते समय थमक उठता, उगन से सयदा मोहा में लहर दहलाना यह बड़े दृष्टकी उन्टी, मजिदा ।

**इपीका ६ शक्ति ।—**अत्यन्त पद मरगया हो और उमटिया होता होतो मल काल्दार, मजिद ल-









**चिकित्सा १— केन्थेरिस ३, ६ शक्ति ।—**

सबदा पनाथकी हानन, बुद बुद रक्त गिरना, मूत्राशयमें भयंकर दह, पाना पानस दह पड़ना ।

**इपीका ६ शक्ति ।—**रक्तमूत्र नेत्र और मूत्र

पथमें बाढ़नेके समान दह, बहुतसा रक्तमूत्र पथ में ।  
आमोपद बिलबुल मूत्राशय रक्तकी उधम ।

**मर्कुरियस ६ शक्ति ।—**मूत्र रक्त मग्न हुआ

दाह पड़, उनमें मफद २ दुबड़ अधवा मरान्त्र स्वम न म वृम  
हो, मूत्रपथमें रक्तप्रवाह ।

**नार्इट्रिक ऐमिड ६ शक्ति ।—**अथ न रक्त

पनाथ में समस्त दुग्ध किंवा खादक पशाव के समान  
पथ पाना व्यवहार हातके उग्रा त विशेष उपचारोंसे

**नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—**शराब पा-

नो रक्तमूत्र किंवा बबामारका रक्त दह हानन पैला  
पेनिक औषध आनेके कारण रोग उत्पन्न होना ।

**फास्फोरस ६, १२ शक्ति ।—**जिन मनुष्योंका

घोड़स भावस अभिव रक्तप्राप हो उनके विषय उपकारी है ।

**औषध प्रयोग ।—**यदि रक्त पड़ित न होना

दिनमें २।३ बार अथवा है ।

**पथ्य ।—**पथ्य एसा होना चाहिये जहाँ शान्ति

पथनाथ, किंवा प्रकारका उत्पन्नक या गरम पस्तु व्यवहार न



**चिकित्सा ।—बेलेहोना ३,६ शक्ति ।—**

मूत्राधारके मुहपर जो सुकड़न पैदा करने वाले पड़े हैं उन में पक्षाघात होनेके कारण लगानार बूद बूद पेशाब होता है ।

**सीना ६,१२,३०,२०० शक्ति ।—**बेमालूम पेशाब होता विशेषकर रात्रिमें । यदि बीड़ों के कारण रोग उत्पन्न हानो यह औषध उपकार करती है ।

**कोनियम ३,६ शक्ति ।—**रात्रि में बार बार पेशाब होना, पेशाब बिछड़ल ही रोकनेकी शक्ति न रहना रात्रिमें बिछोने के ऊपर पेशाब करना । कुछ मनुष्योंके हिस्से यह औषध विशेष उपयोगी है ।

**नक्तयोमिका ६,१२,३० शक्ति ।—**जान पीनकी गड़बड़ या शराब पीनेसे रोग होने पर ।

**फास्फोरिक-एन्तिड ६,१२, शक्ति ।—**यदि हस्त मैथुन हम रोगका कारण हो जो शिशु मयबा बाह्य बहुत जल्दी बढ होजाने हैं ।

**पल्लाटीक्षा ३,६ शक्ति ।—**बैठ रहेक समय या घुमनक समय बूद बूद करक पेशाब गिरनाहो, पॉसने समय और ज्ञात समय बेमालूम पेशाब हाना । जानकर प्रकृतिके मनुष्यों के लिए और उनके लिए जिनका तिराना जरूरी साजानाहै यह औषध उपकारी है ।

**रस्टक्स ६ शक्ति ।—**गर्बिने समय मयबा बैठ रहनपर या पिछान ५ समय बेमालूम पेशाब हाना, जान



मलमार्म—एसिड-आराइड, बार्बे एनामडिन आधेनिक,  
सलपर ।

मण्डकोपमै—वेडोलेथम, सलफर, वाटन टिंग, मारको-  
पोडियम ।

**महकारी उपाय ।**—रोग स्वानको धातुमम  
धातु गरम तल लगाना चाहिय । जितना कपड्ड रखा  
जायगा उतनाही रोग जल्दी भट्टा होजायगा । इस बानपर  
मिगाह रक्तनी चाहिय कि धातुका रक्त बिम्बा हुनर स्वा  
मै न छगे । जहाँ रक्त लगना चर्ही साथ हातायगा ।

## स्फोटक ( फोडा ) ।

( वाइल )

**लक्षण ।**—बड़ा हातपर फाटा और छोटा रहनगर  
हु सी कहलाता है । पहले ज्वर खास रक्त रक्त—पीठ  
मराह होकर मुद्ग हाजना है । जमी कमी अपने आय  
फूटजाता है और कमी महनरन उसका काटना गइता है ।  
रक्त दूधित हाकर प्राय बालकोंक माथे और मुद्गपर फाट और  
पुगसी हाते बचे आतेहैं ।

**चिकित्सा ।**—एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।

फोडा भस्मस्त प्रदादिन ज्वर और बचैनी पाहेके स्वातपर  
भस्मके समान जलनहो ।

**बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।**—जब पहले सलटो लपवन





और प्रयोग १-२। ३ घटक म ११ ए १२ मा ३।

यदि सल्फर होजाय तो प्रति १२ सध्याय समय  
१२ मा ३।

सहकारी उपाय ।—अल्प हृद हानो मन्त्राणां

पुनरित्त वाधता आदिषु । यदि मयने माग न पुन्यायना  
मन्त्रसे पादा चीरा लगा देता आदिषु । वाग्वायु ए उ  
हाना रोगन के निम्न दशाध्य मन्त्रधय । मन्त्र ए  
शक्ति रत्ता आदिषु ।

—०—

विधि ।

( तन्मन )

लक्षण ।—तन्मन वा यन्त्रे मया उपाय दानात्वा

विधि बहल है । इसका साथ साथ हर और मया  
रहनादि एवम भग्न में मया निम्न दानादि । यह वाद नय  
और पुताय हा तरह होत है । यहाँ, दृष्ट कर,  
यह न बन मादि कर्माणि यह दान पुन य  
आने है ।

१ म तदय विधि ।

लक्षण ।—वादिन कर्माणि गुणादुक्ता मया और

वेदना पुन । पुन नि वाद उभये मया रोग है, एवं  
मन्त्रा, मन्त्राणि दानात्वा उभय मन्त्र मया मन्त्राणि  
मन्त्राणि उभये पुन दानात्वा उभय मन्त्राणि उभये



रक्त मिला हुआ पाना व समान और बन्दूक ।

**हीपर और साईलेंसिया ३० अंति १—**पञ्च

पञ्चानन व बाद । यात्र कर पट्टनकामा आकार धारण करने पर और मवाद पतला और गालीव समान और बन्दूक होने पर साईलेंसिया दियाजाना है । भय व मवाद निकलता है ता साईलेंसिया महापथ है, इस व मयन करने व मवाद कमहा आता है । मवाद निकलने परमा यह महापथ है, क्योंकि यह चायका बहुतही जल्दी सुखा देता है और चम उपपन्न कर देता है ।

२ व पुरातन विद्रधि ।

**लक्षणा १—**बहुत और २ उपपन्न है । पहल पत्ता वग

तबलाक गुनम या लाल रंगत नहीं रहता ।

**चिकित्सा १—**आयामिका व मकुरियस माल व भार साईलाशया

२९ दिया जाता है । पहल आयामिका दिनमें २ बार द्वाक पाठ मकुरियस और साईलेंसिया । बीच बीचमें वष २ दिन औषध बाध रहना चाहिये । बीच बीचमें सत्वर सयन करनेसे विशेष फायदा दिखता है ।

**सहकरि उपाय १—**नदय रागमें बहुत गरम पानी का

सक और पाठ बहुतसा धुलटिम कमस लगाना चाहिये । कुछ कम ठंडा हातपर बहुत देना चाहिये । मवाद निकलने परतपर बल्लुङ्ग लोणक [१ माग पानामे १ माग औषध] व पावर और उर्मी लोणकमें बज्जहा निगावर बीच देना चाहिये । बल्लुङ्ग सय प्रकारक चायोंक हिपेटो महापथ



**हाईड्रास्टिस २ शक्ति ।**—मुह गला नाक और छाव आदि स्थानों में घाव होने पर यह फायदा करता है । इस का लोशन और बुही आदि आवश्यकता के अनुसार व्यवहार किये जाते हैं ।

**घ्रासैनिफ ३० शक्ति ।**—अथ त प्रदाह युक्त और जलन के साथ घाव गहरी रहने का पतला लहसुना मवाद निकलना घाव भरला न जाना हो ।

**हीपर-सल्फर ३०, कैलकेरियाकार्ब ३०, सल्फर ३० शक्ति ।**—आगु परिपक्व करने का उपाय व्यवहार किया जाता है ।

अत्यन्त मवाद निकलने रहने पर—घ्रायना मरु रस पोसाटिका हीपर सल्फर या सल्फर दिया जाना ।

गहरी जला घाव होने पर—आर्मेनिक खनिज वाष्प-कर्मक के साथ हावर मिश्रण व्यवहार किया ।

हृदय के घाव होने पर—रामवाटिक एमिड इत्यादि कर्मिया, आर्मेनिका या सल्फर का मास्केल मिश्रण दिया ।

घाव हावर रहने निकलने पर—आर्मेनिक घ्रायना कोशरीर के बाह्य भाग को रक्षा हेतु आर्मेनिक एमिड व्यवहार ।

उपरोक्त के साथ साथ—अर्मेनिक आर्मेनिक एमिड मृदा ।

घाव मवादों से होने के कारण—आग्नेय वायु-प्रेत इत्यादि मवादों को निकाल देना ।



**हार्डिडास्टिस २ शक्ति ।**—मुह गला नाक और माथे आदि स्थानों में घाय होने पर यह कायदा करनी है । इस का शोशन और हुत्ती आदि आयुर्वेदता के अनुसार व्यवहार किये जाने हैं ।

**आसेनिक ३० शक्ति ।**—अल्प न प्रदान युक्त और जलन के साथ घाय, सहज ही रक्त वा पनला गइया हुआ मवाद निकलना घाय भ्रष्ट हो न जाता है ।

**हीपरसलफर ३०, कैलकेरियाकात्र ३०, सलफर ३० शक्ति ।**—घातु परियन्त करनका उद्ये व्यवहार किया जाता है ।

आपत मवाद निकलन रहने पर—घायना मृदायन एमागिडा हीपरसलफर या सलफर दिया जाता है ।

गइया हुआ घाय होने पर—आसेनिक औरमिन बाधा-बन्धनेवहित हीपर मिश्रण यादलसीका ।

हृदय में घाय होने पर—गाम्माटिक एसिड इका का करिया माग्लिशिया एमागर्गहा, माग्लियस मिश्रण ।

नाथ हावर रक्त मिश्रण पर—आसेनिक घायना कोलासन बायो-ब्र माग्लियाटिपन माग्लिय एसिड मग्नर ।

उपहान के कारण घाय—मृदायन माग्लिय एसिड मृदा ।

नाथ मवादवहात होने के कारण—आपत बायो-ब्र हावर मवाद माग्लिय एसिड ।









पाय दना आदिषु । ( इन लकड़ाके दुकड़ोंको सिंगू ट कहत हैं ) ।  
लकड़ाके दुकड़ोंस बाधनेक उपरान्त इस पातका बाधोत्पन्न  
करना चाहिय कि दूग दूभा स्थान मिलन पाय । यदि हाथ  
दूग गया दाता ऊपर लिख दूष तराजसे बाध देनेक उपरान्त गल  
में एक कपडा बांधकर हाथ लकड़ा दना पड़ता है । यदि पैर दूट  
गया दाता छाटी छडा मयया टाठस यदि अच्छा लकड़ा न  
मिले ना ) दूट दूष स्थानका अच्छा तरह ठीक बैठकर नाग खार  
अगह तिग्याद रमालोंमे पैरका पारस बांध दना चाहिय ।  
बाधन समय बाधधानामे बाधना उचित है क्योंकि यदि  
बहुत पारस बाधा आधमा तो इन स्थानक रक्त संचार  
में बाधा पड़गी । अधिक औस बाधनकर रक्त न न  
सकनक बाधन पूरा उठगाहे और मयन कर गादुग  
दाता है । अथवा दाता दूट हिंस गच्छी तरहस न लु  
आवे तबतक हाथ पैर आदि बाधना मयया लकड़ा  
बाधना न चाहिय ।

भयन करनकी औषधोंमें विमलाहृतम बहुत उत्तम  
आयु है । दिनमें ६ । ३ बार भक्षण दाना चाहिय । यदि  
प्रदाद दना एकानारह वा बचाना । दूगके पारस न  
दर दाता अत्रिधम वा गविह वासपानिक । दूग दूग  
में ६४ दाता बत्तिया और माधुनिया उत्तम  
औषध है ।

बीटेका फाटना और ठक चुगना ।

चिकित्सा ।—इस बुद्धर नाद २६ बमर्



नर उगरीमें लगाकर कानमें तुला रखना चाहिये कि महान्  
दाह है अथवा नहीं । यदि थोर धार तीन तैले किसी  
फलका घात, चौड़ी, लम्बा पन्थि अदि काममें गिरजाये  
ना बड़ी सावधानीसे उसका घोंघट न पकड़कर निजाल  
हात्नी आदिय ।

### चोटन शरीर नीला पड़ना ।

निमित्त ।—२।४ मात्रा आनिका ध्वनन करनेके  
लिए देना चाहिय । खाट लगनेही यदि आनिका लायान  
प्रयोग किया जाय ना मनो बहु हास पाता है न माल  
पड़नाहै । यदि ना पड़ना जाय ना हेमागलिस भच्छा  
साध्य है ।

### मिश्र भक्षण ।

जहर लगना बार जहरीला मात्रा बार है यह जानना  
सुख्य सुखिनिमाका प्रयत्न करना चाहिय । एक पत्रके  
बताने रामधर्मा सह करना अग्राय है क्योंकि कर  
करनास रामका जीवन मराने पड़ना है ।

यदि ना प्रकाश विनाश पदाय सावे दोनो दो ठरे  
सुख उगरीका अवलम्बन करना पड़ना है । जहरीली मात्रा  
जाया है यह जाननही बहुत प्रयत्न समरी कराने वाली  
आटे निगकर उल्टा करना है । किसी किसी जहरके  
पत्रमें उल्टी कराना उचित है और किसी किसी









**चिकित्सा ।—वेलेडोना ६ शक्ति ।—**यदि केवल

रात्रि समय राग हा तो यह औषध मूत्रधारण करने  
वाला है । सोने समय विद्याना, गों गों करना  
या चमक डटना ।

**मीना ६, १० शक्ति ।—**बाहों के कारण हात में ।

**काम्पिकम ६ शक्ति ।—**पहलो गोंध व समय  
समान्य वगैरे हाथाना ।

**फासफारिक एसिड १, ६ शक्ति ।—**यह हा  
थोला लाल व समान बिना रंगका पदार्थ ।

**फेरम फास ६ शक्ति ।—**रात्रि में १६ बार  
बिछ न पर पनाद करना ।

**जेलमीमीनम १२ शक्ति ।—**बाह रात्रि में हा  
थोले दिने में पदाद न राख सकता ।

**मूजेन आयुक्त ।—**यह मदी निकाला हुआ औषध  
हाथों में बिछ न पर पदाद करके हाथ की मजबूत  
औषध है । यदि भ्रू और औषधोंसे बाधता है हा ना मजबूत  
मजबूत हा हात औषध का पदाद करना चाहिए ।

**महशगी टुपाय ।—**यह बिछ न पर सुहाता  
काम । हाथ का दिना मज न है । हाथ का टुपाय  
मजबूत दिना हा मज मजबूत और दिना हा  
हाथ का टुपाय हा हाथ का टुपाय हा हाथ का टुपाय



**कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।**—शगरबाधत्यन्तगरमी

और लाख धन बाग्यवार पानी रोगका इच्छा, मत्स्य न  
बेचैनी, विशुद्ध रात्रि समय तडफता, बगदना, चित्ताना,  
मस्तक में यक्षानक कि बालोंक मन्दरमी गरम पसागा,  
भास अल्हा अल्ही, छासी, नुपमाके पारल धड  
धड चम्प ।

**काफिया ३ शक्ति ।**—उर एमा कुछ भाधक

महो किन्तु अनिद्राहा प्रख उपमग हा नींद न जाय  
थयवा सोन समय मडपनाहा और बारम्बार जमककर नग  
पडताहो, दिनबना एकरा हस्ता और पाडा हा नर पाइ  
फिर राता ।

**जेलसीमीनम ६,१० शक्ति ।**—रात्रिका नकटाफ

महना, चहरी मानों बाग्य रगका लाज हारहा ह मत्स्य त  
छापविष पचना मिर घूमना पागबना नयदा गिरजा  
का भय रहना थोड़ना दिनमें अत्रिष बुकन, माया नीचा  
कर उठ या धड न सकना उजाटा या शम्प सहा न  
कर सपना ।

**डुमेशिया ६ शक्ति ।**—चित्ताकर रोकर नींद हा

जागना भार मय उरैर बाकात रहना, बाग्यो क बायट हात  
पैरो का इटना ।

**मार्कण्डियम ६ शक्ति ।**—गवाशय और पट आदि

स्थानोंको दयाजन हद हरा वाम मिंग हुआ मख और  
दलका हागत, चहरी कुछ गालीला पजाय लाज रगका  
नौर सन्दूहा, मुहमें छान उर रहना परभा पसीन घाना,



**औषध प्रयोग ।—**आवश्यकता के अनुसार ३।४ घटक अंतरसे एक एक मात्रा ।

**सहकारी उपाय ।—**अत्यन्त ग्याम हातो घाटा घोडा पानी देना उचित है, क्योंकि प्याससे बालक माना का दूध अधिक न पी ले वहमी प्यास देनकी बात है । ज्वर में दूध बन्द कर बारी भयवा साबुदानका पानी पच्य है ।

### यकृत पीडा ।

आजकल बालकाक विशेषकर शहरों में यकृत का एक प्रधान रोग हो उठा है । यदि इस रोगका आरम्भमें ही चिकित्सा न कीजाये तो प्रायः प्राणोंका सशय हो जाता है । मायोंकी अपेक्षा शहरोंमें और बरिद्ध बालोंकी अपेक्षा घना अनुप्योक्त घरमें ही इस रोगका प्रधानता पायी जाती है । उनका मुख्य कारणही है । पित्त वायुको का यकृत पाडा इनकी अधिक गर्मी पाडा जाती है । किन्तु आजकल ज्वर होने का यकृत पर यकृत खाने दना पडता है कि काइ रोग तो नहा है । बहुतस पित्त मानार्मी निदान एक बार यकृत पालक कारण अपनी समता छोडा है इस रोगका नाम सुननेही शयता उठते हैं । वास्तव में वातमा मदद कि यदि वायुको यकृत पीडा हो जाय तो विशेष यत्न पुधुया धार चिकित्सा के बिना आराम नहीं होना । यह प्रमत्त यकृत खाना है भीतर भीतर उतर घाडा थोडा रहता है, वायुको यकृत रोग



है । मासे मे छोटे बरिद्ध मनुष्यों के मरेंगे ये सब भूतोपद्रव नहीं  
 जान पाते इस कारण वेदा ये सब बहुत ही कम  
 होते हैं । (४) इन्द्रावर आर्य्य आदि का प्रयाग । यहाँ  
 का पर्व्वत उजाग्र बना मिलकुल अंगण है ।

चिरिना ।—इस राग की प्रधान आर्य्य गाये  
 िष्ट मनुष्य हैं । आशीषा, कैलशरिया, कैमासिला, खनी  
 इन्द्रावर आदिना जन्ममौल्य गंगाडायम, वाग-काय  
 लक्ष्मीम आशीषम नक्षत्रमिष्टा पाशापरम, माडीनम  
 मायसा मन्त्र ।

मायोनिश ३,६ शक्ति ।—कोष्ठम गज कर्मि  
 धार मृग छाया बहुत धारा नाम मन्त्र गा  
 राम ।

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १

कैलशरिया द्वारे १२ ३० शक्ति — ११ १ १ १





हैं । ग्रामों में और दण्डि मनुष्यों के शरीरों में ये सब कुतूहलमय होने लगे, इस कारण उहा ये राग बहुत ही कम हो गए । ( ४ ) दस्तावर आयुष्य आदि का प्रयोग । बालकों का दस्तधार सुखाव देना पिल्लुल आयाय है ।

**चिकित्सा ।**—इस राग की प्रधान आयुष्य पात्रे लित्रे मनुष्य हैं । प्रायश्चित्त, कन्दरिया कैमामिला, लड़ी डानियम, चायना चामामोम अयाद्यायम कारा-काय कैवसिम, मावुभियम नक्षयामिका पाडापाइम साडीनम भीषया, मलकर ।

**त्रायोनिषा ३, ६ शक्ति ।**—बोछुवद मल कटिा भार मृगा, घासी चहरा पारा, जीम मफद सी प्यास ।

**कैरुकेरिया कावे १२, ३० शक्ति ।**—माने समय यथात व समान मुद चमाना, गण्डमात्रा नृपिन धातु ।

**कैमामिला ६, १२ शक्ति ।**—घटन में थोडा थोडा दद भ्यागद शरार पाग, जीम का रग पामा कटपा स्वाद यत्रवा ।

**चेलीडोनियम ६ शक्ति ।**—क्यों में दद, जीमिच लाना बोछुवद अथवा डुवल परने पाग उदरामव, घटन का दद, रग व उपरात भागम ।

**चायना ६ शक्ति ।**—घटन में दद वाचने स अधिक् घटन यन्ही दद आर कडी पटपुला रदन, शरार पीला रानि में मार भाजना व उपरात यन्मा ।



भाग, आन्तर्य भूत न खगना यथया आतेही रुति, पेट पुन जाय ।

**औषध प्रयोग ।**—इस रोगके लिय औषध तज-  
मीज करना कठिन है । फार औषध तजमीज कर कुछ अधिक  
दिन तक दसवा दस दसना आदिय । दिनों २ । ३ बार  
आयुध बना यथष्ट है ।

**महकारी उपाय ।**—यह्न के स्थान को दिन में २ । ३  
बार रोका ने फायदा दाय पड़ता ह । शरीर का दसकर  
अच्छ हवा में व्यायाम करना अत्यावश्यक है । बालक का  
नपदा गोदी में न रखकर मकान के भीतर चलन बना  
आदिये । कुछ सुपच नहीं है, अतएव कम करना आदिय ।  
माली या साहूरागा आसको दियाजाय । मीठा जितना कम  
दिया जाय उतना ही अच्छा है । साधारण मिठाई की  
अवस्था कुछ और साकर अच्छा है । माताको अधिक मल  
अथवा घासिब कुछ पचाय जाना उचित नहीं । मेलिगस दूध  
पुष्टिकारक और बलकारी है ।

## धुपराही याती ।

यह बालको ही का रोग है कबोकि ७ वर्ष की अवस्था से  
ऊपर फिर यह रोग आव नहीं जाता । आसपच ही  
सैमिक भिन्ना का ग्रहण ही धुपराही आता है । यह हो  
सकत ही होगी है, यह आसपच और दूध की साफ-सफ ।

आसपच प्रकारका रोग अचानक आरम्भ होता है । बालक  
रात्रि में अचानक भला सोना हा २४ घण्टे उपरान्त अचानक



रामा खाट पकड़ लेता है और अग्रसन होनाता है  
अतः मैं बलात अथवा दम बंद हाकर प्राण त्याग  
देता है ।

### चिह्नित्मा ।— ऐकोनाईट ३,६ शक्ति ।—

राम की प्रथमावस्था में दना चाहिये—प्रबल उग्र मूला  
ग्रह शरार अत्यन्त बढ़ता ठहो पश्चिमा हुआ लगन स  
रोग निगलन से बालक रो उठ माना गत में बंद है  
भ्रातृ विवाह में जाग का शब्द विस्तृत भास छन में नहीं  
प्रत्येकवार भ्रातृ विवाह का उपरांत हा स्वरमहक साथ  
पुछा जाती ।

### येतेहाना ३,६ शक्ति ।—मलण में उत्थाप, चहना

और भाग्य हाग गल में मयाक दल गले पर हाथ  
रखन स पना पाटम हा माना दम बंद दाता है मूला यवाट  
का भाग्य भाग्यविष्य जाती, बराहना, मश्रातु विस्तृत राग  
महना हो मान साथ समक बर उछा पड़ता ।

### कैतकौरिया १२,२० शक्ति ।—मोटा मलण

शरार, भाग्य पर अधिक पमान जाता भास गत में शब्द  
बंद बंद उत न बालक बकाव न रो उठे मोहके  
उपरांत बहना (छेकसिमक समान), मलणाला हापन  
धातु ।

### कैमोमिला ६ १२ शक्ति ।—सदी ५५ पिदा इर

सुधगनी नामा धर्मिक मलमहना १२ में भाग्य साद  
और मल १२ उत मूला भाग्य राग में दहातक कि



भ्याम राखो घाही खांभी होना, गले में कुछ भी कमबर धाधना रहन न होना, सोते समय तड़पना और पराहना, सोने के उपरांत कष्ट और दुःख का पड़ना ।

**फातफोरस ६, १२ शक्ति ।**—मलान्त स्वरमद्ग, एरिक्स में बूढ़ हथ से पात बहो में कष्ट होना भयमा घाम न बह सकना, जागते समय सब शरीर कापना, घुघ राही जाना व उपरांत स्वरमद्ग रह जाने पर यह औषध वा जाता है ।

**स्वजिया ३, ६ शक्ति ।**—सामा य घुघराही आमा और खरखरी शम्भुन आमा सा मां शब्दों माध आसी जैसे नकड़ी बादन समय फरात का शब्द होना है भयमा भ्यामराधक आधमपन, जव नक मस्तक पीछे की ओर न बिदा जाय आमत न जियाडासक आसीसुयी ।

**ऐन्टिमार्ट ३, ६ शक्ति ।**—रोग की रोप और वायानिक भयमा में, प्रयववार जासते समय माणूम होवि थोडा बक निकल द किन्तु वास्तव में पिछकूय न निबध [ १०० व समान ] कष्टक माध स्वासत्रिया, सज छाटा दवरद्ग व भयमा सार सार शब्द व साथ, बहुत हा बह स छाती फैलार आसक बहुत ही उबलीय और रसी पुदरगा वि रोगी छाट पकड़क बगल और वसी वमा सब शरीर ठंड पसीन भ तर जाना ।

**औषध प्रयोग ।**—यदि रोग बटिन धाकार पारल करे ता आराम होत तब १५२० मिण्ट व मन्तर से





और एक घण्टा का अवकाश होने ही माना जा कुछ ठंडा देना उचित है । बालक को दूध चुनाने समय यह ध्यान रखा जाय कि बालक मुख दाया है अथवा बाया और दात निशाना क उपद्रव होने से बचा जाय । यदि माता का दात पाड़िन और दुधल हा भया स्तनदुग्ध दूधित जा ता जितना ज़रूरी दूध सुडा दिया जाय उतना हा अच्छा है । यदि बालक दुधल हो अथवा किसी प्रकार का रोग उस क शरीर में जा ना जब तक दुग्ध मार मघल न हाजाय माता का दूध सुडाना उचित नहीं । इस विषय में ना कुछ लिख गया है उनसे स्पष्ट मानुस हासकना है कि दूध सुडाना न पहल माता मार लगता होना ही शरीर क और स्वस्थ सम्बन्धों दूना पर ध्यान रख कर दूध सुडाना चाहिये । बालक का दूध सुडाना एक सामान्य विषय नहीं है ।

बालक का दूध चुनाना निश्चय होने पर त्रमश दूध सुडाना और दूसरी उपयुक्त खान का चीज का अभ्यास कराना उचित है । अनाज दूध के साथ साथ स मना और स तात दानाही क दिये हााकारक हो सकना है । पलाका दूध छोड़नेका अभ्यास कराना कुछ सदा काम नहीं है । यदि बालकका मातासे जुदा न रना जायक विशेषकर रात्रि क समय ना क्वाणि दूर नहीं छोडा जा सकता । बालकका स्तर एक पिछापर पर सता नहीं हाता । किसी दूसरा हाथार स्याक ऊपर बालकक हाग, सान और भाहार आदिका भार देना पडता है । यदि काम में अधिक दूध हाता रनता जल्दी जा त्याग कराना रिताभी चल सकताह किन्तु यदि कराना हा हातो पड

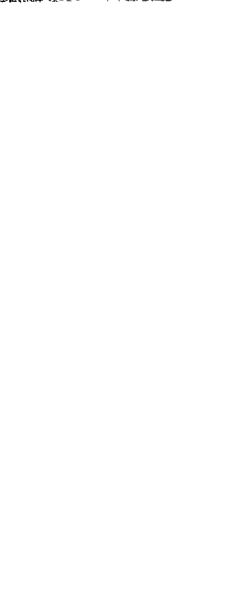


यदि स्त्री फिर गमयनी हो और स्नानमें दूध हाता यह दूध  
मन्ताया जाता नहीं दना आदिष्य । यह दूध मन्ताया गिय  
निराश्रय । यह दूध बहुतहा बढिनास पवता है । गमायस्या  
या दध पाना भी इस राग का एक दुसरा कारण होता है । गम  
मन्तार व पदम ही बालक स दूध छुट्या दना आदिष्य  
। शत्रु यह मन्तार पदम शाय हो ना गममन्तार हुआ  
है यह ज्ञान हो पावक का माना व जान का दूध जमी  
॥ पान दना आदिष्य ।



दूध गिलाने वाली थाय तजरीज करना ।

[illegible]



है । छाट छाट बालों का घायल भावर मृत्यु होती है ।  
यह मनुष्यों के जल जाने से उनका साधारण नहीं होता  
किन्तु हमारा शय्या सर पड़ने ही मय का कारण हो  
जाता है । मलब शय्या पेट जल जाता विषदजनक  
होता है ।

**चिकित्सा ।**—चिकित्सा व विषय में सध स  
सावधानीय विषय यह है कि जल हुए स्थान की या  
स रक्षा परनी चाहिये, अनपेक्ष किसी स्थान व जल  
हो औरभी ऊपर लगाकर उनी समय उस का टुक दन  
चिकित्साका एक प्रधान अङ्ग है । इस क लिय बहुत  
सा औषधों का व्यवहार होता है । यथा—

१। परकाहल ।—जल जा पर जब तक पानीला  
उठ तब तक इस औषध का ऊपरी प्रयोग करेता त्रि  
उपचार दीख पड़ता है ।

२। वैथीरस ।—ऊपर ही ऊपर जल जात स भया  
बहुत गहरा न जलने स इस औषध का ऊपरी प्रयो  
करना बहुत पावना करता है । एक बालल पानी में  
बूद अथ मिठाकर इस पानी में बपडा भिगोकर अ  
हुए स्थान पर सगदा टक रखना चाहिये । उपरान्त जल  
आदि बहकर लक्षण सध दूर हो पर जले हुए स्थान प  
सामा य मरुदम या मरुधन लगादेना चाहिये ।

३। मैदा और ते ।—यह मरुदा सहज में हा पा  
जासकता है । किसी स्थान में जल हो उस व उ  
तापिल का तल टाक कर उपर स मैदा अच्छ त  
पुरक दना चाहिय और जल हुए स्थान को पूर तरह  
दर दना चाहिये ।









